ऋषि चिंतन के सान्निध्य में

www.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

ऋषि चिंतन के सान्निध्य में

(अखण्ड ज्योति १९४०-१९६६ से संकलित)

(भाग—१)

लेखक
वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
एवं
वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य—१२०.००

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुनरावृत्ति सन् २०१३

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मनिवेदन

व्यक्तित्व एवं विचारस्तर को सत्प्रवृत्तियों से ओत-प्रोत करना ही युग निर्माण आंदोलन का प्रयोजन है। जनमानस में इसी तथ्य को गहराई तक प्रतिपादित किया जाए। हमारा भावनात्मक स्तर सुधरे, तो बाह्य जीवन की समस्त परिस्थितियाँ सुधर जाएँगी, समस्त अवरोध दूर हो जाएँगे और समस्त कष्टों से त्राण मिल जाएगा। हमारा ज्ञानयज्ञ अभियान इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए है कि जनसाधारण का विचारस्तर, भावस्तर, दृष्टिकोण, जीवनोद्देश्य एवं क्रिया-कलाप मानवोचित गौरव के अनुसार बदल दिया जाए।

व्यक्ति का परिवर्तन उसके विचारों का परिवर्तन ही है। आस्थाएँ बदलने से व्यक्ति का दृष्टिकोण बदलता है। उसकी सारी क्रियापद्धति ही बदल जाती है। असली परिवर्तन दृष्टिकोण का, विचारधाराओं का ही है, जिसके आधार पर व्यक्ति ही नहीं समाज, संसार और युग सब कुछ बदल जाता है। यह भलीभाँति समझ लिया जाना चाहिए कि व्यक्ति और कुछ नहीं विचारणाओं और आस्थाओं का प्रतीक मात्र है। उसकी समस्त गतिविधियाँ उसकी अंत:निष्ठा की प्रतिबिंब हैं। यदि हमें उत्कृष्ट व्यक्ति, उत्कृष्ट समाज एवं उत्कृष्ट युग अपेक्षित हो, तो उसका एकमात्र उपाय यही है कि हर मनुष्य को उत्कृष्ट विचारधाराओं से लगातार संबंध रखने की एक सुनिश्चित व्यवस्था बनाई जाए। उत्कृष्ट विचारणाओं से प्रभावित व्यक्ति ही उत्कृष्ट रीति-नीति स्थिर रूप से अपना सकते हैं। उन्हीं की संख्या-वृद्धि उत्कृष्टता के नए युग का सृजन कर सकती है। स्वाध्याय से, सत्संग से, मनन-चिंतन से जैसे भी बन पड़े वैसे यह प्रयत्न करना चाहिए कि हमारा मस्तिष्क उच्च विचारधारा में निमग्न रहे। यदि इस प्रकार के विचारों में मन लगने लगे, उनकी उपयोगिता समझ पड़ने लगे, उनको अपनाते हुए आनंद का अनुभव होने लगे, तो समझना चाहिए कि आधी मंजिल पार कर ली गई।

स्वाध्याय में प्रमाद न करें। भावनाओं, विचारणाओं को प्रेरणा देने का मुख्य आधार स्वाध्याय ही है। शास्त्रकारों ने भोजन, स्नान एवं शयन की भाँति ही स्वाध्याय को भी नित्यकर्म माना है। आत्मशोधन और आत्मनिर्माण का सबसे प्रधान विधान स्वाध्याय ही माना गया है। स्वाध्याययुक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है। हम में से प्रत्येक को स्वाध्याय के लिए नित्य कुछ समय निश्चित रूप से निकालना चाहिए। स्वाध्याय वही कहा जाएगा, जो हमारी जीवन की समस्याओं पर, आंतरिक उलझनों पर प्रकाश डालता है और मानवता को उज्ज्वल करने वाली सत्प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

सच्चा स्वाध्याय वही है, जिससे हमारी चिंताएँ दूर हों, हमारी शंका-कुशंकाओं का समाधान हो। मन में सद्भाव और शुभ संकल्पों का उदय हो तथा आत्मा को शांति का अनुभव हो। स्वाध्याय को विचार-परिष्कार का साधन कहा गया है। यह किसी योग साधना से कम नहीं है। इसमें वैसी ही एकाग्रता, तन्मयता और ग्रहणशीलता होनी चाहिए जैसी कि सफलता के इच्छुक योग साधक में। जो भी पढ़ा जाए, धीरे-धीरे पढ़ा जाए, शांतिपूर्वक पढ़ा जाए। थोड़ा पढ़ा जाए लेकिन उस पर चिंतन-मनन अवश्य किया जाए ताकि वह हमारी भावना और विचारधारा का अंग बन जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन से प्रेम करने वाले हर व्यक्ति को ज्ञान का महत्त्व समझना चाहिए। अपने अंदर जिज्ञासु भाव विकसित करना चाहिए और उसके लिए अनिवार्य स्वाध्याय को जीवन में अनिवार्य स्थान देना चाहिए। सच्चे अर्थों में स्वाध्याय को अपनाने वाला व्यक्ति महानता का अधिकारी अवश्य बना है और आगे भी बनता रहेगा। पवित्र विचारों से हमारा अणु-अणु प्रबल बनता है। शरीर में छिपे हुए विष, रोग के कीटाणुओं की अपवित्रता दूर होती है। बुद्धि की मलिनता हटती है, चित्त के ऊपर अधिकार जमाए हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, भ्रम, चिंता आदि आंतरिक शत्रुओं की सत्ता मिटती है। भीतर और बाहर जो मलिनता छाई रहती है, वह अनेक प्रकार के रोग, शोक की जड़ है। उसी से ब्रह्मतेज नष्ट होता है।

'ऋषि चिंतन के सान्निध्य में' परम पूज्य गुरुदेव के मौलिक विचारों का प्रस्तुतीकरण है। सद्‌विचारों के माध्यम से महामानव कैसे किसी समय विशेष में जन समुदाय को एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर मोड़ देते हैं, इसका परिचय इन छोटे-छोटे विचार सार रूपी संदेशों द्वारा मिलता है। 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के सन् १९४० से सन् १९६६ तक प्रकाशित लेखों में से महत्त्वपूर्ण चिंतनपरक विचारों का संकलन इस ग्रंथ में किया गया है। आत्मविज्ञान से लेकर व्यावहारिक अध्यात्म के हर क्षेत्र को स्पर्श करने वाले गागर में सागर के समान बहुमूल्य विचारों को इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न विषयों पर विचारों को पढ़कर मन विधेयात्मक चिंतन की गंगोत्री में डुबकी लगाने लगता है। आज आवश्यकता ऐसे ही सद्‌विचारों के प्रवाह की है, जो कलियुग के सूक्ष्मजगत् में संव्याप्त प्रदूषित प्रवाह से जूझने की सामर्थ्य दे सकें। यही प्रयास इस संकलन में किया गया है। हम सब का यह प्रयास होना चाहिए कि युगऋषि की प्रखर एवं चमत्कारिक लेखनी से उद्‌धृत यह चिंतन जन-जन तक पहुँच सके। इस हेतु इस ग्रंथ का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''सहस्रों बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ने से एक ऐसा सूत्र पढ़ना अच्छा है, जिससे तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो। बुद्धिमान मनुष्य छोटे और बड़े सब ग्रंथों का सार ग्रहण करें, जैसे भौंरा फूलों का रस ग्रहण करता है।'' समय की कमी के कारण बड़े ग्रंथ पढ़ना आज सबके लिए सुलभ नहीं है। इस ग्रंथ में एक वर्ष के ३६५ दिन के लिए ३६५ सूत्र (प्रत्येक पृष्ठ पर दो सूत्र) दिए हैं, ताकि इस ग्रंथ का एक सूत्र नित्यप्रति पढ़ा जाए, उस पर चिंतन-मनन करके ऋषि चिंतन पर श्रद्धा रखकर उसे अपने व्यवहार में उतारा जाए, तो कुछ ही समय में मानव से महामानव बनना संभव है। यह विचारधारा लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति में पूर्ण समर्थ और व्यक्ति के दोष, विकार एवं त्रुटियों को दूर करने में अवश्य सहायक होगी। यह ग्रंथ सभी संप्रदायों, देशों, जातियों एवं मान्यताओं वालों के लिए उपयोगी है।

इस ग्रंथ के स्वाध्याय से हम अपना, अपने परिवारीजनों का जीवन सफल बनाएँ। अपने परिचितों, स्वजनों, स्नेहीजनों, रिश्तेदारों एवं अतिथियों को सभा-सम्मेलनों, विवाह संस्कार, जन्मदिवस किसी पर्व-त्योहार पर उपहार में भेंट किया जाए, ताकि अपने परिकर में भी समान विचारधारा फैले और हमारा उस विचारधारा के वातावरण में समायोजन करना आसान हो जाए। हमारा आत्मीय पाठक बंधुओं से निवेदन है कि इस ग्रंथ की अधिकाधिक प्रतियाँ समाज में फैलाने में अपना हर संभव सहयोग करें।

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना, मथुरा

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतिम संदेश

अस्सी वर्ष जी गई लंबी सोद्देश्य शरीर-यात्रा पूरी हुई। इस अवधि में परमात्मा को हरपल अपने हृदय और अंत:करण में प्रतिष्ठित मानकर एक-एक क्षण का पूरा उपयोग किया है। शरीर अब विद्रोह कर रहा है। यों उसे कुछ दिन और घसीटा भी जा सकता है, पर जो कार्य परोक्ष मार्गदर्शक सत्ता ने सौंपे हैं, वे सूक्ष्म और कारण शरीर से ही संपन्न हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में कृशकाय शरीर से मोह का कोई औचित्य नहीं।

'ज्योति बुझ गई' यह भी नहीं समझा जाना चाहिए। अब तक के जीवन में जितना कार्य इस स्थूल शरीर ने किया है, उससे सौ गुना सूक्ष्म अंत:करण से संभव हुआ है। आगे का लक्ष्य विराट है। संसार भर के छह अरब मनुष्यों की अंतश्चेतना को प्रभावित और प्रेरित करने, उनमें आध्यात्मिक प्रकाश और ब्रह्मवर्चस जगाने का कार्य पराशक्ति से संभव है। परिजन, जिन्हें हमने ममत्व के सूत्र से बाँधकर परिवार के रूप में विस्तृत रूप दे दिया है, संभवत: स्थूल नेत्रों से हमारी काया को नहीं देख पाएँगे, पर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि इस शताब्दी के अंत तक, जब तक सूक्ष्म शरीर कारण के स्तर तक न पहुँच जाए, हम शांतिकुंज परिसर व प्रत्येक परिजन के अतं:करण में विद्यमान रहकर अपने बालकों में नवजीवन और उत्साह भरते रहेंगे। उनकी समस्या का समाधान उसी प्रकार निकलता रहेगा, जैसा कि हमारी उपस्थिति में उन्हें उपलब्ध होता। हमारे आपसी संबंध अब और भी प्रगाढ़ हो जाएँगे, क्योंकि हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े थे। हमें एक क्षण के लिए भुला पाना आत्मीय परिजनों के लिए कठिन हो जाएगा। ब्रह्मकमल के रूप में हम तो खिल चुके, किंतु उसकी शोभा और सुगंधि के विस्तार हेतु ऐसे अगणित ब्रह्मबीज-देवमानव उत्पन्न करने जा रहे हैं, जो खिलकर समूचे संस्कृति-सरोवर को सौंदर्य सुवास से भर सकें, मानवता को निहाल कर सकें।

ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं का उत्पादन, प्रशिक्षण एवं युग निर्माण के महान कार्यों में उनका नियोजन बड़ा कार्य है। यह कार्य हमारे उत्तराधिकारियों को करना है। शक्ति हमारी काम करेगी तथा प्रचंड शक्ति-प्रवाह अगणित देवात्माओं को इस मिशन से अगले दिनों जोड़ेगा। उन्हें संरक्षण, स्नेह देने और सँवारने का कार्य माता जी संपन्न करेंगी। हम सतयुग की वापसी के सरंजाम में जुट जाएँगे। जो भी संकल्पनाएँ नवयुग के संबंध में हमने की थीं, वे साकार होकर रहेंगी। इसी निमित्त कायपिंजर का सीमित परिसर छोड़कर हम विराट घनीभूत प्राण ऊर्जा के रूप में विस्तृत होने जा रहे हैं।

देव समुदाय के सभी परिजनों को मेरे कोटि-कोटि आशीर्वाद, आत्मिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होने हेतु अगणित शुभकामनाएँ।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़प्पन और महानता लगभग असंबद्ध और प्रतिकूल हैं। एक को खोकर ही दूसरे को पाया जा सकता है। सद्गुरु के मार्गदर्शन ने उन्हें विवेक दिया, विश्वास दिया और साहस दिया। इन तीन अवलंबनों को पाकर वे महानता की राह पर चल पड़े। कौन क्या कहता है, यह उन्होंने सुना ही नहीं। महानता की राह पर ही जीवनपर्यंत उँगली पकड़कर छोटे बच्चों को चलाते रहे। उनके मार्गदर्शक की कृपा को सराहा जाए या शिष्य की समर्पणभरी निष्ठा को। दादा गुरु ने अपना तप और आत्मबल शिष्य पर उड़ेल दिया और शिष्य ने अपना आपा और अस्तित्व ही उन्हें समर्पित कर दिया। तन तो तुच्छ है, अपनी कोई इच्छा तक शेष नहीं रहने दी। जो मार्गदर्शक की इच्छा वही अपनी इच्छा। तर्क-कुतर्क की कोई गुंजाइश ही नहीं। दुनियाँ वाले आरंभ से ही हँसते थे और उसी क्रम में उनकी कसौटी पर हम लोग भी हँसी और उपहास के पात्र बने हैं। जहाँ तृष्णा, कामना और अहंता की पूर्ति ही लाभ, सौभाग्य और वरदान माना जाता हो, वहाँ गुरुदेव की ही तरह सच्चे अध्यात्मवादी को उपहास का पात्र बनना ही पड़ेगा। यहाँ हर चीज मूल्य देकर खरीदी जाती है। भौतिक संपदाओं की कीमत पर ही आत्मिक विभूतियाँ खरीदी जाती हैं।

www.vicharkrantibooks.org

हिमालय पिता ने गुरुदेव का व्यक्तित्व विनिर्मित किया। गुण, कर्म और स्वभाव की उत्कृष्टता उसी की देन है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन उन्हें पिता का दिया हुआ है। दृष्टिकोण में उत्कृष्टता, लक्ष्य की ऊँचाई, सर्वतोमुखी प्रतिभा, अविचल साहस और अटूट धैर्य जैसी दिव्य संपदाओं को लेकर ही वे ऊँचे उठे और महामानव के स्तर तक पहुँचे। यदि ऊपर से यह अनुग्रह न मिला होता, तो अपने बलबूते इतना उपार्जन करना तो दूर, इतनी सफलता मिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था।

साधनों की दृष्टि से उन्हें असमर्थ और असहाय ही कहना चाहिए। पैसे की दृष्टि से हाथ खाली, माँगने में इतना संकोच, जिससे किसी को आवश्यकता का पता भी न चले। भरपूर विज्ञापन न करने के कारण धनी लोगों की उपेक्षा आदि अनेक बाधक कारणों के रहते हुए भी उनकी योजनाएँ धन के अभाव में रुकी नहीं। इसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके मार्गदर्शक की प्रत्यक्ष अनुकंपा ही कहना चाहिए। बोलने में उन्हें रुकावट होती, पर जब भाषण देने खड़े होते, तो जिह्वा पर सरस्वती आ विराजती। लेखनी का जादू भरा संपादन रहता। लेखनी मस्ती पैदा करती और उसमें स्फुरण जाग पड़ती। उनका लिखा जिसने पढ़ा, प्रभावित हुए बिना न रहा। इस लेखनी का ही चमत्कार है, जिसने करोड़ों को उनके प्रवाह में बहने और साथ उड़ने के लिए विवश कर दिया। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के नए प्रतिपादन ने संसार भर में हलचल पैदा कर दी। संगठन की क्षमता, रचनात्मक कार्यक्रमों की योजना, भावी महाभारत की व्यूह रचना जिस दूरदर्शिता के साथ की जाती है और सफलता की प्रतिक्रिया तत्काल परिलक्षित होती है, उसके पीछे गुरुदेव की अपनी प्रतिभा नहीं, वरन निश्चित रूप से उनके महान मार्गदर्शक का अनुदान ही मूल कारण है। युग निर्माण अभियान की जो कुछ भी सफलता दृष्टिगोचर होती है, उसे उनके मार्गदर्शक का अनुदान माना जाए। यह अनुदान गुरुदेव ने कीमत चुकाकर पाया था, पात्रता सिद्ध करने पर मिला था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मवर्चस, आत्मबल और ऋषितत्त्व उन्हें गायत्री माता से ही प्यार-उपहार में मिला था। वे धनी नहीं थे, पर उनकी दिव्य संपदा का पारावार नहीं था। अपने निकट आने वाले किसी को खाली हाथ नहीं जाने देते। जो भी समीप आया, माता जैसी उदार अंतरात्मा ने पहले उसकी व्यक्तिगत व्यथा, चिंता और कठिनाई को समझने की कोशिश की और अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता में कोई कंजूसी नहीं की। किसी पर एहसान करने के लिए नहीं, चमत्कार दिखाकर और फिर उससे कुछ काम निकालने की बात कभी स्वप्न में भी नहीं सूझी। रोते हुए आने वाले हँसते हुए लौटे। ये भौतिक, मानसिक और आत्मिक अनुदान जो बादलों की तरह निरंतर बरसते रहे, आखिर कहाँ से आते? ये अनुदान वेदमाता के थे। ब्रह्मवर्चस और ऋषितत्त्व की सारी संपदा इन्हें गायत्री माता के कोष से मिलती रही। हिमालय पिता ने व्यक्तित्व, मार्गदर्शक ने कृतित्व और गायत्री माता ने ब्रह्मवर्चस प्रदान किया। ये तीनों ही चीजें उन्होंने कष्ट सहकर ही नहीं खरीदीं, वरन इस उपलब्धि का प्रयोग मात्र लोकमंगल के लिए करने की शर्त के साथ स्वीकार किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव की आत्मीयता का विकास ही है, जिसने लाखों व्यक्तियों को मजबूत रस्सी के साथ जकड़कर उनके साथ बाँध दिया। विद्वत्ता, प्रतिभा, भाषण, लेखन, संगठन और आंदोलन आदि बहुत छोटे आधार हैं। यह कला दूसरों को भी अच्छी तरह आती है, पर वे इतना सघन कुटुंब कहाँ बना पाते हैं। उनकी कला केवल आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। ऐसे व्यक्तित्व किसी को घनिष्ठ आत्मीयता से बाँध लेने और उनसे साहसपूर्ण कार्य करा सकने में समर्थ नहीं होते। पूज्य गुरुदेव ने हिमालय के वातावरण में अंतर्मुखी होकर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त दिव्यता को पढ़ा, समझा और वे तत्त्वदर्शी के स्तर तक पहुँचे।

कष्टपीड़ितों और अभावग्रस्तों को उनका अनुदान सदा मिलता रहा। रोते को हँसाने में उन्हें मजा आता। यह उनका सबसे बड़ा विनोद-व्यसन कहा जा सकता है। जिन्हें वे कुछ ऊँचा उठा देखते, उनकी कामनाओं और तृष्णाओं को तृप्त नहीं, वरन समाप्त करते और उन्हें बड़प्पन से छुड़ाकर महानता में संलग्न करते। जिन्हें और भी ऊँचा समझते उन्हें और भी ऊँचा उपहार देते। अहंता और तृष्णा छोड़े बिना ब्रह्मवर्चस मिलता नहीं। जिसे सबसे अधिक प्यार करते, उसकी तृष्णा और अहंता छीनकर अपने सदृश बनाने का प्रयास करते। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न उन्होंने इसी आधार पर देखा। स्वर्ग की ज्ञान-गंगा को धरती पर लाने के प्रयास में भगीरथ की तरह जूझते रहे और गायत्री माता की दिव्य सत्ता उन्हें मुक्त हस्त से सहायता प्रदान करती रही।

www.vicharkrantibooks.org

स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि और विभूति की कामनाएँ उनके लिए निरर्थक थीं। बार-बार जन्म लेना, मरना और निरंतर सर्वतोभावेन परमात्मा के इशारों पर चलते रहना ही उनका लक्ष्य था, जिसने उन्हें दिव्य माता, दिव्य पिता और दिव्य गुरु की महान उपलब्धियाँ देकर अनाथ से सनाथ बनाया।

अखंड दीपक पर पुरश्चरणों की शृंखला संपन्न करते हुए उन्होंने भावना क्षेत्र में यह निष्ठा परिपक्व की कि जीवन को ज्वलंत दीपशिखा की तरह अंतरंग एवं बहिरंग क्षेत्र में प्रकाश उत्पन्न करने के लिए तिल-तिल जलते रहने की प्रक्रिया व्यवहार में लाई जाए। यदि दीप उपकरण के साथ-साथ वे आत्मज्योति को प्रकाशवान बनाने का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्य सामने रखकर न चले होते, तो उनकी अखण्ड ज्योति भी मात्र रोशनी पैदा करने का तुच्छ-सा प्रयोजन पूरा कर सकी होती।

गुरुदेव की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने आस्तिकता की गरिमा को अपने जीवन की प्रयोगशाला में यथार्थ सिद्ध किया और उन लोगों का मुँह बंद किया जो इसे भ्रम या छद्म कहते रहे। गुरुदेव ने अपने लेखों और प्रवचनों में ही नहीं, आचरण की भाषा में भी यह कहा कि यदि देवसान्निध्य, ईश्वरीय अनुग्रह और आत्मबल अभीष्ट है, तो सबसे प्रथम चरण दृष्टिकोण के परिष्कार का उठाया जाना चाहिए। अपने को मात्र शरीर और मन से बना मांसपिंड मानकर वासना-तृष्णा के, पेट-प्रजनन के तुच्छ प्रयोजनों में ही संलग्न नहीं रहना चाहिए, वरन कुछ आत्मकल्याण की, मानवीय गरिमा की एवं जीवनोद्‌देश्य की बात भी सोचनी चाहिए और उसके लिए कुछ कारगर प्रयत्न भी करने चाहिए।

पूज्य गुरुदेव के संकल्प के साथ गुरु का बल और महाकाल का आश्वासन था कि वे किसी से भी बिना सहायता माँगे विचारक्रांति का माहौल तैयार करेंगे। उन्होंने सब कुछ दाँव पर लगा दिया। कुछ धनपति वित्तीय समूहों ने उनके शुभ संकल्प को सुनकर धनराशि देने की बात कही, तो उन्होंने अस्वीकार कर दी। यह उनके ब्राह्मणत्व को एक चुनौती थी।

यदि युग निर्माण परिवार के सदस्य ऐसे ही लोभ-मोह में ग्रस्त, पेट-प्रजनन में व्यस्त और वासना-तृष्णा का पशु जीवन जीकर मर जाते हैं, तो यह गुरुदेव के लिए भी लज्जा की बात है और इस परिवार के लिए भी कलंक की। हाथी के बच्चे बकरों के शक्ल में दीखें, इसमें उपहास हाथी का भी है और बच्चों का भी। परिवार जब बन ही गया है, तो शोभा इसी में है कि उसका स्तर भी कुलपति के अनुरूप रहे। हर अभिभावक की अपनी संतान के प्रति ऐसी ही इच्छा रहती है। युग निर्माण परिवार का प्रत्येक सदस्य महामानवों की ऐतिहासिक भूमिका निभा सके, वे इसी उधेड़-बुन में लगे रहे। पूज्य गुरुदेव अपना तप और पुण्य देकर आत्मिक लालच भी इसीलिए पूरा करते रहे कि आगे चलकर संभवतः हम बालक उनके आदर्शों को अपनाने का साहस करें। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतिम संदेश

जिन चरणों में अपने आप को समर्पित किया, उनके बिना जीवन का एक-एक क्षण पीड़ा के पहाड़ की तरह बीत रहा है। जिस दिन उनके पास आई, उस दिन का पहला पाठ था—पीड़ित मानवता की सेवा और देव संस्कृति का पुनरोदय, सो अपने आप को उसी में घुला दिया। यद्यपि यह एक असह्य वेदना थी तथापि महाप्रयाण से पूर्व परमपूज्य गुरुदेव की आज्ञा थी कि अपने उन बालकों की उँगली पकड़कर उन्हें मिशन की सेवा के मार्ग पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा दूँ, जिन्हें अगले दिनों उत्तरदायित्व सँभालने हैं। पिछले चार वर्षों में मिशन जिस तरह आगे बढ़ा, वह सबके सम्मुख है, जो मैं देख रही हूँ। आगे का भविष्य तो इतना उज्ज्वल है, जिसे कल्पनातीत और चमत्कार कहा जा सकता है। उसके लिए जिस पुरुषार्थ की आवश्यकता है, हमारे बालक अब उसमें पूर्णतया प्रशिक्षित हो गए हैं।

शरीर-यात्रा अब कठिन हो रही है। उनके जाने के पश्चात से आज तक एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता, जब वे आँखों से ओझल हुए हों। घनीभूत पीड़ा अब आँसू रोक नहीं पा रही, सो मुझे उन विराट तक पहुँचना अनिवार्य हो गया है। यह न समझें कि हम स्वजनों से दूर हो जाएँगे। परम पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म और कारण सत्ता में विलीन होकर हम अपने आत्मीय कुटुंबियों को अधिक प्यार बाँटेंगे, उनकी सुख-सुविधाओं में अधिक सहायक होंगे।

हमारा कार्य अब सारथी का होगा। दुष्प्रवृत्तियों से महाभारत का मोर्चा अब पूरी तरह हमारे कर्त्तव्यनिष्ठ बालक सँभालेंगे। सभी क्रिया-कलाप न केवल पूर्ववत संपन्न होंगे, वरन विश्व के छह अरब लोगों के चिंतन, जीवन, व्यवहार, दृष्टिकोण में परिवर्तन और मानवीय संवेदना की रक्षा के लिए और अधिक तत्पर होकर कार्य करेंगे। हम तब तक रुकें नहीं, जब तक धरती पर स्वर्ग और मनुष्य में देवत्व का अभ्युदय स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर न होने लगे। *—माता भगवती देवी शर्मा*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

वंदनीया माताजी के जन्म के साथ ही भविष्यवक्ताओं ने बताया कि एक दैवी सत्ता शक्ति रूप में उनके घर आई है। साधारण से असाधारण बनती हुई यह ऐसे उत्कर्ष को प्राप्त होगी कि करोड़ों व्यक्तियों की श्रद्धा का पात्र बनेगी। हजारों-लाखों व्यक्ति इस अन्नपूर्णा के द्वार पर भोजन करेंगे। कोई भी, कभी भी इसका आशीर्वाद पा लेगा, तो वह खाली हाथ नहीं जाएगा।

एक ऐश्वर्यशाली संपन्न घर में जन्म लेने के बावजूद सादगी भरा जीवन ही उन्हें पसंद था। रेशमी कीमती वस्त्रों की तुलना में गांधी बाबा की बात कहकर सभी को खादी अपनाने की प्रेरणा देतीं और स्वयं भी वही पहनतीं। औरों को भोजन कराने, उनका आतिथ्य करने, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार में वे सबसे आगे बढ़कर चलतीं। जिसने भी एक बार उनके हाथों प्यार भरे स्पर्श के साथ भोजन कर लिया, वह उन्हें सदा याद रखता। विवाह के बाद बड़ी प्रतिकूल परिस्थितियों में वे उस जमींदार घराने में पहुँची, जहाँ आचार्य जी ओढ़ी हुई गरीबी का जीवन जी रहे थे। जैसा पति का जीवन, वैसा ही अपना जीवन। जहाँ उनका समर्पण, उसी के प्रति अपना भी समर्पण। यही संकल्प लेकर वे जुट गईं, कंधे से कंधा मिलाकर पूर्वजन्मों के अपने आराध्य इष्ट के साथ। २४ वर्षों के २४ महापुरश्चरणों का उत्तरार्द्ध चल रहा था। जब गायत्री तपोभूमि की स्थापना का समय आया, तब पूज्य गुरुदेव १०८ कुंडीय यज्ञ कर २४ वर्षीय अनुष्ठान की समाप्ति करना चाह रहे थे। स्वयं अपनी ओर से पहल करके वंदनीया माताजी ने अपने सारे जेवर अपने आराध्य के कार्य को सफल बनाने के लिए दे दिए। माताजी ने लिखा है, ''परिजनों की इस माँ ने अपने जीवन का हर क्षण एक समर्पित शिष्य की तरह जिया है। अपने आराध्य की हर इच्छा को पूरा करने का अथक प्रयास किया है। प्रत्यक्ष दृश्यपटल पर यदि हम दिखाई न भी पड़ें, तो हमारा कृतित्व जो अब तक गुरुसत्ता की अनुकंपा से बन पड़ा है, सबके लिए प्रेरणा का केंद्र बना रहेगा एवं हमारे बच्चे उत्तराधिकारी बनते हुए, आदर्शों के क्षेत्र में

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिस्पर्द्धा करते हुए उज्ज्वल भविष्य समीप लाते दिखाई पड़ेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।''

गुरुदेव के तप की प्रभा जहाँ अपने तीव्र आकर्षण से चकाचौंध करती है, वहाँ वंदनीया माताजी का अपरिमित वात्सल्य हृदय की गहराइयों को तृप्त करता है। माताजी और गुरुदेव के रहस्यमय जीवन की अबूझ पहेली भले ही समझ में न आए, पर इतना अवश्य है कि यदि माताजी न होतीं, तो मिशन का इतना विस्तार संभवतः न होता। यानि कि शक्ति न होती, तो शायद शिव अपना लीला-विस्तार न कर पाते। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''माताजी भगवान के वरदान की तरह हमारे जीवन में आईं। उनके बगैर मिशन के उदय और विस्तार की कल्पना करना तक कठिन था। उन्होंने अपने आने के पहले दिन से ही स्वयं को तिल-तिल गलाने का व्रत ले लिया। विरोध का तत्त्व तो उनमें जैसे था ही नहीं। यदि वे चाहतीं, तो साधारण स्त्रियों की तरह मुझ पर रोज नई फरमाइशों के दबाव डाल सकती थीं। ऐसे में न तो तपश्चर्या बनती और न लोकसेवा के अवसर हाथ लगते। फिर जो कुछ आज तक हो सका, उसका कहीं नामोनिशान तक नहीं होता।''

वंदनीया माताजी ने लिखा है, ''जहाँ तक कष्ट सहने का प्रश्न है, सारा जीवन तितिक्षा के अभ्यास में ही लगा है। गुरुदेव की छाया में रहकर अधिक नहीं, तो इतना तो सीखा ही है कि आगत आपत्तियों के समय धैर्य, साहस और विवेक को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहना चाहिए। व्यथा को इस तरह दबाए रहना चाहिए कि समीपवर्ती किसी अन्य को उसका आभास न होने पाए। मानव जीवन सुखों के साथ दुःखों का भी युग्म है। संपत्ति ही नहीं विपत्ति भी भगवान मानव कल्याण के लिए भेजते हैं। गुरुदेव के संपर्क में ऐसे पाठ पढ़ती रही हूँ कि रुदन को मुस्कान में कैसे बदला जाना चाहिए?''

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''माताजी का दर्जा ऊँचा बैठता है, क्योंकि उनका स्नेह-सहयोग ही नहीं, वात्सल्य भी हमने भरपूर पाया है। हमें वे बहुत उदारतापूर्वक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिपोषण देती रही हैं। उनका मूल्यांकन तुलनात्मक दृष्टि से कम नहीं किया जा सकता। वे अनवरत रूप से सहधर्मिणी रही हैं। उनके कारण हमें निजी जीवन में भी धर्मधारणा पर अडिग रहने और दूसरों को उस दिशा में चला सकने में असाधारण सहायता मिली है। एक शब्द में उन्हें सजल श्रद्धा कहा जा सकता है। उनकी काया में है तो हाड़-मांस ही, पर कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूटकर न भरी हो। संपर्क में आने वाले हमारी प्रज्ञा से निष्ठावान नहीं बने हैं, वरन उनकी श्रद्धा के साथ वात्सल्य पाकर निष्ठावान बने हैं। मिशन को अग्रगामी बनाने में किसने, कितना योगदान किया, जब इसका लेखा-जोखा भगवान के घर लिया जाएगा, तो कदाचित मूर्द्धन्यों में माताजी का नाम ही अग्रणी होगा। कभी सोचते हैं कि यदि वे साथ न रही होतीं, तो इतना सब कर पाते क्या, जो कर सके। उनके वात्सल्य ने हमारी ही तरह समूचे गायत्री परिवार को, उनके माध्यम से दूरवर्ती वातावरण को कृतकृत्य किया है।''

www.vicharkrantibooks.org

महाप्रयाण के पूर्व माताजी ने कहा था, ''निरंतर प्यार, ममत्व बाँटकर ही हमने यह संगठन खड़ा किया था। तुम सब इसी जिम्मेदारी को निभाना। मिशन का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। मुझे अपने पुत्र-पुत्रियों पर पूरा विश्वास है कि स्नेह की डोर में परस्पर बँधे इस मिशन के संस्थापकों व दैवी संचालन तंत्र के नियामक ऋषिगणों के द्वारा निर्धारित लक्ष्य अवश्य पूरा होगा।''

गुरुदेव ने लिखा है, ''मिशन को बढ़ाने में माताजी ने हमारे बाँए या दाँए हाथ की नहीं, हृदय की भूमिका निभाई है। उन्हीं की भावनाओं के संचार से मिशन पलता और बढ़ता रहा है। औरों की तरह हम भी उनका प्यार-दुलार पाकर धन्य हुए हैं, अन्यथा इतने आघातों के चलते कौन जाने हम कब टूट-बिखरकर चकनाचूर हो गए होते। वे भावनामयी हैं, प्यार तो जैसे उनके रोम-रोम में बसता है। उन्हें हमारी तरह बातें बनाना तो नहीं आता, पर ममत्व लुटाने में वे हमसे बहुत आगे हैं। भले ही हमारी तरह वे बौद्धिक चातुर्य की धनी न हों, किंतु ममता की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूँजी उनके पास हमसे कई गुनी अधिक है। इसी कारण हम उन्हें सजल श्रद्धा कहते हैं। मिशन के प्रत्येक परिजन ने उन्हें इसी रूप में अनुभव किया है। वे बेटा-बेटी और बहू का मोह इतनी आसानी से छोड़कर हरिद्वार के जंगल में बसने के लिए तैयार हो जाएँगी, इसका मुझे भी विश्वास न था। मैंने अपने मन के असमंजस को छिपाते हुए जब उनसे शांतिकुंज में तप-साधना की बात कही, तो वे बिना एक पल की देर लगाए, तुरंत तैयार हो गईं। हमें भी उनके इस साहस भरे समर्पण को देखकर आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता हुई।''

वंदनीया माताजी ने हम लोगों के लिए लिखा है, ''श्रवणकुमार की तरह मुझे व मेरी गुरुसत्ता को घर-घर पहुँचाओ। घर-घर तक नूतन चेतना का संदेश पहुँचाओ। कर दो आलोकित युग चेतना के प्रकाश से हिमालय से विंध्याचल, विंध्याचल से सतपुड़ा दंडकारण्य एवं अरावली से कन्याकुमारी तक के हर क्षेत्र को। इन पावन सरिताओं की हर बूँद को व मातृभूमि को सांस्कृतिक दासता से मुक्ति दिलाकर इसे पुनः देव संस्कृति की चेतना से अनुप्राणित कर दो। आगे तुम्हें और भी बड़े-बड़े कार्य करने हैं। सारे राष्ट्र को जगाना है। तुम सभी मेरे वरिष्ठ पुत्रों में से हो। इस परिवार संस्था में अहंकारियों का कोई स्थान नहीं है। तुम सभी अच्छे हो, मुझे आशा है कि तुम में से किसी का अहंकार टकराएगा नहीं व टीम-भावना के साथ तुम काम करते चले जाओगे। स्वभाव में जहाँ कहीं भी थोड़ी-बहुत कमियाँ हैं, उन्हें दूर कर अच्छी आदतों में बदलने की कोशिश करो। अपनी-अपनी योग्यता बढ़ाओ। तुम समर्पण करोगे, तो गुरुजी की आवाज ही तुम्हारे चोगे से निकलेगी। तुम सबको देखना है कि आगे क्या होता है, जो काम होंगे, वे माताजी नहीं बेटे जी करेंगे। ये और भी शानदार होंगे। अब हम मिशनरी भावना की तरह फैलते चले जाएँगे। देखते-देखते कई गुना हो जाएँगे। तुम में से विवेकानंद निकलेंगे, दयानंद निकलेंगे और देखते जाओ तुम से वह करा लेंगे, जो तुमने सोचा भी नहीं था।'' ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री का दर्शन

गायत्री उपासना में तप साधना के वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं, जिनके आधार पर लोगों की आस्थाएँ बदलती हैं, जनमानस का परिष्कार होता है, जीवन को सचेतन बनाने वाली प्राण ऊर्जा विकसित होती है और मानवीय सुख-शांति की परिस्थितियाँ मुखरित होती हैं। गायत्री को त्रिपदा कहा गया है, जिसका एक अर्थ यह भी होता है कि इस उपासना से मनुष्य अभाव, अशक्ति और अज्ञान से मुक्ति पाता है। शरीर, समाज और लोक-व्यवहार में क्या उचित है, क्या अनुचित? इस बात को सीखता है, तदनुसार अपना जीवनक्रम निर्धारित करता है। दुःख के यही तीन कारण हैं। इन्हीं तीनों चरणों की भ्रष्टता मनुष्य को पतित करती है। यदि वह व्यवस्थित हो जाते हैं, तो फिर उस कोलाहल, अशांति और सर्वनाश की विभीषिकाओं से स्वतः ही बचा जा सकता है। इस प्रयोग को प्राचीनकाल में सर्वाधिक सफलता मिली थी। इसलिए मनीषियों ने एक मत से गायत्री उपासना को राष्ट्रीय उपासना के रूप में स्वीकार किया था।

गायत्री युग निर्माण का मूल आधार है। गायत्री को प्राणों के उत्कर्ष की साधना भी कहते हैं। इस उपासना से अंतरंग गतिमान होता है, उसमें छाई मलिनता, अंधकार और अविवेक दूर भागते हैं। सृष्टि की यथार्थ अभिव्यक्ति होने से मनुष्य करने योग्य करता है और सोचने योग्य सोचता है। भावनाओं में देवत्व का विकास और कृतित्व में शुचिता व पवित्रता का समावेश होता है। जहाँ लोगों की भावनाएँ शुद्ध और पवित्र होंगी, वहाँ के समाज में सर्वत्र शांति, सुव्यवस्था, प्रसन्नता और संतोष भरे जीवन की निर्झरिणी प्रवाहित हो रही होगी। ❑

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवसंस्कृति की माता—गायत्री

भारतीय संस्कृति में प्रतीकवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सबके लिए सरल, सीधी पूजापद्धति का आविष्कार करने का श्रेय भारत को ही प्राप्त है। पत्थर, मिट्टी, धातु, चित्र इत्यादि की प्रतिमा को मध्यस्थ बनाकर हम सर्वव्यापी अनंत शक्तियों और गुणों से संपन्न परमात्मा को अपने सम्मुख उपस्थित देखते हैं। भावुक भक्तों, विशेषत: नारी-उपासकों के लिए तो किसी प्रकार की मूर्ति का आकार रहने से उपासना में बड़ी सहायता मिलती है। मानस-चिंतन और एकाग्रता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रतीक रूप में मूर्तिपूजा की योजना बनी है। साधक अपनी श्रद्धा के अनुसार भगवान की कोई भी मूर्ति चुन लेता है और साधना करने लगता है। उस मूर्ति को देखकर हमारी अंतश्चेतना ऐसा अनुभव करती है, मानो साक्षात भगवान से ही हमारा मिलन हो रहा है। मूर्तिपूजा में भावना प्रधान और प्रतिमा गौण है, तो भी प्रतिमा को ही यह श्रेय देना पड़ेगा कि वह भगवान की भावनाओं का उद्रेक और संचार विशेष रूप से हमारे अंत:करण में करती है।

गायत्री दूरदर्शी विवेक प्रज्ञा की देवी, नारी में देवत्व की विशिष्टता का भान, उसके प्रति पवित्रतम श्रद्धा-सद्भावना की धारणा, वाहन हंस नीर-क्षीर विवेक, उचित-अनुचित के वर्गीकरण की प्रखरता, दाग-धब्बे रहित धवल कलेवर, मोती चुगने अथवा लंघन करने की प्रवृत्ति, श्रेष्ठतम को ही स्वीकार करने की प्रतिज्ञा, एक हाथ में पुस्तक, स्वाध्याय में अगाध रुचि, दूसरे हाथ में कमंडल, जल की शीतलता और प्रामाणिक पात्रता से भरा-पूरा स्वभाव।

ऋतंभरा प्रज्ञा का ही नाम गायत्री है। ऋतंभरा प्रज्ञा क्या है ? वह प्रज्ञा, वह धारणा, वह निष्ठा जो आदमी को ऊँचा उठा देती है, ऊँचा उछाल देती है, जिसकी प्रेरणा से आदमी ऊँची बातों पर विचार करता है और ऊँचा उठता चला जाता है, उसे ऋतंभरा प्रज्ञा कहते हैं। गायत्री का वाहन हंस है। हंस एक प्रतीक है। हंस वह व्यक्ति है, जिसकी दृष्टि ऋतंभरा प्रज्ञा के अनुकूल है। हंस कीड़े नहीं खाता, वह मोती चुगता है। जो ठीक है, उचित है उसी को करेगा, जो अनुचित है उसके बगैर काम नहीं चलेगा, तो मर जाएगा, भूखा रह लेगा, चाहे मरना ही क्यों न पड़े, पर न तो कुछ अनुचित करेगा और न अभक्ष्य खाएगा। हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो नीर और क्षीर का भेद करना जानता है। इसे ही जाग्रत करने के लिए गायत्री साधना की जाती है। छोटे बालक को बताया जाता है कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथ में पुस्तक और कमंडल लिए रहती है। गायत्री माता सिद्धियों और चमत्कारों की देवी है, वह शांति और वरदान की देवी है। वह ऐसी देवी है, जिसको प्राप्त करने के बाद और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता।

गायत्री माता जवान स्त्री है। जवान स्त्री के प्रति हमारे अंदर मातृबुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्धता, पवित्रता का भाव पैदा हो, इसीलिए गायत्री माता को जवान स्त्री के रूप में बनाया गया है। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदारता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

गायत्री माता वेदमाता है। सारे वेदों का जन्म गायत्री से ही हुआ है। उसी ने सारी संस्कृति और सभ्यता को जन्म दिया। अतः गायत्री माता वेदमाता बनी। इसके बाद गायत्री माता देवमाता बनी। हिंदुस्तान के निवासी देवता थे। वे स्वयं तो कम खाते थे, पर दूसरों को अधिक खिलाते थे। यहाँ के नागरिकों ने सारी दुनियाँ को अपनी संपदा बाँट दी, इसलिए वे देवमानव कहलाए। अकेले खाते समय उन्हें मन में अप्रसन्नता होती और दूसरों को खिलाते समय वे प्रसन्न होते। जब गायत्री माता हमारे हृदय में उदय होती है, तो हमारे जीवन को चमकाकर रख देती है। वह हमारे विचारों में परिवर्तन कर देती है। हमें केवल अपना परिवार ही नहीं, सारा समाज और देश दिखलाई पड़ता है और हम देवता बनते चले जाते हैं। गायत्री माता हंस पर बैठकर कमंडल लेकर नहीं आती। वह करुणा के रूप में, दया के रूप में हमारे अंदर आती है। यही उनका स्वरूप है, जो हमें देवता बनाकर चला जाता है और हम देवता जैसा जीवन जीने लगते हैं। गायत्री माता की कृपा से हम लोकमंगल हेतु अपनी बुद्धि, धन और समय को लगाने लगते हैं। हमारा जीवन धन्य हो जाता है। सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो। यह मात्र हिंदुओं तक ही सीमित न रहे, यह ब्राह्मणों का ही होकर न रह जाए, बल्कि विश्वमानव का मंत्र बने। विश्वमाता से मतलब है कि सारा विश्व एक नए आधार पर एक होने जा रहा है। एक नई संस्कृति आ रही है। एक नया सार्वभौम धर्म आ रहा है। सारी दुनियाँ इस एक ही केंद्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है। हम सब एक आचार संहिता और एक मातृभाव में बँधने जा रहे हैं। गायत्री माता ईमानदारी, नेकनीयती, सज्जनता और शराफत की देवी है। हंस इसका वाहन है। गायत्री माता की स्थापना करके हम राजहंस पैदा करना चाहते हैं। गायत्री उपासकों में राजहंस की वृत्ति पैदा करना चाहते हैं। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री महामंत्र की विलक्षण शक्ति

गायत्री महामंत्र के जप से उत्पन्न पराध्वनि सारे वातावरण के परमाणुओं को कँपा देने की शक्ति से ओत-प्रोत है। इस महामंत्र की अपार शक्ति का लाभ कोई भी उठा सकता है। शर्त एक ही है कि वह उन शिक्षाओं पर, उस आचरण पर भी चले, जिसका इस महामंत्र के एक-एक अक्षर में संकेत है। उन आदर्शों पर चले बिना उल्लेखनीय सफलता के द्वार अवरुद्ध ही पड़े रहेंगे। गायत्री महामंत्र के जप द्वारा ऐसी चेतन शक्ति का उद्भव होता है, जो जपकर्त्ता के शरीर एवं मन में विचित्र प्रकार की हलचलें उत्पन्न करती है और अनंत आकाश में उड़कर विशिष्ट व्यक्तियों को, विशेष परिस्थितियों को तथा समूचे वातावरण को प्रभावित करती है। मंत्र का लाभ वे ही उठा सकते हैं, जिन्होंने व्यक्तित्व को भीतर और बाहर से, विचार और आचार से परिष्कृत कर लिया हो। साधक का अंत:करण और व्यक्तित्व जितना निर्मल होगा, उपासना उतनी ही सफल होगी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देव संस्कृति का दर्शन—गायत्री मंत्र

गायत्री मंत्र एक फिलॉसफी है। इसे हम जीवन जीने की कला कह सकते हैं। वह सोचने का एक तरीका है, जीवनयापन करने की एक पद्धति है, समाज के गठन का तरीका है, विश्व की शांति का मूल मंत्र है। अगर हम इसे अपनाकर चलेंगे, तो हम अच्छी दुनियाँ की कल्पना कर सकते हैं। अच्छी दुनियाँ हमें फिर देखने को मिल सकती है, जैसी कि प्राचीनकाल में देखने को मिलती थी। गायत्री एक दिव्य ज्ञान है। इसे देवमाता कहते हैं। इसकी उपासना से मनुष्य देवता बन जाता है। इसे विश्वमाता भी कहते हैं। गायत्री की फिलॉसफी सबको जाननी चाहिए। अगर इसे हम समझ गए तथा उस रास्ते पर हम चलने का प्रयास कर सके, तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है।

गायत्री के २४ अक्षरों में धर्म, नीति, जीवन, कला एवं लोक-व्यवहार की बड़ी ही महत्त्वपूर्ण शिक्षा भरी हुई है। इस शिक्षा को भली प्रकार हृदयंगम कर लेने से वह उद्‌देश्य पूरा हो सकता है। धर्मग्रंथों का उद्‌देश्य मनुष्य के विचार, भाव, लक्ष्य एवं दृष्टिकोण को शुद्ध करना है, जिससे उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्रियाएँ सतोगुणी एवं धर्मसंगत होने लगें। यह प्रक्रिया गायत्री के अक्षरों में छिपी हुई महान शिक्षाओं के अपनाने से हो सकती है। इसलिए गायत्री को वेद शास्त्रों का निचोड़ कहा गया है। गायत्री का मर्म, अर्थ समझने से धर्म-ग्रंथों का विशद् अध्ययन करने का लाभ मिल सकता है।

ॐ—प्रकृति के अंतराल में प्रतिक्षण एक ध्वनि उत्पन्न होती है, जो 'ॐ' शब्द से मिलती-जुलती है। सूक्ष्म प्रकृति इस ईश्वरीय नाम का प्रतिक्षण जप और उद्‌घोष करती है, इसलिए यह अकृत्रिम, स्वयं घोषित, ईश्वरीय नाम सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। आस्तिकता का अर्थ है—सतोगुणी, दैवी, ईश्वरीय, पारमार्थिक भावनाओं को हृदयंगम करना। नास्तिकता का अर्थ है—तामसी, आसुरी, शैतानी, भोगवादी, स्वार्थपूर्ण वासनाओं में लिप्त रहना।

ॐ में तीन अक्षर मिले हुए हैं—अ उ म्। अ का अर्थ है—आत्मपरायण शरीर के विषयों से मन हटाकर आत्मानंद में रमण करना। उ का अर्थ है—उन्नति। अपने को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, आत्मिक संपत्तियों से संपन्न करना। म का अर्थ है—महानता। क्षुद्रता, संकीर्णता, स्वार्थपरता, इंद्रियलोलुपता को छोड़कर प्रेम, दया, उदारता, सेवा, त्याग, संयम एवं आदर्श के आधार पर जीवनयापन की व्यवस्था बनाना। इन तीनों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अक्षरों में जो शिक्षा है, उसे अपनाकर व्यावहारिक रूप से 'ॐ' की, ईश्वर की उपासना करनी चाहिए।

भूः—हम शरीर नहीं, प्राण हैं, आत्मा हैं। शरीर को प्रधानता देना और आत्मा की उपेक्षा करना, यह भौतिकवाद है। आत्मा को प्रधानता देना और शरीर की उचित रक्षा करना, यह अध्यात्मवाद है। गायत्री कहती है कि हम आत्मा हैं, इसलिए हमारा सर्वोपरि स्वार्थ आत्मपरायणता में है। हमें आत्मवादी बनना चाहिए और आत्मकल्याण, आत्मचिंतन, आत्मोन्नति एवं आत्मगौरव की सबसे अधिक चिंता करनी चाहिए। आत्मकल्याण के लिए, आत्मोन्नति के लिए, आत्मगौरव के लिए प्रयत्नशील रहें और समाज सेवा द्वारा विराट पुरुष विश्वमानव परमात्मा की पूजा करें।

भुवः—हमें कर्मयोग का संदेश देता है, क्योंकि इसी आधार पर समस्त प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है। हम बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और विवेकपूर्वक निर्णय करें कि हमें सत्परिणाम के लिए, जीवन-विकास के लिए क्या करना है, जो करना हो, उसमें तत्परतापूर्वक जुट जाएँ। यदि अपना कर्त्तव्यपालन किया जा रहा है, तो असफलता में दुखी या सफलता में हर्षोल्लास होने का कोई कारण नहीं। फल देने वाली शक्ति दूसरी है। हम तो अपना कर्त्तव्य पूरा करें। यह भावना अनासक्त योग है। जो इस दृष्टिकोण से सोचता है, वह सदा प्रसन्न ही रहता है। दुःख या कष्ट में भी उसे अप्रसन्नता का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता।

स्वः—मन को अपने में अंदर स्थिर रखो। अपने भीतर दृढ़ रहो। घटनाओं और परिस्थितियों को जल-तरंगें समझो, उनमें क्रीड़ा-कलोल का आनंद लो। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही स्थितियों का रसास्वादन करो, किंतु उनके कारण अपने को उद्विग्न, अस्थिर, असंतुलित मत होने दो। इन हर्ष-शोक की बाल-क्रीड़ाओं में न उलझे रहकर, हमें आत्मपरायण होना चाहिए। स्वः को पहचानना चाहिए। आत्मचिंतन, आत्मविश्वास, आत्मगौरव, आत्मनिष्ठा, आत्मसाधन, आत्मोन्नति, आत्मनिर्माण, ये वे कार्य हैं, जिनमें हमारी इच्छाशक्ति, कल्पनाशक्ति व क्रियाशक्ति का उपयोग होना चाहिए, क्योंकि अंदर का मूल केंद्र, उद्गम स्रोत आत्मा ही है। आत्मस्थित मनुष्य का अंतःस्थल स्वस्थ होने से वह सदा प्रसन्न रहता है।

तत्—जीवन और मरण के रहस्य को समझो, भय और आसक्ति रहित होकर जिओ और वास्तविकता के सुदृढ़ आधार पर अपनी गतिविधियों का निर्माण करो। यदि हम जीवन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के क्षणों का सदुपयोग करें, उसकी हर एक घड़ी को केवल आत्मलाभ के सच्चे स्वार्थ के लिए लगाएँ, तो चाहे आज, चाहे कल जब भी मृत्यु सामने आएगी, किसी भी प्रकार का पश्चात्ताप या दुःख न करना पड़ेगा।

सवितुः—सूर्य के समान तेजस्वी बनो। सप्त बलों को अपनी जीवन रथ में जुता रखो। अपने भाग्य के, अपनी परिस्थितियों के निर्माता हम स्वयं है। अपनी क्षमता के आधार पर अपनी हर एक इच्छा और आवश्यकता को पूरा करने में हम पूर्ण समर्थ हैं। १. शरीरबल, २. बुद्धिबल, ३. विद्याबल, ४. धनबल, ५. संगठनबल, ६. चरित्रबल, ७. आत्मबल, ये सात बल जीवन को प्रकाशित, प्रतिष्ठित, संपन्न और सुस्थिर बनाने के लिए आवश्यक हैं।

वरेण्यं—हम अनिष्ट को छोड़कर श्रेष्ठ चिंतन करें, अशुभ चिंतन को त्यागकर शुभ चिंतन अपनाएँ, जिनसे मानसिक कुढ़न एवं असंतोष से छुटकारा मिले और सर्वत्र हर परिस्थिति में आनंद ही आनंद उपलब्ध हो। किसी मनुष्य की आंतरिक महानता ही उसकी श्रेष्ठता का कारण होती है। हम महान बनें, श्रेष्ठ बनें, संपत्तिवान बनें, पर उसकी आधारशिला भौतिक वस्तुओं पर नहीं, आत्मिक स्थिति पर निर्भर होनी चाहिए।

भर्गो—मनुष्यों को निष्पाप बनना चाहिए। पापों से सावधान रहना चाहिए। पापों के दुष्परिणाम को देखकर उनसे घृणा करें और निरंतर उनको नष्ट करने के लिए संघर्ष करते रहें। यदि पवित्रता की दिशा में हमारा प्रयत्न जारी रहे, तो संसार के समस्त कष्टों एवं भव-बंधनों से छूटकर हम जीवनमुक्ति का स्वर्गीय आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

देवस्य—अशुद्ध दृष्टिकोण से बचकर शुद्ध विचारधारा को अपनाएँ। असुरता की नीति छोड़कर देवत्व की गतिविधियों को स्वीकार करें। उन क्षणिक सुखों, आकर्षणों और प्रलोभनों से बचें, जो भविष्य में दुःख देने वाले हों, जिनके कारण आत्मा को पतन के गहरे गर्त में गिरना पड़ता हो। गायत्री कहती है कि हम देवतत्त्व को विकसित करें, देवत्व को प्रोत्साहन दें। दैवी आत्मसंकेतों का अनुसरण करें।

धीमहि—हम अपने अंदर सद्गुणों को धारण करें। अपने स्वभाव को नम्र, मधुर, शिष्ट, निर्भीक, दयालु, पुरुषार्थी, निरालस्य, श्रमशील बनाएँ तथा व्यवहार में उदारता, सचाई, ईमानदारी, निष्कपटता, भलमनसाहत, न्यायपरायणता, समानता तथा उद्योगशीलता का परिचय दें। उन सभी गुणों, विशेषताओं और योग्यताओं को अपनाएँ, जिनके द्वारा स्वास्थ्य, कीर्ति, प्रतिष्ठा, उच्च पद, धन-वैभव आदि की प्राप्ति होती है। छब्बीस दैवी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संपदाएँ गीता में बताई गईं हैं। इनको संक्षेप में कहना चाहें, तो वे हैं—१. अनुत्तेजना, २. स्वच्छता, ३. विचारशीलता, ४. सहिष्णुता, ५. संयम, ६. शक्ति संचय, ७. उदारता एवं ८. कर्त्तव्यपरायणता। इन गुणों को अपने स्वभाव और अभ्यास में लाना, यह एक उच्चकोटि का धन उत्पन्न करना है।

धियो—किसी भी पुस्तक या व्यक्ति की अपेक्षा विवेक का महत्त्व अधिक है, इसलिए जो बात बुद्धिसंगत हो, विवेकसम्मत हो, अपने योग्य हो, उचित हो, केवल उसी को ग्रहण करना चाहिए। विवेक की कसौटी पर कसकर हम बुराई-भलाई की हर जगह परख कर सकते हैं। हम विवेकवान बनें। विवेक को अपनाएँ। विवेक की कसौटी पर कसकर अपने विचार और कर्मों का निर्धारण करें।

यो नः—हमारी जो भी शक्तियाँ एवं साधन हैं, वे कम हों अथवा अधिक हों, उनके न्यून से न्यून भाग को अपनी आवश्यकता के लिए प्रयोग में लाएँ और शेष को निस्स्वार्थ भाव से अशक्त व्यक्तियों में बाँट दें। जोड़ने और भोगने की मृगतृष्णा में न भटकें। अपनी आवश्यकताएँ कम-से-कम रखें। उन्हें पूरा करने के पश्चात बची हुई शक्ति का अधिक से अधिक भाग अपने निर्बल, पिछड़े हुए, अविकसित, निर्धन, अल्पबुद्धि, अशिक्षित लोगों को अपेक्षाकृत अधिक ऊँचा उठाने में खरच करें। यह ईश्वरीय कार्य में हाथ बँटाना और अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता एवं कर्त्तव्यपरायणता का प्रमाण देना है। यह आत्मसंयम और परमार्थ का दैवी मार्ग हमें 'यो नः' द्वारा बताया गया है। इस पर चलने वाला गायत्री उपासक जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करके रहता है।

प्रचोदयात्—हे भगवान! आप हमें प्रेरणा दीजिए। हमारी बुद्धि को प्रेरित कीजिए। जब बुद्धि में प्रेरणा उत्पन्न हो गई, तो सारे धन, वैभव पैरों तले स्वयं ही लोटेंगे। यदि प्रेरणा नहीं है, तो कुबेर का खजाना पाकर भी आलसी लोग उसे गँवा देंगे। गायत्री के 'प्रचोदयात्' शब्द में एकमात्र सद्बुद्धि को प्रेरित करने की याचना परमात्मा से की गई है। आप किसी को निरुत्साहित मत कीजिए। किसी को ऐसी बात मत कहा कीजिए, जिससे वह आत्मविश्वास खो बैठे, निराशा के गर्त में गिर जाए, वरन आगे बढ़ने में हर एक को प्रोत्साहित किया कीजिए। ऐसा ज्ञान देना, जिससे मनुष्य के विचार ऊँचे उठते हों, आत्मा को सन्मार्ग की ओर प्रोत्साहन मिलता हो, सबसे बड़ा दान है। अपने को प्राणवान बनाएँ। दूसरों में प्राण-संचार करें। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी।
शीघ्र मिटनी है इन्हीं से, विश्व की तम-यामिनी॥
है यहीं पर चेतना, है धूप की ऊष्मा यहीं,
शांति-शीतलता नहीं, अन्यत्र है ऐसी कहीं,
प्रेरणा-आत्मानुशासन का सलिल-संगम यहीं,
कर्म और सद्भावना का है विमल उद्गम यहीं,
श्रेष्ठ चिंतन की यहीं सत्प्रेरणा सुखदायिनी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥
है यहीं पर स्रोत अविरल ज्ञान और सुविवेक का,
है यहीं संयम प्रबल आवेश, भावोद्रेक का,
ज्ञान-गरिमा है यहीं पर, भाव-भीनी भक्ति भी,
है गहन गुरुदृष्टि, तो मातृत्व की है शक्ति भी,
मनुजता होगी इन्हीं की, अब सहज अनुगामिनी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥
है यहाँ अनुपम समन्वय, बुद्धि और सद्भाव का,
संगठन संभव यहीं पर है हरेक बिखराव का,
इन्हीं दो सक्षम प्रतीकों की समन्वित शक्ति से,
लोकमंगल हो सकेगा, विश्व में हर व्यक्ति से,
बह सकेगी मनों की मरुभूमि में मंदाकिनी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥
रखेगा विज्ञान पर अध्यात्म, अनुशासन यहीं,
भ्रष्ट मन में भर सकेगा, शुभ सृजन-चिंतन यहीं,
मानवी मन में सहज, देवत्व का होगा उदय,
श्रेष्ठता-आदर्श की, दुष्प्रवृत्ति पर होगी विजय,
कल समूचा विश्व इस उपकार का होगा ऋणी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥

—शचींद्र भटनागर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन-दर्शन के दो मुख्य बिंदु हैं। प्रखर प्रज्ञा मानव मस्तिष्क के असीम सामर्थ्य, बुद्धितत्त्व का प्रतीक है। इसी प्रकार सजल श्रद्धा हृदय की सरल, तरल, रागात्मक भाव-संवेदना का सांकेतिक प्रतीक है। संक्षेप में इन्हें बुद्धि और हृदय कह सकते हैं। गायत्री परिजन गुरुदेव को प्रखर प्रज्ञा और वंदनीया माताजी को सजल श्रद्धा का स्वरूप मानते हैं जो प्रकारांतर से ठीक ही है।

जयशंकर प्रसाद के सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायिनी' में इन दो तत्त्वों को श्रद्धा और इड़ा के रूप में चित्रित किया गया है। श्रद्धा और इड़ा के द्वंद्वात्मक संघर्ष में ही मनु (मन) का आध्यात्मिक विकास हुआ है। मानव मन श्रद्धा से विमुख हो इड़ा की शरण में जाकर अपूर्व भौतिक विकास करता है, किंतु इड़ा के साथ दुराचार करने की चेष्टा में स्वनिर्मित आयुधों से ही आहत हो जाता है। श्रद्धा पुनः उसे मिलती है और आध्यात्मिक शांति का मार्ग दिखलाती है। श्रद्धा और इड़ा के समन्वय से जड़-चेतन की समरसता और आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है।

महर्षि अरविंद के दर्शन में इस समन्वय को चेतनावाद कहा गया है। मानव-मन की सूक्ष्म चेतना, हृदय और बुद्धि के समन्वय से एक नए समाज और नए लोक का निर्माण कर सकती है। परमपूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन-दर्शन में अरविंद की अतिचेतना को आगे बढ़ाते हुए प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा के समन्वय की संकल्पना की है, जिसके द्वारा मानव के चरित्र में दैवीय गुणों का प्रादुर्भाव होगा। इसे वे मानव में देवत्व का उदय कहते हैं। इस स्थिति के बाद यह धरती स्वर्ग की काल्पनिक विभूतियों से प्रत्यक्ष रूप में भर जाएगी, इसे वे धरती पर स्वर्ग का अवतरण कहते हैं। मानव के विकास की यह संकल्पना ही गुरुदेव के दर्शन का प्राणबिंदु है।

हम इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं, तो १९वीं सदी के प्रारंभ में यूरोप का अभूतपूर्व औद्योगिक विकास हुआ। इसे औद्योगिक क्रांति का नाम दिया गया। इस क्रांति ने मनुष्य को इतनी सुख-सुविधाएँ प्रदान कीं, जिससे लगने लगा कि अब धरती पर स्वर्ग के अवतरण की वेला आ गई है। औद्योगिक क्रांति में मनुष्य के बुद्धितत्त्व (प्रखर प्रज्ञा) के अवदान ही प्रमुख थे। मनुष्य का हृदय पक्ष (सजल श्रद्धा) उपेक्षित हो गया था, इसलिए यह विकास केवल भौतिक रहा, जिससे मानव में देवत्व का उदय नहीं हो सका। मनुष्य की क्रूरता और धनलोलुपता ने प्रथम विश्वयुद्ध को जन्म दिया। विज्ञान के समस्त अनमोल अवदान विनष्ट हो गए। यह विनाश सजल श्रद्धा की उपेक्षा का परिणाम था।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भी मनुष्य की चेतना ने अपनी भूल को स्वीकार नहीं किया और विज्ञान ने बुद्धितत्त्व के सहारे नए यांत्रिक युग के नूतन क्षितिज का निर्माण किया। इसे प्रौद्योगिकी क्रांति कहते

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। प्रौद्योगिकी के विकास ने मनुष्य के लिए फिर एक नई सभ्यता का द्वार खोल दिया, किंतु यह विकास भी एकांगी ही रहा। सजल श्रद्धा यहाँ भी उपेक्षित ही रही। यूरोप के कुछ देश विशेषकर जर्मनी और इटली ने प्रौद्योगिकी के माध्यम से जो कुछ गौरव प्राप्त किया, उसने हिटलर और मुसोलिनी जैसे तानाशाहों को जन्म दिया। सजल श्रद्धा की उपेक्षा से मानव में देवत्व का उदय न हो सका। धरती पर स्वर्ग-अवतरण की कल्पना तो दूर विश्व ने द्वितीय महायुद्ध की संरचना कर डाली। विश्व की संपूर्ण अर्थव्यवस्था चरमरा गई। सजल श्रद्धा के अभाव में विज्ञान की महान उपलब्धियाँ नकारात्मक हो गईं।

आज मानव सभ्यता कंयूटर युग में पहुँच चुकी है। संचार के साधनों ने संपूर्ण विश्व को एक परिवार का रूप दे दिया है। यह युग विज्ञान का चरम उत्कर्ष काल है। मनुष्य के हाथ में परमाणु शक्ति की अलौकिक उपलब्धि आ चुकी है। यह पृथ्वी अब मनुष्य को नया आवेग और नया रस नहीं दे रही है। इसलिए उसकी मेधा किसी नए लोक की खोज में अंतरिक्ष की ओर निहार रही है। हमारे रॉकेट चंद्रमा और मंगल की ओर दौड़ने लगे हैं, लेकिन मनुष्य की यह विजय उसकी वास्तविक विजय नहीं है। वास्तविक विजय तो तब होगी, जब वह मनुष्य की दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेगा। यह कार्य सजल श्रद्धा के विकास से ही संभव है। यह चिंता का विषय है कि हम आज भी सजल श्रद्धा को नहीं अपना सके। इसलिए संपूर्ण वैभव पाकर भी मनुष्य दरिद्र, चिंतित और भयभीत है। भविष्य के प्रति इतना अनिश्चय, जीवन के प्रति इतना संत्रास और भावनाओं के प्रति इतनी क्रूरता मनुष्य में पहले कभी नहीं उपजी थी।

हम जानते हैं कि आज संसार परमाणु बम की ढेरी पर बैठा है। एक चिनगारी मानव सभ्यता को विनष्ट कर सकती है। विभिन्न राष्ट्रों ने इतने परमाणु बम बना लिए हैं कि मानव सभ्यता को अनेक बार नष्ट किया जा सकता है। ऐसा क्यों हुआ? हम प्रगति के मार्ग में कहाँ भटक गए? इन प्रश्नों का उत्तर एक ही है—सजल श्रद्धा की उपेक्षा और प्रखर प्रज्ञा का एकांगी विकास। यह भय तभी समाप्त होगा, जब हम प्रखर प्रज्ञा का समन्वय सजल श्रद्धा के साथ करेंगे। परमाणु शक्ति चाहे कितनी ही प्रबल क्यों न हो, वह स्वयं बम के रूप में परिवर्तित नहीं हो सकती। मनुष्य की दुर्भावना ही इसे बम का रूप देती है। यदि मनुष्य चाहे तो परमाणु बम को अतल सागर में विसर्जित कर सकता है, इसलिए सजल श्रद्धा से पूर्ण मानव चेतना ही मानव सभ्यता को भयमुक्त कर सकती है। आज हम २१वीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। नई सभ्यता, नई संस्कृति का स्वर्णिम विहान महाकाल के मस्तक पर प्रकाशवान हो रहा है। यह नवयुग के नवनिर्माण की वेला है। हम प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा के समन्वय से नई भू-संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं। परमपूज्य गुरुदेव के विराट चिंतन में प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा की संकल्पना इसी रूप में प्रस्फुटित हुई। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुझा सकेगी इसे न झंझा

युगऋषि ने युग का तम हरने, क्रांति मशाल जलाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

एक बार भर दिया हृदय-रस, इसमें ऋषि ने अपना।
और सदा प्रज्वलित रहे, देखा है ऐसा सपना॥
यह युग-व्यापी अंधकार, तब ही तो मिट पाएगा।
और रोशनी का वर्चस्व, प्रतिष्ठित हो जाएगा॥

तुम्हीं इसे प्रज्वलित रखोगे, ऐसी आस लगाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

अतः याद रखना है, इसका स्नेह न चुकने पाए।
भले हमारे रक्त-कोष की, बूँद-बूँद चुक जाए॥
हृदय न हो संकीर्ण, कोष अपना खाली करने में।
प्राण न सकुचाएँ जग में, अपना प्रकाश भरने में॥

हृदय-राग से हो सिंचित, जो अरुण लालिमा छाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

संकल्पों की दृढ़ता इसको, थामे सदा रहेगी।
तम का अंतिम संस्कार कर, जय की कथा कहेगी॥
ऊँचा सदा रहेगा हाथ, न नीचे कभी झुकेगा।
लक्ष्यप्राप्ति से पूर्व न, सृजन-कारवाँ कभी रुकेगा॥

बुझा सकेगी इसे न झंझा, पछुआ या पुरवाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

—माया वर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल

जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण करने के लिए जिस विचारक्रांति की मशाल इस ज्ञानयज्ञ के अंतर्गत जल रही है, उसके प्रकाश में अपने देश और समाज का आशाजनक उत्कर्ष सुनिश्चित है। स्वतंत्र चिंतन के अभाव ने हमें मूढ़ता और रूढ़िवादिता के गर्त में गिरा दिया। मानसिक दासता ने हमें हर क्षेत्र में दीन-हीन और निराश-निरुपाय बनाकर रख दिया है। इस स्थिति को बदले बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। मानसिक मूढ़ता में ग्रसित समाज के लिए उद्धार के सभी द्वार बंद रहते हैं। प्रगति का प्रारंभ चिंतन से होता है। लाभ में विवेकवान रहते हैं। समृद्धि साहसी के पीछे चलती है। इन्हीं सत्प्रवृत्तियों का जनमानस में रोपण और अभिवर्द्धन करना अपनी विचारक्रांति का एकमात्र उद्‌देश्य है। ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल इसी दृष्टि से प्रज्वलित की गई है।

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''नवनिर्माण की लाल मशाल में हमने वर्चस्व का तेल टपकाकर उसे प्रकाशवान रखा है। अब परिजनों की जिम्मेदारी है कि वे उसे जलती रखने के लिए हमारी ही तरह अपने अस्तित्व के सार-तत्त्व को टपकाएँ। परिजनों पर यही कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व छोड़कर इस आशा के साथ हम विदा हो रहे हैं कि महानता की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रवृत्ति अपने परिजनों में घटेगी नहीं बढ़ेगी ही।

गायत्री तपोभूमि स्थित युग निर्माण योजना का केंद्र हमारी जलाई हुई मशाल को भविष्य में हमसे भी अच्छी तरह जलाए रखने में समर्थ होगा। इस ईश्वरीय प्रयोजन के पीछे भगवान का, हमारे गुरुदेव का, हमारा तथा उत्तराधिकारियों के भावभरे पुरुषार्थ का जो प्रचंड बल है, वह उसे घटने या गिरने न देगा। अभियान गतिशील होगा और विश्वमानव के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करेगा।

समर्थ गुरुदीक्षा दे सकने योग्य अभी कोई अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं। असमर्थ व्यक्ति यह महान उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठा लेंगे, तो उनकी कमर टूट जाएगी और जो उनका आश्रय लेगा, वह डूब जाएगा, इसलिए भविष्य में गायत्री मंत्र की दीक्षा लेनी आवश्यक हो, तो लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु बनाया जाए। उक्त संस्कार संकल्प को कोई भी करा सकेगा, पर वह स्वयं गुरु न बन सकेगा। जैसे सिक्खों में गुरुग्रंथ साहब और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ध्वज को ही गुरु के रूप में अंगीकार किया गया है, उसी प्रकार गायत्री परिवार युग निर्माण अभियान के अंतर्गत लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु के रूप में मान्यता दी जाती है। ज्ञानक्रांति की लाल मशाल युग शक्ति के प्रतीक

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रूप में विकसित हुई है। इस प्रतीक और उसके साथ जुड़े विचार-दर्शन की जानकारी सबको होनी चाहिए। जनसमूह-भली चाह, अच्छी सोच वाले सभी वर्गों के नर-नारी हैं। हाथ-समूह की संगठित शक्ति है। मशाल-नवसृजन का संकल्प है। लौ-नवसृजन के लिए दिव्य ऊर्जा अनुदान है। प्रभा मंडल-ईश्वरीय चेतना का सतत संरक्षण है।

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल में मेरे हर प्रियजन को कुछ श्रद्धा-स्नेह डालते ही रहना है, इसे किसी भी कीमत पर बुझने नहीं देना है। इस अनुरोध की ओर से मुँह मोड़कर हम उस कृपणता का ही परिचय देंगे, जिसमें आत्मधिक्कार और लोकोपवाद की भर्त्सना की जलन ही पल्ले बँधेगी।

इन दिनों स्रष्टा की अदम्य और प्रचंड अभिलाषा एक ही है कि इस सड़ी दुनियाँ को बदलने में कायाकल्प जैसा नया सुयोग बनाया जाए। यही है इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य। यही है मनुष्य में देवत्व का उदय और प्रतिभा-परिष्कार का महाभियान। इसी को लोग विचारक्रांति की लाल मशाल का प्रज्वलन भी कहते हैं। इस दैवीय उत्कंठा की पूर्ति में जो जितना सहायक बनेंगे, वे उतना ही अपने को समग्र रूप से कृतकृत्य हुआ अनुभव करेंगे।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हमारा संकल्प

लक्ष्य विशाल विस्तृत है। जनमानस के परिष्कार के लिए प्रज्वलित ज्ञानयज्ञ की, विचारक्रांति की, लाल मशाल के टिमटिमाते रहने से काम नहीं चलेगा। उसके प्रकाश को प्रखर बनाने के लिए जिस तेल की आवश्यकता है, वह पूज्य गुरुदेव की प्रत्येक संतान के भावभरे त्याग से निचोड़ा जा सकेगा। मनुष्य में देवत्व का उदय संसार के समस्त उत्पादनों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण उपार्जन है। इस कृषि कर्म में हमें शीत व वर्षा की परवाह न करके निष्ठावान कृषक की तरह लगना चाहिए। धरती पर स्वर्ग का अवतरण एक नंदन वन खड़ा करने के समान है।

पूज्य गुरुदेव के आदर्शों की रक्षा और युग निर्माण योजना के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी हमें सौंपी गई है। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस जिम्मेदारी को गायत्री तपोभूमि एवं शांतिकुंज के सभी कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को भुलाकर परस्पर एक शक्ति, एक मन होकर काम करके पूरा करेंगे। परम पूज्य गुरुदेव ने हमारे हाथों में जो नवजागृति की मशाल सौंपी है। जब तक हमारे शरीरों में रक्त की एक भी बूँद शेष रहती है, तब तक उसे बुझने न देंगे, भले ही अपना सारा जीवन ही जल-खप जाए। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि की अभिलाषा

हमारे अंतराल में ऐसे अनुयायी ढूँढ़ने की बेचैनी है, जो अपना जीवनक्रम साधु-ब्राह्मण की परंपरा अपनाकर संयम और तप से श्रीगणेश करें, समग्र अध्यात्म का अवलंबन स्वीकार करें। मात्र पूजा-पत्री से ही सब कुछ मिल जाने के भ्रम-जंजाल में न भटकें, उपासना, साधना और आराधना की वे तीनों ही शर्तें पूरी करें, जो आध्यात्मिक विभूतियाँ उपार्जित करने के लिए आवश्यक हैं। बात कहने-सुनने भर से नहीं बनती। कदम उठाना और साहस करना पड़ता है। जो कर गुजरते हैं, वे नफे में रहते हैं। आदर्शों पर चलने का मार्ग ऐसा है जिसमें आरंभ के दिनों में थोड़ी कशमकश सहनी पड़ती है, बाद में तो संतोष और श्रेय दोनों ही मिलते हैं। हम यह प्रयत्न करेंगे कि जहाँ कहीं भी जाग्रत स्तर की आत्माएँ हों, वे हमारा उद्‌बोधन, परामर्श, अनुरोध व आग्रह सुनें, समझें कि यह समय ऐतिहासिक है। जिनका अंतराल युग चेतना से अनुप्राणित हो, उनका एक ही कर्त्तव्य है कि न्यूनतम में निर्वाह करने और अधिकतम युगधर्म में विसर्जित करने की बात सोचें। यदि साहस साथ दे, तो उसे कर गुजरें। इसमें संबंधियों, कुटुंबियों, मित्रों की सहमति मिलने की प्रतीक्षा न करें। विचारक्रांति के युगधर्म का परिपालन करने के लिए एकनिष्ठ भाव से जुट पड़ें। आज की समस्याएँ अगणित हैं। उनके स्वरूप और प्रतिफल भी भिन्न हैं, किंतु यह मानकर चलना होगा कि सभी का निमित्त कारण एक ही है— चिंतन में विकृतियों का भर जाना। आस्था संकट ही अपने युग का सबसे बड़ा विनाश का कारण है। इससे बड़ा दुर्भिक्ष और कोई नहीं हो सकता। निराकरण का उपाय भी एक ही है, उलटे को उलटकर सीधा करना। यदि लोकमानस को परिवर्तित, परिष्कृत किया जा सके, तो हर समस्या सरलतापूर्वक सुलझने लगेगी। जिन्हें अपना ढिंढोरा पिटवाना ही अभीष्ट है, वे चित्र-विचित्र योजनाएँ बनाते रहें, पर जिन्हें एक ही चाबी से सब ताले खोलने का मन हो, वे विचार परिवर्तन के कार्य को सर्वोपरि मानकर उसी से संबंधित कार्यों में हाथ डालें। आप दुनियाँ की समस्याओं को सुलझाने के लिए, गए-गुजरे लोगों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने के लिए कदम बढ़ाएँ। अपने आप को त्याग के लिए, बड़े कामों के लिए समर्पित कीजिए। यही तो परीक्षा का समय है। अगर आप में हिम्मत है और आपका विवेक साथ देता है, तो मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि नए युग के निर्माण जैसे बड़े कार्यों में अपना समय लगाइए। फिर देखिए आप कितने मजे में, कितने खुशहाल, कितने प्रसन्नचित्त रहते हैं और आपको कितना संतोष, सम्मान और भगवान का अनुग्रह मिलता है। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरी अंतिम इच्छा

मेरी अपने बच्चों, गायत्री परिवार के रूप में फैले अगणित परिजनों से एक ही अपेक्षा है कि वे समय की विषमता को समझें और इस संधिकाल में बढ़-चढ़कर समय व साधन के निमित्त महाकाल को कुछ अर्पित करने आगे आएँ। एकजुट होकर सभी एक विराट परिवार के सदस्य बनकर वसुधैव कुटुंबकम् का स्वप्न साकार करें। देव संस्कृति का प्रकाश घर-घर पहुँचाएँ। जन-जन के जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आए, ऐसा सूक्ष्म जगत में संव्याप्त ऋषिसत्ताएँ चाहती हैं। पूज्यवर उसी रूप में सक्रिय हों, युग परिवर्तन का कार्य सूक्ष्म व कारण रूप में कर रहे हैं। मेरे बच्चों के कंधे मजबूत हों, वे अपने उत्तरदायित्व सँभालें और किसी भी नियमित क्रम में व्यतिक्रम न आने दें। इस धरा को स्वर्गोपम बनाने के लिए सभी की संवेदना पनपे, विकसित हो तथा हम शीघ्र ही देव संस्कृति को विश्व संस्कृति के रूप में फैलता देखें, यही मेरी आकांक्षा है। सभी को मेरे कोटि-कोटि आशीर्वाद।

— भगवती देवी शर्मा

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि की तपस्थली—गायत्री तपोभूमि

परमपूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की २४ महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना है—गायत्री तपोभूमि, मथुरा। यह एक संस्कारित तपस्थली एवं सिद्ध गायत्री पीठ है। इसका निर्माण गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया। इसकी स्थापना से पूर्व २४०० तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके उनका पूजन किया गया। एक छोटी किंतु भव्य यज्ञशाला में हिमालय के महान सिद्धयोगी की धूनि से ७०० वर्ष पुरानी अखंड अग्नि की स्थापना यज्ञ कुंड में की गई और एक गायत्री माता का मंदिर विनिर्मित किया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने ३०-५-१९५३ से २२-६-१९५३ तक २४ दिन का उपवास मात्र गंगाजल पर किया और वेदमाता गायत्री की मूर्ति की स्थापना एवं प्राण-प्रतिष्ठा की गई। २४ सौ करोड़ गायत्री मंत्र लेखन नैष्ठिक साधकों द्वारा श्रद्धापूर्वक कराकर यहाँ पर सुरक्षित रखा गया। इसी अवधि में अन्य कार्य भी होते रहे, जैसे २४ लाख गायत्री मंत्र जप, सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ, यजुर्वेद व गीता के पारायण, गायत्री सहस्रनाम, गायत्री कवच, रुद्राष्टाध्यायी, दुर्गा सप्तशती, रामायण आदि के पाठ, महामृत्युंजय जप, ६० हजार आहुतियाँ आदि।

वसंत पंचमी सन् १९५५ से १५ माह तक निरंतर यज्ञशाला में विशद गायत्री महायज्ञ की शृंखला में गायत्री महायज्ञ के साथ विशेष सरस्वती यज्ञ, रुद्र यज्ञ, महामृत्युंजय जप यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शत चंडी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, चारों वेदों के मंत्र यज्ञ, ऋग्वेद यज्ञ, सामवेद यज्ञ, अथर्ववेद यज्ञ, ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम आदि श्रौत यज्ञ एक-एक माह तक होते रहे। इन यज्ञों की पूर्णाहुति २०-४-५६ से २५-४-५६ तक नवरात्रों में १०८ कुंडों में की यज्ञशाला से पाँच-छह हजार व्यक्तियों द्वारा १२५ लाख आहुतियों द्वारा हुई। १२५ करोड़ गायत्री मंत्र जप किया गया। २५० ज्ञान मंदिरों की स्थापना की गई। नरमेध यज्ञ में कई व्यक्तियों ने जीवन दान दिया। दिनांक २०-४-५६ को परमपूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के द्वारा सभी भौतिक पदार्थ जेवर, पुस्तक, प्रेस, जमीन आदि सब कुछ गायत्री माता को दान कर दी गई।

दिनांक २३-११-५८ से २६-११-५८ तक इस युग के महानतम सहस्रकुंडीय गायत्री यज्ञ का सूत्रपात इसी तपस्थली से किया गया, जिसमें ४ लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। १०२४ कुंडों की १०८ यज्ञशालाओं में प्रतिदिन १ लाख होताओं के द्वारा २४ लाख आहुतियाँ, २४ करोड़ गायत्री मंत्र जप, सवा लाख गायत्री मंत्र लेखन व सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ किए गए। इस महायज्ञ की प्रचंड ऊर्जा ने सारे देश में यज्ञों की धूम मचा दी। परिणामस्वरूप १९७१ में पाँच बड़े सहस्रकुंडीय यज्ञ महासमुंद (म. प्र.), बहराइच (उ. प्र.), पोरबंदर (गुजरात), भीलवाड़ा (राज.) तथा टाटानगर (बिहार) में संपन्न हुए। इसके उपरांत से यज्ञों की शृंखला निरंतर देश-विदेशों में चल रही है। इसी शृंखला में अनेक अश्वमेध यज्ञ और संस्कार महोत्सवों के रूप में विशाल यज्ञ संपन्न हुए हैं।

हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम, सत्संकल्प तथा युग निर्माण विद्यालय आरंभ करने की घोषणा की। यह स्वावलंबन प्रधान शिक्षा देने वाला तंत्र निरंतर सफलतापूर्वक चल रहा है। परमपूज्य गुरुदेव १९७१ में गायत्री तपोभूमि का दायित्व पं० लीलापत शर्मा को सौंपकर शांतिकुंज, हरिद्वार चले गए, किंतु यहाँ के कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य के प्रकाशन हेतु आधुनिक मशीनों का विस्तृत तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

यह तपोभूमि ऋषि दुर्वासा की तपस्थली है। १९५३ से लाखों महानुभावों ने यहाँ गायत्री अनुष्ठान किए हैं और शिविरों में भाग लिया है। यहाँ प्रतिदिन नियमित जप व अखंड अग्नि में प्रतिदिन यज्ञ होता है। नवरात्रों में सामूहिक अनुष्ठान होते हैं। यहाँ अखंड दीप भी प्रज्वलित है। यहाँ सभी संस्कार निःशुल्क संपन्न कराए जाते हैं। ❒

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

* हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
* शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
* मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
* इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।
* अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
* मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
* समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
* चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
* अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
* मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
* दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
* नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
* संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
* परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
* सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
* राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
* मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
* 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

❒

www.awgp.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उठो! हिम्मत करो

स्मरण रखिए, रुकावटें और कठिनाइयाँ आपकी हितचिंतक हैं। वे आपकी शक्तियों का ठीक-ठीक उपयोग सिखाने के लिए हैं। वे मार्ग के कंटक हटाने के लिए हैं। वे आपके जीवन को आनंदमय बनाने के लिए हैं। जिनके रास्ते में रुकावटें नहीं पड़ीं, वे जीवन का आनंद ही नहीं जानते। उनको जिंदगी का स्वाद ही नहीं आया। जीवन का रस उन्होंने ही चखा है, जिनके रास्ते में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ आईं हैं। वे ही महान आत्मा कहलाए हैं, उन्हीं का जीवन, जीवन कहला सकता है।

उठो ! उदासीनता त्यागो । प्रभु की ओर देखो। वे जीवन के पुंज हैं। उन्होंने आपको इस संसार में निरर्थक नहीं भेजा। उन्होंने जो श्रम आपके ऊपर किया है, उसको सार्थक करना आपका काम है। यह संसार तभी तक दुःखमय दीखता है, जब तक कि हम इसमें अपना जीवन होम नहीं देते। बलिदान हुए बीज पर ही वृक्ष का उद्भव होता है। फूल और फल उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध करते हैं।

सदा प्रसन्न रहो। मुसीबतों का खिले चेहरे से सामना करो। आत्मा सबसे बलवान है, इस सचाई पर दृढ़ विश्वास रखो। यह विश्वास ईश्वरीय विश्वास है। इस विश्वास द्वारा आप सब कठिनाइयों पर विजय पा सकते हैं। कोई कायरता आपके सामने ठहर नहीं सकती। इसी से आपके बल की वृद्धि होगी। यह आपकी आंतरिक शक्तियों का विकास करेगा। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४०, पृष्ठ ९*

www.vicharkrantibooks.org

आनंद की खोज

आनंद की खोज में भटकता हुआ इनसान, दरवाजे-दरवाजे पर टकराता फिरता है। बहुत-सा रुपया जमा करें, उत्तम स्वास्थ्य रहे, सुस्वाद भोजन करें, सुंदर वस्त्र पहनें, बढ़िया मकान और सवारियाँ हों, नौकर-चाकर हों, पुत्र, पुत्रियों, बंधुओं से घर भरा हो, उच्च अधिकार प्राप्त हों, समाज में प्रतिष्ठा हो, कीर्ति हो। ये चीजें आदमी प्राप्त करता है। जिन्हें ये चीजें उपलब्ध नहीं होतीं, वे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जिनके पास हैं, वे उससे अधिक लेने का प्रयत्न करते हैं।

इन सब तसवीरों में आनंद की खोज करते-करते चिरकाल बीत गया, पर राजहंस को ओस ही मिली। मोती! उसकी तो खोज ही नहीं की, मानसरोवर की ओर तो मुँह ही नहीं किया, लंबी उड़ान भरने की तो हिम्मत ही नहीं बाँधी। मन ने कहा-जरा इसे और देख लूँ। आँखों से न दीख पड़ने वाले मानसरोवर में मोती मिल ही जाएँगे, इसकी क्या गारंटी है? फिर ओस चाटी और फड़फड़ाया, फिर यही पहिया चलता रहता है। आपने उनमें खोजा, कुछ क्षण पाया भी, परंतु ओस की बूँदें ठहरीं, वे दूसरे ही क्षण जमीन पर गिर पड़ीं और धूल में समा गईं।

यही नष्ट होने की आशंका अधिक संचय के लिए प्रेरित करती रहती है, फिर भी नाशवान चीजों का नाश होता ही है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च-१९४०, पृष्ठ ३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले दो, पीछे पाओ

यह प्रश्न विचारणीय है कि महापुरुष अपने पास आने वालों से सदैव याचना ही क्यों करता है? मनन के बाद मेरी निश्चित धारणा हो गई कि त्याग से बढ़कर प्रत्यक्ष और तुरंत फलदायी और कोई धर्म नहीं है। त्याग की कसौटी आदमी के खोटे-खरे रूप को दुनियाँ के सामने उपस्थित करती है। मन में जमे हुए कुसंस्कारों और विकारों के बोझ को हलका करने के लिए त्याग से बढ़कर अन्य साधन हो नहीं सकता।

आप दुनियाँ से कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, विद्या, बुद्धि संपादित करना चाहते हैं, तो त्याग कीजिए। गाँठ में से कुछ खोलिए। ये चीजें बड़ी महँगी हैं। कोई नियामत लूट के माल की तरह मुफ्त नहीं मिलती। दीजिए, आपके पास पैसा, रोटी, विद्या, श्रद्धा, सदाचार, भक्ति, प्रेम, समय, शरीर जो कुछ हो, मुक्त हस्त होकर दुनियाँ को दीजिए, बदले में आपको बहुत मिलेगा। गौतम बुद्ध ने राजसिंहासन का त्याग किया, गांधी ने अपना बैरिस्टरी छोड़ी, उन्होंने जो छोड़ा था, उससे अधिक पाया। विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर अपनी एक कविता में कहते हैं, "उसने हाथ पसारकर मुझ से कुछ माँगा। मैंने अपनी झोली में से अन्न का एक छोटा दाना उसे दे दिया। शाम को मैंने देखा कि झोली में उतना ही छोटा एक सोने का दाना मौजूद था। मैं फूट-फूटकर रोया कि क्यों न मैंने अपना सर्वस्व दे डाला, जिससे मैं भिखारी से राजा बन जाता।" *—अखण्ड ज्योति-मार्च-१९४०, पृष्ठ ९*

उद्देश्य ऊँचा रखें

मिट्टी के खिलौने जितनी आसानी से मिल जाते हैं, उतनी आसानी से सोना नहीं मिलता। पापों की ओर आसानी से मन चला जाता है, किंतु पुण्य कर्मों की ओर प्रवृत्त करने में काफी परिश्रम करना पड़ता है। पानी की धारा नीचे पथ पर कितनी तेजी से अग्रसर होती है, किंतु अगर ऊँचे स्थान पर चढ़ाना हो, तो पंप आदि लगाने का प्रयत्न किया जाता है।

बुरे विचार, तामसी संकल्प, ऐसे पदार्थ हैं, जो बड़ा मनोरंजन करते हुए मन में धँस जाते हैं और साथ ही अपनी मारक शक्ति को भी ले आते हैं। स्वार्थमयी नीच भावनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करके जाना गया है कि वे काले रंग की छुरियों के समान तीक्ष्ण एवं तेजाब की तरह दाहक होती हैं। उन्हें जहाँ थोड़ा-सा भी स्थान मिला कि अपने सदृश और भी बहुत-सी सामग्री खींच लेती हैं। विचारों में भी पृथ्वी आदि तत्त्वों की भाँति खिंचने और खींचने की शक्ति होती है। तदनुसार अपनी भावना को पुष्ट करने वाले उसी जाति के विचार उड़-उड़कर वहीं एकत्रित होने लगते हैं।

यही बात भले विचारों के संबंध में है। वे भी अपने सजातियों को अपने साथ इकट्ठे करके बहुकुटुंबी बनने में पीछे नहीं रहते। जिन्होंने बहुत समय तक बुरे विचारों को अपने मन में स्थान दिया है, उन्हें चिंता, भय और निराशा का शिकार होना ही पड़ेगा। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल-१९४०, पृष्ठ १०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम ईश्वर को पूजते हो या शैतान को

मनुष्य, शरीर को 'मैं' समझता है। उसने एक जनश्रुति ऐसी अवश्य सुन रखी होती है कि आत्मा शरीर से भिन्न है, परंतु इस पर उसका विश्वास नहीं होता। हम सब शरीर को ही यदि आत्मा न मानते होते, तो यह भारत भूमि दुराचारों का केंद्र न बन गई होती। गीता में भगवान कृष्ण ने अपना उपदेश आरंभ करते हुए अर्जुन को यही दिव्य ज्ञान दिया है, "तू देह नहीं है।" आत्मस्वरूप को जिस प्रकार विस्मरण कर दिया गया है, उसी प्रकार ईश्वर को भी दृष्टि से ओझल कर दिया गया है।

हमारे चारों ओर जो घोर अज्ञानांधकार छाया हुआ है, उसके तम में कुछ और ही वस्तुएँ हमारे हाथ लगी हैं और उन्हें ईश्वर मान लिया है। रस्सी को साँप मान लेने का उदाहरण प्रसिद्ध है। रस्सी का स्वरूप कुछ-कुछ सर्प से मिलता-जुलता है। अंधेरे के कारण ज्ञान ठीक प्रकार काम नहीं करता, फलस्वरूप भ्रम सच्चा मालूम होता है। रस्सी सर्प का प्रतिनिधित्व भली प्रकार करती है। इस गड़बड़ी के समय में ईश्वर के स्थान पर शैतान विराजमान हो गया है और उसी को हम लोग पूजते हैं। आत्मा पंचतत्त्वों से सूक्ष्म है। पंचतत्त्व के रसों को इन्हीं तत्त्वों से बना हुआ शरीर भोग सकता है।

आत्मा तक कड़ुआ-मीठा कुछ नहीं पहुँचता। यह तो केवल इंद्रियों की तृप्ति-अतृप्ति को अपनी तृप्ति मानना भर है। *—अखण्ड ज्योति-मई-१९४०, पृष्ठ ६*

आत्मिक तृप्ति का आधार

संसार के प्रमुख दार्शनिकों का मत है कि जीव की स्वाभाविक इच्छा और अभिलाषा आत्मिक उन्नति की है। भौतिक सुविधाओं को लोग इकट्ठा करते हैं, इंद्रियों के विषय भोगते हैं, पर बारीक दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि ये सब कार्य भी आत्मिक तृप्ति के लिए किए जाते हैं। यह दूसरी बात है कि धुँधली दृष्टि होने के कारण लोग नकल को ही असल समझ बैठें। आपने बड़े परिश्रम से धन इकट्ठा किया है, किंतु विवाह में उसे बड़ी उदारता के साथ खरच कर देते हैं। उस दिन एक पैसे के लिए प्राण दिए मरते थे, आज आप अशरफियाँ क्यों लुटा रहे हैं ? इसलिए कि आज आप धन संचित रखने की अपेक्षा उसे खरच कर डालने में अधिक सुख का अनुभव करते हैं। डाकू जिस धन को जान हथेली पर रखकर लाया था, उसे मदिरा पीने में इस तरह क्यों उड़ा रहा है ? इसलिए कि वह मदिरा पीने के आनंद को धन जोड़ने की अपेक्षा अधिक महत्त्व देता है। बीमारी में, धर्म-कार्यों में या अन्य बातों में काफी पैसा खरच हो जाता है, किंतु मनुष्य कुछ भी रंज नहीं करता। यही पैसा यदि चोरी में चला गया होता तो उसे बड़ा दुःख होता। इन उदाहरणों में आप देखते हैं कि जिनका अमूल्य जीवन धन-संचय में खरच हुआ जा रहा है, वे अपने उस जीवन-रस को भी एक समय बड़ी लापरवाही के साथ उड़ा देते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि उन खरचीले कामों में आदमी अधिक आनंद का अनुभव करता है। *—अखण्ड ज्योति-जून-१९४०, पृष्ठ १६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गीता का कर्मयोग

प्रत्येक व्यक्ति संसार में किसी न किसी विशेष उद्देश्य से आता है और उसका यह एक जन्मजात स्वभाव भी होता है। वह उस विशेष उद्देश्य को पूरा करते हुए स्वभाव के अनुसार कर्म करने में समर्थ होता है। इसके विपरीत जाने के लिए वह स्वतंत्र नहीं। उदाहरण के रूप में अर्जुन को लीजिए, पृथ्वी के भार को दूर करने के विशेष उद्देश्य से उसका जन्म हुआ था। अतएव इस कार्य में वह परतंत्र हुआ। उसे यह कार्य करना ही होगा। ईश्वर समस्त प्राणियों के हृदय में रहता हुआ उन्हें घुमाता रहता है। हमारे शरीर के भीतर जितने रक्त के कण हैं, वे जिस स्थिान पर हैं, वहीं रहने के लिए विवश हैं। कहा जा सकता है कि हमारी शक्ति उनके भीतर है और हम उनको संचालित करते हैं, परंतु वे अपने स्थान पर रहते हुए अपनी चेष्टाओं में स्वतंत्र हैं। ऐसे ही ईश्वर द्वारा नियुक्त स्थान पर रहते हुए, संसार में अपने आने के विशेष उद्देश्य को पूर्ण करते हुए मनुष्य अपनी दूसरी चेष्टाओं में स्वतंत्र है। यही है मनुष्य का कर्म-स्वातंत्र्य। इसीलिए भगवान ने '**कर्मण्येवाधिकारस्ते**' कहा है, केवल कर्म में अधिकार है, स्वभाव परिवर्तन या ईश्वर के दिए स्थान परिवर्तन में नहीं।

मा फलेषु कदाचन्—फल में तेरा अधिकार कभी नहीं है। अत: कर्म का यह फल होगा ही या यह फल होना चाहिए, ऐसा सोचकर कर्म करने वाले सर्वदा दु:ख पाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई-१९४०, पृष्ठ १५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कर्म या पाखंड

कार्य को आरंभ न करने मात्र से व्यक्ति निष्कर्मावस्था का आनंद प्राप्त नहीं करता। शरीर के द्वारा निष्क्रिय हो गए, तो क्या लाभ, क्योंकि बंधन और मोक्ष का कारण तो मन है। मन को निष्क्रिय बनाना है। मन की निष्क्रियता है—कर्म और कर्मफल से अनासक्त रहना।

आलसी बनकर बैठे मत रहो। फल में अपना अधिकार ही नहीं। उद्योग करने पर भी फल प्राप्त होगा, यह निश्चित नहीं। फल प्राप्त हो भी, तो वह प्रारब्ध से होता है, उद्योग उसका कारण नहीं, ऐसा समझकर उद्योग करना ही मत छोड़ दो। कर्म करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। अत: तुम्हें कर्म तो करना ही चाहिए, क्योंकि तुम कर्म को छोड़ नहीं सकते, कर्म करने के लिए विवश हो।

"न कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै: ॥"

कोई उत्पन्न हुआ प्राणी एक क्षण भी बिना कर्म किए नहीं रह सकता। प्रकृति के गुणों से विवश होकर गुणों द्वारा उससे कर्म कराया ही जाता है। सभी इस प्रकार प्रतिक्षण कर्म करते ही रहते हैं। चाहे हम इंद्रियों को रोककर कर्म करने से विरत भी रख सकें, पर मन तो मानने से रहा उसकी उधेड़-बुन तो चला ही करेगी। फिर इस प्रकार इंद्रियों से कर्म न करना कोई अच्छा तो है नहीं। जो मूर्खबुद्धि पुरुष कर्मेंद्रियों को कर्मों से रोककर मन के द्वारा विषयों का चिंतन करता है, वह पाखंडी कहा जाता है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त-१९४०, पृष्ठ १६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मशक्ति का विकास

मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य अपनी आत्मिक शक्तियों का विकास करना है। जो प्राणी इस मनुष्य देह को धारण करके भी अपनी आत्मिक शक्तियों का विकास नहीं करता, अपनी आत्मा के समीप नहीं पहुँचता, वह न इस संसार में शांति प्राप्त कर सकता है और न परलोक को ही सुखमय बना सकता है। इसलिए यदि मनुष्य चाहता है कि उसे सच्ची शांति प्राप्त हो, उसका जीवन सुखमय बने, तो उसे अवश्य अपनी आत्मिक शक्तियों का विकास करना चाहिए, क्योंकि आत्मा ही पूर्ण शांति और सुख का भंडार है। हम भूल करके संसार के विषयों में सुख का अन्वेषण करते हैं, किंतु संसार के विषयों में सुख कहाँ? वे तो जड़ हैं। भला जड़ पदार्थों में सुख कहाँ? जबकि 'सुख' गुण ही चेतन पदार्थ का है, जड़ का नहीं, तो वह बेचारा जड़ पदार्थ हमें कैसे सुख देगा! जो वस्तु स्वयं ही क्षणभंगुर है, वह हमें शाश्वत शांति कैसे देगी! संसार के विषय-भोग तो बालक नचिकेता के कथनानुसार, "कल तक रहने वाले हैं।" उनसे सुख मिलना तो दूर, वे तो हमारी इंद्रियों के तेज और सामर्थ्य को भी नष्ट करने वाले हैं।

सांसारिक विषयों में जो कुछ थोड़ा सुख का भाव भी होता है, वह भी हमारी आत्मा का ही सुख है, उन जड़ पदार्थों का नहीं। हम अपनी आत्मा के ही सुख को संसार का सुख समझकर उनमें भटकते फिरते हैं। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४०, पृष्ठ १३*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सच्चा धर्मात्मा कौन?

सच्चे आध्यात्मिक व्यक्ति के हृदय में प्रेम, ईमानदारी, सत्यता, उदारता, दया, श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के भाव उत्पन्न होते हैं। ये सब आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं। ये ही मनुष्य की स्थायी शक्तियाँ हैं। इनको प्राप्त करने का उस समय तक प्रयत्न करते रहना चाहिए, जब तक कि समस्त जीवन पूरी तरह इनमें रँग न जाए। जिस आदमी में ये सब गुण मौजूद हैं, वास्तव में वही आध्यात्मिक व्यक्ति है। इसी सत्य के आधार पर वह परमात्मा से मिल सकता है।

ईश्वर-भक्ति का मार्ग किसी धर्म विशेष या किसी कर्मकांड में सीमित नहीं है, यह तो आत्मा की गंभीरता में विद्यमान है।

केवल ईश्वर-ईश्वर रटने वाले धर्मात्मा नहीं होते, वरन वे ही व्यक्ति धर्मात्मा होते हैं, जो परमात्मा के आदेशों पर अथवा उनके बताए हुए मार्ग पर चलते हैं। धन्य हैं वे आदमी जो परमात्मा का उपदेश सुनते हैं और उसके अनुसार आचरण करते हैं।

जो आत्मा इस सुंदर जीवन में पदार्पण कर चुकी, उसके लिए अंतर्ज्ञान का दरवाजा खुला हुआ है। शुद्ध हृदय वाले आदमी धन्य हैं, क्योंकि वे ही परमात्मा का दर्शन करेंगे। इस दर्शन में जो आनंद है, उसका वर्णन कौन कर सकता है? *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४१ मुख पृष्ठ*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभु की माया

जो जानता है कि मैं नहीं जानता, पर कहता है कि मैं जानता हूँ वह झूठा है। जो जानता है कि मैं अंश रूप में जानता हूँ और कहता है कि मैं जानता हूँ, वह वास्तव में नहीं जानता है, कारण कि पूर्णरूपेण जानना वास्तव में असंभव ही है।

जो जानता है कि मैं नहीं जानता और कहता है कि मैं नहीं जानता हूँ, वह सत्य कहता है। जो जानता है कि मैं अंश रूप में जानता हूँ और कहता है कि मैं नहीं जानता हूँ, वह कुछ जानता है, पर है वह अधूरा ही। यह भी प्रभु की माया है।

जो जानता है कि मैं जानता भी हूँ और नहीं भी जानता और यही कहता भी है, वह औरों से अधिक जानता है, परंतु जो जानता है कि मैं जानता भी हूँ और नहीं भी जानता, इसी कारण चुप रहता है, किसी से कुछ नहीं कहता, वह वास्तव में बहुत जानता है। इतना जानकर भी जो प्रभु के प्रेम में सब कुछ भूल जाता है, वह प्रभु में लय हो जाता है। वह धन्य है।

वही पूर्णतया जानता है, जो जानकर भी भूल गया है, जो भक्त है, अनन्य प्रेमी है। वह अब क्या बताए? उसके पास बताने की कोई बात ही नहीं है, उसके द्वंद्व मिट चुके हैं। अब कौन बताए और किसे बताए, बताने को धरा ही क्या है? यही प्रभु की माया है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४१, पृष्ठ १४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कर्त्तव्यपालन

जिन कार्यों को करने की हृदय स्वीकृति दे, वही मनुष्य का कर्त्तव्य अथवा धर्म है और हृदय जिन कार्यों को करने की सलाह न दे, उन्हें नहीं करना चाहिए क्योंकि वे अधर्म या अकर्त्तव्य हैं।

जो मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का यथोचित रीति से पालन करता है, उस सदाचारी मनुष्य को कभी भी कोई दु:ख नहीं सहन करना पड़ता। क्योंकि वह ईश्वर की इच्छानुसार कार्य करता है, इसलिए ईश्वर सदैव उस पर दया-दृष्टि रखते हैं। प्राय: ऊपर से देखने पर सदाचारी पुरुष निर्धन और दुखी मालूम होते हैं, पर वास्तव में यह बात नहीं है। सदाचारी पुरुष में असाधारण दैवी शक्ति होती है। जिस पुरुष में वह दैवी शक्ति है, वह दुखी कैसा। सदाचारी पुरुष निर्धन तो हो ही नहीं सकता।

सच पूछा जाए तो सच्चा खजाना सदाचारी के ही पास है। उसका वह खजाना कभी खाली नहीं होता, उसे खरच करने पर बढ़ता ही जाता है। सदाचार के विचारों का चिंतन करने से ही आत्मा को अपार शांति और शीतलता प्राप्त होती है। दुष्टों को सदा अपने दुश्मनों का भय बना रहता है कि कहीं कोई हमारा अनिष्ट न कर दे, पर सदाचारी के पास ये सब बातें कहाँ? वहाँ न कोई दोस्त है और न दुश्मन। उसके लिए तो सारा संसार एकसा है।

ईश्वर चाहता है कि प्राणी इस जगत में अच्छे-अच्छे कार्य करे और अंत में परम मोक्ष को प्राप्त हो।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४१, पृष्ठ २४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टिकोण बदलो

अपनी कठिनाइयाँ हमें पर्वत के समान दुर्भेद्य, सिंह के समान भयंकर और अंधकार के समान डरावनी प्रतीत होती हैं, परंतु यह सब यथार्थ में कुछ नहीं, केवल भ्रम की भावना मात्र है, इनसे डरने का कोई कारण नहीं।

इस बात का शोक मत करो कि मुझे बार-बार असफल होना पड़ता है। परवाह मत करो, क्योंकि समय अनंत है। बार-बार प्रयत्न करो और आगे की ओर कदम बढ़ाओ। निरंतर कर्त्तव्य करते रहो, तुम्हारा एक-एक पग सफलता की ओर बढ़ रहा है, आज नहीं तो कल तुम सफल होकर रहोगे, क्योंकि कर्त्तव्य का निश्चित परिणाम सफलता है।

सहायता के लिए दूसरों के सामने मत गिड़गिड़ाओ, क्योंकि यथार्थ में किसी में भी इतनी शक्ति नहीं है, जो तुम्हारी सहायता कर सके।

किसी कष्ट के लिए दूसरों पर दोषारोपण मत करो, क्योंकि यथार्थ में कोई भी दूसरा तुम्हें दुःख नहीं पहुँचा सकता। तुम स्वयं ही अपने मित्र हो और तुम स्वयं ही अपने शत्रु हो। जो कुछ भली-बुरी स्थितियाँ सामने हैं, वह तुम्हारी पैदा की हुईं हैं। अपना दृष्टिकोण बदल दोगे तो दूसरे ही क्षण यह भय के भूत अंतरिक्ष में तिरोहित हो जाएँगे।

जन्म-जन्मांतरों के सुसंस्कार जब एकत्रित हो जाते हैं, तभी मनुष्य ईश्वर की प्राप्ति के लिए व्यग्र भाव से प्रयत्न करना आरंभ करता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४१, मुख पृष्ठ*

हृदय-मंदिर के अंदर संतोष

जब कभी किसी दुःखद घटना से तुम्हारा मन खिन्न हो रहा है, निराशा के बादल चारों ओर से छाए हुए हों, असफलता के कारण चित्त दुखी बना हुआ हो, भविष्य की भयानक आशंका सामने खड़ी हुई हो, बुद्धि किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रही हो, तो इधर-उधर मत भटको। उस लोमड़ी को देखो, वह शिकारी कुत्तों से घिरने पर भागकर अपनी गुफा में घुस जाती है और वहाँ संतोष की साँस लेती है।

ऐसे विषम अवसरों पर सब ओर से अपने चित्त को हटा लो और अपने हृदय-मंदिर में चले जाओ। बाहर की समस्त बातों को बिलकुल भूल जाओ। पाप-तापों को द्वार पर छोड़कर जब भीतर जाने लगोगे तो मालूम पड़ेगा कि एक बड़ा भारी बोझ, जिसके भार से गरदन टूटी जा रही थी, उतर गया और तुम बहुत ही हलके, रूई के टुकड़े की तरह हलके हो गए हो। हृदय-मंदिर में इतनी शांति मिलेगी, जितनी ग्रीष्म से तपे हुए व्यक्ति को बरफ से भरे हुए कमरे में मिलती है। कुछ ही देर में आनंद की झपकियाँ लेने लगोगे।

हृदय के इस सात्विक स्थान को ब्रह्मलोक या गोलोक भी कहते हैं क्योंकि इसमें पवित्रता, प्रकाश और शांति का ही निवास है। परमात्मा ने हमें स्वर्ग-सोपान सुख प्राप्त करने के लिए दिया है, किंतु अज्ञानतावश मनुष्य उसे जान नहीं पाते। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४१, पृष्ठ ५*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतर्मुखी होने पर ही शांति

अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अंदर डालना चाहिए, अध्यात्म-पथ का अवलंबन लेना चाहिए। जगत में इधर-उधर भटकने वाला प्राणी इसी शीतल वृक्ष के नीचे शांति प्राप्त कर सकता है।

जब बाहर की मायारूपी वस्तुओं के भ्रम से विमुख होकर हम अंतर्मुखी होते हैं, आत्मचिंतन करते हैं, तो प्रतीत होता है कि हम अपने स्थान से बहुत दूर भटक गए थे। आवश्यकताएँ कभी पूर्ण नहीं हो सकती हैं, उन्हें जितना ही तृप्त करने का प्रयत्न किया जाएगा, उतना ही वे अग्नि में घृत डालने की तरह और अधिक बढ़ती जाएँगी। इसलिए इस छाया के पीछे दौड़ने की अपेक्षा उसकी ओर से पीठ फेरनी चाहिए और सोचना चाहिए कि हम कौड़ियों के लिए क्यों मारे-मारे फिर रहे हैं, जबकि हमारे अपने घर में भंडार भरा हुआ है। अंतर में मुँह देखने पर, परमात्मा के निकट उपस्थित होने पर, वह ताली मिल जाती है, जिससे सुख और शांति के अक्षय भंडार का दरवाजा खुलता है।

अपनी वास्तविक स्थिति को जानने से, आत्मस्वरूप को पहचानने से, संसार के स्वरूप का सच्चा ज्ञान होने से, शांति की शीतल धारा प्रवाहित होती है, जिसके तट पर असंतोष की ज्वाला जलती हुई नहीं रह सकती। तब वह मृगतृष्णा को त्याग देता है। सच्चा संतोष उपलब्ध होने पर उसकी बाह्य आवश्यकताएँ बहुत ही थोड़ी रह जाती हैं और जब थोड़ा चाहने वाले को बहुत मिलता है, तो उसे बड़ा आनंद प्राप्त होता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४१, पृष्ठ १७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असत्य की ओर नहीं, सत्य की ओर

सत्य! सत्य!! सत्य!!! अहा, कितना सुंदर शब्द है। उच्चारण करते ही जिह्वा को शांति मिलती है, विचार करते ही मस्तिष्क शीतल हो जाता है, हृदयंगम करने से कलेजा ठंढक अनुभव करता है। झूठ के मायावी प्रपंचों में उलझकर ईश्वर का राजकुमार-मनुष्य मानवता से पतित होकर पशु बन गया है। सत्य की अवहेलना करने का अभिशाप वह भुगत रहा है।

ईश्वर सत्य है, आत्मा सत्य है, प्रभु की त्रिगुणमयी लीला सत्य है, सर्वत्र सत्य ही सत्य व्याप्त हो रहा है। जीवन के कण-कण की एक ही प्यास है—'सत्य'। हमारा जीवन इसलिए है कि अखिल सत्य तत्त्व में विचरण करते हुए अमृत का पान करें। प्रभु ने कृपा करके हमें अपने संसार की सत्यरूपी वाटिका में भ्रमण करके आनंद-लाभ करने के लिए भेजा है, परंतु हाय, हम तो अपने को बिलकुल ही भूले जा रहे हैं। वास्तव में दुनियाँ कुछ नहीं है। अपनी छाया ही संसार के दर्पण में प्रतिबिंबित हो रही है। 'सत्य' मनुष्यों को प्रेरणा देता है कि अंतर में दृष्टि डालो, अपना दृष्टिकोण बदलो, अपना और दुनियाँ का स्वरूप समझो, अपने को अच्छा बना डालो, बस सारी दुनियाँ तुम्हारे लिए अच्छी बन जाएगी। तुम सत्यनिष्ठ बनो, दुनियाँ तुम्हारे साथ सत्य का आचरण करेगी। श्रुति कहती है '**असतो मा सद्गमय**' असत्य की ओर नहीं, सत्य की ओर गमन कीजिए। आपका इसी में कल्याण है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४२ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य का प्रकाश

मैंने इस दुनियाँ में बहुत वस्तुएँ देखी हैं और बहुत अनुभव किया है, परंतु ऐसी कोई चीज मुझे नहीं मिली जो सत्य से बढ़कर हो। दुनियाँ में बहुत तरह के प्रकाश हैं, परंतु महान पुरुष केवल सत्य के प्रकाश को ही प्रकाश कहते हैं। कदापि मिथ्या भाषण न करना, मनुष्य यदि इस धर्म का पालन करता रहे तो फिर उसे अन्य धर्मों का पालन करने की क्या आवश्यकता है ? शरीर पानी से शुद्ध हो सकता है, पर मन की पवित्रता बिना सत्य भाषण के शुद्ध नहीं हो सकती। जिसका हृदय सत्य से पवित्र है, वह अन्य हृदयों पर शासन करेगा। वह श्रेष्ठ दानी है और महान तपस्वी है, जो सदैव सत्यपरायण है। सिद्धियाँ उसके चरणों में लोटती फिरेंगी। मनुष्य को इससे बढ़कर और क्या कीर्ति मिल सकती है कि उसे 'सत्यवादी' कहा जाए ?

सचाई वह है जिसके साथ मृदुभाषण और हितकामना भी हो। ऐसी सचाई जिससे दूसरों को हानि पहुँचती हो, उससे तो वह झूठ अच्छा जिससे दूसरों का हित होता है। जिस बात को कहने में तुम्हारा मन झिझकता है, जिसका कहना अनावश्यक समझते हो या जिससे मिथ्यात्व का बोध होता है, उसे मत कहो, क्योंकि झूठ बोलने से तुम्हारी ही आत्मा तुम्हें शाप देगी।

सत्य पर डटे रहो, न्याययुक्त काम को करते हुए कभी लज्जित मत होओ। जिस बात को तुम न्याययुक्त समझते हो, उसी का निश्चय करो और फिर उस पर जम जाओ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४२ पृष्ठ-२९

दूसरों पर दया करो

महान पुरुषों के पास पैसा नहीं होता और न वे उसकी इच्छा करते हैं, क्योंकि दया से लबालब भरा हुआ हृदय उनके पास कुबेर के भंडार की तरह मौजूद रहता है। कहते हैं कि इस दुनियाँ में गरीब का कोई ठिकाना नहीं। निश्चय समझो, परलोक में उनका कोई ठिकाना न होगा, जिनके मन में दया नहीं है। दरिद्र मनुष्य एक दिन संपन्न हो सकता है, परंतु वह भिखमंगा इसी तरह दर-दर पर दुत्कार खाता फिरेगा, जिसका हृदय दया से रहित है। सत्य को कौन प्राप्त करेगा ? ईश्वर के दर्शन कौन करेगा ? वह, जिसके हृदय में दया है। निर्दय मनुष्य तो अपाहिज हैं, वे अपनी बगल में रखे हुए उत्तमोत्तम पदार्थों को भी न ले सकेंगे। अरे ओ निर्दयी, ठहरो! दूसरों को सताने से पहले जरा सोचो तो सही कि जब इसी तरह तुम भी सताए जाओगे तब तुम्हारी क्या दशा होगी! दया का परित्याग करके क्रूरता और पाप के पथ पर आरूढ़ क्यों होते हो ? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि इन दुष्ट कर्मों का फल तुम्हें जन्म-जन्मांतरों तक घुट-घुटकर भुगतना पड़ेगा ? धरती माता साक्षी है कि नारकीय यंत्रणाएँ पापियों के लिए ही हैं, दयालुओं के लिए नहीं।

जिनके हृदय में दया है, वे अंधकार में न भटकेंगे। इसलिए ऐ आँख वालो! देखो और अपने मन में दया को स्थान दो। दूसरों के साथ दयालुता का व्यवहार करो।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४२ पृष्ठ-१३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृष्णाएँ छोड़ो

कामनाएँ पूर्ण होने पर भी संतोष नहीं होता, वरन पहले से भी और अधिक प्यास बढ़ती है। कहते हैं कि मनुष्य अपूर्ण है, किंतु यदि वह अपनी वासनाएँ छोड़ दे, तो इसी जीवन में पूर्ण हो सकता है। तृष्णा एक बंधन है, जो आत्मा को जन्म-मरण के जाल में जकड़े हुए हैं। जिसे सांसारिक वस्तुओं की तृष्णा हरदम सताती रहती है, भला वह भवबंधनों से किस प्रकार पार हो सकेगा? प्रपंच का फेरा तभी तक है जब तक कि विभिन्न प्रकार की इच्छाओं ने प्राणी को बाँध रखा है। जिन्हें मुक्ति की आकांक्षा है, जिन्हें पूर्ण सत्य की खोज करनी है, उनके लिए सर्वोत्तम साधन यह है कि अपनी इच्छा को वश में करें। इस संसार में संतोष से बढ़कर और कोई धन नहीं है। स्वर्ग में भी कोई संपदा इसकी समता नहीं कर सकती। कोई मनुष्य देखने में कितना ही स्वाधीन क्यों न प्रतीत हो, पर वह बेचारा वास्तव में एक कैदी के समान है, जिसके मन में तृष्णा का डेरा पड़ा हुआ है। चाहे वह कितना ही बड़ा धनी क्यों न हो, भिखारी से ही उसकी तुलना की जा सकती है। यदि तुम संसार में कुछ श्रेष्ठ कर्म करना चाहते हो तो आवश्यक है कि तृष्णा और वासनाओं का परित्याग कर दो। कर्म करो, अपने कर्त्तव्य में त्रुटि मत रखो, परंतु फल के लिए प्यासे मत फिरो। जो करेगा उसे मिलेगा, किंतु जो पाने के लिए व्याकुल फिरेगा, उसे आपत्तियों के पहाड़ सिर पर उठाने पड़ेंगे।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४२ पृष्ठ-२१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सत्संग का महत्त्व

तुम्हें ऐसे व्यक्तियों का प्रेमपात्र बनने का सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए जो कष्ट पड़ने पर तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और बुराइयों से बचाने की एवं निराशा में आशा का संचार करने की क्षमता रखते हैं।

खुशामदी और चापलूसों से घिर जाना आसान है। मतलबी दोस्त तो पल भर में इकट्ठे हो सकते हैं, पर ऐसे व्यक्तियों का मिलना कठिन है, जो कड़वी समालोचना कर सकें, जो खरी सलाह दे सकें, फटकार सकें और खतरों से सावधान कर सकें। राजा और साहूकारों की मित्रता मूल्यवान समझी जाती है, पर सबसे उत्तम मित्रता उन धार्मिक पुरुषों की है, जिनकी आत्मा महान है। जिसके पास पूँजी नहीं है, वह कैसा व्यापारी? जिसके पास सच्चे मित्र नहीं है, वह कैसा बुद्धिमान? उन्नति के साधनों में इस बात का बड़ा मूल्य है कि मनुष्य को श्रेष्ठ मित्रों का सहयोग प्राप्त हो। बहुत से शत्रु उत्पन्न कर लेना मूर्खता है, पर उससे भी बढ़कर मूर्खता यह है कि भले व्यक्तियों की मित्रता को छोड़ दिया जाए।

निर्मल बुद्धि और श्रम में श्रद्धा, यही दो वस्तुएँ तो किसी मनुष्य को महान बनाने वाली हैं। उत्तम गुणों को अपनाने से नीचे व्यक्ति ऊँचे बन सकते हैं और दुर्गुणों के द्वारा बड़े व्यक्ति छोटे हो जाते हैं। निरंतर लगन, सावधानी, समय का सदुपयोग छोटे को बड़ा बना सकते हैं, हीन मनुष्यों को कुलीन बना सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४२ पृष्ठ-१४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्यस्वरूप आत्मा

आत्मा के संबंध में वास्तविकता की जानकारी प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उसके बिना जीवन-यात्रा का ठीक स्वरूप ही सामने नहीं आता, कोई उद्देश्य स्थिर नहीं होता और हम परिस्थितियों के प्रवाह में इधर-उधर उड़ते-फिरते हैं।

यदि आप अपने को महान बनाना चाहते हैं, तो अपनी आत्मा की महानता स्वीकार कीजिए। यदि संसार में सम्मानपूर्वक जीना चाहते हैं, तो आत्मा का सम्मान कीजिए। यदि परमात्मा के साथ आत्मा को जोड़ना चाहते हैं, तो अपने को इस रिश्तेदारी के योग्य स्वीकार कीजिए।

आप परमात्मा को तब तक नहीं प्राप्त कर सकते, जब तक कि अपनी आत्मा को उसी की बिरादरी का न बनाएँ। नीचता से उच्चता की ओर, तुच्छता से महानता की ओर बढ़ने का एकमात्र उपाय यह है कि आप अपनी आत्मा को ईश्वर का अंश समझते हुए पवित्र मानें और उसका पूरा-पूरा सम्मान करें। सम्मान का अर्थ घमंड करना, अहंकार से भर जाना, ऐंठे रहना, अकड़कर चलना, उद्धत हो जाना या दूसरों को नीच समझना नहीं है वरन यह है कि अपने अंदर ईश्वर का पवित्रतम अंश बैठा हुआ देखकर उसकी पूजा-अर्चना करें, उसके आदेशों को ध्यानपूर्वक सुनकर ऐसे श्रेष्ठ आचरण करें, जैसे कि परमात्मा के दरबार में जाकर करना उचित है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९४२ पृष्ठ-११

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्थायी सुख कहाँ है?

हम बहुधा शारीरिक सुख तथा मानसिक सुख को ढूँढ़ते-फिरते हैं, पर जो सबसे उत्तम सुख है, उस आध्यात्मिक सुख की हमें खबर ही नहीं है। हमारे जितने भी कार्य हैं, उनमें सुख पाने की एक इच्छा छिपी रहती है। हम स्थूलदर्शी मनुष्य बाहरी वस्तुओं से ही सुख पाने की इच्छा रखते हैं। क्या बाहरी वस्तु किसी को सुख दे सकती है? इस जगत में हमारे सुख के सामान बाहर नहीं, भीतर हैं, अर्थात सुख पाने के लिए बाहर ढूँढ़ना वृथा है। हिंदू-शास्त्र भी इस बात का प्रमाण देते हैं कि बिना मन का तत्त्व-निर्णय किए, बाह्य जगत के सुखों की कोई आशा नहीं। इसलिए मन का तत्त्व जानना और उस पर पूरा अधिकार जमा लेना अत्यंत आवश्यक है। मन को जीत लेने से ही हम संसार को जीत लेंगे।

मनुष्य के लिए सुख की, आनंद की खान भीतर ही है। उसकी झलक बाहर भी दिखाई देती है, पर वह केवल झलक ही है। शास्त्र का कथन ठीक ही है कि यदि सत्य वस्तु, ब्रह्म या परमात्मा का रूप जानना हो, तो हमें अपने चित्त को क्षण भर के लिए स्थिर बनाना पड़ेगा। इसे साधना-धर्म का अंग कहते हैं। इसलिए स्थायी सुख-प्राप्ति के लिए हमें धर्म का आश्रय लेना पड़ेगा। धर्म ही हमें वर्तमान मुहूर्त के क्षणिक सुख के बदले भविष्य में होने वाले अक्षय सुख का मार्ग बताता है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४२ पृष्ठ-१८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चा और अच्छा व्यापार

आदमी मर जाता है, उसके साज-सामान, महल, तिबारे टूट-फूट जाते हैं, परंतु कीर्त्ति ऐसी वस्तु है जो युगों तक जीवित रहती है। जिसने सर्वस्व देकर यश कमाया, उसने बहुत अच्छा व्यापार किया। बरसाती फूस को बेचकर एक पक्का कोठा खरीद लेना बुद्धिमानी है। वे महान आत्मा हैं, जो अपनी जीवन उज्ज्वल कीर्त्ति कमाने में लगाते हैं। उन अभागों के पैदा होने से क्या लाभ, जो जीवन भर पेट भरते रहे और अंत में कुत्तों की मौत मर गए।

जिन्हें अपने भविष्य की चिंता नहीं और स्वार्थ की परिधि से आगे कुछ नहीं देख सकते, वे मुर्दे हैं, भले ही वे साँस लेते, खाते-पीते और चलते-फिरते दिखाई देते हों। मूर्ख लोग धन जमा करके रख जाते हैं ताकि पीछे वाले चंद लोग खाएँ और खुश रहें। कितना अच्छा होता यदि वे अपने सामने ही सत्कर्मों में उसे लगाते ताकि वह श्रेष्ठ भूमि में उगता और अपनी छाया में असंख्य प्राणियों को शांति देता।

बेवकूफ उसे कहते हैं जो फायदे की चीज को फेंक देता है और हानि करने वाली वस्तुओं को अपनाता है। जो कड़वी और अनर्गल बातें अपनी जिह्वा से बकते हैं, उन्हें बेवकूफ के अलावा और क्या कहा जाए? कोई आदमी कितना ही पढ़ा-लिखा और चतुर क्यों न हो, पर यदि वह भलाई को छोड़कर बुराई अपनाता है, तो उसे पहले सिरे का मूर्ख समझना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर-नवंबर १९४२ पृष्ठ-२७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ज्ञान का संचय

विद्वान पुरुष सुगंधित पुष्पों के समान हैं। वे जहाँ जाते हैं, वहीं आनंद साथ ले जाते हैं। उनका सभी जगह घर है और सभी जगह स्वदेश है। विद्या धन है। अन्य वस्तुएँ तो उसकी समता में बहुत ही तुच्छ हैं। यह धन ऐसा है जो अगले जन्मों तक भी साथ रहता है। विद्या द्वारा संस्कारित की हुई बुद्धि आगामी जन्मों में क्रमश: उन्नति ही करती जाती है और उससे जीवन उच्चतम बनते हुए पूर्णता तक पहुँच जाता है।

कुएँ को जितना गहरा खोदा जाए, उसमें से उतना ही अधिक जल प्राप्त होता जाता है। जितना अधिक अध्ययन किया जाए उतना ही ज्ञानवान बना जा सकता है। विश्व क्या है और इसमें कितनी आनंदमयी शक्ति भरी हुई है, इसे वही जान सकता है, जिसने विद्या पढ़ी है। ऐसी अनुपम संपत्ति का उपार्जन करने में न जाने क्यों लोग आलस्य करते हैं? आयु का कोई प्रश्न नहीं है, चाहे मनुष्य वृद्ध हो जाए या मरने के लिए चारपाई पर पड़ा हो तो भी विद्या प्राप्त करने में उसे उत्साहित होना चाहिए क्योंकि ज्ञान तो जन्म-जन्मांतरों तक साथ जाने वाली वस्तु है।

वे मनुष्य बड़े अभागे हैं, जो विद्या पढ़ने में जी चुराते हैं। भिखारी को दाता के सामने जैसे तुच्छ बनना पड़ता है, ऐसे ही यदि तुम्हें शिक्षकों के सामने तुच्छ बनना पड़े तो भी शिक्षा प्राप्त करना ही कर्त्तव्य है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९४२ पृष्ठ-१५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रोध मत करो, क्षमा करो

आग उसे जलाती है, जो उसके पास जाता है, पर क्रोध तो स्वयं को जलाता है। यदि तुम जमीन पर हाथ पटको, तो पहले तुम्हें ही चोट लगेगी। क्रोधी दूसरों का नुकसान पीछे करता है, पहले अपने को आहत कर लेता है। यदि तुम में बल हो और विरोधी से बदला लेने की योग्यता हो, तो भी उसे माफ करो, क्योंकि क्रोध करना तो बहुत ही बुरा है। यदि तुम क्रोध का परित्याग कर दो और जो कुछ कहना चाहते हो, शांतिपूर्वक कहो, तो उन समस्याओं का आधार हल तो अपने आप हो जाएगा, जिनके लिए तुम बेचैन हो।

इसमें क्या बड़प्पन है कि तुम बुराई करने वाले से बदला ले लो। ऐसा तो चींटी भी कर सकती है। बड़ा वह है जो अपने शत्रुओं को क्षमा कर देता है। धरती को देखो, तुम उसे खोदते हो और वह बदले में अन्न उपजाती है। गन्ने को दबाते हैं, तो उसमें से मीठा रस टपकता है।

जिसने तुम्हें हानि पहुँचाई, वह बेचारा कमजोर है, कायर है, क्योंकि निर्बल आत्मा वाले ही दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। माफ कर दो इन गरीबों को, अंधों पर तलवार चलाना कोई बहादुरी थोड़े ही है। बदला लेने पर तुम्हें कुछ घंटे खुशी रह सकती है, पर क्षमा कर देने पर जो आनंद प्राप्त होगा, वह बहुत काल तक कायम रहेगा। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४३ पृष्ठ-४३*

www.awgp.org

बादलों की तरह बरसते रहो

जो न तो खुद खा सकता है और न दूसरों को दे सकता है, चाहे वह करोड़पति ही क्यों न हो, मामूली गरीब आदमी से उसमें कुछ विशेषता नहीं है। उचित-अनुचित तरीकों से पेट पर पट्टी बाँधकर जो धन जोड़ा गया है, वह उसके किसी काम न आएगा, उसका उपयोग तो दूसरे ही करेंगे। वह मनुष्य बुद्धिमान है, जिसने अपना धन शुभ कर्मों में खरच कर दिया है। असल में वह बरसने वाले बादलों के समान है, जो आज खाली होता है, तो कल फिर भर जाएगा।

मिलनसारी, भलमनसाहत का व्यवहार और दूसरों के हितों का ख्याल रखना, ये ऐसे गुण हैं, जिनसे दुनियाँ अपनी हो सकती है। संसार उनको भुला नहीं सकता, जो अपने से छोटे और बड़ों के साथ शिष्टता का व्यवहार करते हैं।

कटुभाषी और निष्ठुर स्वभाव के मनुष्य का जीवन लोहे और काठ की तरह नीरस होता है, चाहे वे भले ही आरी की तरह तेज हों। जिस कर्महीन मनुष्य को इतने लंबे-चौड़े विश्व में हँसने और मुस्कराने योग्य कुछ दिखाई नहीं देता और सारे दिन कुड़कुड़ाता रहता है, उसे उस रोगी की तरह समझना चाहिए, जिसे दिन में नहीं दिखता। बदमिजाज व्यक्ति के पास चाहे कितनी ही विद्या और संपत्ति क्यों न हो, वह उस दूध के समान निकम्मा है, जो गंदे पात्र में रखा होने से दूषित हो गया है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४३ पृष्ठ-१७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रार्थना कब सफल होगी ?

ईश्वर से की गई प्रार्थना का तभी उत्तर मिलता है, जब हम अपनी शक्तियों को काम में लाएँ। आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता और अज्ञान ये सब अवगुण यदि मिल जाएँ, तो मनुष्य की दशा वह हो जाती है जैसे किसी कागज के थैले के अंदर तेजाब भर दिया जाए। ऐसा थैला अधिक समय तक न ठहर सकेगा और बहुत जल्द गलकर नष्ट हो जाएगा। ईश्वरीय नियम बुद्धिमान माली के समान हैं जो निकम्मे घास-कूड़े को उखाड़कर फेंक देता है और योग्य पौधों की भरपूर साज-सँभाल रखकर उन्हें उन्नत बनाता है। जिसके खेत में निकम्मे खर-पतवार उग पड़ें, उसमें अन्न की फसल मारी जाएगी। ऐसे किसान की कौन प्रशंसा करेगा, जो अपने खेत की दुर्दशा करता है ! निश्चय ही ईश्वरीय नियम निकम्मे पदार्थों की गंदगी हटाते रहते हैं, ताकि सृष्टि का सौंदर्य नष्ट न होने पाए।

प्रार्थना का सच्चा उत्तर पाने का सबसे प्रथम मार्ग आत्मविश्वास है। कर्त्तव्यपरायण द्वारा ही सच्ची प्रार्थना होनी संभव है। ईश्वर नामक सर्वव्यापी सत्ता में प्रवेश करने का द्वार आत्मा में होकर है। वही इस खाई का पुल है। अविश्वासी और आत्मघाती लोग निश्चय ही विपत्ति में पड़े रहते हैं और सही मार्ग ही तलाश करते-फिरते हैं। आत्मतिरस्कार करने वालों को ईश्वर के यहाँ भी तिरस्कार मिलता है और उनकी प्रार्थना भी निष्फल चली जाती है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४३ पृष्ठ-६८*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपनी रोटी बाँटकर खाइए

आप बड़े सौभाग्यशाली हैं यदि आपको ईश्वर ने श्रम, वैभव, विद्या, पद, बल, यश तथा चातुर्य दिया है। इन विभूतियों की सहायता से आपका जीवन सुखी और आनंदमय होगा, परंतु वह आनंद अधूरा, नीरस और क्षणिक होगा, यदि इन संपदाओं का उपयोग केवल अपने ही संकुचित लाभ के लिए करेंगे। आनंद को अनेक गुना बढ़ाने का मार्ग यह है कि अपनी रोटी बाँटकर खाओ। जो आपको प्राप्त है, उसका कुछ अंश उन लोगों को बाँट दो, जिन्हें इसकी आवश्यकता है। इससे दुहरा लाभ होगा। वह अभावग्रस्त मनुष्य उन्नति के साधन प्राप्त करके विकसित होगा और त्याग करने पर जो आनंद एवं आध्यात्मिक सुगंध उत्पन्न होती है, आप उसे प्राप्त करेंगे। दोनों पक्षों को एक अपूर्व आनंद प्राप्त होगा और उसके कारण संसार के सुख में कुछ और वृद्धि हो जाएगी।

आनंद का सच्चा मार्ग यह है कि अपनी रोटी बाँटकर खाओ। अपनी संपदाओं से दूसरों की सहायता करके वही करो जो ईश्वर ने तुम्हारे साथ किया है। ईश्वर को 'आनंदघन' कहा जाता है क्योंकि वह अपनी दिव्य विभूतियाँ निस्स्वार्थ भाव से प्राणियों को देता है।

आप भी सर्वोच्च आनंदमय महान पद प्राप्त कर सकते हैं, बशर्ते कि अपनी रोटी बाँटकर खाएँ।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४३ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी परिस्थिति में विचलित न हों

जीवन में कई अवसरों पर बड़ी विकट परिस्थितियाँ आती हैं, उनका आघात असह्य होने के कारण मनुष्य व्याकुल हो जाता है और अपनी विवशता पर रोता-चिल्लाता है। प्रिय और अप्रिय घटनाएँ तो आती हैं और आती ही रहेंगी।

ऐसे अवसरों पर हमें विवेक से काम लेना चाहिए। ज्ञान के आधार पर ही हम उन अप्रिय घटनाओं के दु:खद परिणाम से बच सकते हैं। ईश्वर की दयालुता पर विश्वास रखना, ऐसे अवसरों पर बहुत ही उपयोगी है। हमारा ज्ञान बहुत ही स्वल्प है इसलिए हम प्रभु की कार्यविधि का रहस्य नहीं जान पाते। जिन घटनाओं को हम आज अप्रिय देख-समझ रहे हैं, वे यथार्थ में हमारे कल्याण के लिए होती हैं।

हमें समझ लेना चाहिए कि हम अपने मोटे और अधूरे ज्ञान के आधार पर परिस्थितियों का असली हेतु नहीं जान पाते, तो भी उसमें कुछ-न-कुछ हमारा हित अवश्य छिपा होगा, जिसे हम समझ नहीं पाते। कष्टों के समय हमें ईश्वर की न्यायपरायणता और दयालुता पर अधिकाधिक विश्वास करना चाहिए। इससे हम घबराते नहीं और उस विपत्ति के हटने तक धैर्य धारण किए रहते हैं। संतोष करने का शास्त्रीय उपदेश ऐसे ही समय के लिए है। कर्त्तव्य करने में प्रमाद करना, संतोष नहीं वरन आई हुई परिस्थिति में विचलित न होना, संतोष है। संतोष के आधार पर कठिन प्रसंगों का आधा भार हलका हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४३ पृष्ठ-८८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है

जब तक आप दूसरों पर आश्रित रहते हैं या समझते हैं कि हमारे कष्टों को कोई और दूर करेगा, तब तक बहुत बड़े भ्रम में हैं। जो उलझनें आपके सामने हैं, उनका दु:खदायी रूप अपनी त्रुटियों के कारण है। उन त्रुटियों को दूर करके आप स्वयं ही अपनी उलझनें सुलझा सकते हैं।

संसार में सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा के साथ ही अपनी योग्यताओं में वृद्धि करना भी आरंभ कीजिए। आपका भाग्य किस प्रकार लिखा जाए, इसका निर्णय करते समय विधाता आपकी आंतरिक योग्यताओं की परख करता रहता है। उन्नति करने वाले गुणों को यदि अधिक मात्रा में जमा कर लिया गया है, तो भाग्य में उन्नति का लेख लिखा जाएगा और यदि उन्नायक गुणों को अविकसित पड़ा रहने दिया गया है, दुर्गुणों को, मूर्खताओं को अंदर भरकर रखा गया है, तो भाग्य की लिपि दूसरी होगी। विधाता लिख देगा कि 'इसे तब तक दु:ख-दुर्भाग्यों में ही पड़ा रहना होगा, जब तक कि योग्यताओं का संपादन न करे।' अपने भाग्य को जैसा चाहें वैसा लिखाना, अपने हाथ की बात है। यदि आप आत्मनिर्भर हो जाएँ, जैसा होना चाहते हैं उसके अनुरूप अपनी योग्यताएँ बनाने में प्रवृत्त हो जाएँ, तो विधाता को विवश होकर आपकी मनमरजी का भाग्य लिखना पड़ेगा। जब आत्मविश्वास के साथ सुयोग्य मार्ग की तलाश करेंगे, तो वह किसी न किसी प्रकार मिलकर ही रहेगा।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४३ पृष्ठ-१७०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम ही सर्वोपरि है

ईश्वरीय ज्ञान और निस्स्वार्थ प्रेम के अनुभव से घृणा का भाव नष्ट हो जाता है, तमाम बुराइयाँ रफूचक्कर हो जाती हैं और वह मनुष्य उस दिव्यदृष्टि को प्राप्त कर लेता है, जिसमें प्रेम, न्याय और उपकार ही सर्वोपरि दिखाई पड़ते हैं।

अपने मस्तिष्क को दृढ़ निश्चय तथा उदार भावों की खान बनाइए, अपने हृदय में पवित्रता और उदारता की योग्यता लाइए, अपनी जीभ को चुप रहने तथा सत्य और पवित्र भाषण के लिए तैयार कीजिए। पवित्रता और शक्ति प्राप्त करने का यही मार्ग है और अंत में अनंत प्रेम भी इसी तरह प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार जीवन बिताने से आप दूसरों पर विश्वास जमा सकेंगे, उनको अपने अनुकूल बनाने की कोशिश की दरकार न होगी। बिना विवाद के आप उनको सिखा सकेंगे, बिना अभिलाषा तथा चेष्टा के ही बुद्धिमान लोग आपके पास पहुँच जाएँगे, लोगों के हृदय को अनायास ही आप अपने वश में कर लेंगे, क्योंकि प्रेम सर्वोपरि, सबल और विजयी होता है। प्रेम के विचार, कार्य और भाषण व्यर्थ नहीं जाते ।

इस बात को भली प्रकार जान लीजिए कि प्रेम विश्वव्यापी है, सर्वप्रधान है और हमारी हर एक जरूरत को पूरा करने की शक्ति रखता है। बुराइयों को छोड़ना, अंत:करण की अशांति को दूर भगाता है। निस्स्वार्थ प्रेम में ही शांति है, प्रसन्नता है, अमरता है और पवित्रता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४३ पृष्ठ-१८७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तुम बीच में खड़े हो

तुम परमात्मा की आधी शक्ति के मध्य में खड़े हुए हो, तुमसे ऊँचे देव, सिद्ध और अवतार हैं तथा नीचे पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि हैं। ऊपर वाले केवल मात्र सुख ही भोग रहे हैं और नीचे वाले दु:ख ही भोग रहे हैं। तुम मनुष्य ही ऐसे हो, जो सुख और दु:ख दोनों एक साथ भोगते हो। यदि तुम चाहो तो नीचे पशु-पक्षी भी हो सकते हो और चाहो तो देव, सिद्ध, अवतार भी हो सकते हो।

यदि तुम्हें नीचे जाना है तो खाओ, पीओ और मौज करो। तुम्हें तो सुख के लिए धन चाहिए, वह चाहे न्याय से मिले या अन्याय से। नीचे आने में बाधा या कष्ट नहीं है। पहाड़ से नीचे उतरने में देर नहीं लगती। इसी तरह यदि तुम अपने भाग्य को नष्ट करना चाहो, तो कर सकते हो, परंतु पीछे तुम्हें पश्चात्ताप करना पड़ेगा। यदि तुम ऊपर जाना चाहो तो तुम्हें सत्य-मिथ्या, न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म के बड़े-बड़े विचार करने पड़ेंगे। पर्वत के ऊपर चढ़ने में कठिनाई तो है ही, परंतु कठिनाई का फल सुख भी मिलेगा। यदि तुम कठिनाई के दु:ख को सिर पर ले लोगे, तो परम सुखी हो जाओगे। दोनों बातें तुम्हारे लिए सही हैं, क्योंकि तुम बीच में खड़े हो, मध्य में रहने वाले आगे-पीछे अच्छी तरह देख सकते हैं, तुम ही अपने भाग्य विधाता हो, चाहे जो कर सकते हो, तुम्हारे लिए उपयुक्त और अनुकूल समय यही है, समय चूक जाने पर पश्चात्ताप ही हाथ रह जाता है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४३ पृष्ठ-२०२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम ही सुख-शांति का मूल है

भगवान ने अपनी सृष्टि को सुंदर और सुव्यवस्थित बनाने के लिए जड़ और चेतन पदार्थों को एकदूसरे से संबंधित कर रखा है। निखिल विश्व-ब्रह्मांड के ग्रह-नक्षत्र अपने-अपने सौर मंडलों में आकर्षण शक्ति के द्वारा एकदूसरे से संबंधित हैं। यदि यह संबंध-सूत्र टूट जाएँ, तो किसी की कुछ स्थिरता न रहे। सारे ग्रह-नक्षत्र एक दूसरे से टकरा जाएँ और संपूर्ण व्यवस्था नष्ट हो जाए। इसी प्रकार आपसी प्रेम संबंध न हों तो जीवधारियों की सत्ता भी स्थिर न रह सकेगी। जरा कल्पना तो कीजिए कि माता का बालक से प्रेम न हो, पति का पत्नी से प्रेम न हो, भाई का भाई से प्रेम न हो तो कुटुंब की कैसी दयनीय अवस्था हो जाए! यह भ्रातृभाव, स्नेह-संबंध नष्ट हो जाए तो सहयोग के आधार पर चलने वाली सारी सामाजिक व्यवस्था पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट हो जाए। सृष्टि का सारा सौंदर्य जाता रहे।

हर एक प्राणी के हृदय में प्रेम की अजस्र धारा बह रही है। यदि हम सुख, शांति और संपदा पसंद करते हैं, तो आवश्यक है कि प्रेमभाव को अपनाएँ। दूसरों से उदारता, दया, मधुरता, भलमनसाहत और ईमानदारी का बरताव करें। जिन लोगों ने अपनी जीवन-नीति प्रेममय बना रखी है, वे ईश्वरप्रदत्त मानवोचित आज्ञा का पालन करने वाले धर्मात्मा हैं। ऐसे लोगों के लिए हर घड़ी सतयुग है। चूँकि वे स्वयं सतयुगी हैं, इसलिए दूसरे भी उनके साथ सतयुगी आचरण करने को विवश होते हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४४ पृष्ठ-४६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्म का सार

नाना प्रकार के मत-मतांतरों, संप्रदायों के उलझन भरे कर्मकांडों के जंजाल में भटकते रहने से धर्मतत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। जो धर्म को प्राप्त करना चाहते हैं, सच्चे अर्थों में धर्मात्मा बनना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि अपनी इच्छा, रुचि और आदतों की कड़ी समालोचना करके देखें कि इनमें कितने अंश ऐसे हैं, जो दूसरों के उचित अधिकारों से टकराते हैं? अपनी स्वार्थपरता, अनुदारता, संग्रहशीलता और भोगेच्छा को घटाना चाहिए और दया, उदारता, परमार्थ, प्रेम, सेवा, सहायता, त्याग, सात्त्विकी प्रवृत्तियों को बढ़ाना चाहिए। स्वार्थ की मात्रा जितनी घटती जाती है और परमार्थ की मात्रा जितनी बढ़ती जाती है, उतना ही मनुष्य धर्मात्मा, पुण्यात्मा बनता जाता है। इसी मार्ग पर चलता हुआ पुरुष स्वर्ग या मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

संसार के सारे दुःखों, क्लेशों, संघर्षों का एकमात्र कारण यह है कि लोग अपने लिए जो बातें चाहते हैं, वैसा दूसरों के साथ व्यवहार नहीं करते। खरीदने के बाट और रखना चाहते हैं तथा बेचने के और। यह घातक नीति ही अशांति की जड़ है। स्वार्थ की निकृष्ट इच्छा से अंधे होकर जब हम अपने लिए बहुत अच्छा बर्ताव चाहते हैं और दूसरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं तो उसका निश्चित परिणाम कलह ही होता है। मनुष्य को आमतौर से जो व्यवहार नापसंद हैं, वे पाप हैं। जो इन पाप-कर्मों को करता है, वह पापी है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४४ पृष्ठ-६३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर कहाँ है ?

ईश्वर को खोजने के लिए, उसे प्राप्त करने के लिए हम नाना प्रकार के प्रयत्न करते हैं, पर उसे नहीं पाते। कहते हैं कि वह सर्वत्र है, वह सब जगह है, पर फिर भी हमें क्यों नहीं दीखता ? उसे प्राप्त करने को धन, वैभव, जीवन तक नष्ट करते हैं, पर पाते नहीं। अंत में निराश होकर कहते हैं कि ईश्वर नहीं है।

भाई ! ईश्वर है, पर उसे खोजने में गलती कर रहे हो। तुम उसे धन-वैभव से नहीं पा सकते। अगर उसे पाना है, तो प्रेम करना सीखो। प्राणिमात्र से प्रेम करो, जड़-चेतन से प्रेम करो, आत्मा से प्रेम करो। उसे पाने के लिए जंगल में जाने की, धूनी रमाने की, धन-वैभव नष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब वह सर्वत्र है, तो आपके पास भी होगा। होगा नहीं, है। कहाँ ? आपके शरीर में, जिसे आप आत्मा कहते हैं। क्या आपने कभी अपनी आत्मा की आवाज पर ध्यान दिया है ? नहीं। यही कारण है कि आप उसे खोजने पर भी नहीं पाते। विचार करो, जब तुम बोलते हो, चलते हो, काम करते हो, सोचते हो या शुभ काम करने की प्रेरणा होती है, तो वह कहाँ से और कौन करता या कहता है ? जब तुम किसी को कष्ट पहुँचाने का विचार करते हो और तुम्हें अंदर से कोई रोकता है कि ऐसा न करो, वह कौन है ? वह अपने अंदर मौजूद ईश्वर ही है। उसे अपने अंदर ही प्राप्त किया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४४ पृष्ठ-८२

जीवन का सद्व्यय

मनुष्य जीवन का अधिकांश भाग आहार, निद्रा, भय और मैथुन में व्यतीत हो जाता है। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में समय और शक्तियों का अधिकांश भाग लग जाता है। विचार करना चाहिए कि क्या इतने छोटे कार्यक्रम में लगे रहना ही मानव जीवन का लक्ष्य है ? यह सब तो पशु भी करते हैं। यदि मनुष्य भी इसी मर्यादा के अंतर्गत घूमता रहे, तो उसमें और पशु में क्या अंतर रह जाएगा ? सृष्टि के समस्त जीवों में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने के कारण मनुष्य का उत्तरदायित्व भी ऊँचा है। जो अपने महान कर्त्तव्य की ओर ध्यान नहीं देता, निश्चय ही वह मनुष्यता का महान गौरव प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है।

दु:ख और अधर्म को हटाकर सुख और धर्म की स्थापना करना, मनुष्य जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। ईश्वर ने जो योग्यताएँ और शक्तियाँ मानव प्राणी को दी हैं, उनका सदुपयोग यही हो सकता है कि दूसरों की सहायता की जाए, उन्हें सुखी एवं उत्तम जीवन बिताने में सहयोग दिया जाए। बेशक, शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रम करना आवश्यक है, परंतु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जीवन-निर्वाह की साधारण समस्या को हल करने के उपरांत जो समय और शक्ति बचती है, उसे परमार्थ में, संसार की भलाई में लगाना चाहिए। जो मनुष्य स्वार्थ पर से दृष्टि हटाकर परमार्थ पर जितना ध्यान देता है, समझना चाहिए कि वह उतना ही जीवन का सद्व्यय कर रहा है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४४ पृष्ठ-८३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानयोग की एक सुलभ साधना

दुनियाँ में लक्ष्मी, विद्या, प्रतिष्ठा, बल, पद, मैत्री, कीर्त्ति, भोग, ऐश्वर्य आदि को बड़ा फल माना जाता है। यह सब ज्ञानरूपी वृक्ष के फल हैं। ज्ञान के अभाव में इनमें से एक भी वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती। परमार्थ के लिए ज्ञान से बड़ी और कोई वस्तु नहीं है। भूखे को दो रोज भोजन करा देने से सदा के लिए उसका भला नहीं होगा। उसे कोई ऐसी राह दिखानी होगी, जिस पर चलकर वह स्वयं जीविका-उपार्जन कर सके। बीमारी दवा से अच्छी भी हो जाए तो भी नीरोगता के लिए स्वास्थ्य-संबंधी ज्ञान आवश्यक है। दवा के आधार पर सदा के लिए किसी का रोग नहीं जा सकता, पर ज्ञान के आधार पर बिना दवा के भी रोग अच्छा हो सकता है और सुंदर स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन प्राप्त हो सकता है। चिंता, तृष्णा, लोलुपता, कामुकता, उद्वेग, क्रोध, शोक, घबराहट, निराशा सरीखी भयंकर मानसिक अशांतियाँ जो जीवन को भाररूप और नारकीय बनाए रहती हैं, ज्ञान द्वारा ही शांत हो सकती हैं। तीनों लोकों की संपदा मिलने से भी उपरोक्त अग्नियाँ बुझ नहीं सकतीं, बल्कि और उलटी बढ़ती हैं। उन्हें बुझाने वाला एकमात्र पदार्थ ज्ञान ही है। सांसारिक और पारलौकिक शांति की कुंजी ज्ञान ही है। तुच्छ मनुष्य इसी के बल से महापुरुष और महात्मा बनते हैं। दूसरों की सेवा-सहायता करने वाली इससे बड़ी और कोई वस्तु नहीं। *—अखण्ड ज्योति-मई १९४४ पृष्ठ ९६*

www.awgp.org

सहृदयता में जीवन की सार्थकता

जिसने अपनी विचारधारा और भावनाओं को शुष्क, नीरस और कठोर बना रखा है, वह मानव-जीवन के वास्तविक रस का आस्वादन करने में वंचित ही रहेगा। उस बेचारे ने व्यर्थ ही जीवन धारण किया और वृथा ही मनुष्य-शरीर को कलंकित किया। आनंद का स्रोत सरसता की अनुभूतियों में है। परमात्मा को आनंदमय कहा जाता है। क्यों ? इसलिए कि वह सरस है, प्रेममय है। श्रुति कहती है—**'रसो वै सः'** अर्थात वह परमात्मा रसमय है। भक्ति द्वारा, प्रेम द्वारा, परमात्मा को प्राप्त करना संभव बताया गया है। निस्संदेह जो वस्तु जैसी हो, उसको उसी प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा दीनबंधु, करुणासिंधु, रसिक-विहारी, प्रेम का अवतार, दयानिधान, भक्तवत्सल है। उसे प्राप्त करने के लिए अपने अंदर वैसी ही लचीली, कोमल, स्निग्ध, सरस भावनाएँ पैदा करनी पड़ती हैं। भगवान भक्त के वश में है। जिनका हृदय कोमल है, भावुक है, परमात्मा उनसे दूर नहीं है।

आप अपने हृदय को कोमल, द्रवित, पसीजने वाला, दयालु, प्रेमी और सरस बनाइए। संसार के पदार्थों में ही सरसता का, सौंदर्य का अपार भंडार भरा हुआ है। उसे ढूँढ़ना और प्राप्त करना सीखिए। अपनी भावनाओं को जब आप कोमल बना लेते हैं, तो आपके अपने चारों ओर अमृत झरता हुआ अनुभव होने लगता है। जीवन की सार्थकता कोमल वृत्तियों की मधुरता का रसास्वादन करने में है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९४४ पृष्ठ-७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मृत्यु का भय दूर कर दीजिए

मृत्यु से मनुष्य बहुत डरता है। इस डर के कारण की खोज करने पर प्रतीत होता है कि मनुष्य मृत्यु से नहीं वरन अपने पापों के दुष्परिणामों से डरता है। देखा जाता है कि यदि मनुष्य को कहीं कष्ट या विपत्ति के स्थान में जाना पड़े, तो वह जाते समय बहुत डरता और व्याकुल होता है। मृत्यु से मनुष्य इसलिए घबराता है कि उसकी अंतश्चेतना ऐसा अनुभव करती है कि इस जीवन का मैंने जो दुरुपयोग किया है, उसके फलस्वरूप मरने के पश्चात मुझे दुर्गति में जाना पड़ेगा। जब कोई व्यक्ति वर्तमान की अपेक्षा अधिक अच्छी, उन्नत और सुखकर परिस्थिति के लिए जाता है, तो उसे जाते समय कुछ भी कष्ट नहीं होता, वरन प्रसन्नता होती है। जो लोग अपने जीवन को निरर्थक, अनुचित और अनुपयोगी कार्यों में खरच कर रहे हैं, वे लोग मृत्यु से उसी प्रकार डरते हैं जैसे बकरा कसाईखाने के दरवाजे में घुसता हुआ भावी पीड़ा की आशंका से डरता है।

यदि आप मृत्यु के भय से बचना चाहते हैं, तो अपने जीवन का सदुपयोग करना, अपने कार्यक्रम को धर्ममय बनाना आरंभ कर दीजिए। ऐसा करने से आपकी अंतश्चेतना को यह विश्वास होने लगेगा कि भविष्य अंधकारमय नहीं, वरन प्रकाशपूर्ण है। जिस क्षण यह विश्वास हृदय में हुआ, उसी क्षण मृत्यु का भय भाग जाता है। तब वह शरीर-परिवर्तन को वस्त्र-परिवर्तन की तरह एक मामूली बात समझता है और उससे जरा भी डरता या घबराता नहीं। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४४ पृष्ठ-१*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रोने से काम न चलेगा

ईश्वर ने मनुष्य को संपूर्ण योग्यताएँ और शक्तियाँ देकर इस संसार में स्वच्छंदतापूर्वक जीवन बिताने के लिए भेजा है। परमात्मा कभी नहीं चाहता कि उसकी एक संतान सिंहासन पर बैठे और दूसरी संतान दर-दर ठोकरें खाए। पिता को अपने सभी बच्चे प्यारे होते हैं। वह सभी को सुखी देखना चाहता है। अगर तुम दुखी हो, तो परमात्मा का अपराध नहीं है, वरन तुम स्वयं अपने हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मार रहे हो। ईश्वर ने हमें स्वस्थ शरीर और शक्तिशाली मन स्वतंत्रतापूर्वक सुखमय जीवन जीने के लिए दिया है, अपना अधिकार प्राप्त करने और उन्नति करने के लिए दिया है, रोने, झींखने और हाय-हाय करने के लिए नहीं दिया है। ऐसा सर्वसंपन्न शरीर और मन देने का तात्पर्य ही यही है कि मनुष्य सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करे।

परमात्मा की दी हुई शक्तियों का जो सदुपयोग करते हैं, वे सर्वसुखसंपन्न होते हैं और जो व्यक्ति अपनी शक्तियों को भूलकर उनका दुरुपयोग करते हैं, उन्हें जीवन में दुःख भोगना पड़ता है, उन्हें जिंदगी रोते-रोते बितानी पड़ती है। अपने अस्तित्व को समझो, दुनियाँ में कोई ताकत नहीं जो तुम्हें सुख, शांति और स्वतंत्रता से वंचित कर सके। आज से ही अपनी शक्तियों का सदुपयोग करना शुरू कर दो। तुम्हें भी परमात्मा के राज्य में स्वच्छंदतापूर्वक जीवन बिताने का अधिकार दिया गया है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४४ पृष्ठ-२३५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिंदगी में आनंद का निर्माण करो

उठो! अपने चारों ओर नवजीवन के बीज बोओ, पवित्रता के वातावरण का निर्माण करो। यदि तुम दूसरों को धोखा दोगे, झूठ बोलोगे, षड्यंत्र रचोगे, ठगोगे तो इससे अपने आप को ही पतित बनाओगे। अपने को ही छोटा, तुच्छ और कमीना साबित करोगे। किसी दूसरे का अपनी सारी शक्तियाँ लगाकर भी तुम अधिक अनिष्ट नहीं कर सकते, परंतु इन हरकतों से अपना सर्वनाश जरूर कर सकते हो।

ईमानदारी पर कायम रहो और उचित साधनों से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करो। अपनी ताकत को संसार के सामने प्रकट करो, क्योंकि बलवानों को ही सुखी और उन्नतिशील जीवन जीने का अधिकार है। यदि अपनी शक्ति का कोई सबूत पेश नहीं कर सकोगे, तो दुनियाँ तुम्हें एक असहाय, अनाथ, दुर्बल और अभागा समझेगी और तुम्हारे नाम के साथ 'बेचारा' की उपाधि जोड़ देगी।

इसलिए मैं कहता हूँ कि संघर्ष करो! जीवित रहने के लिए संघर्ष करो!! अपने अधिकारों को प्राप्त करने और उनकी रक्षा के लिए संघर्ष करो!! विश्वास रखो, इस आत्मोन्नति के धर्मयुद्ध में तुम्हें वह आनंद मिलेगा, जो दुनियाँ की और किसी चीज से नहीं मिल सकता। जीवितों की भाँति जीवित रहने के चंद घंटे, मुर्दा जिंदगी के हजार वर्षों से बेहतर है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४५ पृष्ठ-४६*

मन जीता तो जग जीता

मन बड़ा बलवान शत्रु है। इससे युद्ध करना भी अत्यंत दुष्कर कृत्य है। इससे युद्ध में एक विचित्रता है। यदि युद्ध करने वाला दृढ़ता से युद्ध में संलग्न रहे, निज इच्छाशक्ति को मन के व्यापारों पर लगाए रहे, तो युद्ध में संलग्न सैनिक की शक्ति अधिकाधिक बढ़ती है और एक दिन वह इस पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है।

मन को दृढ़ निश्चय पर स्थिर रखने से मुमुक्षु की इच्छाशक्ति प्रबल होती है। मन का स्वभाव मनुष्य के अनुकूल बन जाने का है। उसे कार्य दीजिए। वह चुपचाप नहीं बैठना चाहता। यदि तुम उसे फूल-फूल पर विचरण करने वाली तितली बना दोगे, तो यह तुम्हें न जाने कहाँ-कहाँ की खाक छनवाएगा। यदि तुम इसे उद्दंड रखोगे, तो यह रात-दिन भटकता ही रहेगा, पर यदि तुम इसे चिंतन योग्य पदार्थों में स्थिर रखने का प्रयत्न करोगे, तो यह तुम्हारा सबसे बड़ा मित्र बन जाएगा।

जब-जब तुम्हारे अंत:करण में वासना का प्रबल वेग उत्पन्न हो, निश्चयात्मक बुद्धि को जाग्रत करो। मन से थोड़ी देर के निमित्त पृथक होकर इसके व्यापारों पर तीव्र दृष्टि रखो। बस, विचार-शृंखला टूट जाएगी और तुम इसके साथ चलायमान न होगे। मन के व्यापार के साथ निज आत्मा की समस्वरता न होने दो। इसी अभ्यास द्वारा यह आज्ञा देने वाला न रहकर सीधा-सादा आज्ञाकारी अनुचर बन जाएगा। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४५ पृष्ठ-७२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान की उपासना कीजिए

ज्ञान से ही मनुष्य संसार में सुख पाता है और इसकी कमी से बंधन में आकर दु:ख उठाता है। जिसका ज्ञान पूर्ण है, सफलता उसका ही साथ देती है। ज्ञान में दोष आने से असफलता की बहुलता से मनुष्य दुखी रहा करता है। इस संसार में ज्ञान से बढ़कर कोई भी पवित्र वस्तु नहीं है। यह आत्मा का स्वाभाविक गुण है। परमात्मा ज्ञानस्वरूप है। जब ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान का अंधकार दूर हो जाता है, तब जन्म-मरण के बंधनों से रहित हो, मनुष्य मुक्ति-मार्ग का यात्री बन जाता है। ऐसा ज्ञानवान पुरुष सब अवस्थाओं में अपने आप को परमात्मा को अर्पण कर देता है।

हम बाह्य विषयों में जिस सुख को ढूँढ़ना चाहते हैं, वह वस्तुत: अपने अंदर ही है। संसार के प्रत्येक भावों की परीक्षा करना, सत्-असत् की यथार्थत: पहचान, अपने उपयोग की वस्तुएँ ग्रहण करना तथा अनुपयुक्त का त्याग, यह सब ज्ञान से ही संभव हैं। यह ज्ञान, स्वाध्याय और सत्संग से प्राप्त होता है। सद्‌ग्रंथों का अध्ययन करते रहना तथा ज्ञानियों का सत्संग—समय और सुविधा के अनुसार प्राप्त करना, मनुष्य जीवन को सुधारने के लिए अत्यावश्यक है। जिस समाज या देश में यथार्थ ज्ञानियों की जितनी ही अधिक संख्या होगी, उसकी उतनी ही अधिक आत्मोन्नति हो सकेगी और वही अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त होगा। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४५ पृष्ठ-६९*

हम स्वयं अपने स्वामी बनें

तुम व्यर्थ में दूसरों के अनर्थकारी संदेशों को ग्रहण कर लेते हो। तुम वह सच मान बैठते हो, जो दूसरे कहते हैं। तुम स्वयं अपने आप को दुखी करते हो और कहते हो कि दूसरे लोग हमें चैन नहीं लेने देते। तुम स्वयं ही दु:ख का कारण हो, स्वयं ही अपने शत्रु हो। जो किसी ने कुछ कह दिया, तुमने मान लिया। यही कारण है कि तुम उद्विग्न रहते हो।

सच्चा मनुष्य एक बार उत्तम संकल्प करने के लिए यह नहीं देखता कि लोग क्या कह रहे हैं? वह अपनी धुन का पक्का होता है। सुकरात के सामने जहर का प्याला रखा गया, पर उसकी राय को कोई न बदल सका। बंदा बैरागी को भेड़ों की खाल पहनाकर काले मुँह गली-गली फिराया गया, किंतु उसने दूसरों की राय न मानी।

दूसरे के इशारों पर नाचना, दूसरों के सहारे पर निर्भर रहना, दूसरों की झूठी टीका-टिप्पणी से उद्विग्न होना, मानसिक दुर्बलता है। जब तक मनुष्य स्वयं अपना स्वामी नहीं बन जाता, तब तक उसका संपूर्ण विकास नहीं हो सकता। दूसरों का अनुकरण करने से मनुष्य अपनी मौलिकता से हाथ धो बैठता है।

स्वयं विचार करना सीखो। दूसरों के बहकावे में न आओ। कर्त्तव्य-पथ पर बढ़ते हुए, दूसरे क्या कहते हैं, इसकी चिंता न करो। यदि ऐसा करने का साहस तुम में नहीं है, तो जीवन भर दासत्व के बंधनों में जकड़े रहोगे। *—अखण्ड ज्योति-मई १९४५ पृष्ठ-१२०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्भावनाओं को जीतो

बाहरी दुनियाँ, भीतरी दुनियाँ का चित्र मात्र है। मनुष्य के मन में जैसी भावनाएँ घुमड़ती हैं, बाहरी परिस्थितियाँ उसी के अनुकूल स्थिर हो जाती हैं।

सच्ची शांति की स्थापना करनी हो, तो उस दूषित विचारधारा को परास्त करना चाहिए, जो युद्धों की जननी है। पारिवारिक, सामाजिक, जातिगत, धार्मिक और राजनीतिक युद्धों का मूल कारण दूसरों के हितों की परवाह न करके अपना स्वार्थ-साधन करना है। यह नीति जहाँ भी काम कर रही होगी, वहीं कलह उत्पन्न होगी। संकीर्ण दायरे में सोचने वाले विचारक अपने देश या जाति के लाभ के लिए दूसरे देश या जाति के स्वार्थों की अवहेलना करने लगते हैं, तो उसकी प्रतिक्रिया बड़ी दुःखदायी और अशांतिकारक होती है। यह आवश्यक नहीं कि अपने को सुखी बनाने के लिए दूसरों को लूटा-खसोटा ही जाए। इस रीति से यदि कोई संपन्न बन भी जाए तो वह संपन्नता उसके लिए अंततः दुःखदायी ही होती है। समानता, एकता, प्रेम, सहयोग, उदारता और बंधुत्व भावना के आधार पर सब देशों के मनुष्य आपस में मिल-जुलकर रह सकते हैं तथा एकदूसरे के सुख को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं।

'हम सुखी रहें और सब चाहे जैसे रहें' यह घातक नीति अनेक विघटन उत्पन्न करती है। सबके सुख में जो अपना सुख तलाश किया जाता है, वही सुख वास्तविक और टिकाऊ होता है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९४५ पृष्ठ-१२५

प्रेम का वास्तविक स्वरूप

निश्चय ही प्रेम और आनंद का उद्गम आत्मा के अंदर है। उसे परमात्मा के साथ जोड़ने से ही अपरिमित और स्थायी आनंद प्राप्त हो सकता है। सांसारिक नाशवान वस्तुओं के कंधे पर यदि आत्मीयता का बोझ रखा जाए तो उन नाशवान वस्तुओं में परिवर्तन होने पर या नाश होने पर सहारा टूट जाता है और उसके कंधे पर जो बोझ रखा था, वह सहसा नीचे गिर पड़ता है, फलस्वरूप बड़ी चोट लगती है और हम बहुत समय तक तिलमिलाते रहते हैं। धन-नाश पर, प्रियजन की मृत्यु पर, अपयश होने पर कितने ही व्यक्ति दहाड़ें मारकर रोते-बिलखते और जीवन को नष्ट करते हुए देखे जाते हैं। बालू पर महल बनाकर उसे अजर-अमर रखने का स्वप्न देखने वालों की जो दुर्दशा होती है, वही इन हाहाकार करते हुए प्रेमियों की होती है। भौतिक पदार्थ नाशवान हैं, इसलिए उनसे प्रेम जोड़ना एक बड़ा अधूरा और लँगड़ा-लूला सहारा है, जो कभी भी टूटकर गिर सकता है और गिरने पर प्रेमी को हृदयविदारक आघात पहुँचा सकता है। प्रेम का गुण तो आनंदमय है।

प्रेम का आध्यात्मिक स्वरूप यह है कि आत्मा का आधार परमात्मा को बनाया जाए। चैतन्य और अजर-अमर आत्मा का अवलंबन सच्चिदानंद परमात्मा ही हो सकता है। इसलिए जड़ पदार्थों से, भौतिक वस्तुओं से चित्त हटाकर परमात्मा में लगाया जाए। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९४५ पृष्ठ-१४८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्ति संचय कीजिए

जीवन एक प्रकार का संग्राम है। इसमें घड़ी-घड़ी में विपरीत परिस्थितियों से, कठिनाइयों से लड़ना पड़ता है। मनुष्य को अपरिमित विरोधी तत्त्वों को पार करते हुए अपनी यात्रा जारी रखनी होती है। दृष्टि उठाकर जिधर भी देखिए, उधर ही शत्रुओं से जीवन घिरा हुआ प्रतीत होगा। 'दुर्बल, सबलों का आहार है' यह एक ऐसा कड़वा सत्य है, जिसे लाचार होकर स्वीकार करना ही पड़ता है। छोटी मछली को बड़ी मछली खाती है। बड़े वृक्ष अपना पेट भरने के लिए आस-पास के असंख्य छोटे-छोटे पौधों की खुराक झपट लेते हैं और वे बेचारे छोटे पौधे मृत्यु के मुख में चले जाते हैं। छोटे कीड़ों को चिड़ियाँ खा जाती हैं और उन चिड़ियों को बाज आदि बड़ी चिड़ियाँ मारकर खाती हैं। गरीब लोग अमीरों द्वारा, दुर्बल बलवानों द्वारा सताए जाते हैं। इन सब बातों पर विचार करते हुए हमें इस निर्णय पर पहुँचना होता है कि यदि सबलों का शिकार बनने से, उनके द्वारा नष्ट किए जाने से, अपने को बचाना है तो अपनी दुर्बलता को हटाकर इतनी शक्ति तो कम से कम अवश्य ही संचय करनी चाहिए कि चाहे जो कोई यों ही चट न कर जाए।

सांसारिक जीवन में प्रवेश करते हुए यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए और समझकर गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि केवल जागरूक और बलवान व्यक्ति ही इस दुनियाँ में आनंदमय जीवन के अधिकारी हैं।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९४५ पृष्ठ-१६९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

शेखी मत बघारो

अभिमान और तुच्छता, आत्मप्रशंसा और शेखी के रूप में प्रगट होते हैं, जिससे आपका सामाजिक जीवन सबके लिए असह्य और अनाकर्षक बन जाता है। जनता आपकी प्रशंसा कर सकती है, किंतु वह उसको आपके मुख से सुनना नहीं चाहती। यदि आप अपनी प्रशंसा न्याय और सत्य के अनुसार भी करते हों, तो भी जनता विरोधी हो जाती है और आपके दोषों को ही देखने लगती है। अपनी सफलता को ऐतिहासिक स्त्री-पुरुषों के कार्यों से तुलना करके नम्रता सीखो। ऊँट तभी तक अपने को ऊँचा समझता है, जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता। अपने से बड़े प्रसिद्ध पुरुषों से मिलते-जुलते रहने का उद्योग करो। इस प्रकार की मित्रता आपको अत्यंत प्रभावपूर्ण नम्रता की शिक्षा देगी। इस बात को स्मरण रखो कि अभिमान से आप बहुत कुछ खो देते हो। अभिमानी की बहुत से मनुष्य न प्रशंसा करते, न सहायता करते और न प्रेम करते हैं। अभिमान आपके व्यक्तिगत विकास को भी रोकता है। यदि आप अपने को सबसे बड़ा समझने लगोगे तो आप अधिक बड़ा बनने का यत्न करना छोड़ दोगे। यदि अपने कोई कार्य ख्याति तथा विज्ञापन योग्य किया है, तो उसके विषय में स्वयं कुछ मत कहो। आपको पता लगेगा कि उसके विषय में दूसरे भी किसी-न-किसी प्रकार कुछ अवश्य जानते हैं। आपके गुण अधिक समय तक छिपे नहीं रहेंगे। आपको स्वयं उनकी घोषणा करने की आवश्यकता नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९४५ पृष्ठ-१८६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार ही कर्म के बीज हैं

जगत पिता परमात्मा ने सृष्टि में संकीर्णता, सीमाबंधन या दरिद्रता का स्थान नहीं रखा है। ये कुत्सित वस्तुएँ संसार में नहीं प्रत्युत हमारे अंतर में घास-फूस की तरह उग आई हैं। अंतःकरण में उत्पन्न होकर इन्होंने हमारे आत्मबल तथा गुप्त-सामर्थ्य का भक्षण कर लिया है। यही कारण है कि अनेक व्यक्तियों में शरीर का परिवर्तन तो स्पष्ट दीखता है, किंतु मन, बुद्धि, अंतःकरण एवं समृद्धि का विकास किंचितमात्र भी नहीं दिखाई देता।

इस जगत में दुःख देने वाली एक ही सत्ता है और वह है मनुष्य का दुष्कर्म। विचार और कर्म में कोई भेदभाव नहीं है। विचार बीज है और कर्म उसी बीज से उत्पन्न वृक्ष। सुख-दुःख उसी के कड़वे-मीठे फल हैं। परम शोक का विषय है कि समृद्धि के भंडार इस जगत में रहते हुए भी हम अपनी आत्मा को संकुचित कर डालते हैं। उसमें दुर्दैव के निरुत्साही विचार भर लेते हैं और भयपूर्ण दरिद्रता व गरीबी के टूटे-फूटे विचारों में लिप्त रहते हैं। जितना ही अधिक हम दरिद्र संस्कारों से चिपकते हैं, उतने ही अधिक दुखी बनते हैं। यह हमारी सबसे बड़ी गलती है। मन के आंतरिक प्रदेश में गरीबी के विचार प्रवेश न होने दें। 'बुद्धि मंद है, भाग्य फिर गया है, गरीबी ही लिखी है', ऐसे विचारों का मस्तिष्क में संग्रह न होने दें, तो निश्चय ही हमारा जीवन परिपूर्ण एवं ऐश्वर्यशाली बन जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४५ पृष्ठ-१९६

जीवन को तपस्यामय बनाइए

प्रकृति का नियम है कि संघर्ष से तेजी आती है। रगड़ और घर्षण यद्यपि देखने में कठोर कर्म प्रतीत होते हैं, पर उन्हीं के द्वारा सौंदर्य का प्रकाश होता है। सोना तपाए जाने पर निखरता है। धातु का एक रद्दी-सा टुकड़ा जब अनेकविध कष्टदायक परिस्थितियों के बीच में होकर गुजरता है, तब उसे भगवान की मूर्ति होने का या ऐसा ही अन्य महत्त्वपूर्ण गौरवमय पद प्राप्त होता है। जीवन वही निखरता है, जो कष्ट और कठिनाइयों से टकराता रहता है। विपत्ति, बाधा और कठिनाइयों से जो लड़ सकता है, प्रतिकूल परिस्थितियों से युद्ध करने का जिसमें साहस है, उसे ही, सिर्फ उसे ही जीवन-विकास का सच्चा सुख मिलता है। इस पृथ्वी के परदे पर एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ है, जिसने बिना कठिनाई उठाए, बिना जोखिम ओढ़े, कोई बड़ी सफलता प्राप्त कर ली हो। कष्टमय जीवन के लिए अपने आप को खुशी-खुशी पेश करना, यही तप का मूल तत्त्व है। तपस्वी लोग ही अपनी तपस्या से इंद्र का सिंहासन जीतने में और भगवान का आसन हिला देने में समर्थ हुए हैं। मनोवांछित परिस्थितियाँ प्राप्त करने का संसार में एकमात्र साधन तपस्या ही है। स्मरण रखिए, सिर्फ वे ही व्यक्ति इस संसार में महत्त्व प्राप्त करते हैं, जो कठिनाइयों के बीच हँसना जानते हैं, जो तपस्या में आनंद मानते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्यता में अकूत बल भरा हुआ है

आप सदा सत्य बोलिए, अपने विचारों को सत्यता से परिपूर्ण बनाइए, आचरण में सत्यता बरतिए और अपने आप को सत्यता से सराबोर रखिए। ऐसा करने से आपको एक ऐसा प्रचंड बल प्राप्त होगा, जो संसार के समस्त बलों से अधिक होगा। कनफ्यूशियस कहा करते थे कि सत्य में हजार हाथियों के बराबर बल है, परंतु वस्तुतः सत्य में अपार बल है। उसकी समता भौतिक सृष्टि के किसी बल के साथ नहीं की जा सकती।

जो अपनी आत्मा के सामने सच्चा है, जो अपनी अंतरात्मा की आवाज के अनुसार आचरण करता है, बनावट, धोखेबाजी, चालाकी को तिलांजलि देकर जिसने ईमानदारी को अपनी नीति बना लिया है, वह इस दुनियाँ का सबसे बड़ा बुद्धिमान व्यक्ति है, क्योंकि सदाचरण के कारण मनुष्य शक्ति का पुंज बन जाता है। उसे कोई डरा नहीं सकता। उसे किसी का डर नहीं लगता। जबकि झूठे और मिथ्याचारी लोगों का कलेजा बात-बात में सशंकित रहता है और पीपल के पत्तों की तरह काँपता रहता है।

धन-बल, जन-बल, तन-बल, मन-बल आदि अनेक प्रकार के बल इस संसार में होते हैं, परंतु सत्य का बल सबसे अधिक है। सच्चा पुरुष इतना शक्तिशाली होता है कि उसके आगे मनुष्यों को ही नहीं, देवताओं को ही नहीं, परमात्मा को भी झुकना पड़ता है। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४५ पृष्ठ-१*

www.vicharkrantibooks.org

अपने को जीतो

जो आदमी केवल इंद्रिय सुखों और शारीरिक वासनाओं की तृप्ति के लिए जीवित है और जिसके जीवन का उद्देश्य 'खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ' है, निस्संदेह वह आदमी परमात्मा की इस सुंदर पृथ्वी पर एक कलंक है, भार है, क्योंकि उसमें सभी परमात्मीय गुण होते हुए भी वह एक पशु के समान नीच वृत्तियों में फँसा हुआ है। जिस आदमी में ईश्वरीय अंश विद्यमान है, वही अपने मुख से हमें अपने पतित जीवन की दुःख भरी गाथा सुनाता है।

वास्तव में आदर्श मनुष्य वही है जो समस्त पाशविक वृत्तियों तथा विषय-वासनाओं को दूर रखता हुआ भी उनके ऊपर अपने सुसंयमित तथा सुशासक मन से राज्य करता है, जो अपने शरीर का स्वामी है, जो अपनी समस्त विषय-वासनाओं की लगाम को अपने दृढ़ तथा धैर्य युक्त हाथों में पकड़कर अपनी प्रत्येक इंद्रिय से कहता है कि तुम्हें मेरी सेवा करनी होगी, न कि मालिकी। मैं तुम्हारा सदुपयोग करूँगा, दुरुपयोग नहीं। ऐसे ही मनुष्य अपनी समस्त पाशविक वृत्तियों तथा वासनाओं की शक्तियों को देवत्व में परिणत कर सकते हैं। विलासिता मृत्यु है और संयम जीवन है। सच्चा रसायनशास्त्री वही है जो विषय-वासनाओं के लोहे को आध्यात्मिक तथा मानसिक शक्तियों के स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है। उसे हर एक वस्तु तथा परिस्थिति में आनंद की झाँकी होने लगती है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९४५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी दुनियाँ वैसी, जैसा हमारा मन

मन की शरीर पर क्रिया एवं शरीर की मन पर प्रतिक्रिया निरंतर होती रहती है। जैसा आपका मन, वैसा ही आपका शरीर, जैसा शरीर, वैसा ही मन का स्वरूप। यदि शरीर में किसी प्रकार की पीड़ा है, तो मन भी क्लांत, अस्वस्थ एवं पीड़ित हो जाता है। वेदांत में यह स्पष्ट किया गया है कि समस्त संसार की गतिविधि का निर्माण मन द्वारा ही हुआ है।

जैसी हमारी भावनाएँ, इच्छाएँ, वासनाएँ अथवा कल्पनाएँ हैं, तदनुसार ही हमें शरीर और अंग-प्रत्यंग की बनावट प्राप्त हुई है। मनुष्य के माता-पिता, परिस्थितियाँ, जन्मस्थान, आयु, स्वास्थ्य, विशेष प्रकार के भिन्न शरीर प्राप्त करना, स्वयं हमारे व्यक्तिगत मानसिक संस्कारों पर निर्भर है। हमारा बाह्य जगत हमारे प्रसुप्त संस्कारों की प्रतिच्छाया मात्र है।

संसार अपने आप में न निकृष्ट है और न उत्तम। सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन के पश्चात हमें प्रतीत होता है कि यह वैसा ही है, जैसी प्रतिकृति हमारे अंतर्जगत में विद्यमान है। हमारी दुनियाँ वैसी ही है, जैसा हमारा अंत:करण का स्वरूप।

भलाई, बुराई, उत्तमता, निकृष्टता, भव्यता, कुरूपता, मन की ऊँची-नीची भूमिकाएँ मात्र हैं। हमारे अपने हाथ में है कि हम चाहे ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ की भट्ठी में भस्म होते रहें और अपना जीवन शूलमय बनाएँ अथवा सद्‌गुणों का समावेश कर अपने अंत:करण में शांति स्थापित करें। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४६, पृष्ठ ४*

www.vicharkrantibooks.org

मन से भय की भावनाएँ निकाल फेंकिए

भयभीत होना एक अप्राकृतिक बात है। प्रकृति नहीं चाहती कि मनुष्य डरकर अपनी आत्मा पर बोझ डाले। तुम्हारे सब भय, तुम्हारे दु:ख, तुम्हारी नित्यप्रति की चिंताएँ, तुमने स्वयं उत्पन्न कर ली हैं। यदि तुम चाहो, तो अंत:करण को भूत-प्रेत-पिशाचों की श्मशान भूमि बना सकते हो। इसके विपरीत यदि तुम चाहो तो अपने अंत:करण को निर्भयता, श्रद्धा, उत्साह के सद्‌गुणों से परिपूर्ण कर सकते हो। अनुकूलता या प्रतिकूलता उत्पन्न करने वाले तुम स्वयं ही हो। तुम्हें दूसरा कोई हानि नहीं पहुँचा सकता, बाल भी बाँका नहीं कर सकता। तुम चाहो, तो परम निर्भय, नि:शंक बन सकते हो। तुम्हारी शुभ-अशुभ वृत्तियाँ, यश-अपयश के विचार, विवेक-बुद्धि ही तुम्हारा भाग्य-निर्माण करती है।

भय की एक शंका मन में प्रवेश करते ही, वातावरण को संदेहपूर्ण बना देती है। हमें चारों ओर वही चीज नजर आने लगती है, जिससे हम डरते हैं। यदि हम भय की भावनाएँ हमेशा के लिए मनमंदिर से निकाल डालें, तो उचित रूप से तृप्त और सुखी रह सकते हैं। आनंदित रहने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि अंत:करण भय की कल्पनाओं से सर्वथा मुक्त रहे।

आइए, हम आज से ही प्रतिज्ञा करें कि हम अभय हैं। भय के पिशाच को अपने निकट न आने देंगे। श्रद्धा और विश्वास के दीपक को अंत:करण में आलोकित रखेंगे और निर्भयतापूर्वक परमात्मा की इस पुनीत सृष्टि में विचरण करेंगे। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४६, मुख्य पृष्ठ*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी भूलों को स्वीकार कीजिए

जब मनुष्य कोई गलती कर बैठता है, तब उसे अपनी भूल का भय लगता है। वह सोचता है कि दोष को स्वीकार कर लेने पर मैं अपराधी समझा जाऊँगा, लोग मुझे बुरा-भला कहेंगे और गलती का दंड भुगतना पड़ेगा। वह सोचता है कि इन सब झंझटों से बचने के लिए यह अच्छा है कि गलती को स्वीकार ही न करूँ, उसे छिपा लूँ या किसी दूसरे के सिर मढ़ दूँ।

इस विचारधारा से प्रेरित होकर काम करने वाले व्यक्ति भारी घाटे में रहते हैं। एक दोष छिपा लेने से बार-बार वैसा करने का साहस होता है और अनेक गलतियों को करने एवं छिपाने की आदत पड़ जाती है। दोषों के भार से अंत:करण दिन-दिन मैला, भद्दा और दूषित होता जाता है और अंतत:, वह दोषों की, भूलों की खान बन जाता है। गलती करना उसके स्वभाव में शामिल हो जाता है।

भूल को स्वीकार करने से मनुष्य की महत्ता कम नहीं होती वरन उसके महान आध्यात्मिक साहस का पता चलता है। गलती को मानना बहुत बड़ी बहादुरी है। जो लोग अपनी भूल को स्वीकार करते हैं और भविष्य में वैसा न करने की प्रतिज्ञा करते हैं, वे क्रमश: सुधरते और आगे बढ़ते जाते हैं। गलती को मानना और उसे सुधारना, यही आत्मोन्नति का सन्मार्ग है। तुम चाहो, तो अपनी गलती स्वीकार कर निर्भय, परम नि:शंक बन सकते हो। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४६, मुख पृष्ठ*

www.awgp.org

जोश के साथ होश

इंद्रियों के दास होकर नहीं, स्वामी होकर रहना चाहिए। संयम के बिना सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकती। नित्य नए-नए भोगों के पीछे दौड़ने का परिणाम दु:ख और अशांति है।

श्रीमद्‌भगवद् गीता पढ़ने, सुनने या समझने की सार्थकता इसी में है कि इंद्रियों पर संयम किया जाए। इंद्रियों के वेग तथा प्रवाह में बह जाना, मानव धर्म नहीं है। किसी भी साधन-योग, जप, तप, ध्यान इत्यादि का प्रारंभ संयम बिना नहीं होता।

संयम के बिना जीवन का विकास नहीं होता। जीवन के सितार पर हृदयलोक में मधुर संगीत उसी समय गूँजता है, जब उसके तार नियम तथा संयम में बँधे होते हैं।

जिस घोड़े की लगाम सवार के हाथ में नहीं होती, उस पर सवारी करना खतरे से खाली नहीं है। संयम की बागडोर लगाकर ही घोड़ा निश्चित मार्ग पर चलाया जा सकता है। ठीक यही दशा मनरूपी अश्व की है। विवेक तथा संयम द्वारा इंद्रियों को अधीन करने पर ही जीवन-यात्रा आनंदपूर्वक चलती है।

उच्छृंखल युवक कभी-कभी मानसिक, सामाजिक और राष्ट्रीय बंधनों को तोड़ देना चाहते हैं। यह हमारी भूल है। जीवन में जोश के साथ होश की उसी प्रकार आवश्यकता है जिस प्रकार अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की। यही बुद्धि स्थिर करने का उपाय है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९४६, पृष्ठ १५*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानसिक विकास का अटल नियम

जिस प्रकार के विचार हम नित्य किया करते हैं, उन्हीं विचारों के अणुओं का मस्तिष्क में संग्रह होता रहता है। मस्तिष्क का उपयोग उचित और सत्कार्यों में करने से, उसे आलसी-निकम्मा न छोड़ने से मानसिक शक्ति का विकास होता है।

मस्तिष्क को उत्तम या निकृष्ट बनाना तुम्हारे हाथ में ही है। सोचो, विचारो तथा मनन करो। क्रोध करने से क्रोध वाले अणुओं की संख्या की वृद्धि होती है। चिंता, शोक, भय व खेद करने से इन्हीं कुविचारों के अणुओं का तुम पोषण करते हो और मस्तिष्क को निर्बल बनाते हो। भूतकाल की दुर्घटनाओं या दुःखद प्रसंग को स्मरण कर, खेद या शोक के वशीभूत होकर मस्तिष्क को निर्बल मत बनाओ। शरीर में बल होते हुए भी उसका उपयोग न करने से बल क्षीण होता है।

इसी प्रकार बिना विचार के मस्तिष्क भी क्षीण होता है। नवीन विचारों का मन में स्वागत करने से मस्तिष्क का मानस-व्यापार व्यापक होता है तथा मन प्रफुल्लित हो जाता है, जीवन व बल की वृद्धि होती है, मन व बुद्धि तेजस्वी बनते हैं। जो विचार हमारे मस्तिष्क में हैं, वे ही हमारे जीवन को बनाने वाले हैं। जिस कला का विचार तथा अभ्यास करोगे, उसी में निपुणता मिलेगी। मस्तिष्क के जिस भाग का उपयोग करोगे, उसी की शक्तियों का विकास होगा।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९४६, पृष्ठ १०

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीने योग्य जीवन जियो

धिक्कार है उस जिंदगी पर, जो मक्खियों की तरह पापों की विष्ठा के ऊपर भिनभिनाने में और कुत्ते की तरह विषय भोगों की जूठन चाटने में व्यतीत होती है। उस बड़प्पन पर धिक्कार है, जो खुद खजूर की तरह बढ़ते हैं, पर उनकी छाया में एक प्राणी भी आश्रय नहीं पा सकता। सर्प की तरह धन के खजाने पर बैठकर चौकीदारी करने वाले लालची किस प्रकार सराहनीय कहे जा सकते हैं? जिनका जीवन तुच्छ स्वार्थों को पूरा करने की उधेड़-बुन में निकल गया, हाय! वे कितने अभागे हैं। सुरदुर्लभ देहरूपी बहुमूल्य रत्न, इन दुर्बुद्धियों ने काँच और कंकड़ के टुकड़ों के बदले बेच दिया। किस मुख से वे कहेंगे कि हमने जीवन का सद्व्यय किया। इन कुबुद्धियों को तो अंत में पश्चात्ताप ही प्राप्त होगा। एक दिन उन्हें अपनी भूल प्रतीत होगी, पर उस समय अवसर हाथ से चला गया होगा और सिर धुन-धुनकर पछताने के अतिरिक्त और कुछ हाथ न लगेगा।

मनुष्यों! जियो और जीने योग्य जीवन जियो। ऐसी जिंदगी बनाओ जिसे आदर्श और अनुकरणीय कहा जा सके। विश्व में अपने ऐसे पदचिह्न छोड़ जाओ, जिन्हें देखकर आगामी संतति अपना मार्ग ढूँढ़ सके। आपका जीवन सत्य से, प्रेम से, न्याय से भरा हुआ होना चाहिए। दया, सहानुभूति, आत्मनिष्ठा, संयम, दृढ़ता, उदारता आपके जीवन के अंग होने चाहिए। हमारा जीवन मनुष्यता के महान गौरव के अनुरूप ही होना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४६, मुख पृष्ठ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की बागडोर आपके हाथ में

भाग्य ने जहाँ छोड़ दिया, वहीं पड़ गए और कहने लगे कि हम क्या करें, किस्मत साथ नहीं देती, सभी हमारे खिलाफ हैं, प्रतिद्वंद्विता पर तुले हैं, जमाना बुड़ा बुरा आ गया है। यह मानव की अज्ञानता के द्योतक पुरुषार्थहीन विचार हैं, जिन्होंने अनेक जीवन बिगाड़े हैं। मनुष्य भाग्य के हाथ की कठपुतली है, खिलौना है, वह मिट्टी है, जिसे समय-असमय यों ही मसल डाला जा सकता है। ये भाव अज्ञान, मोह एवं कायरता के प्रतीक हैं।

अपने अंत:करण में जीवन के बीज बोओ तथा साहस, पुरुषार्थ, सत्संकल्पों के पौधों को जल से सींचकर फलित-पुष्पित करो। साथ ही अकर्मण्यता की घास-फूस को छाँट-छाँटकर उखाड़ फेंको। उमंग, उल्लास की वायु की हिलोरें उड़ाओ।

आप अपने जीवन के भाग्य, परिस्थितियों, अवसरों के स्वयं निर्माता हैं। स्वयं जीवन को उन्नत या अवनत कर सकते हैं। जब आप सुख-संतोष के लिए प्रयत्नशील होते हैं, वैसी ही मानसिक धारा में निवास करते हैं, तो संतोष और सुख आपके मुखमंडल पर छलक उठता है। जब आप दुखी, क्लांत रहते हैं, तो जीवनवृत्त मुरझा जाता है और शक्ति का ह्रास हो जाता है।

शक्ति की, प्रेम की, बल और पौरुष की बात सोचिए, संसार के श्रेष्ठ वीर पुरुषों की तरह स्वयं परिस्थितियों का निर्माण कीजिए। अपनी दरिद्रता, न्यूनता, कमजोरी को दूर करने की सामर्थ्य आप में है। बस केवल आंतरिक शक्ति प्रदीप्त कीजिए। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४६ पृष्ठ २१*

www.vicharkrantibooks.org

कर्म की स्वतंत्रता

समस्त योनियों में से केवल मनुष्य योनि ही ऐसी योनि है, जिसमें मनुष्य कर्म करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र है। ईश्वर की ओर से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि इसलिए प्रदान किए गए हैं कि वह प्रत्येक काम को मानवता की कसौटी पर कसे और बुद्धि से तौलकर, मन से मनन करके, इंद्रियों द्वारा पूरा करे। मनुष्य का यह अधिकार जन्मसिद्ध है। यदि वह अपने इस अधिकार का सदुपयोग नहीं करता, तो वह केवल अपना कुछ खोता ही नहीं है, बल्कि ईश्वरीय आज्ञा की अवहेलना करने के कारण पाप का भागी बनता है।

कर्म करना मनुष्य का अधिकार है, परंतु इसके विपरीत कर्म को छोड़ देने में वह स्वतंत्र नहीं है। किसी प्रकार भी कोई प्राणी कर्म किए बिना नहीं रह सकता। यह हो सकता है कि जो कर्म उसे नहीं करना चाहिए, उसका वह आचरण करने लगे। ऐसी अवस्था में स्वभाव उसे जबरदस्ती अपनी ओर खींचेगा और उसे लाचार होकर यंत्र की भाँति कर्म करना पड़ेगा। गीता में भगवान ने कहा है—यदि तू अज्ञान और मोह में पड़कर कर्म करने के अधिकार को कुचलेगा, तो याद रख कि स्वभाव से उत्पन्न कर्म के अधीन होकर तुझे सब कुछ करना पड़ेगा। ईश्वर सब प्राणियों के हृदय-प्रदेश में बसा हुआ है और जो मनुष्य अपने स्वभाव तथा अधिकार के विपरीत कर्म करते हैं, उनको यह माया का डंडा लगाकर इस प्रकार घुमा देता है, जैसे कुम्हार चाक पर चढ़ाकर एक मिट्टी के बरतन को घुमाता है। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४६ पृष्ठ १७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भलाई करना ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी

दुष्ट लोग उस मूर्खता से नहीं डरते, जिसे पाप कहते हैं। विवेकवान सदा उस बेवकूफी से दूर रहते हैं। बुराई से बुराई ही पैदा होती है, इसलिए बुराई को अग्नि से भी भयंकर समझकर उससे डरना और दूर रहना चाहिए। जिस तरह छाया मनुष्य को कभी नहीं छोड़ती वरन जहाँ-जहाँ वह जाता है, उसके पीछे लगी रहती है, उसी तरह पाप-कर्म भी पापी का पीछा करते हैं और अंत में उसका सर्वनाश कर डालते हैं। इसलिए सावधान रहिए और बुराई से सदा डरते रहिए।

जो काम बुरे हैं, उन्हें मत करो, क्योंकि बुरे काम करने वालों को अंतरात्मा के शाप की अग्नि में हर घड़ी झुलसना पड़ता है। वस्तुओं को प्रचुर परिमाण में एकत्रित करने की कामना से, इंद्रिय भोगों की लिप्सा से और अहंकार को तृप्त करने की इच्छा से लोग कुमार्ग में प्रवेश करते हैं, पर ये तीनों ही बातें तुच्छ हैं। इनसे क्षणिक तुष्टि होती है, पर बदले में अपार दुःख भोगना पड़ता है। चीनी मिले हुए विष को लोभवश खाने वाला बुद्धिमान नहीं कहा जाता।

इस दुनियाँ में सबसे बड़ा बुद्धिमान, विद्वान, चतुर और समझदार वह है, जो अपने को कुविचारों और कुकर्मों से बचाकर सत्य को अपनाता है, सत्मार्ग पर चलता है और सद्विचारों को ग्रहण करता है। यही बुद्धिमानी अंत में लाभदायक ठहरती है और दुष्टता करने वाले अपनी बेवकूफी से होने वाली हानि के कारण सिर धुन-धुन कर पछताते हैं। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४६, पृष्ठ १*

दुःख काल्पनिक होते हैं

वैराग्य का अर्थ है—रागों को त्याग देना। राग मनोविकारों को, दुर्भावों और कुसंस्कारों को कहते हैं। अनावश्यक मोह, ममता, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, शोक, चिंता, तृष्णा, भय, कुढ़न आदि के कारण मनुष्य जीवन में बड़ी अशांति एवं उद्विग्नता रहती है।

तत्त्वदर्शी सुकरात का कथन है कि संसार में जितने दुःख हैं, उनमें तीन-चौथाई काल्पनिक हैं। मनुष्य अपनी कल्पना शक्ति के सहारे उन्हें अपने लिए गढ़कर तैयार करता है और उन्हीं से डर-डरकर खुद दुखी होता रहता है। यदि वह चाहे, तो अपनी कल्पना शक्ति को परिमार्जित करके, अपने दृष्टिकोण को शुद्ध करके, इन काल्पनिक दुःखों के जंजाल से आसानी से छुटकारा पा सकता है। अध्यात्मशास्त्र में इसी बात को सूत्ररूप में इस प्रकार कह दिया है—वैराग्य से दुःखों की निवृत्ति होती है।

हम मनचाहे भोग नहीं भोग सकते। धन की, संतान की, अधिक जीवन की, भोग की एवं मनमानी परिस्थिति प्राप्त होने की तृष्णा किसी भी प्रकार पूरी नहीं हो सकती। एक इच्छा पूरी होने पर दूसरी नई दस इच्छाएँ उठ खड़ी होती हैं। उनका कोई अंत नहीं, कोई सीमा नहीं। इस अतृप्ति से बचने का सीधा-सादा उपाय अपनी इच्छाओं एवं भावनाओं को नियंत्रित करना है। इस नियंत्रण द्वारा, वैराग्य के द्वारा ही दुःखों से छुटकारा मिलता है। दुःखों से छुटकारे का, वैराग्य ही एकमात्र उपाय है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४६, पृष्ठ १५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छाइयाँ देखिए अच्छाइयाँ फैलेंगी

जैसा हम देखते, सुनते या व्यवहार में लाते हैं, ठीक वैसा ही निर्माण हमारे अंतर्जगत् का होता है। जो-जो वस्तुएँ हम बाह्य जगत् में देखते हैं, हमारी अभिरुचि के अनुसार उनका प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक अच्छी मालूम होने वाली प्रतिक्रिया से हमारे मन में एक ठीक मार्ग बनता है। क्रमशः वैसा ही करने से वह मानसिक मार्ग दृढ़ बनता जाता है। अंत में वह आदत बनकर ऐसा पक्का हो जाता है कि मनुष्य उसका क्रीतदास बना रहता है।

जो व्यक्ति अच्छाइयाँ देखने की आदत बना लेता है, उसके अंतर्जगत् का निर्माण शील, गुण, दैवी तत्त्वों से होता है। उसमें ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ की गंध नहीं होती। सर्वत्र अच्छाइयाँ देखने से वह स्वयं शील गुणों का केंद्र बन जाता है।

अच्छाई एक प्रकार का पारस है। जिसके पास अच्छाई देखने का सद्गुण मौजूद है, वह पुरुष अपने चरित्र की प्रभा से दुराचारी को भी सदाचारी बना देता है। उस केंद्र से ऐसा विद्युत प्रवाह प्रसारित होता है, जिससे सर्वत्र सत्यता का प्रकाश फैलता है। नैतिक माधुर्य जिस स्थान पर एकीभूत हो जाता है, उसी स्थान में समझ लो कि सच्चा माधुर्य तथा आत्मिक सौंदर्य विद्यमान है। अच्छाई देखने की आदत सौंदर्यरक्षा एवं शीलरक्षा दोनों का समन्वय करने वाली है। यदि संसार में लोग विवेक से नीर-क्षीर अलग करने लगें और अपनी दुष्प्रवृत्तियों को निकाल दें, तो सतयुग आ सकता है।

www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४६, पृष्ठ १९

वर्तमान परिस्थितियाँ हमने स्वयं उत्पन्न की हैं

माना कि हमसे नित्य प्रति भूलें होती हैं। ये हमारे शरीर और मन की भूलें हैं। नित्य दंड पाकर वे इन भूलों की क्षतिपूर्ति भी करते रहते हैं। आत्मा, जोकि हमारी मूल सत्ता है, इन नित्य की भूलों से ऊपर है। वह कभी भूल या पाप में प्रवृत्त नहीं होती। हर बुरा काम करते समय विरोध करना और हर अच्छा काम करते समय संतोष अनुभव करना, यह उसका निश्चित कार्यक्रम है। अपने इस सनातन स्वभाव को वह कभी नहीं छोड़ सकती। उसकी आवाज को चाहे हम कितनी ही मंद कर दें, कितनी ही कुचल दें, कितनी ही अनसुनी कर दें, तो भी वह कुतुबनुमा की सुई की तरह अपना रुख पवित्रता की ओर ही रखेगी, उसकी स्फुरणा सतोगुणी ही रहेगी, इसलिए आत्मा कभी अपवित्र या पापी नहीं हो सकती। चूँकि हम शरीर और मन नहीं वरन आत्मा हैं, इसलिए हमें अपने को सदैव उच्च, महान, पवित्र, निष्पाप परमात्मा का पुत्र ही मानना चाहिए। अपने प्रति पवित्रता का भाव रखने से हमारा शरीर और मन भी पवित्रता एवं महानता की ओर द्रुतगति से अग्रसर होता है।

हम स्वयं ही कर्त्ता एवं भोक्ता हैं। कर्म करने की पूरी-पूरी स्वतंत्रता हमें प्राप्त है। जैसे कर्म हम करते हैं, ईश्वरीय विधान के अनुसार वैसा फल भी तुरंत या देर में मिल जाता है। इस प्रकार अपने भाग्य के निर्माण करने वाले भी हम स्वयं ही हैं। परिस्थितियों के जन्मदाता हम स्वयं हैं।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४७ पृष्ठ-८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मनिर्माण सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ है

इस संसार में अनेक प्रकार के पुण्य और परमार्थ हैं। दूसरों की सेवा-सहायता करना पुण्य कार्य है, इससे कीर्ति, आत्मसंतोष तथा सद्गति की प्राप्ति होती है। इन सबसे भी बढ़कर एक पुण्य-परमार्थ है और वह है—'आत्मनिर्माण'। अपने दुर्गुणों को, विचारों को, कुसंस्कारों को, ईर्ष्या, तृष्णा, क्रोध, द्रोह, क्षेम, चिंता, भय एवं वासनाओं को, विवेक की सहायता से आत्मज्ञान की अग्नि में जला देना इतना बड़ा धर्म है, जिसकी तुलना सहस्र अश्वमेधों से नहीं हो सकती। अपने अज्ञान को दूर करके मन-मंदिर में ज्ञान का दीपक जलाना, भगवान की सच्ची पूजा है। अपनी मानसिक तुच्छता, दीनता, हीनता, दासता को हटाकर निर्भयता, सत्यता, पवित्रता एवं प्रसन्नता की आत्मिक प्रवृत्तियाँ बढ़ाना, करोड़ मन सोना दान करने को अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है।

हर मनुष्य अपना-अपना आत्मनिर्माण करे, तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है। फिर मनुष्यों को स्वर्ग जाने की इच्छा करने की नहीं, वरन देवताओं को पृथ्वी पर आने की आवश्यकता अनुभव होगी। दूसरों की सेवा-सहायता करना पुण्य है, पर अपनी सेवा-सहायता करना, इससे भी बड़ा पुण्य है। अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यामिक स्थिति को ऊँचा उठाना, अपने को एक आदर्श नागरिक बनाना, इतना बड़ा धर्म-कार्य है, जिसकी तुलना अन्य किसी भी पुण्य-परमार्थ से नहीं हो सकती। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४७ पृष्ठ-१*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पूर्ण शांति की प्राप्ति

जिस क्षण हम भगवान के साथ अपनी एकता का अनुभव करना प्रारंभ कर देते हैं, उसी क्षण हमारे हृदय में शांति का स्रोत बहने लगता है। अपने को सदा सुंदर, स्वस्थ, पवित्र एवं आध्यात्मिक विचारों से ओत-प्रोत रखना, वस्तुत: जीवन और शांति की प्राप्ति का मार्ग है। इस सत्य को सदा अपने हृदयपट पर अंकित करना—"मैं आत्मा हूँ, भगवान का अंश हूँ" और हमेशा ही इसी विचारधारा में रहना, शांति का मूल तत्त्व है। कितना करुणाजनक और आश्चर्यप्रद दृश्य है कि संसार में हमें हजारों व्यक्ति चिंतित, दुखी, शांति की प्राप्ति के लिए इधर-उधर भटकते हुए तथा विदेशों की खाक छानते हुए नजर आते हैं, परंतु उन्हें शांति के दर्शन नहीं होते। इसमें तिलमात्र भी संदेह नहीं कि इस प्रकार वे कदापि शांति नहीं प्राप्त कर सकते, चाहे वर्षों तक वे प्रयत्न करते रहें, क्योंकि वे शांति को वहाँ खोज रहे हैं जहाँ कि उसका सर्वथा अभाव है। वे भोले मनुष्य बाह्य पदार्थों की ओर तृष्णा भरी निगाहों से देख रहे हैं, जबकि शांति का स्रोत उनके अपने अंदर बह रहा है। कस्तूरी मृग की नाभि में विद्यमान है, परंतु मृग अज्ञानतावश उसे खोजता-फिरता है। जीवन में सच्ची शांति अपने अंदर झाँकने से ही मिल सकती है।

पूर्ण शांति की प्राप्ति के लिए आवश्यकता है, अपने मन पर नियंत्रण की। हमें मन और इंद्रियों का दास नहीं अपितु उनका स्वामी बनना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४७ पृष्ठ-२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में सच्ची शांति के दर्शन

मनुष्य के अंतःस्थल में जो शुद्ध-बुद्ध-चैतन्य, सत्-चित्-आनंद, सत्य-शिव-सुंदर, अजर-अमर सत्ता है, वही परमात्मा है। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार के चतुष्ट्य को जीव कहते हैं। यह जीव, आत्मा से भिन्न भी है और अभिन्न भी। इसे द्वैत भी कह सकते हैं और अद्वैत भी। अग्नि में लकड़ी जलने से धुआँ उत्पन्न होता है। धुएँ को अग्नि से अलग कहा जा सकता है, यह द्वैत है। धुआँ अग्नि के कारण उत्पन्न हुआ है, अग्नि के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं, वह अग्नि का ही एक अंग है, यह अद्वैत है। आत्मा अग्नि है और जीव धुआँ है। दोनों अलग भी हैं और एक भी। उपनिषदों में इसे एक वृक्ष पर बैठे हुए दो पक्षियों की उपमा दी गई है। गीता में इन दोनों का अस्तित्व स्वीकार करते हुए एक को क्षर (नाशवान) दूसरे को अक्षर (अविनाशी) कहा गया है।

भ्रम से, अज्ञान से, माया से, शैतान के बहकावे से, इन दोनों की एकता पृथकता में बदल जाती है। यही दुःख का, शोक का, संताप का, क्लेश का, वेदना का कारण है। जहाँ मन और आत्मा का एकीकरण होता है, जहाँ दोनों की इच्छा, रुचि एवं कार्य-प्रणाली एक होती है, वहाँ अपार आनंद का स्रोत उमड़ता रहता है। जहाँ दोनों में विरोध होता है, जहाँ नाना प्रकार के अंतर्द्वंद्व चलते हैं, वहाँ आत्मिक शांति के दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं। दोनों का दृष्टिकोण एक होना चाहिए, दोनों की इच्छा, रुचि एवं कार्य-प्रणाली एक होनी चाहिए, तभी जीवन में सच्ची शांति के दर्शन हो सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४७ पृष्ठ-२-४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने को आवेशों से बचाइए

जीवन को समुन्नत देखने की इच्छा करने वालों के लिए यह आवश्यक है कि अपने स्वभाव को गंभीर बनाएँ। उथलेपन, लड़कपन, छिछोरापन की जिन्हें आदत पड़ जाती है, वे गहराई के साथ किसी विषय पर विचार नहीं कर सकते। किसी समय मन को गुदगुदाने के लिए बालक्रीड़ा की जा सकती है, पर वैसा स्वभाव न बना लेना चाहिए। आवेशों से बचे रहने की आदत बनानी चाहिए जैसे समुद्र तट पर रहने वाले पर्वत, नित्य टकराते रहने वाले समुद्र की लहरों की परवाह नहीं करते। इसी प्रकार हमको भी उद्वेगों की उपेक्षा करनी चाहिए। खिलाड़ी खेलते हैं, कई बार हारते हैं, कई बार जीतते हैं। कई बार हारते-हारते जीत जाते हैं, कई बार जीतते-जीतते हार जाते हैं, परंतु कोई खिलाड़ी उसका अत्यधिक असर मन पर नहीं पड़ने देता।

हारने वालों के होठों पर झेंप भरी मुस्कराहट होती है और जीतने वाले के होठों पर जो मुस्कराहट रहती है, उसमें सफलता की प्रसन्नता मिली होती है। इस थोड़े-से स्वाभाविक भेद के अतिरिक्त और कोई विशेष अंतर जीते हुए तथा हारे हुए खिलाड़ी में नहीं दिखाई पड़ता। विश्व के रंगमंच पर हम सब खिलाड़ी हैं। खेलने में रस है, वह रस दोनों दलों को समान रूप से मिलता है। हार-जीत तो उस रस की तुलना में नगण्य चीज है। दुःख-सुख, हानि-लाभ, जय-पराजय के कारण उत्पन्न होने वाले आवेशों से बचना ही योग की सफलता है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९४७ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुमूल्य वर्तमान का सदुपयोग कीजिए

मृत्यु और निर्माण के बीच में हम ठहरे हुए हैं। वर्तमान बड़ी तेजी से भूत की ओर दौड़ता है। भूत और मृत्यु एक ही बात है। कहते हैं कि मरने के बाद मनुष्य भूत बनता है। मनुष्य ही नहीं हर चीज मरती है और वह भूत बन जाती है। जब किसी वस्तु की सत्ता पूर्णत: समाप्त हो जाती है तो उसकी पूर्ण मृत्यु कही जाती है, पर आंशिक मृत्यु जन्म के साथ ही आरंभ हो जाती है। बालक जन्म के बाद बढ़ता है, विकास करता है, उसकी यह यात्रा मृत्यु की ओर ही है।

संसार की हर वस्तु का, मनुष्य शरीर का भी निर्माण उन्हीं तत्त्वों से हुआ है, जो हर क्षण बदलते हैं। उनका चक्र भूत को पीछे छोड़ता हुआ और भविष्य को पकड़ता हुआ प्रतिक्षण बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्व एक पल के लिए भी स्थिर नहीं रहता। अणु-परमाणुओं से लेकर विशालकाय ग्रहपिंड तक अपनी यात्रा अविश्रांत गति से कर रहे हैं। हमारा जीवन भी हर घड़ी थोड़ा-थोड़ा करके मर रहा है। इस दीपक का तेल शनैः-शनैः चुकता चला जा रहा है। भविष्य की ओर हम चल रहे हैं और वर्तमान को भूत की गोदी में पटकते जाते हैं। यह सब देखते हुए भी हम नहीं सोचते कि क्या वर्तमान का कोई सदुपयोग हो सकता है। जो बीत गया सो गया, जो आने वाला है, वह भविष्य के गर्भ में है। वर्तमान हमारे हाथ में है। यदि हम चाहें तो उसका सदुपयोग करके इस नश्वर जीवन में से कुछ अनश्वर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। *—अखण्ड ज्योति-जून १९४७ पृष्ठ-१*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सत्य की अकूत शक्ति पर विश्वास कीजिए

जो अपनी आत्मा के आगे सच्चा है, जो अपनी अंतरात्मा की आवाज के अनुसार आचरण करता है, जो बनावट, धोखेबाजी, चालाकी को तिलांजलि देकर ईमानदारी को अपनी जीवन-नीति बनाए हुए है, वह इस दुनियाँ का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति है। सत्य को अपनाने से मनुष्य शक्ति का पुंज बन जाता है। महात्मा कनफ्यूशियस कहा करते थे कि सत्य में हजार हाथियों के बराबर बल है, परंतु वस्तुत: सत्य में अपार बल है। उसकी समता भौतिक सृष्टि के किसी भी बल से नहीं हो सकती।

स्मरण रखिए, झूठ आखिर झूठ ही है। वह आज नहीं तो कल जरूर खुल जाएगा। असत्य का जब भंडाफोड़ होता है, तो उससे मनुष्य की सारी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है। उसे अविश्वासी टुच्चा और ओछा आदमी समझा जाने लगता है। झूठ बोलने में तात्कालिक थोड़ा लाभ दिखाई पड़े तो भी आप उसकी ओर ललचाइए मत, क्योंकि उस थोड़े लाभ के बदले में अंतत: अनेक गुनी हानि होने की संभावना है।

आप अपने वचन और कार्यों द्वारा सचाई का परिचय दीजिए। सत्य उस चीज के समान है जो आज छोटा दीखता है, पर अंत में फल-फूलकर विशाल वृक्ष बन जाता है। जो ऊँचा, प्रतिष्ठायुक्त और सुख-शांति का जीवन बिताने के इच्छुक हों, उनका दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि हमारे वचन और कार्य सचाई से भरे हुए होंगे। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९४७ पृष्ठ-१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्ज्ञान का संचय करो

सुख, धन के ऊपर निर्भर नहीं, वरन सदज्ञान के ऊपर, आत्मनिर्माण के ऊपर निर्भर है। जिसने आत्मज्ञान से अपने दृष्टिकोण को सुसंस्कृत कर लिया है, वह चाहे साधन-संपन्न हो चाहे न हो, हर हालत में सुखी रहेगा। परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों, वह प्रतिकूलता में अनुकलूता का निर्माण कर लेगा। उत्तम गुण और उत्तम स्वभाव वाले मनुष्य बुरे लोगों के बीच रहकर भी अच्छे अवसर प्राप्त कर लेते हैं।

विचारवान मनुष्यों के लिए सचमुच ही इस संसार में कहीं कोई कठिनाई नहीं है। शोक, दुःख, चिंता और भय का एक कण भी उन तक नहीं पहुँच पाता। प्रत्येक दशा में वे प्रसन्नता, संतोष और सौभाग्य अनुभव करते रहते हैं।

सद्ज्ञान द्वारा आत्मनिर्माण करने का लाभ, धन जमा करने के लाभ की अपेक्षा अनेक गुना महत्त्वपूर्ण है। सचमुच जो जितना ही ज्ञानवान है, वह उतना ही बड़ा धनी है। यही कारण है कि निर्धन ब्राह्मण को अन्य संपन्न वर्णों की अपेक्षा अधिक सम्मान दिया जाता है।

मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी ज्ञान है। इसलिए वास्तविकता को समझो, धन के पीछे रात-दिन पागल रहने की अपेक्षा, सद्ज्ञान का संचय करो। आत्मनिर्माण की ओर अपनी अभिरुचि को मोड़ो।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९४७ पृष्ठ-२

सच्ची कमाई, सद्गुणों का संग्रह

संसार में ऐसा कोई नहीं है जिसमें कोई दोष न हो अथवा जिससे कभी गलती न हुई हो। अतएव किसी की गलती देखकर बौखलाओ मत और न उसका बुरा चाहो।

दूसरों को सीख देना मत सीखो। अपनी सीख मानकर उसके अनुसार बन जाना सीखो। जो सिखाते हैं, खुद नहीं सीखते, सीख के अनुसार नहीं चलते, वे अपने आप को और जगत को भी धोखा देते हैं।

सच्ची कमाई है, उत्तम से उत्तम सद्गुणों का संग्रह। संसार का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी सद्गुणों से संपन्न है, परंतु आत्मगौरव का गुण मनुष्यों के लिए प्रभु की सबसे बड़ी देन है। इस गुण से विभूषित प्रत्येक प्राणी को, संसार के समस्त जीवों को अपनी आत्मा की भाँति ही देखना चाहिए। सदैव उसकी ऐसी धारणा रहे कि उसके मन, वचन एवं कर्म किसी से भी जगत के किसी जीव को क्लेश न हो। ऐसी प्रकृति वाला अंत में परब्रह्म को पाता है।

यह विचार छोड़ दो कि धमकाए बिना अथवा बिना छल-कपट के तुम्हारे मित्र, साथी, स्त्री-बच्चे या नौकर-चाकर बिगड़ जाएँगे। सच्ची बात तो इससे बिलकुल उलटी है। प्रेम, सहानुभूति, सम्मान, मधुर वचन, त्याग और निश्छल सत्य के व्यवहार से ही तुम किसी को अपना बना सकते हो।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९४७ पृष्ठ-४-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर्ग और नरक इसी लोक में

दृष्टि पसारकर हम यदि दूर-दूर तक देखें और सुखी-संपन्न, समृद्ध लोगों के जीवन के आनंद तथा दुखी, दरिद्र, पीड़ित लोगों के कष्टों पर कुछ देर विस्तृत विचार करें, दोनों प्रकार के लोगों के जीवन के पूरे चित्र अपने कल्पना क्षेत्र में खींचें, तो इसी लोक में स्वर्ग और नरक का अस्तित्व हमें मिल जाएगा। सुख भी इतना है कि उससे बढ़कर स्वर्ग में भला और क्या अधिक सुख होगा? दु:ख भी इतना है कि उन दु:खों के आगे नरक लोक में और अधिक भला क्या दु:ख होगा? मृत्युतुल्य ही नहीं, आत्महत्या के लिए प्रेरित करने वाले, मृत्यु से भी अधिक दु:ख इस लोक में मौजूद हैं। यह कष्टों की अंतिम सीमा है। इन सब बातों पर विचार करते हुए सत्पुरुषों ने कहा है— "स्वर्ग और नरक इसी लोक में हैं।" सचमुच पूर्ण तृप्तिदायक और अत्यंत उद्विग्न करने वाली स्थिति इस लोक में मौजूद है। स्वर्ग और नरक का पूरा-पूरा अस्तित्व इस लोक में उपलब्ध है।

चूँकि इस लोक में परलोक भी मौजूद है, उस परलोक के नियमानुसार उन्हें नरक भोगने के लिए विवश होना पड़ता है, चूँकि परलोक इस लोक में मौजूद है इसलिए स्वर्ग-सुख की स्थिति भी अधिकारी लोगों के सामने, परलोक के नियमानुसार, अपने आप सामने आ जाती है। इस लोक में परलोक का कार्यक्रम यथावत चल रहा है, उस कार्यक्रम के अनुसार सभी प्राणी स्वर्ग और नरक के सुख-दु:ख का रसास्वादन करते हैं। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९४७ पृष्ठ-५*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपनी दुनियाँ अपनी दृष्टि में

अपने आप में, अपने अंत:करण में एक जबरदस्त लोक मौजूद है। उस लोक की स्थिति इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उसके सामने भूलोक और भुव:लोक तुच्छ हैं। निस्संदेह बाहर की परिस्थितियाँ मनुष्य को आंदोलित, तरंगित तथा विचलित करती हैं, परंतु संसार के समस्त पदार्थों द्वारा जितना भला या बुरा प्रभाव होता है, उससे अनेक गुना प्रभाव अपने निज के विचारों तथा विश्वासों द्वारा होता है।

गीता में कहा है कि मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र और स्वयं ही अपना शत्रु है। कोई मित्र इतनी सहायता नहीं कर सकता, जितनी कि मनुष्य स्वयं अपनी सहायता कर सकता है। इसी प्रकार कोई दूसरा उतनी शत्रुता नहीं कर सकता, जितनी कि मनुष्य खुद अपने आप अपने से शत्रुता करता है। अपनी कल्पना शक्ति, विचार और विश्वास के आधार पर मनुष्य अपनी एक दुनियाँ का निर्माण करता है। वही दुनियाँ उसे वास्तविक सुख-दु:ख दिलाया करती है।

मनुष्य के मन में प्रचंड शक्ति भरी हुई है। वह इस शक्ति द्वारा अपने लिए अत्यंत अनिष्टकर अथवा अत्यंत उपयोगी तथ्य निर्मित कर सकता है। हर मनुष्य की अपनी एक अलग दुनियाँ होती है। भीतरी मन की दुनियाँ जैसी होती है, बाहर की दुनियाँ भी उसी के अनुरूप दिखाई देने लगती है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४७ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकार और कर्त्तव्य

यदि हमको अपने ऊपर निष्ठा है, अपनी परंपरा पर श्रद्धा है, तो हमको यह विश्वास भी होना ही चाहिए कि इस प्रदेश की संस्कृति और सभ्यता पर हमारी अमिट छाप होगी।

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र धर्म है। पृथ्वी पर जो संघर्ष मचा हुआ है, उसका एकमात्र कारण यह है कि आज सब अपने अधिकारों पर ही दृष्टि रखते हैं। यह भूल जाते हैं कि अधिकार का दूसरा पहलू कर्त्तव्य है। जो एक का अधिकार है, वह दूसरे का कर्त्तव्य है। यदि सब अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान दें, तो सबको अधिकार आप ही प्राप्त हो जाएँ।

अधिकार का भूखा कहता है, 'दूसरों से मुझे अमुक-अमुक बातें प्राप्त होनी चाहिए।' कर्त्तव्य का उपासक कहता है, 'दूसरों को मुझ से अमुक-अमुक बातें प्राप्त होनी चाहिए।' पहला भाव कटुता, दूसरा सौहार्द्र फैलाता है। यदि हम यह समझ लें कि सबका सब पर ऋण है, सबका सबके कल्याण से संबंध है, मुझे अपना ऋण चुकाना ही है, तो सभी अनायास श्रेय के भागी हो जाएँगे। इसी का नाम धर्म है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जीवन के लिए इससे अच्छा कोई मार्ग नहीं हो सकता।

भारत का नागरिक हिंदू, मुसलमान, ईसाई या चाहे जो हो, उसको प्रत्येक काम धर्मबुद्धि से करना चाहिए। भारतीय संस्कृति का एकमात्र मूल धर्म है, धर्म का अर्थ मजहब नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४७ पृष्ठ-१२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपनी शक्तियों को विकसित कीजिए

परमेश्वर ने सबको समान शक्तियाँ प्रदान की हैं। ऐसा नहीं कि किसी में अधिक, किसी में न्यून हो या किसी के साथ खास रियायत की गई हो। परमेश्वर के यहाँ अन्याय नहीं है। समस्त अद्भुत शक्तियाँ तुम्हारे शरीर में विद्यमान हैं। तुम उन्हें जाग्रत करने का कष्ट नहीं करते। कितनी ही शक्तियों से कार्य न लेकर तुम उन्हें कुंठित कर डालते हो। अन्य व्यक्ति उसी शक्ति को किसी विशेष दिशा में मोड़कर उसे अधिक परिपुष्ट एवं विकसित कर लेते हैं। अपनी शक्तियों को जाग्रत तथा विकसित कर लेना अथवा उन्हें शिथिल, पंगु, निश्चेष्ट बना डालना, स्वयं तुम्हारे ही हाथ में है। स्मरण रखो, संसार की प्रत्येक उत्तम वस्तु पर तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यदि तुम अपने मन की गुप्त महान सामर्थ्यों को जाग्रत कर लो और लक्ष्य की ओर प्रयत्न, उद्योग और उत्साहपूर्वक अग्रसर होना सीख लो, तो जैसा चाहो आत्मनिर्माण कर सकते हो। मनुष्य जिस वस्तु की आकांक्षा करता है, उसके मन में जिन महत्त्वाकांक्षाओं का उदय होता है और जो आशापूर्ण तरंगें उदित होती हैं, वे अवश्य पूर्ण हो सकती हैं, यदि वह दृढ़ निश्चय द्वारा अपनी प्रतिभा को जाग्रत कर ले।

अतएव प्रतिज्ञा कर लीजिए कि आप चाहे जो कुछ हों, जिस स्थिति, जिस वातावरण में हों, आप एक कार्य अवश्य करेंगे, वह यही कि अपनी शक्तियों को ऊँची से ऊँची बनाएँगे।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९४८ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पराजय, विजय की पहली सीढ़ी है

यदि सच्चा प्रयत्न करने पर भी तुम सफल न होओ तो कोई हानि नहीं। पराजय बुरी वस्तु नहीं है, यदि वह विजय के मार्ग में अग्रसर होते हुए मिली हो। प्रत्येक पराजय, विजय की दिशा में कुछ आगे बढ़ जाना है। यह उच्चतर ध्येय की ओर पहली सीढ़ी है।

हमारी प्रत्येक पराजय यह स्पष्ट करती है कि अमुक दिशा में हमारी कमजोरी है, अमुक तत्त्व में हम पिछड़े हुए हैं या किसी विशिष्ट उपकरण पर हम समुचित ध्यान नहीं दे रहे हैं। पराजय हमारा ध्यान उस ओर आकर्षित करती है, जहाँ हमारी निर्बलता है, जहाँ मनोवृत्ति अनेक ओर बिखरी हुई है, जहाँ विचार और क्रिया परस्पर विरुद्ध दिशा में बह रहे हैं, जहाँ दु:ख, क्लेश, शोक, मोह इत्यादि परस्पर विरोधी इच्छाएँ हमें चंचल कर एकाग्र नहीं होने देतीं।

किसी न किसी दिशा में प्रत्येक पराजय हमें कुछ सिखा जाती है, मिथ्या कल्पनाओं को दूर कर हमें कुछ-न-कुछ सबल बना जाती है, हमारी विच्छृंखल वृत्तियों को एकाग्रता का रहस्य सिखा जाती है। अनेक महापुरुष केवल इसी कारण सफल हुए क्योंकि उन्हें पराजय की कड़वाहट को चखना पड़ा था।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९४८ पृष्ठ-१

मृत्यु से जीवन का अंत नहीं होता

जैसे हम फटे-पुराने या सड़े-गले कपड़ों को छोड़ देते हैं और नए कपड़े धारण करते हैं, वैसे ही पुराने शरीरों को बदलते और नयों को धारण करते रहते हैं। जैसे कपड़ों के उलट-फेर का शरीर पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता, वैसे ही शरीरों की उलट-पलट का आत्मा पर असर नहीं होता। जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो भी वस्तुत: उसका नाश नहीं होता।

मृत्यु कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसके कारण हमें रोने या डरने की आवश्यकता पड़े। शरीर के लिए रोना वृथा है, क्योंकि वह निर्जीव पदार्थों का बना हुआ है, मरने के बाद भी वह ज्यों का त्यों पड़ा रहता है। कोई चाहे तो मसालों में लपेटकर मुद्दतों तक अपने पास रखे रह सकता है, पर सभी जानते हैं कि देह जड़ है। संबंध तो उस आत्मा से होता है जो शरीर छोड़ देने के बाद भी जीवित रहती है। फिर जो जीवित है, मौजूद है, उसके लिए रोने और शोक करने से क्या प्रयोजन है ? दो जीवनों को जोड़ने वाली ग्रंथि को मृत्यु कहते हैं। वह एक वाहन है जिस पर चढ़कर आत्माएँ इधर से उधर, आती-जाती रहती हैं। जिन्हें हम प्यार करते हैं, वे मृत्यु द्वारा हमसे छीने नहीं जा सकते। वे अदृश्य बन जाते हैं, तो भी उनकी आत्मा में कोई अंतर नहीं आता। हम न दूसरों को मरा हुआ मानें और न अपनी मृत्यु से डरें, क्योंकि मरना एक विश्राम मात्र है, उसे अंत नहीं कहा जा सकता।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४८ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिकता की कसौटी

कोई भी मनुष्य इसलिए बड़ा नहीं कि वह अधिक से अधिक सांसारिक पदार्थों का उपभोग कर सकता है। अधिक से अधिक ऐश्वर्य जुटाने वाले तो बहुधा लुटेरे होते हैं। वे संसार को जितना देते हैं, उससे कहीं अधिक उससे छीन लेते हैं।

हम मनुष्य की सेवा-शक्ति को दृष्टि में रखकर ही उसे महान नहीं कह सकते। उसकी महानता की कसौटी यह नहीं हो सकती, क्योंकि इसके द्वारा परखे जाने पर तो अनेक पशु-पक्षी भी उसकी श्रेणी में आ विराजेंगे। सभी जानते हैं कि चूहे, शृगाल, सूअर, कुत्ते, कौए, गिद्ध आदि पशु-पक्षी भी सड़े-गले और मल-मूत्र आदि पदार्थों को खाकर वातावरण को शुद्ध कर देते हैं। यह भी प्रकट है कि सड़े-गले पदार्थों को शीघ्र ही हटा देने का जो उत्साह इन पशु-पक्षियों में पाया जाता है, वह प्रायः हम मनुष्य कहलाने वालों में भी नहीं पाया जाता। अतएव न तो कर्म का परिणाम और न कर्मोत्साह ही महानता की कसौटी हो सकता है। अतः मनुष्य की परख उसके कार्य के परिमाण से नहीं, किंतु उस कार्य को प्रेरणा देने वाली भावनाओं से की जानी चाहिए। जैसा मनुष्य का भाव हो, उसे वैसा ही समझना चाहिए। भगवान कृष्ण ने भी तो कहा है कि 'सभी मनुष्यों की भावना (श्रद्धा) उनके अंतःकरण के अनुरूप होती है। इसलिए जो पुरुष जैसी श्रद्धा वाला है, वह स्वयं भी वही है।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४८ पृष्ठ-१७

गुण-ग्राहक दृष्टि को जाग्रत कीजिए

जिसके दोष देखने को हम बैठते हैं, उसके दोष ही दोष दिखाई पड़ते हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि इस प्राणी या पदार्थ में दोष ही दोष भरे हुए हैं, बुराइयाँ ही बुराइयाँ उसमें संचित हैं, पर जब गुण-ग्राहक दृष्टि से निरीक्षण करने लगते हैं, तो हर प्राणी में, हर पदार्थ में कितनी ही अच्छाइयाँ, उत्तमताएँ, विशेषताएँ दीख पड़ती हैं।

वस्तुतः संसार का हर प्राणी एवं पदार्थ तीन गुणों से बना हुआ है। उसमें जहाँ कई बुराइयाँ होती हैं, वहाँ कई अच्छाइयाँ भी होती हैं। अब यह हमारे हाथ में है कि उसके उत्तम तत्त्वों से लाभ उठाएँ या दोषों को स्पर्श कर दुखी बनें। हमारे शरीर में कुछ अंग बड़े मनोहर होते हैं, पर कुछ ऐसे कुरूप और दुर्गंधित हैं कि उन्हें ढके रहना ही उचित समझा जाता है।

इस गुण-दोषमय संसार में से हम उपयोगी तत्त्वों को ढूँढ़ें, उन्हें प्राप्त करें और उन्हीं के साथ विचरण करें, तो हमारा जीवन सुखमय हो सकता है। बुराइयों से शिक्षा ग्रहण करें, सावधान हों, बचें और उनका निवारण करने का प्रयत्न करके अपनी चतुरता का परिचय दें, तो बुराइयाँ भी हमारे लिए मंगलमय हो सकती हैं। चतुर मनुष्य वह है जो बुराइयों से भी लाभ प्राप्त कर लेता है। गुण-ग्राहक दृष्टि को जाग्रत करके हम हर स्थिति से लाभ उठा सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४८ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम पापी नहीं पुण्यात्मा हो

अपने स्वरूप को समझो। हम पापी हैं, पापी हैं, ऐसा कहने मात्र से कोई पुण्यात्मा नहीं बन जाता। पुण्यात्मा होने के लिए तो अंत:करण को शुद्ध बनाने की आवश्यकता होती है, आत्मा को अनुभव करने की आवश्यकता होती है, अपने को पहचानने की आवश्यकता होती है। मनुष्य जाति की उन्नति का यही साधन है। यदि ईश्वर ने हमें पुण्यात्मा बनाया है, तो हमें अपने को पापी क्यों समझना और कहना चाहिए? ये विचार तो क्षुद्र हैं, संकुचित हैं। हृदय को पवित्र बनाइए, आप पवित्र ही हैं। विचार का बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि अपने आप को पापी समझते रहोगे तो पापी ही बने रहोगे, पर यदि पुण्यात्मा समझना आरंभ करोगे, तो पुण्यात्मा हो जाओगे।

मृग की नाभि में कस्तूरी होती है। उसकी सुगंध से वह मतवाला रहता है, पर वह उसे बाहर से आती हुई मानकर चारों ओर भटकता-फिरता है। इसी प्रकार हम अपने स्वरूप, स्वभाव एवं गुणों को भूलकर भौतिक पदार्थों में आनंद प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं। यही भ्रम है।

भ्रम में पड़े हुए मनुष्यो! उठो, अपने को क्यों पापी समझते हो? अपने शुद्ध, चैतन्य, निष्पाप, ब्रह्मस्वरूप को समझो। अँधेरे में खड़े होकर अँधेरा-अँधेरा कहने से कभी अँधेरे का नाश नहीं होगा। धीरे से आत्मज्योति रूपी दीयासलाई जला दो, सब अँधेरा भाग जाएगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९४८ पृष्ठ-१८

जानी तथा ज्ञानी

जो ज्ञानी है, उसे अहंकार छू भी नहीं सकता। "जब 'मैं' था तब 'तू' नहीं, अब 'तू है 'मैं' नाहिं" जैसी सूक्ति ज्ञानी पर फलितार्थ होती है। मैं या अहंकार तब ही तक रहता है, जब तक ज्ञान नहीं रहता। **'सर्वं खलु इदं ब्रह्म'** यह सब तो ब्रह्म ही है, आत्मा ही है, यह समझने वाला अपनी आत्मा से अन्य प्राणियों के शरीर में समाई हुई आत्मा में भिन्नता देख ही नहीं पाता। तब अहंकार द्वारा वह किस पर अपनी सत्ता का आरोप करे? इसलिए ज्ञान हो जाने के अनंतर, अहंकार अपने आप उससे दूर रहता है। इसी तरह उसे किसी प्रकार की आकांक्षा भी नहीं रहती क्योंकि तब उसमें व्यापकता का प्रसार हो जाता है।

संसार में उसे समदृष्टि प्राप्त हो जाती है। उसे सिद्धि का लोभ नहीं रहता। वस्तुत: देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि अहंकार ही एक ऐसा तत्त्व है जिसने कि मूलतत्त्व के साथ मानव को पृथक कर रखा है और इसलिए आज मानव जीवन दु:खों और विपत्तियों से घिरा हुआ है। इसलिए जिन्होंने ज्ञानपूर्वक अहंकार को दिव्य बना लिया है, वे ही ज्ञानी हैं। जिनके जीवन में क्षुद्र अहंकार की सत्ता मौजूद है, भले ही वे पंडित हों, विद्वान और शिक्षित हों, वे ज्ञानी नहीं हो सकते। उनकी संज्ञा 'जानी' कही जाएगी।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४८ पृष्ठ-२१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने ऊपर विश्वास कीजिए

विश्वास कीजिए कि वर्तमान निम्नस्थिति को बदल देने की सामर्थ्य प्रत्येक मनुष्य में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। आपा जो खोजते हैं, विचारते हैं, जिन बातों को प्राप्त करने की योजनाएँ बनाते हैं, वे आंतरिक शक्तियों के विकास से अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

विश्वास कीजिए कि जो कुछ महत्ता, सफलता, उत्तमता, प्रसिद्धि, समृद्धि अन्य व्यक्तियों ने प्राप्त की है, वह आप भी अपनी आंतरिक शक्तियों द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। आप में वे सभी उत्तमोत्तम तत्त्व वर्तमान हैं, जिनसे उन्नति होती है। न जाने कब, किस समय, किस अवसर, किस परिस्थिति में आपके जीवन का आंतरिक द्वार खुल जाए और आप सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाएँ।

विश्वास कीजिए कि आप में अद्भुत आंतरिक शक्तियाँ निवास करती हैं। अज्ञानतावश आप मन की अज्ञात, विचित्र और रहस्यमय शक्तियों के भंडार को नहीं खोलते। आप जिस मनोबल, आत्मबल या निश्चयबल का करिश्मा देखते हैं, वह कोई जादू नहीं वरन आपके द्वारा संपन्न होने वाला एक दैवी नियम है। सबमें ये असाधारण एवं चमत्कारी शक्तियाँ समान रूप से व्याप्त हैं। संसार के अगणित व्यक्तियों ने जो महान कार्य किए हैं, वे आप भी कर सकते हैं। बस आवश्यकता है, अपने पौरुष को जगाने के लिए आत्मशक्ति की चिनगारी जलाने की। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४८ पृष्ठ-१*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बुद्धिमानो! मूर्ख क्यों बनते हो?

मनुष्य की बुद्धिमत्ता प्रसिद्ध है। उसकी चतुरता, क्रियाकुशलता और सोचने की अद्भुत शक्ति की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है। सृष्टि का मुकुटमणि होने का गौरव उसने अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर प्राप्त किया है और विविध दिशाओं में अनेकानेक आविष्कार करके अपने को साधन-संपन्न बनाया है। इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि मनुष्य में मूर्खता की मात्रा कम नहीं है।

हम नित्य असंख्यों को मरते हुए देखते हैं, पर अपने आप को अमर जैसा अनुभव करके काम और लोभ के फंदे में फँसे रहते हैं। पाप के दुष्परिणामों से असंख्य प्राणी दुःख से बिलबिलाते हुए देखे जाते हैं। उन्हें देखते हुए भी हम पाप करते हैं और सोचते हैं कि पाप के फल से मिलने वाले दुःख से बचे रहेंगे। क्षणिक सुखों के बदले चिर-कालीन सुख-शांति को ठुकराते रहने वालों की संख्या कम नहीं है। इन क्रिया-कलापों को किस प्रकार बुद्धिमानी कहा जाएगा?

सांसारिक मनोरंजन की बातों में बुद्धिमानी दिखाना और आत्मस्वार्थ को भूले रहना, यह कहाँ की समझदारी है? पाठको! मूर्ख मत बनो। मनुष्योचित बुद्धिमत्ता को अपनाओ। खिलौने रँगने के लिए अपना रक्त मत बहाओ। सच्चे स्वार्थ को ढूँढ़ो और परमार्थ की ओर कदम बढ़ाओ।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४८ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्यविहीन जीवन

हमारा लक्ष्य क्या है ? इसका हमें पता तक नहीं, यही आश्चर्य का विषय है। सभी लोग धन बटोरते हैं, पर उसका हेतु क्या है ? इसका उत्तर विरले ही ठीक से दे सकेंगे। सभी करते हैं तो हम भी करें, सभी खाते हैं तो हम भी खाएँ, सभी कमाते हैं तो हम भी कमाएँ, इस प्रकार अंधानुकरण की वृत्ति ही हमारे विचारों और क्रियाओं की आधारशिला प्रतीत होती है। आखिर कमाई एवं संग्रह क्यों और कहाँ तक ? इसका भी तो विचार होना चाहिए, पर हम चैतन्यशून्य, लक्ष्यविहीन एवं यंत्रवत जड़-से हो रहे हैं। क्रिया कर रहे हैं, पर हमें विचार का अवकाश कहाँ ? जिस प्रकार कहाँ जाना है, यह जाने बिना कोई चलता ही रहे तो चलते रहने का क्या अर्थ होगा ? लक्ष्य का निर्णय किए बिना हमारी क्रिया निरर्थक होगी। जन्म लेते हैं, इधर-उधर थोड़ी हलचल मचाते हैं और चले जाते हैं। यही क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। आखिर यह जन्मधारण क्यों और यह मृत्यु भी क्यों ? क्या इनसे मुक्त होने का भी कोई उपाय है ?

यदि है तो कौन-सा और उसकी साधना कैसे की जाए ? इस पर विचार करना परमावश्यक है। यह तो निश्चित है कि मरना अवश्यंभावी है इसीलिए लक्ष्य को निर्धारित कर उसी तक पहुँचने के लिए प्रगतिशील बना जाए, समय को व्यर्थ न खोकर प्राप्त साधनों को लाभ के अनुकूल बनाया जाए और लक्ष्य पर पहुँचकर ही विश्राम लिया जाए। यही हमारा परम कर्त्तव्य है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९४८ पृष्ठ-१५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

शारीरिक और बौद्धिक श्रम

कई व्यक्ति भूखों मरना, तंगी में रहना, बेकारी भुगतना पसंद करते हैं, पर ऐसे कार्य करने को तैयार नहीं होते जो शारीरिक परिश्रम वाले होने के कारण 'छोटे' समझे जाते हैं। यह झिझक मिथ्या, अज्ञानमूलक एवं हानिकारक हैं। ऐसी झूठी प्रतिष्ठा के मोह में पड़े हुए व्यक्ति अपना बहुमूल्य समय यों ही गँवाते रहते हैं और अपनी हानि करते रहते हैं। जिन्हें उन्नति के पथ पर चलना है, उन्हें परिश्रम को अपना अभिन्न मित्र बनाना होता है।

परिश्रम ही वह दीपक है, जिसके प्रकाश में मनुष्य विकास के मार्ग को प्राप्त करता है। ऐसे सच्चे मित्र से जो व्यक्ति घृणा करता है, उसे साथ रखने में शरम अनुभव करता है, समझ लीजिए कि ऐसे व्यक्ति न ऊँचे उठ सकेंगे, न आगे बढ़ सकेंगे। बंदूक पकड़ने में शरम करने वाला सिपाही युद्ध में मोर्चा फतह नहीं कर सकता और न परिश्रम से झिझकने वाला व्यक्ति जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त कर सकता है।

परिश्रम ही संपूर्ण वैभवों का पिता है। जो जितना ही अधिक परिश्रमी होगा, वह उतना ही अधिक आनंदित रहेगा। हमारे कार्यक्रम में शारीरिक और मानसिक परिश्रम का समान स्थान होना चाहिए, दोनों की महत्ता को समान रूप में समझना चाहिए। इसीलिए विवेकवान व्यक्ति सदा से ही कर्म की सर्वोपरि महत्ता को स्वीकार करते हैं और उसके अनुसार आचरण करते रहे हैं।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९४९ पृष्ठ-११

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधक को सब कुछ भूल जाना चाहिए

साधक को सब कुछ भगवान की इच्छानुसार ही होने देना चाहिए। अपनी किसी प्रकार की भी स्वतंत्र इच्छा या हठ को स्थान नहीं देना चाहिए क्योंकि 'होइ है वही जो राम रचि राखा।' साधक को अपनी किसी भी प्रकार की इच्छा नहीं करनी चाहिए। सब भगवान के ऊपर छोड़ देना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि भगवान की मंगलमय इच्छा ही सब घटनाओं को उत्पन्न कर रही है। भगवान में संपूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिए। भगवान जो कुछ कमी देखते हैं, उसे दूर करने के लिए सब कुछ करते हैं। साधक को चाहिए कि भगवान के इस काम को भी वह साधना का एक अंग ही समझे, क्योंकि साधना के लिए इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। भगवान कल्याणस्वरूप हैं, इसलिए कल्याण-साधना में भगवान के कल्याणस्वरूप का स्मरण रखना ही साधक का प्रमुख लक्ष्य है। तनिक भी विचलित न होकर अक्षुण्ण, संपूर्ण और कल्याण करने वाली श्रद्धा भगवान के ऊपर रखो। श्रद्धा ही समस्त कल्याण की प्राप्ति करा देगी। श्रद्धा ही त्याग का आधार है। इससे अनंत ज्ञान की प्राप्ति अवश्य होगी, इसमें अणुमात्र भी संदेह नहीं है। श्रद्धा ने ही संपूर्णता को प्राप्त कराने का भार ग्रहण कर रखा है, साधक को यह बात नहीं भूल जानी चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४९ पृष्ठ-१२*

विचारों का केंद्रबिंदु—'क्यों और कैसे?'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक ही बात, एक को भोग की ओर आकर्षित करने वाली होती है और दूसरे को त्याग की ओर। इससे स्पष्ट है कि वह शक्ति घटनाओं में नहीं, हमारे विचारों में ही है। विचारों से ही मनुष्य बनता है और उन्हीं से बिगड़ता भी है। अत: जीवन की हर एक समस्या, हर एक घटना पर, चाहे वह कितनी ही तुच्छ और साधारण क्यों न जान पड़े, मनन करना आवश्यक है, उसका महत्त्व समझना आवश्यक है। प्रत्येक कार्य के कारण पर विचार किया जाए कि ऐसा हुआ तो क्यों हुआ और ऐसा नहीं हुआ तो क्यों नहीं हुआ?

अमुक मनुष्य अमुक कार्य कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकता? उसमें और मुझमें किन-किन बातों का क्या अंतर है? मेरी और उसकी कार्यप्रणाली में कहाँ सामंजस्य है, कहाँ विषमता है? मेरी त्रुटि कहाँ है? मैं कैसे वैसा कर सकता हूँ या बन सकता हूँ? मैंने अमुक समय में वह कार्य किया, तो क्यों किया? मुझे अमुक विचार आया, तो क्यों आया और अमुक कार्य या विचार नहीं हुआ, तो क्यों नहीं हुआ? इस प्रकार 'क्यों' की विचारधारा को आगे बढ़ाए जाने पर नया प्रकाश मिलता जाएगा। नई समस्याओं के नए हल मिलेंगे और नए हलों के लिए नई समस्याएँ। 'क्यों एवं कैसे' विचारों के विकास का मूल मंत्र है। उसे अपनाकर आप लाभ उठाइए, विचारक बनिए।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४९ पृष्ठ-१४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों के दोष ही गिनने से क्या लाभ ?

भविष्य में क्या होगा, यह तो ठीक-ठीक नहीं जाना जा सकता, पर यह तो बिलकुल सही है कि जो दूसरों के ऐब देखता है, वह अपना मिथ्या अंहकार बढ़ाता है और उसके स्वभाव में क्रोध और घृणा की वृद्धि होती है। वह दूसरों के संबंध में अहंकारपूर्ण धारणाएँ बनाता है और अपने आप को सबसे अच्छा समझने लगता है। वह अपनी बुराइयों की ओर से अंधा हो जाता है और उसमें एक तरह का छिछोरापन या चुगली खाने की आदत आ जाती है।

कोई भी मनुष्य इतना पवित्र नहीं हो सकता कि वह दूसरों के व्यक्तिगत पापों पर निगाह डाले और उनके लिए उसे स्वयं दंड दे। केवल एक परमात्मा ही पूर्ण है और वही हमें हमारे व्यक्तिगत पापों के लिए दंड दे सकता है।

किसी महात्मा ने कहा है—दूसरों के दोष मत देखो, जिससे कि मरने के उपरांत तुम्हारे भी दोष न देखे जाएँ और परम पिता परमात्मा तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर दे।

हमें किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत दोषों के लिए जितना सहृदय होना है, उतना ही हमें सामाजिक अपराध करने वालों के प्रति निर्मम होना पड़ेगा। सामाजिक अपराध करने वालों के अपराधों को हजार कान और आँखों से हमें सुनना और देखना पड़ेगा और उन्हें उनका दंड दिलवाना होगा।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९४९ पृष्ठ-२०

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

परिस्थितियों के अनुकूल बनिए

परिस्थितियों की अनुकूलता की प्रतीक्षा करते-करते मूल उद्देश्य दूर पड़ा रह जाता है। जीवन में जो हमारा लक्ष्य है, उसे हम परिस्थिति के प्रपंच में पड़कर विस्मृत कर रहे हैं। आदर्श परिस्थितियाँ इस व्यस्त संसार में दुष्प्राप्य हैं।

परिस्थितियाँ मनुष्य के अपने हाथ की बात है। मन की सामर्थ्य एवं आंतरिक स्वावलंबन द्वारा हम स्वयं उन्हें विनिर्मित करने वाले हैं। हम जैसा चाहें, जब चाहें, सदैव कर सकते हैं। कोई भी अड़चन हमारे मार्ग में नहीं आ सकती। मन की आंतरिक सामर्थ्य के सम्मुख प्रतिकूलता बाधक नहीं हो सकती।

सदा जीतने वाला पुरुषार्थी वह है जो सामर्थ्य के अनुसार परिस्थितियों को बदलता है, किंतु यदि वे बदलती नहीं तो स्वयं अपने आप को उन्हीं के अनुसार बदल लेता है।

उन्नति की मूल वस्तु महत्त्वाकांक्षा है। न जाने मन के किस अतल गह्वर में यह अमूल्य संपदा छिपी पड़ी हो, किंतु आप में है अवश्य। आत्मनिरीक्षण कीजिए और इसे खोजकर निकालिए।

प्रतिकूल परिस्थितियों से परेशान न होकर उनके अनुकूल बनिए और फिर धीरे-धीरे उन्हें बदल डालिए। मनचाही परिस्थितियाँ इस संसार में दुष्प्राप्य हैं। हमें अपने मूल उद्देश्य को दृष्टि से दूर नहीं करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-मई १९४९ पृष्ठ-२०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज सेवा से ही आत्मरक्षा

जिस प्रकार प्रकार सूक्ष्मातिसूक्ष्म अणुओं की एकता से विश्व की उत्पत्ति हुई है, उसी प्रकार अनेक व्यक्तियों के मेल से समाज बना है। एक-एक करके समाज से सभी व्यक्तियों को यदि पृथक कर दिया जाए तो न यहाँ समाज रहे और न संसार। अत: आओ, हम सब अलग-अलग अपने अस्तित्व की चिंता छोड़कर, व्यक्तित्व का स्वार्थ व अहंकार त्यागकर, निजी सद्गुणों द्वारा मिलकर समाज तथा संसार की सेवा वाली सुंदर सृष्टि का सृजन करें। मनुष्य सेवा के लिए ही पैदा हुआ है। मैं आपकी सेवा करूँ, आप उनकी और वे मेरी। इस प्रकार हम सबका कार्य सुचारु व सुव्यस्थित रूप से ठीक समय पर होता रहे और राग-द्वेष रूपी तू-तू मैं-मैं के उस छीना-झपटी वाले दूषित तरीके को ग्रहण करने से भी बच जाएँ, जिसे अपनाने से मन कलुषित रहता है, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, चित्त चलायमान होता है और व्यर्थ का अहंकार चमक जाता है।

जैसे आतिथ्य-सत्कार के समय भीतर से सेवा-भाव का समुद्र उमड़ पड़ता है, उसी तरह निर्मल, निर्दोष तथा परमार्थ की निष्कलंक और पवित्र भावना हो सकती है। सेवा बहुत ही ऊँची चीज है। सेवा में न मजदूरी का ही भाव है और न दुकानदारी का। इसलिए सेवा करना मनुष्यमात्र का सबसे मुख्य कर्त्तव्य है। विदेशों में कुछ भी रहा हो, परंतु भारतवर्ष की संस्कृति तो यही बतलाती है कि मानवता की सेवा करने से ही हमारी रक्षा हो सकती है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९४९ पृष्ठ-२९*

www.vicharkrantibooks.org

अनीति से धन मत जोड़िए

अनीति से संचय किया हुआ धन कभी आनंददायक नहीं होता। वह बुरी तरह नष्ट हो जाता है। उसके नष्ट होने पर लोग रोते हैं, सिर धुनते हैं, यहाँ तक कि पागल भी हो जाते हैं, परंतु फिर भी अपनी भूलों को स्वीकार नहीं करते। यदि वे यह समझने लगें कि मेरा संचित किया हुआ धन नष्ट होने पर मुझे जैसा दु:ख हो रहा है, वैसे ही जिसके धन को मैंने अनधिकार ग्रहण किया, उसे भी दु:ख होता होगा, तो वह अपहरण का अन्याय करने को तत्पर नहीं हो सकता। जब तक मनुष्य में इस प्रकार के आत्मभाव की कमी रहेगी, वह कभी भी वास्तविक उन्नति के शिखर पर नहीं चढ़ सकता।

अपार धन का स्वामी होने पर भी कोई सुख और शांति नहीं प्राप्त कर सकता। कहीं अनाचार और अत्याचार से एकत्रित किए हुए धन से कोई सुखी भी रहा है! जिन व्यक्तियों के कर्म शुभ हैं और जिनका लक्ष्य उत्तम है, वे अपनी संपूर्ण संपत्ति त्याग देने पर भी दुखी नहीं होते। उनके सुख की सामग्री सर्वथा एकत्रित ही रहेगी।

धन वही फलीभूत होगा जो परिश्रम एवं ईमानदारी से उचित प्रयत्नों द्वारा प्राप्त किया जाता है। अन्यान्योपार्जित धन चाहे कितनी ही जल्दी, कितनी ही अधिक मात्रा में एकत्रित क्यों न हो जाए, पर उससे रोग, शोक, चोरी, विपत्ति, राजदंड, हानि आदि का ही कुयोग जमेगा और वह धन अनेकानेक प्रकार के दु:ख देता हुआ नष्ट होगा। *—अखण्ड ज्योति-जून-१९४९ पृष्ठ-२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने में अच्छी आदतें डालिए

आदत, बिजली की शक्ति के समान तेज और शक्तिशाली होती हैं। मनुष्य अपनी आदत का एक खिलौना बन जाता है और उसी के आधार पर उसके भविष्य का निर्माण होता है। कारण यह है कि उसे अपनी आदत के समान मित्र, साधन, विचार और अवसर बराबर प्राप्त होते रहते हैं। एकसी आदत वालों में स्वाभाविक प्रेम और एकदूसरे के विरुद्ध आदत वालों में स्वाभाविक भिन्नता बिना किसी परिचय के ही पाई जाती है।

पुरानी आदतें नई आदतों के बजाए अधिक शक्तिशाली होती हैं। जब कभी आप नई आदतों का बीजारोपण करना चाहते हैं, तो पुरानी आदतें उसमें बार-बार बाधा डालती हैं और नई आदत को बढ़ने से रोकती हैं। इससे वह नई आदत डालने वाला व्यक्ति घबराकर निराश हो जाता है और जब तक वह आदत के सिद्धांत और असलियत का अनुभव नहीं कर लेता, सोचता है कि वह बदनसीब है, परंतु ऐसा सोचना भूल है। पुरानी आदतें जो आज इतनी प्रबल हो रही हैं, एक दिन में नहीं पड़ गई हैं। काफी लंबे समय तक, काफी दिलचस्पी के साथ अनेक बार उन्हें क्रिया-रूप में परिणत किया गया है, तब ये आज इतनी मजबूत बन पाई हैं कि हमारे मन पर वे अधिकार जमा सकीं हैं और नई आदतों को न जमने देने के लिए संघर्ष करती हैं। आप अच्छी आदत डालिए क्योंकि आदतों से ही मनुष्य की जीवन-धारा का निर्माण होता है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९४९ पृष्ठ-३१

अपनी दशा सुधारिए

यदि आप अपने विचारों को सुधारकर निश्चित रूप से आंतरिक जीवन को सुधारने का दृढ़ संकल्प कर लेंगे, तो आप बाह्य जीवन में भी उस उन्नत दशा को सफलतापूर्वक पा सकेंगे, जिसके लिए आप व्याकुल हैं तथा विचार करते हैं।

यदि आप क्रोध, चिंता, ईर्ष्या, लोभ, शोक, भय तथा कोई असंगत मानसिक अवस्था के वश में हो गए हैं और फिर भी पूर्ण स्वास्थ्य की आशा रखते हैं, तो वास्तव में आप एक असंभव बात का स्वप्न देख रहे हैं। यदि आपको अपनी दशा सुधारनी है तथा पूर्ण स्वस्थ रहना है तो क्रोध, चिंता, द्वेष, शोक इत्यादि के विचारों को सदा के लिए अपने अंत:करण से निकाल दीजिए। अपने आप को पूर्ण स्वस्थ समझिए। आपकी दशा में अवश्य सुधार होगा।

अपने आप को कभी दरिद्र न समझिए तथा यह निश्चय कर लीजिए कि जो कुछ आपके पास है, आप उसी का सबसे अच्छा उपयोग कर रहे हैं। यदि आप उस वस्तु का, जो आपके पास है, दुरुपयोग करते हैं या उपेक्षा करते हैं, तो चाहे वह कितनी ही तुच्छ और सारहीन वस्तु क्यों न हो, वह आपके पास से अवश्य छीन ली जाएगी, क्योंकि आपके पास उसका सदुपयोग नहीं हो रहा है, चाहे वह समय, धन, संतान अथवा पद ही क्यों न हो! जब आपको अपनी भली व बुरी दशा का ज्ञान हो जाएगा, तब आप अपने सात्विक विचारों द्वारा अपनी बुरी दशाओं को बदलकर अपने भाग्य का भवन-निर्माण कर सकेंगे।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९४९ पृष्ठ-३०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मज्ञान को प्राप्त करो

तू अज्ञान के आवरण से कृत्रिम निद्रा के वशीभूत है। तू आत्मज्ञान द्वारा कृत्रिम निद्रा से जाग और 'अमर गति' को जान। तू कब तक माया के फंदे में फँसा रहना चाहता है। बहुत हो चुका। अब तू इन बंधनों को तोड़। अविद्या की जंजीर को तोड़ दे, उन पाँच परदों को फाड़ दे और इस हाड़-मांस के पिंजरे से विजयी होकर निकल आ। मेमने की भाँति 'मैं, मैं' न कर, बल्कि 'ॐ ॐ' का स्मरण कर, स्वीकार कर, सिद्ध कर और पहचान। अपनी आत्मा को पहचान और इसी क्षण बंधन से मुक्त हो जा।

तू ही सम्राटों का सम्राट है, तू ही सर्वश्रेष्ठ है। उपनिषदों के अंतिम शब्द ध्यान में ला। '**तत् त्वं असि**'-'तू' ही 'वह' है। मेरे प्रिय सत्यकाम! 'उसे' जान, 'उसे' जानना ही 'वह' बन जाना है।

अपने भीतर टटोल। अपने समस्त विकारों से विमुक्त कर ले। विकारशून्य बन जा। सत्य और असत्य की पहचान कर। अनंत और अदृश्य में भेद कर।

इस बहते हुए मन को बार-बार केंद्रित करने की चेष्टा कर। विपरीत की द्वंद्वता से ऊपर उठ। नेति-नेति के पाठ का अध्ययन कर। धोखे के चक्रों का नाश कर दे। अपने को सर्वव्यापक आत्मा से मिला। आत्माज्ञान प्राप्त कर और उस सर्वश्रेष्ठ आनंद का भोग कर।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४९ पृष्ठ-४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्म की प्रथम घोषणा

धर्म की प्रथम घोषणा यही है कि आत्मा एक है। एक, अनेक नहीं हो सकता। यह कैसे संभव है ? एक अनेक के समान प्रतीत अवश्य होता है, जैसे रेगिस्तान में जल का आभास, किसी स्थिति विशेष में मनुष्य, आकाश में नीलिमा, सीप की चाँदी तथा रस्सी का साँप। इसे आभास कहते हैं। इस आभास को ब्रह्मचिंतन अथवा मौन-अभ्यास द्वारा नष्ट कर और ब्रह्मशक्ति द्वारा चमत्कृत कर। ब्रह्म अवस्था को पुनः प्राप्त करने की चेष्टा कर। अपने सत्-चित्-आनंद स्वरूप में रमण कर।

अज्ञान के कारण ही दुःख और क्लेश व्यापते हैं। अपनी वास्तविक प्रकृति को पहचान और अनुभव कर। वास्तव में अस्तित्व ज्ञान और सुख संपूर्ण हैं। तू वास्तव में अमर है तथा सर्वव्यापक आत्मा है। उपनिषद् के इस उपदेश को स्मरण रख "जीव और ब्रह्म एक हैं।"

ॐ के रहस्य पर विचार कर और अपने स्वरूप में स्थित हो। केवल आत्मज्ञान द्वारा ही अज्ञान तथा तीनों क्लेशों का नाश किया जा सकता है। आत्मज्ञान ही तुझे अमर गति, अनंत सुख, चिरस्थायी शांति और सुख दे सकेगा।

चारों वेद एक स्वर से कहते हैं कि वास्तव में तू ही अविनाशी आत्मा अथवा अमर ब्रह्म है। तू वह अमर आत्मा है जो समय, स्थान और उत्पत्ति से भी परे है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४९ पृष्ठ-४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूक्ष्म और अतिसूक्ष्म

पानी पृथ्वी से अधिक सूक्ष्म है। पृथ्वी पानी का बदला हुआ स्वरूप है। पृथ्वी पानी से उत्पन्न हुई है। पृथ्वी प्रलय के समय पानी में घुल जाती है। पानी पृथ्वी से अधिक द्रव है इसलिए पृथ्वी पर फैल जाता है। अग्नि पानी से अधिक सूक्ष्म है। पानी अग्नि से उत्पन्न होता है। जब गरमी होती है, हमें पसीना आता है। पानी अग्नि में मिल जाता है। हवा अग्नि से अधिक सूक्ष्म है। अग्नि हवा से उत्पन्न होती है। अग्नि हवा में घुलनशील है। हवा अग्नि पर फैलती है। आकाश तत्त्वों की उत्पत्ति आकाश से ही होती है। आकाश; हवा, अग्नि, पानी और पृथ्वी इन चार तत्त्वों पर आच्छादित है। मन और समय आकाश से अधिक सूक्ष्म हैं। परमात्मा मन से भी अधिक सूक्ष्म है।

विचार से बढ़कर मन है, मन से बढ़कर बुद्धि होती है, परंतु बुद्धि से बढ़कर क्या है ? वह है, आत्मा या परमात्मा। यह स्थिर-अस्थिर, भीतर-बाहर, द्रव और दृढ़ सबमें व्याप्त है। यह बात स्वयंसिद्ध है, वह बहुत दूर और पास है और वही सबसे बड़ा आत्मा या परमात्मा है। यह परमात्मा सब और हर एक जीव में छिपा हुआ व्याप्त-विद्यमान है, परंतु प्रकाशित नहीं होता। जो व्यक्ति उस परमात्मा का अनुभव करना चाहते हैं, वे साधना के द्वारा उसका अनुभव कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४९ पृष्ठ-१७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भाग्य का निर्माण अपने हाथ में है

रोटी का स्वाद वह जानता है, जिसने परिश्रम करने के पश्चात क्षुधार्त होकर ग्रास तोड़ा हो। धन का उपयोग वह जानता है, जिसने पसीना बहाकर कमाया हो। सफलता का मूल्यांकन वही कर सकता है, जिसने अनेक कठिनाइयों, बाधाओं और असफलताओं से संघर्ष किया हो। जो विपरीत परिस्थितियों और बाधाओं के बीच मुस्कराते रहना और हर असफलता के बाद बड़े उत्साह से आगे बढ़ना जानता है, वस्तुत: वही विजयलक्ष्मी का अधिकारी होता है।

जो लोग सफलता के मार्ग में होने वाले विलंब की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा नहीं कर सकते, जो लोग अभीष्ट प्राप्ति के पथ में आने वाली बाधाओं से लड़ना नहीं जानते, वे अपनी अयोग्यता और ओछेपन को बेचारे भाग्य के ऊपर थोपकर स्वयं निर्दोष बनने का उपहासास्पद प्रयत्न करते हैं। ऐसी आत्मप्रवंचना से लाभ कुछ नहीं, हानि अपार है। सबसे बड़ी हानि यह है कि अपने को अभागा मानने वाला मनुष्य आशा के प्रकाश से हाथ धो बैठता है और निराशा के अंधकार में भटकते रहने के कारण इष्टप्राप्ति से कोसों पीछे रह जाता है।

बाधाएँ, कठिनाइयाँ, आपत्तियाँ और असफलताएँ एक प्रकार की कसौटी हैं, जिन पर पात्र-कुपात्र की, खरे-खोटे की परख होती है। जो इस कसौटी पर खरे उतरते हैं, सफलता के अधिकारी सिद्ध होते हैं, उन्हें ही इष्ट की प्राप्ति होती है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९४९ पृष्ठ-३१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्म की सर्वव्यापकता

ब्रह्म का न आदि है और न अंत। वह अखंड है। उसके खंड-खंड नहीं किए जा सकते। इस पृथ्वी पर की समस्त वस्तुओं की योजना इसी ब्रह्म से परिपूर्ण है। अनंत ब्रह्मांड भी इसी के द्वारा प्रकाशित है। विश्व के समस्त तथा हर एक पदार्थ में व्याप्त रहने पर भी इसकी पूर्णता में किसी प्रकार की कमी नहीं आने पाती, क्योंकि वह सदा ही पूर्ण है और पूर्णता ही उसका स्वभाव एवं प्राकृतिक गुण है।

यह ब्रह्म पूर्ण से भी पूर्ण है। इसलिए जिस वस्तु में यह पूर्ण ब्रह्म समाविष्ट रहेगा, वह वस्तु भी पूर्ण रहेगी। इसका अनुभव सिर्फ चेतन पदार्थों में ही नहीं करना है। ये तो संसार के जड़ पदार्थों में भी उसी प्रकार ओत-प्रोत है, जिस प्रकार चेतन पदार्थों में। इसलिए जड़ और चेतन दोनों में ही उनकी पूर्णता का साक्षात्कार करना होगा, लेकिन हमारी ये स्थूल आँखें इस भूमंडल के चप्पे-चप्पे को खोज डालें, तब भी ब्रह्म का दर्शन नहीं कर पातीं। स्वर्ग की पवित्र तेजोमय वलय से जिस दिन हमारी स्थूल आँखें प्रकाश प्राप्त कर लेंगी, मायारूपी अंधकार से निकल भागेंगी। जिस दिन ज्ञानरूपी सूर्य के प्रकाश से हमारे मन से शंकाएँ और भ्रम दूर हो जाएँगे, उसी दिन हम धन्य तथा कृतार्थ हो जाएँगे।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९४९ पृष्ठ-५

अपनी उत्तम कल्पनाओं को चरितार्थ कीजिए

जिधर दृष्टि डालिए, प्रत्येक में कल्पना का ही निवास मिलेगा। इसलिए कल्पना करना व्यर्थ नहीं है, बल्कि कल्पना करना जीवन की निशानी है, बशर्ते कि तुम्हारी कल्पनाओं में तुम्हारे जीवन का प्राण भरा हो। निष्प्राण कल्पना जीवनीशक्ति को बढ़ाती नहीं बल्कि नष्ट कर देती है, मनुष्य को निष्प्राण बना देती है। इसलिए हमें सजीव कल्पना, सप्राण कल्पना करना आना चाहिए।

'मनुष्य' नाम की इस बड़ी भारी मशीनरी में चारों ओर प्राण ही प्राण भरा हुआ है। चारों ओर जीवन ही जीवन लहरें ले रहा है और वही तो कल्पना के रूप में बाहर निकलकर अपने अनेक रूप, आकृति-प्रकृति बनाना चाहता है। वह अपने जीवन को, अपनी सत्ता को, अपनी चेतना को चारों ओर बिखेर देना चाहता है, इसीलिए तो कल्पना करता है, लेकिन उसकी सीमा जब कल्पना तक ही रह जाती है और अपनी आत्मा को, प्राण को उसमें नहीं रहने देती, तब वह निस्तेज हो जाता है। इसलिए तेजस्वी बनना हो तो जो कुछ तुम चाहते हो, जो भी तुमने अपने मन में सोच रखा है और जैसे भी तुमने अपने हवाई किले का ढाँचा तैयार किया हो, उसे इस पृथ्वी पर उतार लाने के लिए दृढ़ संकल्प हो जाओ। जब तुम कल्पना कर सकते हो तो कौन-सी शक्ति ऐसी है जो उसके पृथ्वी पर उतरने में बाधा डाले?

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९४९ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास करो कि तुम महान हो

विश्वास करो कि तुम महान कार्य के लिए आए हो। तुम्हारे भीतर महान आत्मा का निवास है। विश्वास करो कि तुम शरीर नहीं आत्मा हो, तुम मृत्यु नहीं अमर हो, इसलिए तुम्हें कोई नष्ट नहीं कर सकता, कोई तुम्हें विचलित नहीं कर सकता।

विश्वास करो कि तुम अकेले नहीं हो। जंगल, नदी, पर्वत और एकांत में भी तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारे साथ सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक परमात्मा है। जब तुम सोते हो और गाढ़ी निद्रा में होते हो, तब भी परम प्रभु तुम्हारे अंग-संग होता है। तुम्हारा वह अनंत पिता तुम्हें जीवन दे रहा है, वह तुम्हें महान और चिरायु बनाना चाहता है, इसलिए किसी भी दशा में अपने आप को अकेला और असहाय न मानो। भला जब अमरत्व, सहायों का भी सहाय, राजाओं का भी राजा परम प्रभु तुम्हारे साथ है, तब तुम अपने आप को निराश्रित और असहाय क्यों समझते हो? क्या हुआ यदि तुम्हारा विनाश करने के लिए सब सांसारिक शक्तियाँ एकत्र हैं? यदि परम पिता तुम्हारी रक्षा कर रहा है, तो विश्वास करो, कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

आत्मसमर्पण का अर्थ यह नहीं कि तुम आत्मविश्वास खो बैठो। जब तुमने परमात्मा को आत्मसमर्पण किया है, तब तुम में पूर्ण आत्मविश्वास जाग्रत होना चाहिए। उस दशा में तुम महान बन गए हो, तुम्हें भय नहीं रहा, ऐसा सोचो। तुम महान से मिलकर महान बन गए, यह विश्वास करो।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९४९ पृष्ठ-११

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हमारी अतृप्ति और असंतोष का कारण

विवेकशील पुरुष को अपनी आवश्यकताओं पर कड़ा नियंत्रण रखना चाहिए। आवश्यकताओं को मर्यादा के भीतर बाँधने के लिए एक विशेष शक्ति, मनोनिग्रह की जरूरत है।

एक विचारक का कथन है, "जो मनुष्य अधिकतम संतोष और सुख पाना चाहता है, उसको अपने मन और इंद्रियों को वश में करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम अपने आप को तृष्णा और वासना में बहाएँगे तो हमारे असंतोष की सीमा न रहेगी।"

अनेक प्रलोभन तेजी से हमें वश में कर लेते हैं। हम अपनी स्थिति को भूलकर उनके वशीभूत हो जाते हैं। बाद में रोते-चिल्लाते हैं। जिह्वा के आनंद, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद के मजे हमें अपने वश में रखते हैं। हम सिनेमा का भड़कीला विज्ञापन देखते ही मन को हाथ से खो बैठते हैं और चाहे दिनभर भूखे रहें, अनाप-शनाप व्यय कर डालते हैं। इन सभी में हमें मनोनिग्रह की नितांत आवश्यकता है। मन पर संयम रखिए, वासनाओं को नियंत्रण में बाँध लीजिए, पाकेट में पैसा न रखिए। आप देखेंगे कि आप इंद्रियों को वश में रख सकेंगे।

आर्थिक दृष्टि से मनोनिग्रह और संयम का मूल्य लाख रुपए से भी अधिक है। जो मनुष्य अपना स्वामी है और इंद्रियों को इच्छानुसार चलाता है, वासना के आगे नहीं हारता, वह सदैव सुखी रहता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५० पृष्ठ-९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी योजना पर मजबूती से टिके रहिए

संसार अवसरों से भरा है। यदि मनुष्य अवसर और परिस्थिति के साथ-साथ अपने आप को ढाल ले या अवसर को अपने पर फिट बिठा ले, तो वह उससे अवश्य लाभ उठा सकता है। हमें अपनी कटु आलोचना, खरी और तीखी आलोचना कर व्यक्तित्व की कमजोरियाँ मालूम करने और उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

संसार में बहुत कम ऐसे निर्भय व्यक्ति हैं, जो अपने दोष देखते, उन पर सोचते-विचारते, टीका-टिप्पणी करते हैं। आप इन्हीं व्यक्तियों जैसा बनिए। अपनी कमजोरियों को छाँट-छाँटकर निकाल डालिए। अपने व्यक्तित्व को पुन: निर्मित कीजिए। संक्षेप में, अपनी कमजोरियाँ निकालकर अपने आप को नवीनतम नमूने का आदमी, नवीन व्यक्तित्व, विचारों और दृष्टिकोण वाला व्यक्ति बना लीजिए।

विकास के लिए जो तथ्य सबसे जरूरी है, वह है—योजना बनाना और फिर चाहे कुछ हो उस पर टिके रहना, चट्टान की तरह अड़े रहना, पूर्ण करना, अधूरा न छोड़ना। लोग अच्छी योजनाएँ प्रारंभ करते हैं, पर बीच में ही छोड़ भागते हैं। यह बुरा है, बस इससे सावधान रहिए।

अत: स्वयं अपनी सहायता से ऊँचा उठिए, संसार आपके पीछे-पीछे चलेगा। संसार उसकी सहायता करता है, जो स्वयं सशक्त और सफल हो चुका है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५० पृष्ठ-२७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हमारी आर्थिक कठिनाइयाँ कैसे दूर हों ?

कितने दु:ख का विषय है कि हम लोगों ने अपने व्यक्तिगत खरच, आवश्यकता तथा आमदनी से अधिक बढ़ा लिए हैं। जब आप रुपये के लिए दूसरे के सम्मुख हाथ फैलाते हैं, तो स्मरण रखिए, आप दूसरे की मजदूरी हड़पना चाहते हैं। साथ ही अपनी आत्मप्रतिष्ठा, पौरुष, सम्मान, प्रसन्नता भी दूसरे के हाथ बेचते हैं। माँगने से हमारे चरित्र की कमजोरी और दीनता प्रकट होती है। माँगना प्रत्येक दृष्टिकोण से हेय है। सज्जन व्यक्ति भूखा रहकर दिन काट लेगा, पर किसी के सम्मुख हाथ नहीं फैलाएगा। जो लोग रूपया उधार लेकर उत्सव और मेलों में व्यय करते हैं, वे अपने साथ बड़ा अत्याचार करते हैं।

अपने चरित्र का निर्माण इस प्रकार कीजिए कि उचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कभी धन की कमी न पड़े और व्यर्थ की विलासमयी आवश्यकताओं के लिए धन खरच करने की आवश्यकता ही प्रतीत न हो। रुपये का काम, थोड़ी देर का आनंद या मजेदारी नहीं, प्रत्युत मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति को ऊँचा उठाना है। फजूलखरची एक रोग है। कम आय से मत डरिए, वरन उसी को सावधानी से व्यवस्थापूर्वक व्यय कीजिए। सावधानी से बजट बनाकर, अपनी आवश्यकताओं को मर्यादित कर, संयमित एवं व्यवस्थित जीवन व्यतीत करना, जीवन में दक्षता का रहस्य है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५० पृष्ठ-३८-३९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्य में तन्मय हो जाइए

मन बड़ा शक्तिमान है, परंतु है बड़ा चंचल। उसकी समस्त शक्तियाँ छितरी रहती हैं और इसलिए मनुष्य सफलता को आसानी से नहीं प्राप्त करता। सफलता के दर्शन उसी समय होते हैं, जब मन अनेक वृत्तियों को छोड़कर किसी एक वृत्ति पर केंद्रित हो जाता है, इसके अलावा और कुछ उसके आमने-सामने तथा आस-पास रहता ही नहीं। सब तरफ लक्ष्य-ही-लक्ष्य, उद्देश्य-ही-उद्देश्य रहता है।

जिन्हें हम विघ्न कहते हैं, वे हमारे चित्त की विभिन्न वृत्तियाँ हैं, जो अपने अनेक आकार-प्रकार धारण करके सफल नहीं होने देतीं। यदि हम लक्ष्य सिद्ध करना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि लक्ष्य से विमुख करने वाली जितनी भी विचारधाराएँ उठें और पथभ्रष्ट करने का प्रयत्न करें, हमें उनसे अपना संबंध-विच्छेद कर लेना चाहिए और यदि हम अपनी दृढ़ता को कायम रखें, अपने आप पर विश्वास रखें तो हम ऐसा कर सकते हैं, इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।

मन की अपरिमित शक्ति को जो लक्ष्य की ओर लगा देते हैं और लक्ष्यभ्रष्ट करने वाली वृत्तियों पर अंकुश लगा लेते अथवा उनसे अपना मुँह मोड़ लेते हैं, वे ही जीवन के क्षेत्र में विजयी होते हैं, सफल होते हैं। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५० पृष्ठ-१०*

सत्कर्मों से दुर्भाग्य भी बदल सकता है

प्रारब्ध कर्मों का, भूतकाल में किए हुए भले-बुरे कर्मों का फल मिलना प्रायः निश्चित ही होता है। कई बार तो ऐसा होता है कि कृतकार्य का फल तुरंत मिल जाता है, कई बार ऐसा होता है कि प्रारब्ध भोगों की प्रबलता होने के कारण विधि निर्धारित भली-बुरी परिस्थिति वर्तमान काल में बनी रहती है और इस समय जो कार्य किए गए हैं, उनका परिणाम कभी आगे भुगतने के लिए जमा हो जाता है।

स्मरण रखिए, वर्तमान ही प्रधान है। पिछले जीवन में आप भले या बुरे कैसे भी काम करते रहे हों, यदि अब अच्छे काम करते हैं तो चंद भाग्य बन गए फलों को छोड़कर अन्य संचित पाप हतवीर्य हो जाएँगे और यदि उनका कुछ परिणाम हुआ भी तो बहुत ही साधारण, स्वल्प कष्ट देने वाला एवं कीर्ति बढ़ाने वाला होगा। शिवि, दधीचि, हरिश्चंद्र, प्रह्लाद, ध्रुव, पांडव आदि को पूर्व भोगों के अनुसार कष्ट सहने पड़े, पर वे कष्ट अंततः उनकी कीर्ति को बढ़ाने वाले और आत्मलाभ कराने वाले सिद्ध हुए। सुकर्मी व्यक्तियों के बड़े-बड़े पूर्वपातक स्वल्प दुःख देकर सरल रीति से भुगत जाते हैं, पर जो वर्तमान काल में कुमार्गगामी हैं, उनके पूर्वकृत सुकर्म तो हतवीर्य हो जाएँगे। जो संचित पाप कर्म हैं, वे सिंचित होकर परिपुष्ट और पल्लवित होंगे, जिससे दुःखदायी पाप फलों की शृंखला अधिकाधिक भयंकर होती जाएगी। हमें चाहिए कि सद्विचारों को आश्रय दें और सुकर्मों को अपनाएँ। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५० पृष्ठ-१७-१९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मरने से डरना क्या ?

मरने से डरने का कारण हमारा अज्ञान है। जो परमात्मा के इस सुंदर उपवन पर स्वामित्व प्रकट करता है, उसे छोड़ना नहीं चाहता, वह अपनी मूर्खता के कारण दुःख का ही अधिकारी होगा। अपनी मृत्यु में दुःख भी इसी बात का होता है कि जीवन जैसे बहुमूल्य पदार्थ का सदुपयोग नहीं किया गया। आलस्यवश देर से स्टेशन पहुँचने पर जब रेल निकल जाती है, उस दिन नियत स्थान पर न पहुँच सकने के कारण जो भारी क्षति हुई, उसका विचार कर-करके वह आलसी मनुष्य स्टेशन पर खड़ा हुआ पछताता है और अपने आप को कोसता है। मृत्यु के समय भी ऐसा ही पश्चात्ताप होता है, जबकि मनुष्य देखता है कि मानव-जीवन जैसी बहुमूल्य संपत्ति को मैंने व्यर्थ की बातों में गँवा दिया, उसका सदुपयोग नहीं किया, उससे जितना लाभ उठाना चाहिए था, वह नहीं उठाया। यदि हम जीवन के क्षणों का सदुपयोग करें, उसकी एक-एक घड़ी को केवल आत्मलाभ के, सच्चे स्वार्थ के लिए लगाएँ, तो चाहे आज, चाहे कल, जब भी मृत्यु सामने आएगी, किसी प्रकार का पश्चात्ताप या दुःख न करना पड़ेगा।

मृत्यु से डरो मत, उससे डरने की कोई बात नहीं। डरने की बात है, हमारा गलत आचरण। कर्त्तव्य पर प्रतिक्षण सजगतापूर्वक आरूढ़ रहें, तो न हमारी और न किसी दूसरे की मृत्यु हमारे लिए कष्टकारक होगी। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५० पृष्ठ-४-६*

आत्मसुधार की एक नवीन योजना

आत्मसुधार की एक नवीन योजना यह है कि अपने व्यक्तित्व की गुत्थी सुलझाइए। अपना मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कीजिए। आप बाजार से कोई मशीन खरीदते हैं, तो उसकी विशेषताएँ दुकानदार से मालूम करते हैं। खेद है कि मनुष्यरूपी इस महाप्रतापी अटूट शक्तिपुंज शरीर की विशेषताएँ हमें ज्ञात नहीं। शरीर में जो मस्तिष्क है और मस्तिष्क के अणु-अणु में जो नाना प्रकार की शक्तियों का खजाना भरा पड़ा है, हमारे गुप्त मन में जो नाना प्रकार के व्यापार होते हैं, उनका हमें ज्ञान नहीं है। मनुष्य की शक्ति अनंत है। वह भौतिकता की सीमा को चीरकर आध्यात्मिकता की ऊँचाई में उठती है। हम वास्तव में अपना विकास अवरुद्ध कर देते हैं, बढ़ना और विकसित होना समाप्त कर देते हैं, नवीन ज्ञान और पराशक्ति के प्रकाश की ओर से नेत्र मूँद लेते हैं।

पहले अपनी शक्तियों, योग्यताओं और विशेषताओं की देखिए। योग्यता वृद्धि के लिए प्रथम तत्त्व अध्ययन और परिश्रम हैं।

योग्यता बढ़ाने के लिए जब आप अग्रसर हों तो दो शत्रुओं से सावधान रहें—(१) निराशा का त्याग करें, (२) असफलता से हतोत्साहित न हों। इनसे उन्नति का मार्ग कंटकाकीर्ण होता है, पग-पग पर छिद्रान्वेषण होता है, किंतु सावधान, निराश न हों। आत्मप्रेरणा से कठिनाइयों को चीरते हुए निरंतर अग्रसर हों यदि एक-दो बार असफल हो जाएँ, तो मार्ग न त्यागें, डटे रहें।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५० पृष्ठ-२४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य की महानता का रहस्य

मनुष्य सब प्राणियों से श्रेष्ठ है। शक्तिमान होना अथवा शक्तिहीन होना मनुष्य के स्वयं अपने हाथ में है।

अपनी प्रत्येक आदत एवं वासना के ऊपर आप नियंत्रण पा सकते हैं, क्योंकि आप अनंत परमात्मा के एक अंश हैं और परमात्मा के बल के आगे ऐसा कुछ भी नहीं है, जो टिक सके। अनेक मनुष्य हलके प्रकार का जीवन इस तरह बिताते हैं, जिसमें व्यक्ति स्वतंत्र होता ही नहीं है। क्या तुम्हें इस संसार में प्रभावशाली बनना है ? यदि हाँ, तो आप अपने आप पर निर्भर रहो और स्वतंत्र बनने का प्रयत्न करो। अपने आप को साधारण मनुष्य मत समझो। हम गरीब हैं, हमसे क्या होगा, ऐसा मत कहो।

यदि आप परमात्मा के ऊपर विश्वास रखकर लोगों की आलोचना से नहीं डरोगे, तो प्रभु अवश्य आपको सहायता देगा। यदि लोगों को खुश करने के लिए अपना जीवन बिताएँगे, तो लोगों से आप कदापि खुश नहीं रहेंगे, बल्कि जैसे-जैसे आप उन्हें खुश रखने में लगेंगे, वैसे-वैसे ही आप गुलाम बनते जाएँगे, वैसे-वैसे ही आप से उनकी माँग भी बढ़ती जाएगी।

जो कोई स्वाभाविक रीति से अपनी सामर्थ्य का उपयोग करता है, वह निश्चित रूप से महान पुरुष है। जिन मनुष्यों को अपनी मूलशक्ति आत्मशक्ति का भान होता है, वे ओछे और बेकार काम करते हुए नहीं दिखाई देते।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५० पृष्ठ-७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने लक्ष्य पर केंद्रित हो जाइए

यदि आप वास्तव में अपने जीवन को सुखी, शांत एवं सफल बनाना चाहते हों, तो सर्वप्रथम अपना केवल एक ही आदर्श विचारपूर्वक निश्चित करिए कि मैं यह चाहता हूँ और यह बनूँगा। केवल अपनी ओर देखते रहिए और अपनी दृष्टि अर्जुन की भाँति अपने लक्ष्य पर ही केंद्रित कीजिए दूसरों की विशेषता या अवगुणों पर ध्यान मत दीजिए। दूसरों की कोई विशेषता देखकर ही वैसा बनने की मत सोचिए। यदि किसी में अच्छे गाने की विशेषता है, तो एक अच्छा गायक बनने की मत सोचिए। यदि वास्तव में संगीत तुम्हें प्रिय है, तो अपने सामर्थ्य की सीमा के भीतर गाने की विशेषता अपने में लाने का प्रयास कर सकते हो।

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सचाई, ईमानदारी एवं निरंतर परिश्रम से काम करिए, सोचिए कम, करिए अधिक। प्रत्येक काम को बिना घबराए निश्चिंत भाव से कीजिए, संतोष से काम कीजिए, मन को निर्द्वंद्व एवं प्रसन्न रखकर आत्मबल को जाग्रत कीजिए। अपनी दृष्टि लक्ष्य की ओर गड़ाकर सारी शक्तियाँ उस पर केंद्रित कर दीजिए।

मनुष्य के हाथ में कर्म करना है। 'लक्ष्य के प्रति तन्मय रहना' यह मनुष्य की इतनी बड़ी विशेषता, प्रतिष्ठा, सफलता और महानता है कि उनकी तुलना में अनेक प्रकार के आकर्षक गुणों को तुच्छ ही कहा जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५० पृष्ठ-१७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवत्व का अवलंबन

क्षणभंगुर शरीर की चटोरी इंद्रियों को तृप्त करने में 'सुर-दुर्लभ मानव जीवन' को व्यतीत कर डालना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। सामाजिक कुरीतियों के खरचों के आडंबरों को पूरा करने के लिए जैसे-तैसे करके धन जोड़ते रहना और फिर एक दिन में उसे बारूद की तरह फूँक देना, यह भी कोई दूरदर्शिता की बात नहीं है। गायत्री कहती है कि मेरे प्रिय पुत्रो! परमात्मा के अमर राजकुमारो! तुम देव हो, दिव्यता का वरण करो। अपने दृष्टिकोण को दिव्य बनाओ, शुद्ध बनाओ, जिन बाल-क्रीड़ाओं में अनेक अज्ञानग्रस्त अविवेकी उलझ रहे हैं, उन्हीं में तुम भी मत फँस जाओ। अशुद्ध दृष्टि अपनाकर केवल मूर्ख या दुष्ट बना जा सकता है। ईश्वर ने शरीर, बुद्धि और जीवनरूपी बहुमूल्य संपत्ति इसलिए दी है कि दैवी गतिविधि को अपनाकर स्वर्गीय आनंद का आस्वादन किया जाए। तृष्णा, भोग, लोभ, अहंकार, मोह आदि के जंजालों में फँसकर इन बहुमूल्य शक्ति-संपत्तियों का अपव्यय या दुर्व्यय करना सर्वथा अनुचित है।

हमारा जीवन देवत्व से परिपूर्ण होना चाहिए। हम अपने साथ प्यार करें, अपनी आत्मा के साथ प्यार करें, अपने जीवन के साथ प्यार करें, पर कुपथ्य कराने वाली माता की तरह न करें। मोहवश कुपथ्य कराके रोगी बालक को मृत्यु के मुख में ढकेल देने वाली माता का प्रेम सच्चा प्रेम नहीं है, उसे तो मोह ही कहा जाएगा। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९५० पृष्ठ-५*

हम दिव्य जीवन जिएँ

मनुष्य की आयु अल्प है और समय तीव्रगति से चला जा रहा है। संसार विपदाओं से भरा है। अतएव अविद्याग्रंथि को काटकर निर्वाणिक आनंदामृत का छककर पान करिए।

आध्यात्मिक जीवन निरा गल्प नहीं है, केवल आवेश मात्र नहीं है। यही सच्चा आत्मस्वरूप जीवन है, यह विशुद्ध आनंद और सुख का अनुपम अनुभव है। इसी को पूर्णता प्राप्त जीवन कहते हैं।

एक स्थिति ऐसी होती है, जहाँ सदा शाश्वत शांति और केवल अनंत आनंद-ही-आनंद है, परमानंद है। वहाँ न तो मृत्यु है और न वासना ही, वहाँ न दु:ख है और न दरद, न भ्रम है और न शंका। क्या आप इस अक्षय आनंद और 'परम सुख' के अमर पद की प्राप्ति के लिए लालायित नहीं है? यदि हैं तो आइए, अपने मन और इंद्रियों पर संयम रखिए, सद्गुणों को सीखिए, आत्मा के सच्चे स्वरूप को जानने की चेष्टा करिए। आत्मतत्त्व का नियमित रूप से ध्यान करिए, तभी आप उस अतीव गंभीर, असीम आनंद एवं अमरत्व को पा सकेंगे, केवल तभी आप अमर पद तक पहुँच सकेंगे।

इस शरीर को ही आत्मा समझ लेना सबसे बड़ा पाप है। इस भ्रमात्मक भाव को त्याग दीजिए।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५० पृष्ठ-९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वमाता की पवित्र आराधना

ब्रह्म निर्विकार हैं। इंद्रियों से अतीत तथा बुद्धि से अगम्य है। उस तक सीधा पहुँचने का कोई मार्ग नहीं। नाम-जप, रूप का ध्यान, प्रार्थना, तपस्या, साधना, चिंतन, श्रवण, कीर्तन आदि सभी आध्यात्मिक उपकरण मात्र हैं। सतोगुणी माया एवं चितशक्ति के द्वारा ही जीव और ईश्वर का मिलन हो सकता है। यह आत्मा और परमात्मा का मिलाप कराने वाली शक्ति गायत्री ही है। ऋषियों ने इसी की उपासना की है, क्योंकि यह खुला रहस्य है कि शक्ति के बिना मुक्ति नहीं। सरस्वती, लक्ष्मी, काली, माया, प्रकृति, राधा सीता, सावित्री, पार्वती आदि के रूप में गायत्री की ही पूजा की जाती है। पिता से संबंध होने का कारण माता है। इसलिए पिता से माता का दर्जा ऊँचा है। ईश्वर की असीम आनंद राशि का आस्वादन करने का सौभाग्य गायत्री माता द्वारा ही मानव प्राणी को प्राप्त होता है।

ब्रह्म की इच्छा, शक्ति एवं क्रिया गायत्री है। उसी से जगत् की उत्पत्ति, विकास एवं अवसान का आयोजन होता है। सुंदरता, मधुरता, संपत्ति, कीर्ति, आशा, प्रसन्नता, करुणा, मैत्री आदि के रूप में यह महाशक्ति ही जीवन क्षेत्र को आनंदित एवं तरंगित करती रहती है। इस विश्वनारी की, महागायत्री की, महामाता की, महाविद्या की आराधना करके हम अधिकाधिक आनंद की ओर अग्रसर हो सकते हैं। परमानंद प्राप्त करने का यही शाश्वत मार्ग हैं। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५० पृष्ठ-२७*

www.awgp.org

संवेदना शक्ति का विकास कीजिए

दूसरों के दु:ख का असर होना, इसको दया कहते हैं अथवा दुखी जीवों के प्रति जो प्रीतिभाव रखा जाता है, उसको दया कहते हैं। इस दयावृत्ति से संवेदना शक्ति की उन्नति होती है। दयावृत्ति का भक्ति और प्रीति के साथ अति घनिष्ठ संबंध है। जो मनुष्य प्राणिमात्र के अंत:करण में ईश्वर का निवास मानकर भक्ति करता है, वही सबसे प्रेमभाव रख सकता है, उससे दूसरों का दु:ख नहीं देखा जाता। दूसरों के दु:ख को देखकर उसको अपने अंत:करण में दु:ख का अनुभव होता है, जिससे तत्काल हृदय द्रवीभूत होकर अपने अंदर के दु:ख की निवृत्ति के लिए दुखी प्राणी की सहायता करने के लिए तत्पर होता है। अत: भक्ति से प्रीति और दयावृत्ति की पुष्टि होती है। जब प्रीतिवृत्ति उत्पन्न होती है, तभी मनुष्य भक्ति और दया करते हैं। जब दयावृत्ति होगी, तब ही भक्ति और प्रीतिवृत्ति संपुष्ट बनेगी। इस रीति से इन तीनों वृत्तियों का परस्पर संबंध है। इसी हेतु सज्जन और विवेकीजन दूसरों के प्रति दया रखते हैं।

जैसे अपने को अपना जीवन प्यारा है, वैसा ही अन्य प्राणी को है। अत: दूसरों को अपने आत्मा के समान समझकर सज्जन लोग सर्वदा दया करते ही रहते हैं।

परोपकार करने से दयावृत्ति का जितना अधिक विकास होता जाएगा, उतने अंश में सुख-शांति की वृद्धि होती जाएगी। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५० पृष्ठ-११*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप निराश मत होइए

तुम निराश इसलिए हो कि भय ने और संदेह ने तुम्हारे अंत:करण पर अधिकार कर लिया है। तुम्हें अपनी योग्यता के प्रति अविश्वास हो गया है, तुम्हें असफलता और दुर्भाग्य की मानसिक प्रवृत्तियों ने परास्त कर दिया है और हीनता की भावना ने तुम्हारे मानसिक जगत् में तूफान लाकर तुम्हें अस्त-व्यस्त कर डाला है। विचारों की यह परवशता ही तुम्हें डुबो रही है। याद रखो, जब तक तुम किसी कार्य में हाथ नहीं डालोगे, तब तक अपनी शक्ति का अनुमान कदापि न कर पाओगे। मनुष्य जब तक अपने आप को यह न समझ ले कि वह कार्य करने की क्षमता रखता है, तब तक वह पंगु ही बना रहेगा। तुम्हें जो कुछ करना श्रेष्ठ जँचता है, जो कुछ तुम्हारी अंतरात्मा कहती है, उसे दृढ़ संकल्पपूर्वक अवश्यमेव प्रारंभ करो। डरो नहीं। शंका, संदेह या अविश्वास की कोई बात न सोचो, बल्कि कार्य शुरू कर ही डालो। प्रत्येक मनुष्य कुछ-न-कुछ जरूर कर सकता है और करेगा यदि हिम्मत न हारे। हिम्मत हमेशा बाजी मारती है।

जीवन को एक दीप समझिए। उसकी शिखा में सजीवता तभी आएगी, किरणें तभी जगमगाएँगी, जब आशा और उम्मीद उसे अपने तेल से परिपूर्ण रखे। उम्मीद के तेल के खत्म होते ही या तो दु:ख-दरद के समुद्र में विलीन हो जाना होगा या फिर मृत्यु की शीतल-सी गोद में हमेशा के लिए समा जाना होगा।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५० पृष्ठ-१५-१६

बच्चों के निर्माण का दायित्व

तुम्हारे गृह में पदार्पण करने वाले तुम्हारे आत्मस्वरूप ये बालक समाज और देश का निर्माण करने वाले भावी नागरिक हैं। ईश्वर की ओर से तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि उनकी सुशिक्षा एवं आत्मपरिष्कार की समस्याओं में दिलचस्पी लो।

जैसा वातावरण तुम्हारे घर का है, उसी साँचे में ढलकर तुम्हारी संतानों का मानसिक संस्थान, आदतें, सांस्कृतिक स्तर का निर्माण होगा। जब तुम अपने भाइयों के प्रति दयालु, उदार और संयमी नहीं हो, तो अपनी संतान से क्या आशा करते हो कि वे तुम्हारे प्रति प्रेम दिखलाएँगे। जब तुम अपना मन विषय-वासना, आमोद-प्रमोद तथा कुत्सित इच्छाओं से नहीं रोक सकते, तो भला वे क्यों न कामुक और इंद्रियलोलुप होंगे। यदि तुम मांस, मद्य या अन्य अभक्ष्य पदार्थों का उपयोग करते हो, तो वे भला किस प्रकार अपनी प्राकृतिक पवित्रता और दूध जैसी निष्कलंकता को बचाए रख सकेंगे। यदि तुम अपनी अश्लील और निर्लज्ज आदतों, गंदी गालियाँ, अशिष्ट व्यवहारों को नहीं छोड़ते, तो भला तुम्हारे बालक किस प्रकार गंदी आदतें छोड़ सकेंगे।

तुम्हारे शब्द, व्यवहार, दैनिक कार्य, सोना, उठना-बैठना ऐसे साँचे हैं, जिनमें उनकी मुलायम प्रकृति और आदतें ढाली जाती हैं। वे तुम्हारी प्रत्येक सूक्ष्म बात देखते और उनका अनुकरण करते हैं। तुम उनके सामने एक मॉडल, एक नमूना या आदर्श हो। इसलिए यह तुम्हीं पर निर्भर है कि तुम्हारी संतान होगी मनुष्य या मनुष्याकृति वाले पशु।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५१ पृष्ठ-१९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चे मित्र का चुनाव

मित्र तथा उत्तम पड़ोसी का चुनाव बड़ा कठिन है। अनेक व्यक्ति आपसे अपना काम निकालने के स्वार्थमय उद्देश्य से मित्रता करने को उतावले रहते हैं, किंतु अपना कार्य निकल जाने पर कोई सहायता नहीं करते। अत: बड़ी सावधानी से व्यक्ति का चरित्र, आदतें, संग, शिक्षा इत्यादि का निश्चय करके मित्र का चुनाव होना चाहिए। आपका मित्र उदार, बुद्धिमान, पुरुषार्थी और सत्यपरायण होना चाहिए। विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषधि है। हमें अपने मित्रों से यह आशा करनी चाहिए कि वे हमारे उत्तम संकल्पों को दृढ़ करेंगे, दोषों एवं त्रुटियों से बचाएँगे तथा हमारी सत्यता, पवित्रता और मर्यादा को पुष्ट करेंगे। यदि हम कुमार्ग पर पाँव रखेंगे, तब हमें सचेत करेंगे। सच्चा मित्र एक पथप्रदर्शक, विश्वासपात्र और सच्च सहानुभूति से पूर्ण होना चाहिए।

यह कर्त्तव्य उसी से पूर्ण होगा, जो दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्प का हो। हमें ऐसे ही मित्रों का पल्ला पकड़ना चाहिए, जिनमें आत्मबल हो, जैसे सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था।

मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि किसी प्रकार का धोखा न होगा। मित्रता एक नई शक्ति की योजना है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५१ पृष्ठ-२१*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ईश्वरीय सत्ता का का तत्त्वज्ञान

परमात्मा खुशामदपसंद नहीं। किसी का निंदा-स्तुति की उसे आवश्यकता नहीं। वह किसी पर प्रसन्न-अप्रसन्न नहीं होता। पूजा-उपासना एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है, जिसके करने से हमारा आत्मबल बढ़ता है, सतोगुण की मात्रा में वृद्धि होती है। ईश्वर को सर्वव्यापक समझने वाला पापों से डरेगा। कोतवाल सामने खड़ा हो, तो चोर प्रकृति का मनुष्य भी उस समय साधु-सा आचरण करता है। सबसे बड़े कोतवाल ईश्वर को जो अपने अंदर-बाहर चारों ओर व्यापक देखता है, वह उसके दंड से डरेगा और पाप न कर सकेगा। प्राणिमात्र में ईश्वर को व्यापक देखने वाला व्यक्ति ही सबके साथ अच्छा व्यवहार कर सकता है।

यह ईश्वरीय दृष्टि प्राप्त करना, ईश्वर की आराधना का प्रधान उद्देश्य है। ध्यान, प्रार्थना, पूजा, कीर्तिन, जप आदि ऐसी मनोवैज्ञानिक क्रियाएँ हैं, जिनके द्वारा मनोभूमि में चिपके हुए अनेक कुसंस्कार छूटते हैं और उनके स्थान पर सुसंस्कारों की स्थापना होती है।

यदि उस अंतरात्मा की पुकार को सुना जाए, उसके संकेतों पर चला जाए, तो बुरे-से-बुरा मनुष्य भी थोड़े ही समय में श्रेष्ठतम महात्मा बन सकता है। गीता में भगवान ने कहा है—"सब छोड़ मेरी शरण में आ, मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा।" मेरी शरण अर्थात अंतरात्मा की शरण।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५१ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा ब्रह्मरूप है, इसे पहचानिए

अपने मन और इंद्रियों पर संयम रखिए, सद्गुणों को सीखिए, आत्मा के सच्चे स्वरूप को जानने की चेष्टा करिए, आत्मतत्त्व का नियमित रूप से ध्यान करिए, तभी आप उस अतीव गंभीर, असीम आनंद एवं अमरत्व को पा सकेंगे, केवल तभी अमर-पद तक पहुँच सकेंगे। इस शरीर को ही आत्मा समझ लेना सबसे बड़ा पाप है। इस भ्रमात्मक भाव को त्याग दीजिए।

अविद्या और अज्ञान के गहन अंधकूप से बाहर निकलिए और ज्ञानरूपी सूर्य की जगमगाती ज्योति में स्नान करिए। इस ज्ञान में दूसरों को भी साथी बनाइए। अपवित्र इच्छाएँ और अविद्या आपको बहका देती हैं।

अतः इसे भी कभी मत भूलिए कि मानव-जीवन का मुख्य उद्देश्य और अंतिम लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार करना ही है। झूठे बाह्य आडंबरों और माया के मिथ्या प्रपंचों में मत फँसिए। कल्पना के मिथ्या स्वप्नों से जागिए और थोथे, सारहीन प्रलोभनों के जाल में न फँसकर ठोस और जीती-जागती असलियत को ही पकड़िए। अपनी आत्मा से प्रेम करिए, क्योंकि आत्मा ही परमात्मा या ब्रह्म है, यही सजीव मूर्तिमान सत्य है। आत्मा ही शाश्वत है। अतः आत्मा में ही स्थित होइए और आप ही ब्रह्म हैं, इसे पहचानिए। यही वास्तविक जीवन है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५१ पृष्ठ-९*

सर्वत्र अपना ही प्राण बिखरा पड़ा है

गायत्री की शिक्षा है कि अपनी आत्मा को सबमें और सबकी आत्मा को अपने में समाई हुई देखो। अपना वही लाभ स्वीकार करो, जो समाज के लाभ का एक भाग है। अपने जिस कार्य से औरों की हानि होती है, बहुसंख्यक नागरिकों पर जिसका बुरा प्रभाव पड़ता है, ऐसा लाभ सर्वथा त्याज्य है। इसलिए दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझना चाहिए।

जिस व्यवहार को हम अपने लिए उचित नहीं समझते, उसे दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि मेरे साथ दूसरे लोग दुर्व्यवहार न करें। चोरी, ठगी, विश्वासघात, छल, उद्दंडता, निष्ठुरता, बेईमानी, अनुदारता का व्यवहार उसके साथ न हो, वरन मधुरता, नम्रता, उदारता, सचाई एवं सहायता की नीति बरती जाए।

स्मरण रखना चाहिए कि जब हम दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे, तो हमें भी ऐसा प्रतिफल मिलेगा। जो बोएँगे वही काटेंगे। यदि वैसा ही व्यवहार हमारे साथ दूसरे न भी करें, तो भी विश्वव्यापी आत्मा को हमारे सद्व्यवहार से जो सुख मिलेगा, वह आंशिक और अप्रत्यक्ष रूप से अपने को ही तो मिला, क्योंकि अंततः सभी आत्माएँ एकदूसरे से संबंधित हैं। किसी को छोटा या नीच समझना अनात्मवाद है। गायत्री कहती है कि हम आत्मा हैं, इसलिए हमारा सर्वोपरि स्वार्थ आत्मपरायणता में है, हमें आत्मवादी बनना चाहिए और आत्मकल्याण एवं आत्मगौरव की चिंता करनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५१ पृष्ठ-६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसे आप वैसा आपका संसार

जैसे हम हैं वैसा ही हमारा संसार होगा। यदि हम सुखी हैं, तो हमारा सारा संसार सुखी है और यदि हम दुखी हैं, तो सारा संसार (चाहे वह कितना ही सुखमय क्यों न हो) दुःखमय प्रतीत होता है।

यदि हमारी मनोदशा भी सुख अनुभव करने लगे तथा सोचने लगे कि यह दुःख हमें केवल अपने जीवनस्तर की सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए परीक्षार्थ ही मिला करता है, तो हमें दुःख की छाया छू भी नहीं सकती। जब हम इस प्रकार अनुभव करने लगेंगे, तो वास्तव में हम दुःख को सुख में बदल सकेंगे और अध्यात्म-तत्त्व की ओर अग्रसर होकर दूसरों के दुःख को भी सुख में बदल सकेंगे।

ऐसा करने के लिए हमें त्याग व तपस्या की आवश्यकता पड़ती है, जिसकी प्रतिक्रिया हमारी आत्मा पर होती है। यदि हमारी आत्मा इन सबको सहन कर लेती है, तो वास्तव में हममें एक आध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है, जिसका निर्माण हम अपने विचारों द्वारा ही करते हैं।

आज हम चाहे जिस परिस्थिति में भी क्यों न हों, अपने दृष्टिकोण को बदल देना चाहिए तथा अपने विचारों को सदा प्रसन्नता, आशा, शांति, शक्ति और प्रयत्न की ओर दौड़ाना चाहिए। कहा भी है—"जैसे आप हैं, वैसा ही आपका संसार है।" *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५१ पृष्ठ-१७*

अपना दृष्टिकोण ऊँचा रखें

www.vicharkrantibooks.org

यदि आज भी आप बुरी परिस्थितियाँ तथा वातावरण में जकड़े हुए हैं, तो निराश मत होइए, अपने भाग्य को मत कोसिए, इस परिस्थिति के लिए किसी दूसरे को दोषी मत ठहराइए, सिर्फ अपना दृष्टिकोण बदल दीजिए। बुराई का कारण तो आप में ही विद्यमान है, उसे समझकर खुशी-खुशी घटनास्थल पर घटना को सामने आने दीजिए। यह घटना आपकी स्वयं की निर्मित की हुई है। उसे आप शीघ्र दूर कर सकते हैं। यदि आप अपना दृष्टिकोण बदल दें, सदा उत्तम विचारों में लीन रहें, अपनी आंतरिक स्थिति को सुधारने का दृढ़ संकल्प कर लें, तो बाह्य जीवन में भी वह दशा सफलतापूर्वक सुधर सकती है, जिसके लिए आप चिंतित रहते हैं।

यदि हम क्रोध, चिंता, ईर्ष्या, लोभ आदि असंगत मानसिक दोषों के शिकार होते हुए भी उन्नत और स्वस्थ जीवन की कल्पना करते हैं, तो यह असंभव बात का स्वप्न देखना मात्र है। यदि हम वस्तुतः अपने जीवन को सुखी एवं उन्नतिशील देखना चाहते हैं, तो क्रोध, चिंता, ईर्ष्या आदि कुविचारों को घटाने और हटाने के लिए प्रयत्न करना होगा।

अंतःकरण में उच्च विचारों का प्रवेश कराते रहिए तथा सदा सुखमय जीवन की आशा लेकर आगे बढ़िए। आप देखेंगे कि स्थिति में आशाजनक सुधार हो रहा है। जिन बुरी दशाओं के कारण जीवन भारस्वरूप बन रहा था, वे घट रही हैं। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५१ पृष्ठ-१७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निष्काम भाव से कर्म करते रहिए

भाग्य और कर्म, तकदीर और तदवीर दोनों एक ही वस्तु हैं। जैसे कल का दूध आज दही बन जाता है, वैसे ही भूतकाल के कर्म आज प्रारब्ध बनकर प्रकट होते हैं। हम अपने भाग्य के निर्माता आप हैं। अपनी कर्मरेखा के लेखक, प्रारब्ध के रचयिता हम स्वयं हैं। भूतकाल में जो कर चुके हैं, उसका परिणाम आज मौजूद है। यदि हम भविष्य को अच्छा, सुख-शांतिमय, आनंददायक बनाना चाहते हैं, तो आज के कर्त्तव्य-कर्म को मजबूती से अपनाना पड़ेगा, कर्मयोगी बनना पड़ेगा। यदि आज के कर्त्तव्य की उपेक्षा की जा रही है, तो निश्चय है कि कल का प्रारब्ध हमें अत्यंत त्रासदायक दुर्भाग्य के रूप में भोगना पड़ेगा।

कर्म से वैराग्य लेना भूल है। बुराइयों से, लिप्सा से, तृष्णा से, दुष्कर्मों से, कुविचारों से, आलस्य से 'वैराग्य' शब्द की दुर्गति करना है।

प्रत्येक कर्मयोगी को वैसा ही वैरागी होना चाहिए, जैसे घर में रहकर तपोवन का निर्माण करना। भोग के साधन होते हुए भी उनका परित्याग करना, सच्चा वैराग्य कहा जा सकता है। अभाव में जो त्याग होता है, उसके अपरीक्षित होने के कारण, परीक्षा के समय पर विफल हो जाने का भय बना रहता है। भोग के रहते हुए त्यागी होना ही सच्ची तपस्या है। कर्मयोगी अनुद्विग्न रहता है, क्योंकि उसका केंद्रबिंदु कर्म है। वह कर्मबंधन में नहीं फँसता, इसलिए जीवनमुक्ति सदा उसे करतलगत रहती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५१ पृष्ठ-६

अपने को बुराइयों से बचाइए

बिना विचारे कोई बात न कहो। एक शब्द भी व्यर्थ मत बोलो। सब प्रकार की बातचीत, जिसकी आवश्यकता नहीं हो, छोड़ दो। छोड़ दो और मौन रहो। इस क्षणभंगुर आधिभौतिक संसार में अपने कोई अधिकार मत रखो। अपने कर्त्तव्य की ओर विशेष ध्यान दो और अधिकारों की बात कम करो। अधिकारों की बात राजसिक अहंकार से पैदा होती है। ये अधिकार निरर्थक हैं। इनके लिए झगड़ने में समय और शक्ति को खोना है।

अपने जन्मसिद्ध अधिकार ईश्वरज्ञान—"**अहं ब्रह्मास्मि**" को प्राप्त करो। तभी आप त्यागी मनुष्य होंगे। यदि आपके पास सदाचार, ब्रह्मचर्य, सत्य, दया, शुद्ध प्रेम, सहनशीलता, क्षमा और शांत प्रकृति आदि सद्‌गुण हैं, तो ये बहुत से दुर्गुणों पर भारी पड़ेंगे। धीरे-धीरे दुर्गुण भी दूर हो जाएँगे, यदि आप अपना पूरा ध्यान इन पर देकर इन्हें दूर करने में सतर्क रहोगे।

यदि आप किसी उन्नत महात्मा की संगति में रहोगे, तो उनके आकर्षक ओज और आध्यात्मिक विद्युत-शक्ति के प्रभाव से आपको बड़ा लाभ होगा। उनका संग आपके लिए दुर्ग का काम देगा। आप पर बुरी बातों का प्रभाव नहीं पड़ेगा। पतन का डर नहीं रहेगा। आपकी आध्यात्मिक उन्नति जल्दी हो सकेगी।

आत्मानुसंधान तथा अंतरावलोकन द्वारा अपने दोषों को दूर करने की चेष्टा करो। यही सच्ची साधना है और कठिन होने पर भी अपना सर्वस्व देकर इसे प्राप्त करना होगा। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५१ पृष्ठ-८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत् और असत् का अंतर

दृष्टियाँ दो होती हैं—एक सत् दूसरी असत्। सत् दृष्टि वह है, जो भावनाओं में सुख-दुःख को समझती है और अपने अंदर तथा दूसरों से सद्भाव बढ़ाने में सुख-संतोष देखती है। असत् दृष्टि वह है, जो वस्तुओं, धन, सौंदर्य, वैभव, भोग, ऐश्वर्य में आनंद खोजती है। जिस व्यक्ति की जो दृष्टि होगी, वह उसी आधार पर इच्छा, कल्पना, योजना एवं क्रिया करेगा। तदनुसार अभीष्ट वस्तुएँ उसकी योग्यता और कार्यक्षमता के आधार पर प्राप्त होती चलेंगी। दो दिशाओं में जाने वाली रेल की पटरियाँ जहाँ मिलती हैं, वहाँ जरा-सा मोड़ और जरा-सा अंतर होता है, पर इस थोड़े से अंतर के कारण ही एक रेल कलकत्ता (कोलकाता) जा पहुँचती है, तो दूसरी बंबई (मुंबई)। दोनों के कार्य एवं परिणाम में सैकड़ों मील का अंतर पड़ जाता है। दृष्टिकोण को सत् या असत् होने का थोड़ा-सा अंतर एक व्यक्ति को महापुरुष बना देता है और दूसरे को घृणित पापी के रूप में ले पहुँचता है। उच्चकोटि की सद्भावना के कारण एक दुर्बल-काया, हीन-प्रतिभा और अल्प-विद्या वाला मनुष्य महात्मा गांधी बन जाता है, दूसरी ओर कभी-कभी अपनी प्रतिभा, विद्या एवं सामर्थ्य से दूसरों को हैरत में डाल देने वाला व्यक्ति नारकीय नरपिशाच बन जाते हैं। अंतःलक्ष्य का थोड़ा-सा हेर-फेर शरीर, प्राण और मन की इच्छाओं एवं चेष्टाओं में आश्वचर्यजनक परिवर्तन कर सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५१ पृष्ठ-१२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आवेश और उद्वेग से बचिए

चिंता, खेद, अपवित्र विचार, क्रोध या घृणा, मन पर एक प्रकार की काली तह जमा देते हैं। यह काली तह का आवरण, सद्गुणों का लाभकारी प्रभाव अंदर प्रवेश नहीं होने देता और असद्गुणों को अपना काम करने में सहायता देता रहता है। चिंता से मन और सूक्ष्मशरीर को बड़ी हानि पहुँचती है। चिंता करने से शक्ति क्षीण हो जाती है और कुछ लाभ होता नहीं। बड़ी कुशलतापूर्वक आत्मनिरीक्षण द्वारा तथा मन को निरंतर ध्येय में संलग्न रखकर चिंता को निर्मूल करना चाहिए।

जिस प्रकार शैतान घोड़ा सवार को अपने ही साथ कुपथ की ओर ले जाता है, उसी प्रकार क्रोध का वेग भी इस संयमरहित क्रुद्ध जीव को आवेश में पथभ्रष्ट कर देता है।

अपने प्रयत्न में कमी मत करो। दिव्य ज्योति के दीपकों को जलने दो। अब प्रकाश मिल गया है। अब तुम्हारे मुख पर ब्रह्मतेज झलक रहा है। अथक ध्येयपूर्ण साधना की शक्ति से आध्यात्मिक मार्ग में आपने बहुत ऊँचे-ऊँचे पर्वत पार कर लिए हैं, यह बड़ी ही सराहनीय बात है। आपने वेशक बड़ी, उन्नति की है, पर आपको अभी एक और चोटी पर चढ़ना है और एक तंग घाटी में से पार होना है। इसके लिए और भी धैर्यपूर्ण प्रयत्न और शक्ति की आवश्यकता है। आपको सात्विक अहंकार को भी घुला डालना है। तभी आप निश्चयपूर्वक उस अवस्था को प्राप्त करोगे जो कि जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५१ पृष्ठ-७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव जीवन की सफलता का प्रधान केंद्र, प्रेम

प्रेम एक ऐसी अलौकिक शक्ति है, जिससे मनुष्य को अनंत लाभ होते हैं। प्रेम से मानसिक विकार दूर होते हैं, विचारों में कोमलता आती है, सद्गुणों की सृष्टि होती है, दु:खों का नाश और सुखों की वृद्धि होती है, यहाँ तक कि मनुष्य की आयु और संपदा भी बढ़ती है। जो मनुष्य अपने हृदय से प्रेमभाव निकाल देता है, वह मानो अपने जीवन का सर्वोत्तम अंश नष्ट कर देता है। प्रेम ही मनुष्य को साहसी, धीर और सहनशील बनाता है। प्रेम ही के कारण माता अपने पुत्र के लिए अत्यंत कष्ट सहती और स्वयं सब प्रकार के दु:ख भोगकर उसे सुख देती है। माताओं को बहुधा ऐसी अवस्थाओं में रहना पड़ता है, जिसमें यदि उन्हें प्रेम का सहारा न हो, तो वे बहुत शीघ्र बीमार हो जाएँ, पर वह प्रेम उन्हें रोगी होने से बचाता है। उल्टे शुद्ध प्रेम बलिष्ठ और सुंदर बनाता है।

बिना प्रेम के अच्छी-से-अच्छी सुख-सामग्री हमें तनिक भी प्रसन्न नहीं कर सकती, पर प्रेम की सहायता से हम बिना किसी सुख-सामग्री के परम सुखी हो सकते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रेम से संसार की समस्त उत्तम बातों की सृष्टि होती है और समस्त बुरी बातों का नाश होता है। असहयोग, असहायता और प्रवंचना जैसी प्रतिकूलताएँ प्रेम से परिपूर्ण व्यक्ति के सामने नहीं आतीं। यदि संयोगवश आती भी हैं, तो प्रेम की वशीकरण शक्ति के प्रभाव से शीघ्र ही अनुकूल हो जाती है। प्रेम के बिना किसी का विकास होना संभव नहीं। *—अखण्ड ज्योति-मई १९५१ पृष्ठ-३०*

अमर्यादित इच्छाएँ त्याज्य हैं

आत्मनिर्माण, लोकैषणा से भिन्न वस्तु है। अपने सद्गुणों के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त करना, अपने उच्च चरित्र, आदर्श जीवन, परमार्थ साधना एवं लोकसेवा द्वारा यश प्राप्त करने की आकांक्षा रखना, आत्मा की भूख है। इसे प्राप्त करने से आंतरिक संतोष प्राप्त होता है और अंतरात्मा में उत्साह, आनंद एवं उल्लास की अभिवृद्धि होती है। इस प्रोत्साहन से, सफलता से मनोबल बढ़ता है और आगे अधिक उत्साह से ऐसे पुण्य-कार्य, सतोगुणी आचरण करने की इच्छा होती है, जो अपना लोक-परलोक सुधारने, पुण्य संचय करने के लिए आवश्यक हैं।

आत्मगौरव, आत्मसम्मान, आत्मकल्याण, आत्मानंद, आत्मप्रतिष्ठा, आत्मसंतोष प्राप्त करके मनुष्य की अंतरात्मा संतुष्ट होती है। इसलिए उसके लिए प्रयत्न करना सब प्रकार उचित एवं आवश्यक है। स्वर्ग के, मुक्ति के, आत्मसम्मान के, यश के निमित्त भी यदि सद्विचारों और सत्कार्यों का आयोजन हो, तो यह सात्विक अभिलाषा प्रशंसनीय ही कही जाएगी। यह लोकैषणा नहीं आत्मतुष्टि है। यह निंदनीय नहीं स्वागत योग्य है।

ऐषणाओं की अति की निंदा की गई है। अपने सात्विक रूप में ये तीनों ही इच्छाएँ मानव जीवन में उपयोगी एवं श्रेयस्कर सिद्ध होती हैं। *—अखण्ड ज्योति-जून १९५१ पृष्ठ-१४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चित्त-शुद्धि की आवश्यकता

जैसे वस्त्र पर रंग, मैल और तैलादि के दाग पड़ते हैं या ग्रामोफोन की प्लेट पर शब्द-संस्कारों का प्रवेश हो जाता है, वैसे ही मन पर शुभाशुभ कर्त्तव्यों के संस्कार पड़ते हैं। यद्यपि इन संस्कारों को बाहर से कोई नहीं देख सकता तथापि उन्नति-अवनित इन इन संस्कारों से ही होती रहती है। जैसे मलिन वस्त्र पहनने के अभ्यासी को मैले वस्त्र की दुर्गंध से घृणा नहीं होती, दुर्गंधयुक्त स्थान में निवास करने में वह दुःख नहीं मानता, किंतु वह कुछ काल में अपनी सुगंध और दुर्गंधसंबंधी परीक्षणशक्ति को गुमा देता है, वैसे ही मलिन मन वाले मनुष्य को पाप-कर्म से, पाप-विचार से या पापी के साथ रहने से घृणा नहीं होती, वह अपने मन का अधःपतन करा देता है।

इसके विपरीत वस्त्र पर इत्र लगाने से या कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों का संपर्क होने से वस्त्र में सुगंध आने लगती है। जैस स्वच्छ वस्त्रों के धारण करने से मन प्रसन्न होता है, वैसे ही पुण्य कर्म करने से मन में शुभ संस्कारों की उत्पत्ति होती है और पुनः-पुनः परोपकारादि शुभ कर्त्तव्य करने की अंतःप्रेरणा मिलती रहती है, जैसे स्वच्छ वस्त्र धारण करने के अभ्यासी को मलिन वस्त्र पहनना, मलिन वस्त्रधारियों के साथ रहना या मलिन स्थानों में जाना असह्य हो जाता है, वैसे ही पुण्यात्मा को पाप-विचार, पापात्मा का सान्निध्य या दूषित स्थानों में जाना दुःखदायी हो जाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जून १९५१ पृष्ठ-१७

मनुष्य जीवन का उद्देश्य

देवत्व प्राप्त करने के लिए मनुष्य जीवन की प्रथम सोपान है। यदि सांसारिक माया-मोह में ग्रस्त होकर मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को भूल जाता है, तो उसे सदैव रोना ही रोना है।

यह निश्चित है कि मनुष्य जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने में सैकड़ों कठिनाइयों का हमें सामना करना पड़ता है, पर यदि हम क्षणिक सुखों में फँसकर अपने लक्ष्य का ध्यान छोड़ दें, तो हमें सदैव पछताना पड़ेगा। बाद में हमारे इस पश्चात्ताप का कोई महत्त्व न रहेगा। इससे अच्छा यही है कि हम अपने आप को पहचानें और उद्देश्यप्राप्ति के लिए कमर कस लें।

यह संसार एक रंगभूमि है। हम सब इस सांसारिक रंगभूमि पर अपना-अपना पार्ट अदा करने के लिए आए हैं। यदि हम अपने सुपुर्द किए गए कार्य को ठीक तरह से नहीं निभा सकेंगे, तो नाटककार सूत्रधार हम पर अप्रसन्न होगा और अधिक अप्रसन्न हो जाने के बाद वह फिर कभी हमें रंगभूमि पर अपना कौशल दिखाने के लिए न भेज सकेगा। नाटकमंडली का पात्र जिस तरह अपने मालिक से डरकर कार्य करता है, उसी तरह हमें भी परब्रह्म परमात्मा का भय मानते हुए सब कार्य करना चाहिए। यह तो हम सब जानते हैं कि इस संसार में जन्म लेने के बाद मरना तो अवश्य पड़ेगा, फिर हम इस छोटे जीवन काल को क्यों दुःखप्रद बनाएँ! *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५१ पृष्ठ-१७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार और कार्य में समन्वय कैसे हो ?

संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं, जो तुम संपादित नहीं कर सकते हो। जो कार्य, जो सफलताएँ, जो आश्चर्यचकित फल एक व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, उन सबकी सामर्थ्य तुम में भी विद्यमान है। जो प्रतिभा, जो बुद्धि-सामर्थ्य एक मनुष्य के पास है, वह तुम में भी बीजरूप में मौजूद है। तुम जो चाहोगे, वही कर सकोगे। तुम जिसकी याचना करोगे, वही प्राप्त होगा। यदि तुम सुख-समृद्धि की याचना करोगे, तो तुम्हें सुख मिल सकेगा। यदि मुक्ति की आकांक्षा करोगे, तो मुक्ति मिलेगी। संसार तो कल्पवृक्ष है, उससे तुम जो चाहोगे, वही प्रदान करेगा। तुम विभूति के लिए हाथ पसारोगे, तो तुम्हारे लिए रत्नाकर, वसुंधरा और हिमालय के मुक्तामणि खोल देगा। तुम आनंद-प्राप्ति के लिए अनुरोध करोगे, तो वहीं तुम्हारे लिए स्वर्ग बन जाएगा। जो उसे हरा-भरा क्रीड़ास्थल देखने के आदी हैं, उनके लिए नित्य, शाश्वत और आनंद-धाम बन जाएगा। केवल एकाग्रचित हो उत्तम और उच्च विचारों को कार्यरूप में प्रकट करना सीख लो। तुम्हारी यह सर्वोत्कृष्ट शक्ति है। इसे इष्ट कार्य में लगाने से अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होती है।

तुम आज से, अभी से दृढ़ संकल्प करो कि थोथी विचारधारा में निमग्न नहीं रहूँगा। मेरी कार्यशक्ति अनंत है। मुझे पूर्ण अनुभव हो गया है कि मनुष्य जो क्रिया करता है, उसी का फल उसे प्राप्त होता है। मेरी उन्नति या अवनति, मान या हानि मेरे कार्यों पर निर्भर है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५१ पृष्ठ-१९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन और सिद्धांत

व्यवस्थित जीवन के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है—सिद्धांत और उसका व्यावहारिक निरूपण की। 'कर्त्तव्य' इनमें सर्वप्रथम आता है। कर्त्तव्य की सबसे स्पष्ट व्याख्या है, अपने कार्य में तल्लीनता और दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप न करने की भावना। वह व्यक्ति जो सदैव दूसरों को मार्ग बताने का दावा रखता है, स्वयं अपने ही मार्ग को नहीं जानता।

ईमानदारी जीवन का दूसरा सिद्धांत है। 'वही करो जो कहो और वही कहो जो करो' इसका मूल मंत्र है। इसका कार्य जीवन की अनेकानेक चालाकियों, चालबाजियों और छल-कपटों से दूर रहना है। ईमानदारी से मनुष्य के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है और यह विश्वास ही संपूर्ण सुख और समृद्धि का जनक है।

'मितव्ययता' जीवन का तीसरा सिद्धांत हैं। धन के उचित उपयोग को ही मितव्ययता कहते हैं। ज्यों-ज्यों धन बढ़ता जाता है, मितव्ययता की आवश्यकता बढ़ती जाती है। चौथा सिद्धांत है 'उदारता', अप्रत्यक्ष रूप से यह मितव्ययता से संबंधित है। जो मितव्ययी न होगा, वह उदार भी नहीं हो सकता। 'आत्मसंयम' जीवन का पाँचवाँ और अंतिम सिद्धांत है।

उपर्युक्त पाँच सिद्धांत सफलता के पाँच मार्ग हैं, जीवन के पथ पर प्रकाश की पाँच किरणें हैं। संभव है कि प्रारंभ में इनका व्यावहारिक निरूपण कठिन हो, किंतु अभ्यास हमें इन सिद्धांतों से अभिन्न रूप से जोड़ देगा।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५१ पृष्ठ-८-९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने आप के साथ सद्व्यवहार करें

जब आप ईश्वर के प्रतिनिधि हैं, सर्वोच्च विभूति के पुंज हैं, तो आपको क्या अधिकार है कि अपने को दीन-हीन या अभागा समझें ? ईश्वर का अपमान आप नहीं कर सकते। ईश्वरत्व संसार की मूल क्रियात्मक शक्ति है। संसार में जो सबसे सत्य, सुंदर और शिव हो सकता है, वह ईश्वरत्व के नाते आपके रक्त और मांस में प्रवाहित है।

अपने साथ सद्व्यवहार सीखिए। आप दूसरों की भलाई चाहते हैं। अपने पुत्र की शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रसिद्धि, हितकामना के लिए आप एड़ी-चोटी का पसीना एक कर देते हैं, पत्नी, पुत्रों अन्य संबंधियों की हितचिंता में निरंतर निमग्न रहते हैं। दूसरों के हितचिंतन में रहना अच्छा है, किंतु उससे उत्कृष्ट मार्ग तो वह है, जिसके द्वारा आप स्वयं अपने विषय में हितचिंतन करते हैं।

दूसरों के साथ बुराई करने को आप पाप कहते हैं। इस दुर्व्यवहार को आप घृणा की दृष्टि से देखते हैं, ठीक है, किंतु जब आप स्वयं अपने ही विषय में निंद्य-विचार रखते हैं, मेरे विचार में तो यह और भी जघन्य पाप है। दूसरों से किए हुए पाप को संसार देखता है, पर आपको स्वयं अपने साथ किया हुआ पाप नजर नहीं आता। अंतर्दृष्टि से अंतरात्मा उसे देखता है। वह कभी-कभी आपको धिक्कारता भी है, पर उसके निर्देशनों पर ध्यान न देने से वह क्षीण हो जाता है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५२ पृष्ठ-८*

लोक-व्यवहार की कुशलता के गुप्त रहस्य

न दूसरों से इतना खुल जाइए कि दूसरों को आप में कुछ आकर्षण ही न रहे, न इतने दूर ही रहिए कि लोग आपको मिथ्या अभिमानी या घमंडी समझें। मध्यमार्ग उचित है। दूसरों के यहाँ जाइए, मिलिए, किंतु अपनी गुप्त बातें अपने तक ही सीमित रखिए। आपके पास बहुत-सी उपयोगी मंत्रणाएँ, गुप्तभेद, ज्ञान-विज्ञान संचित हैं, दूसरों को अपने विषय में ऐसी धारणा बनाने दीजिए।

यदि आपको चिढ़ाने, कुढ़ाने या अपमान करने के लिए कोई कुछ कहे या इशारा करे, गुप्त-पत्रों से डराए, दीवारों पर कुछ लिख दे, तो उसकी अवहेलना कर देने से अपमान करने वाले को आंतरिक पीड़ा पहुँचती है। चिढ़ाना एक प्रकार के दूषित संकेत हैं, जिन्हें ग्रहण करने से चिढ़ाने वाले को प्रसन्नता, न ग्रहण करने से दु:ख होता है। संकेत को न ग्रहण करना ही चिढ़ाने वाले के लिए सबसे बड़ी सजा है। तमाम अप्रिय संकेतों के विरुद्ध आप अपना व्यवहार पूर्ववत रखिए। आपका निरपेक्ष स्वरूप, जिससे यह प्रतीत हो कि आपके ऊपर गाली, अपमान, दूसरे की चिढ़ाने वाली बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, अपमानकर्त्ता को मानसिक क्लेश देने के लिए पर्याप्त है।

किसी की गुप्त बात को जो न सुनाना चाहता हो, न सुनिए और न जानने की व्यग्रता ही कीजिए। दूसरा व्यक्ति जब अपनी गुप्त बात छिपाता है, तो इसका दूसरा मतलब यह है कि वह मन-ही-मन आपकी गुरुता, बड़प्पन, चालाकी, मानसिक श्रेष्ठता को स्वीकार करता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५२ पृष्ठ-११

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों के कामों में हस्तक्षेप

मनोविज्ञान का यह विषय है कि बिना चाही हुई राय, आचरण योग्य बातें, शिक्षा, सम्मति, योजनाएँ या आलोचनाएँ दूसरा कोई भी पसंद नहीं करता, चाहे वह कितनी ही श्रेष्ठ क्यों न हो! दूसरे की योजना या राय स्वीकार करने में हमारे अहं को चोट लगती है और हम अपनी हेठी समझते हैं। अपनी पराजय का भाव किसी को पसंद नहीं आता।

जो जैसे रहता है, वैसे ही रहने में उसे अधिक से अधिक सुख और आत्मसंतोष होता है। मनुष्य दूसरों के अनुभवों से लाभ नहीं उठाता। उसे दूसरे की विचारधारा अपनाने में आंतरिक संतोष नहीं होता। अपने अनुभव का ज्ञान ही स्थायी लाभ कराता है।

इसी प्रकार जो चीजें किसी को स्वयं बिना श्रम के मुफ्त में प्राप्त हो जाती हैं, उनके प्रति पाने वाले कभी सतर्क नहीं होते, मूल्य ही समझते हैं। दूसरे की दी हुई चीजों में मनुष्य का 'अहं' नहीं प्रविष्ट होता। 'अहं' का लगाव न होने के कारण वे वस्तुएँ उसके व्यक्तित्व का एक अंग नहीं बन पातीं।

गुप्त मन में संस्कारों का निर्माण एक प्रकार के मानसिक मार्ग उत्पन्न करता है। जैसे गाड़ी के चलने से लकीरें बनती हैं, वैसे ही ये मानसिक लकीरें बना करती हैं। जिस धीमी गति से इनका निर्माण होता है, उसे धीमी रफ्तार से इन्हें हटाकर नए संस्कारों को जमाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५२ पृष्ठ-२५-२६-२७

www.vicharkrantibooks.org

आदर्श जीवन का रहस्य

यह सत्य ही कहा गया है, ''मनुष्य वैसा ही बनता है जैसे कि उसके विचार होते हैं। विचार साँचा है और जीवन गीली मिट्टी। जैसे विचारों में हम डूबे रहते हैं, हमार जीवन उसी साँचे में ढल जाता है, वैसे ही आचरण होने लगते हैं, वैसे ही साथी मिलते हैं, उसी दिशा में जानकारी, रुचि तथा प्रेरणा मिलती है। शरीर, परिस्थितियाँ, संसार हमारे अंदर के विचारों के आधार पर बनते हैं। उनका रूप हमारे विश्वास के अनुरूप होता है।''

आंतरिक विचार चरित्र और जीवन को बनाते हैं अर्थात विचारों पर ही चरित्र और जीवन पूर्णरूप से अवलंबित है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह प्रतिदिन बुराई कम और भलाई अधिक करने का अभ्यास करे और विचारशील तथा दृढ़ प्रकृति होकर तत्परता और उद्योग के साथ धीरे-धीरे हृदय की समस्त बुरी वृत्तियों और विचारों को त्याग दे और अच्छी वृत्तियों का निरंतर अभ्यास करता रहे। इस कार्य में उसे श्रेष्ठ मनुष्यों के संपर्क में रहने, श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ने, श्रेष्ठ बातें सोचने, श्रेष्ठ घटनाएँ देखने, श्रेष्ठ कार्य करने तथा दूसरों में जो श्रेष्ठताएँ हैं, उनकी कद्र करने और उन्हें अपनाने अर्थात सदैव श्रेष्ठ बातों में ही श्रद्धा रखने से बड़ी सफलता मिलेगी। ऐसा करने से वह दिनोंदिन अधिक बलवान, श्रेष्ठ और बुद्धिमान बन जाएगा और उसका जीवन उज्ज्वल, शुद्ध, शांतिप्रद, आनंदमय और मनोहर होगा।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५२ पृष्ठ-१२-१३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चित्त का संशोधन और परिमार्जन

धन को सुरक्षित रखने के लिए तिजोरी का घर में रहना आवश्यक है, पर यदि दुर्गंधयुक्त गंदगी तिजोरी में भरकर रखी जाए, तो तिजोरी का भी दुरुपयोग होता है और गंदगी की बदबू से होने वाली हानि भी चिरस्थायी हो जाती है। चित्त के संबंध में भी यही बात है। प्रभु ने मनोमयकोश में चित्त का बहुमूल्य भाग इसलिए दिया है कि उसके द्वारा उत्तम स्वभाव को सुरक्षित और चिरस्थायी रखा जा सके। आजकल हमारे चित्त बड़ी दुर्दशा में हैं। उनमें बुरी आदतें, नीच विचारधाराएँ, सड़ी-गली पंपराएँ, तुच्छ कामनाएँ भरी पड़ी होती हैं, जिनका संशोधन और परिमार्जन आवश्यक है।

जैसे कच्ची मिट्टी पानी को सोख लेती है और रंग तथा गंध को देर तक अपने में धारण किए रहती है, उसी प्रकार मन के द्वारा जो विचार किए जाते हैं और शरीर द्वारा जो कार्य होते हैं, उनका औचित्य-अनौचित्य, पाप-पुण्य, चित्त में संस्कार रूप में जम जाता है। यह संस्कार ही समयानुसार परिपक्व होकर दुःख-सुख के कर्मभोगों का निर्णय करता है।

चित्त का संशोधन और परिमार्जन हो जाए, तो उसमें जमे हुए जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कार भी विनष्ट हो जाते हैं और चालू प्रारब्ध भोगों के अतिरिक्त भविष्य में बनने वाले दुःखमय कर्मभोगों की अनायास ही जड़ कट जाती है। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५२ पृष्ठ-९*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उद्विग्न मत होइए

विपत्ति पड़ने पर लोग चिंता, शोक, निराशा, भय, घबराहट, क्रोध, कायरता आदि विषादात्मक आवेशों से ग्रस्त हो जाते हैं और संपत्ति आने पर अहंकार, मद, मत्सर, अतिभोग, ईर्ष्या, द्वेष आदि उत्तजेनाओं में फँस जाते हैं। ये दोनों उत्तेजनाएँ मनुष्य की आंतरिक स्थिति को रोगियों, बालकों एवं विक्षिप्तों जैसी कर देती है। ऐसी स्थिति मनुष्य के लिए विपत्ति, त्रास, अनिष्ट, अनर्थ और अशुभ के अतिरिक्त और कुछ उत्पन्न नहीं कर सकती।

जीवन एक झूला है, जिसमें आगे भी और पीछे भी झोंके आते हैं। झूलने वाला पीछे जाते हुए भी प्रसन्न हो जाता है और आगे आते हुए भी। अनियंत्रित तृष्णाओं की मृगमरीचिका में मन अत्यंत दीन, अभावग्रस्त और दरिद्र की तरह सदा व्याकुल रहता है। इस स्थिति में पड़ा हुआ मनुष्य सदा दुखी ही रहता है, क्योंकि झूला झूलने वाले की तरह जीवन की भली-बुरी घटनाओं का खट्टा-मीठा स्वाद लेने की अपेक्षा वह अपनी अनियंत्रित तृष्णाओं को ही प्रधानता देता है और चाहता रहता है कि मेरे मनोनुकूल ही सब कुछ हो। ऐसा हो सकना संभव नहीं, इसलिए उसे मनोवांछित सुख की प्राप्ति भी संभव नहीं। इस प्रकार के दृष्टिकोण वाले मनुष्य सदा असंतुष्ट, अभावग्रस्त एवं दुखी ही रहते हैं। वे हर घड़ी अपने को दुर्भाग्यग्रस्त ही अनुभव करते रहते हैं। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५२ पृष्ठ-४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाई का सामना करने को तैयार रहो

कोई मनुष्य अपनी गुप्त शक्ति के परिणाम को उस समय तक नहीं जान सकता, जब तक कि किसी कठिन प्रसंग के समय या भारी आपत्ति में उसकी परीक्षा न हो जाए। मनुष्य बहुधा अधेड़ हो जाने पर भी अपनी संपूर्ण शक्ति को नहीं जान पाते। जब तक किसी बड़ी आपत्ति, हानि अथवा शोक में उनकी परीक्षा नहीं हो जाती, तब तक वे यह नहीं बता सकते कि वे कितनी बड़ी कठिनाई का सामना कर सकते हैं और किसी बड़ी आपत्ति के आ जाने पर वे कितनी वीरता दिखा सकेंगे।

यदि तुम अपने ऊपर जिम्मेदारी लेना ही नहीं चाहते और यदि तुम आराम की जिंदगी पसंद करते हो और स्वतंत्र व्यापार की कठिनाइयों और झंझटों को किसी दूसरे के ही ऊपर डालना चाहते हो, तो तुम भले ही गुलामी करते रहो, परंतु यदि तुम अपनी शक्ति से यथासंभव अधिक काम लेना चाहते हो और तुम्हारा उद्देश्य अपनी योग्यता की अधिक से अधिक वृद्धि करना है तो तुम उस समय तक अपने उद्देश्य की अच्छी तरह पूर्ति नहीं कर सकते, जब तक कि तुम केवल किसी दूसरे के बताए हुए मार्ग पर चलते रहोगे और सब काम उसी के विचारों के अनुसार करते रहोगे।

अपने ऊपर भरोसा करने से डरो मत। प्रत्येक मनुष्य में नए कामों के करने की कुछ न कुछ योग्यता होती है और आत्मविश्वास से इस योग्यता का विकास होता है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९५२ पृष्ठ-१५-१६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अकेले चलना पड़ेगा

आपको अपने जैसा व्यक्ति कदापि प्राप्त न होगा। आपको जीवन-पथ पर अकेले ही अग्रसर होना पड़ेगा। कोई आपके साथ दूर तक न चल सकेगा। अकेले चले चलिए।

जीवन को एक यात्रा मानिए। यात्रा में एक-दो अल्पकालीन संगी-साथी आपको प्राप्त हो गए हैं। इनसे चार दिन के लिए आप बोलते-बरतते हैं, हँसी-ठट्ठा, संघर्ष, छीना-झपटी चलती है। साथ-साथ कुछ समय तक आगे बढ़ते हैं, किंतु धीरे-धीरे उनकी जीवन यात्रा समाप्त होती चलती है। एक के पश्चात दूसरा अपने गंतव्य स्थान पर रुककर आपको छोड़ते चलते हैं। आपके साथ सभी छह-सात व्यक्तियों का परिवार था। सात में से छह रह जाते हैं और फिर क्रमशः आप अकेले ही रह जाते हैं। "अरे, मैं अकेला रह गया, बिलकुल अकेला" आपका मन कुछ काल के लिए अशांत-सा हो उठता है। उसमें एक कड़ुवाहट-सी आ जाती है, पर वास्तव में जीवन का यह अकेलापन ही मानव जीवन का चरम सत्य है।

सबको पाकर भी हम सब अकेले हैं, नितांत अकेले। हमारे साथ कोई भी दूर तक चलने वाला नहीं है। जिन्हें हम भ्रम से अथवा मायावश अपने साथ चलता हुआ समझते हैं, वास्तव में वे हमारे अल्पकालीन सहयात्री मात्र हैं। हमारे अकेलेपन में कोई भी हाथ बँटाने, दिलासा देने वाला नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५३ पृष्ठ-१५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यावहारिक अध्यात्मवाद

हमें जो भी प्राप्त हैं, उसमें सुख मानें और समझें कि भगवान की बहुत भारी दया है कि उसने मुझे इन वस्तुओं का अधिकारी बनाया। हम अपने से ऊपर वालों की ओर नहीं, नीचे वालों की ओर देखें, तब हमें आसानी से पता चलेगा कि हमसे भी कम सुविधा प्राप्त करके भी कुछ लोग अपना जीवनयापन कर रहे हैं। हम तो उनसे अधिक भाग्यशाली हैं। परमेश्वर से यदि माँगना ही है, तो यह माँगें कि हे भगवान! हमें यह शक्ति दो कि हम सुख-दुःख दोनों का धैर्यपूर्वक झेल सकें और जो कुछ हमें प्राप्त है, उसमें संतोष मानकर आगे बढ़ते चलें। इस प्रकार शक्ति की याचना से हम आंतरिक शांति प्राप्त करेंगे और उद्विग्नता से अपनी रक्षा कर सकेंगे।

यदि हम सभी प्रकार की योग्यता प्राप्त कर चुके और अपने को बहुत शक्तिशाली, पटु और योग्यता संपन्न समझने का अहंकार आ गया, तो पुनः एक-एक करके हमारे अंदर दुर्गुणों का प्रवेश होगा, हमारी शक्ति का क्षय होगा और हम तब अशांत होने लगेंगे। इस प्रकार की परिस्थिति से अलग रहना और अपने भीतर नम्रता का विकास करना परमावश्यक है। इस प्रकार शांत रहकर सज्जनों के निकट बैठकर उनकी शिक्षा को आसानी से हृदयंगम कर सकेंगे। अतः नम्रता की प्राप्ति के बाद हम सुरक्षित रहने की कला अपने आप सीख लेंगे और अपनी शक्ति का संरक्षण करते हुए इस संसार-यात्रा को सानंद तय कर सकेंगे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—*अखण्ड ज्योति-मार्च १९५३ पृष्ठ-२१-२२*

अंतःशुद्धि की आवश्यकता

मनुष्य जो कुछ कहता है, वह वास्तव में अनुभव करता है भी या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। वह दीखता तो एक है, किंतु है उसमें सर्वथा अनेक विरोधी तत्त्वों का सम्मिश्रण। मनुष्य माया का पुतला है। दुनियाँ में कई दुनियाँ हैं और आदमी में कई आदमी। वास्तव में मनुष्य की चेतना में परत-पर-परत हैं।

मनुष्य को चाहिए कि अपनी चेतना की आंतरिक परतों की सफाई करे, आत्मविश्वास उत्पन्न करे। ऊपरी परत को संकेत देने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। वास्तव में मनुष्य की उन्नति की आधारशिला यह आंतरिक परत ही है। मनुष्य की बाहरी कठिनाइयाँ एक छाया मात्र हैं। बाह्य कठिनाइयाँ आंतरिक कठिनाइयों का आरोपण मात्र हैं। जो व्यक्ति इस अंदरूनी परत में शक्ति उत्पन्न कर लेता है, वह अपार शक्ति का अनुभव करता है। उसे संकटों को पार करने के लिए यहीं से शक्ति प्राप्त होती है।

इस आंतरिक परत में ही आप आत्मविश्वास उत्पन्न करें। ऊपरी विश्वास और संकेत से कोई लाभ नहीं है। जो बात आप मन में अंदर से महसूस करते हैं, वही आप वास्तव में हैं। आपका शरीर, आपके वस्त्र, डील-डौल नहीं, आंतरिक परत में जमे हुए आपके विश्वास, आपकी भावनाएँ, विचार, संकेत ही जीवन निर्माण करते हैं।

—*अखण्ड ज्योति-जून १९५३ पृष्ठ-६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी का बुरा मत सोचिए

आग जहाँ रखी जाती है, पहले उस स्थान को गरम करती और जलाती है। तेजाब यदि साधारण धातु के बरतन में रखा गया है, तो पहले उसे ही नष्ट करेगा। इसी प्रकार द्वेष और दुर्भाव, पाप और कुविचार जिसके मन में रहते हैं, पहले उसी का अनिष्ट करते हैं। जब तक वे जमे रहते हैं, तब तक निरंतर वहाँ हानि पहुँचाते हैं। जिसके लिए दुर्भाव रखे जाते हैं, उसको तो उसकी शतांश हानि भी नहीं पहुँच पाती, जितनी कि अपनी होती है। इसलिए जिससे जहाँ मतभेद हो, विरोध हो, उसे प्रकट में तो कहना ही चाहिए, परंतु उसके निवारण के लिए उचित उपाय भी तत्परतापूर्वक करना चाहिए। मन में उसकी गाँठ बाँधने और ईर्ष्या-द्वेष रखने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। महात्मा गांधी इस सिद्धांत का सफल प्रयोग करके दिखा चुके हैं—विरोधी के प्रति बिना दुर्भाव रखे हुए भी बुराई का प्रतिरोध करना संभव है। हम भी आवश्यकतानुसार उसी मार्ग का अवलंबन करें।

हमें चाहिए कि दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझें, उनके अनिष्ट को अपना अनिष्ट मानें, तभी संसार में शांति का साम्राज्य हो सकेगा। हमें द्वेषभाव त्यागकर सभी के प्रति प्रेमभाव रखना होगा, स्वार्थभाव त्यागकर परमार्थभाव का सहारा लेना होगा, तभी सबका कल्याण हो सकेगा।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५३ पृष्ठ-१९

www.awgp.org

धर्मों की मूलभूत एकता

लोग सच्ची बातों के विषय में नहीं वरन झूठी बातों के विषय में मतभेद रखते हैं। वे सत्य पर नहीं वरन दोषों पर कटते-मरते हैं। सब धर्मों का तथ्य यह है कि सत्य के विषय में कुछ जानने के पहले प्रत्येक व्यक्ति अपने भाइयों से कलह करना छोड़ दे और उनके साथ प्रेम तथा उदारतापूर्वक बरताव करे। किसी व्यक्ति के लिए यह करना उस समय तक कैसे संभव होगा, जब तक वह अपने पड़ोसी के धर्म को झूठा समझकर उसे समूल नष्ट कर देना अपना परम कर्त्तव्य समझता है? यह दूसरों के प्रति उस व्यवहार का प्रदर्शन नहीं है, जिसकी आशा हम अन्य तरीके से अपने प्रति करते हैं। सत्यता और वास्तविकता सब देश और सब काल में अपने ही रूप में रहती हैं। पवित्र ईसाई और पवित्र बौद्ध में कुछ भी अंतर नहीं। दोनों में हृदय की शुद्धता, जीवन की पवित्रता, निर्दोष आकांक्षाएँ और सत्य-प्रेम पाए जाते हैं। बौद्ध धर्मावलंबी के सुकर्म एक ईसाई के सुकर्म से भिन्न नहीं। पाप के लिए प्रायश्चित्त, कुविचार तथा दुष्कर्म के लिए चिंता केवल ईसाईयों के हृदय में ही नहीं वरन सब धर्मावलंबियों के हृदय में उत्पन्न होती है। सहृदयता की बड़ी आवश्यकता है। प्रेम अनिवार्य है। एक ही प्रकार के मौलिक सिद्धांतों के कारण सब धर्म एक हैं, किंतु मनुष्य इन सत्यों में रत नहीं होता, वह उन मतों तथा मीसांसाओं में उलझता है, जो अनुभव तथा ज्ञान की सीमा के परे हैं।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५३ पृष्ठ-११-१२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव जीवन का तत्त्वज्ञान

जिस प्रकार प्रभात काल लवा पक्षी को, सायंकाल की धूसरता उल्लू को, शहद मधुमक्खी को, मृतशरीर गिद्ध को प्रफुल्लित करते हैं, उसी प्रकार जीवन मनुष्य को प्यारा है। मानवी जीवन चाहे उज्ज्वल भले ही हो, किंतु वह आँखों को चकाचौंध में नहीं डालता। चाहे वह निस्तेज भले ही हो, फिर भी निराशा उत्पन्न नहीं करता। वह चाहे जितना मधुर हो, फिर भी उससे जी नहीं ऊबता। चाहे सड़कर वह बिगड़ गया हो, फिर भी छोड़ा नहीं जाता। इतना होने पर भी उसका सच्चा मूल्य कौन जान सकता है ?

मूर्खों की तरह न तो यह समझो कि जीवन की अपेक्षा दूसरी कोई वस्तु अधिक मूल्यवान है और न ढोंगी बुद्धिमानों की तरह यह ही ख्याल करो कि जीवन निस्सार है। केवल अपने स्वार्थ ही के लिए उस पर आसक्त न होओ, बल्कि उससे होने वाले दूसरों के हित का ध्यान रखो।

सोना देने पर भी जीवन नहीं खरीदा जा सकता और न ढेर के ढेर हीरे खरच करने पर गया हुआ समय फिर वापस मिल सकता है, इसलिए प्रत्येक क्षण को सद्गुण-संपादन करने में ही लगाना बुद्धिमानी का काम है। जीवन का निरुपयोगी समय निकाल डाला जाए, तो क्या बचेगा ? बाल्यावस्था, बुढ़ापा, सोने का समय, बेकार बैठने का समय और बीमारी के दिन यदि जीवन के संपूर्ण दिनों में से निकाल दिए जाएँ तो कितने दिन शेष रह जाते हैं ?

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५३ पृष्ठ-१८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मन में सद्भावनाएँ रखें

अच्छा विचार, दूसरे के प्रति उदार भावना, सद्चिंतन, गुणदर्शन वे दिव्य मानसिक बीज हैं, जिन्हें संसार में बोकर हम आनंद और सफलता की मधुरता लूट सकते हैं। शुभ भावना का प्रतिबिंब शुभ ही हो सकता है। गुण दर्शन एक ऐसा सद्गुण है, जो हृदय में शांति और मन में पवित्र प्रकाश उत्पन्न करता है। दूसरे के सद्गुण देखकर हमारे गुणों का स्वत: विकास होने लगता है। हमें सद्गुणों की ऐसी सुसंगति प्राप्त हो जाती है, जिसमें हमारा देवत्व विकसित होता रहता है।

मनुष्य के उच्चतर जीवन को सुसज्जित करने वाला बहुमूल्य आभूषण सद्भावना ही है। सद्भावना रखने वाला व्यक्ति सबसे भाग्यवान है। वह संसार में अपने सद्भावों के कारण सुखी रहेगा, पवित्रता और सत्यता की रक्षा करेगा। उसके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न रहेगा और उसके आह्लादकारी स्वभाव से प्रेरणा प्राप्त करेगा। सद्भावना सर्वत्र सुख, प्रेम, समृद्धि उत्पन्न करने वाला कल्पवृक्ष की तरह है। इससे दोनों को ही लाभ होता है। जो व्यक्ति स्वयं मन में सद्भावना रखता है, वह प्रसन्न और शांत रहता है। संपर्क में आने वाले व्यक्ति भी प्रसन्न एवं संतुष्ट रहते हैं। मन में सदैव सद्भावनाएँ ही रखें।

एक विद्वान ने सत्य ही लिखा है, "शुभ विचार, शुभ भावना और शुभ कार्य मनुष्य को सुंदर बना देते हैं।"

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५३ पृष्ठ-१८-१९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर-शक्ति का आदि स्त्रोत

ईश्वर हमारे जीवन तथा कर्म का आदि स्त्रोत है, हमारे हृदय-मंदिर में प्रकाश करने वाला तेज पुंज है, हमारे जीवन का प्राण और श्वांस है। ईश्वरीय आशाविहीन व्यक्ति उस सूखी पत्ती की तरह है जो विपरीत हवा में यत्र-तत्र मारी-मारी फिरती है। निराशा और वेदनाएँ उसे एक ओर खींचती हैं, तो व्यर्थ के प्रलोभन, लोभ, अतृप्ति दूसरी विपरीत दिशा में आकर्षित करती हैं।

मैं ईश्वर के तेज की एक रश्मि हूँ। ईश्वरीय सत्ता में मुझे अंततः विलीन हो जाना है। मैं जहाँ से जन्मा हूँ, वहीं पहुँच जाऊँगा। मेरी आत्मा सत्-चित्-आनंद स्वरूप परमेश्वर का अंश है। मुझमें मेरे प्रभु के गुण ही प्रकाशित हो सकते हैं। अनीति, अन्याय, अनर्थ से मेरा कोई संबंध नहीं, ऐसी आस्तिक भावना मनःप्राण में संचित रखने वाला व्यक्ति सदा-सर्वदा कमल के समान प्रफुल्लित रहता है।

संकट में, विपदा में, निराशा के अवसरों पर दैवी सत्ता से तादात्म्य आपको वह अंतर्बल देगा, जिसके द्वारा आप आंतरिक शक्ति पाते रहेंगे। ईश्वर-शक्ति का आदि स्त्रोत है। उससे हमारी आत्मा को सहनशक्ति प्राप्त होती है। इस अंतर्बल से व्यक्ति सब परिस्थितियों में बाह्य जगत् के संकटों से सुरक्षित रहता है। ईश्वर की सद्योजनाओं में अपने विश्वास को निरंतर बढ़ाते चलिए। पूजन, जप, भजन, संध्या तथा नाना साधनाएँ आपको सदा दैवी तत्त्व से जोड़े रखती हैं।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५३ पृष्ठ-२४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ये भयंकर भूलें कदापि न करें

दूसरों को अपनी अवनति या पीछे पड़े रहने का दोषी मत बनाइए, उन पर अपनी असफलताएँ या दुर्बलताएँ मत थोपिए। दूसरों के अधिकारों को दबाने से उनको व्यर्थ ही हानि पहुँच जाएगी और स्वयं आपको कुछ व्यक्तिगत लाभ न होगा। संभव है कि हानि पहुँचने वालों में आपके कोई हितैषी मित्र सुहृद हों, जो आपके अनुचित व्यवहार से क्रुद्ध होकर उलटे आपको ही हानि पहुँचाएँ। व्यक्तिगत उन्नति की आधारशिला मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विशेषताएँ ही हैं। दूसरों को दबाना, चुगली करना या कुचलना तो आपकी ईर्ष्या, क्रोध एवं उत्तेजना की प्रतिक्रियाएँ हैं। जो व्यक्ति इस तुच्छ दमन के कार्य में लगा रहता है, उलटे उसकी ही एकत्रित शक्तियों का क्षय हो जाता है। अंदर ही अंदर ईर्ष्या की अग्नि सुलगती रहकर समस्त मौलिकता, साहस एवं नवोत्साह को मार डालती है। अपनी अच्छी-बुरी अवस्था के जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं। दूसरों पर व्यर्थ कलंक-कालिमा पोतने की भूल कदापि न करें। स्वयं अपनी उन्नति करें, दूसरों को अपने मार्ग का कंटक कदापि न समझें। जो गलतियाँ, प्रतिकूलताएँ, खराबियाँ एवं हानियाँ दूर नहीं की जा सकतीं है, जो तीर हाथ से निकल चुका है जिसके बारे में आप बेबस हैं, उस पर बैठे-बैठे चिंता करना, पछताना, आत्मग्लानि का शिकार रहना, बार-बार घूम-फिरकर उसी का शोक मनाते रहना, एक भयंकर भूल है। इस चिंता की आदत को त्याग देना ही श्रेष्ठ है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९५३ पृष्ठ-१७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन-यज्ञ

मन में सबके लिए सद्भावनाएँ रखना, संयमपूर्ण सच्चरित्रता के साथ समय व्यतीत करना, दूसरों की जो भलाई बन सके उसके लिए प्रयत्नशील रहना, वाणी को केवल सत्प्रयोजनों के लिए ही बोलना, न्यायपूर्ण कमाई पर ही गुजारा करना, भगवान का स्मरण करते रहना, अपने कर्त्तव्य-धर्म पर आरूढ़ रहना, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में विचलित न होना, यही नियम हैं, जिनका पालन करने से जीवन यज्ञमय बन जाता है। इन व्रतों के धारण करने में सांसारिक दृष्टि से कुछ अभावग्रस्त जीवन रह ही जाता है। वह व्यक्ति विलासिता का उपभोग एवं तिजोरियाँ भरने में सफल नहीं हो पाता, पर इनका पालन करने पर उसे जो आत्मशक्ति एवं सद्गति मिलती है, उसका मूल्य भौतिक संपदाओं की अपेक्षा असंख्य गुना अधिक है।

मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद लाखों वर्षों के उपरांत वह अवसर हाथ आता है। इसे भी कूकर-सूकर भी भाँति भौतिक प्रयोजनों में नष्ट कर दिया जाए, तो यह कोई बुद्धिमानी नहीं है। मनुष्य जीवन को सफल बना लेना ही सच्ची दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता है। हमें इसी के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन को यज्ञरूप बनाकर, यज्ञ भगवान की शरण में अपने को डालकर हम अवश्य ही अंपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५४ पृष्ठ-६३

श्रेष्ठतम कार्य करें

जब आप साधारण कोटि का कार्य करते हैं, तो न केवल अपने मालिक को धोखा देते हैं, स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं। आपके मालिक को इतनी हानि नहीं होती, जितनी साधारणतया निम्नकोटि का कार्य करने से स्वयं आपको होती है। मालिक का तो तीन-चार आने का ही नुकसान होगा, किंतु अधूरा, बेमन से किया हुआ निम्नकोटि का कार्य आपको एक नीचे स्तर पर ला पटकेगा। आपको आलस्य दबा लेगा और फिर आप वैसा साधारण कार्य ही करने के अभ्यस्त हो जाएँगे। ऊच्चकोटि का श्रेष्ठ कार्य जिसमें अपेक्षाकृत अधिक ध्यान, श्रम, अध्यवसाय लगते हैं, करने को तबीअत न करेगी। आपका आत्मविश्वास धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा और एक दिन ऐसा आएगा, जब आप वैसा ही साधारण-सा कार्य करने के अभ्यस्त हो जाएँगे।

आप जो कुछ करें, चाहे वह घर का कार्य हो या दुकान का, आफिस अथवा सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में हों, जिसमें आपको चाहे तनिक भी आय न हो, फिर भी आप अपने कार्य को अधूरे या बेमन से, भौड़े रूप में न कीजिए। आप देखेंगे कि इस कार्य की मौलिकता और कुशलता की सर्वत्र प्रशंसा होगी। स्वयं आपकी अंतरात्मा भी इससे संतुष्ट रहेगी।

श्रेष्ठता और उच्चता के विकास के लिए किसी की याचना नहीं करनी पड़ती। जो व्यक्ति अपने कार्य में कुशलता प्राप्त करता है, वह नेता बनकर पूजा जाता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५४ पृष्ठ-८४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा का आदेश पालन करें

"हे मरणधर्मशील मानव! तुम अपने को जानो, क्योंकि तुम्हारे भीतर तथा अन्य सभी के भीतर एक अद्वितीय देवता है, जो बाहर आकर संसार के रंगमंच पर नाना प्रकार से अभिनय करता है तथा प्रमाणित करता है कि ईश्वर है।"

यदि तुम वास्तविक आध्यात्मिक उन्नति चाहते हो, तो आत्मा की आवाज ध्यानपूर्वक सुनो और तदनुसार कार्य करो। प्रत्येक शुभ, सात्विक एवं देवोचित शक्ति का उद्‌गम स्थान स्वयं तुम्हारे अंतर में विद्यमान है। संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ केवल इसी तत्त्व में समाई है कि मनुष्य आत्मिक शक्तियों का कितना विकास करता है? यदि वह आत्मध्वनि के निर्देश पर चलता रहे, तो उसकी उन्नति निश्चित है।

जो मनुष्य संसार में सफल जीवन के अभिलाषी थे, उन भक्त आध्यात्मिक पुरुषों ने प्रथम कार्य अपनी अंतरात्मा को जाग्रत करने का किया था। अंत:करण द्वारा ध्यान से सुनने पर हम परमात्मा की आज्ञा को जान सकते हैं। यदि आप अंत:करण की आज्ञा का पालन सीख लें, तो मोटी-मोटी धार्मिक पुस्तकों में अटके रहने की कोई आवश्यकता न रहे, क्योंकि वे भारी-भरकम ग्रंथ भी अंतरात्मा के सदुपयोग का परिणाम हैं। अंत:करण की आवाज का आदेश-पालन ही दुनियाँ के तमाम धर्मों का मूल है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५४ पृष्ठ-१०९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रभु की शरण में

मनुष्य का बहुमूल्य शरीर हमें इसलिए प्राप्त नहीं हुआ कि हम अपनी आवश्यकताएँ, लालसाएँ, वासनाएँ, तृष्णाएँ बढ़ाते जाएँ और उनकी पूर्ति के लिए दिन-रात परेशान रहने में ही सारा समय लगाएँ। मनुष्य जीवन का उद्देश्य यह है कि जीव अपने विवेक को जाग्रत करके चिरसंचित कुसंस्कारों से अपनी मनोभूमि को शुद्ध करे, भव-बंधनों को काटे, दूसरों की सेवा करे और अपने आदर्श चरित्र द्वारा संसार के सामने उदाहरण उपस्थित करके अपनी कीर्ति को अमर करे। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो व्यक्ति प्रयत्न करते हैं, वे ही ईश्वर को प्रिय लगते हैं और उन्हीं को वे अपना सच्चा प्रेम, वात्सल्य तथा अनुग्रह प्रदान करते हैं। ऐसा अनुग्रह प्राप्त कर लेना ही जीवन की सार्थकता है। इस मार्ग पर चलने के लिए मनुष्य को छह कार्यक्रम अपनाने पड़ते हैं। (१) अपनी आवश्यकताएँ कम से कम रखना। (२) अपनी वस्तुओं को ईश्वर की वस्तु समझकर अपने को उनका ट्रस्टी-संरक्षक मात्र समझना। (३) सामने उपस्थित कठिनाइयों से परेशान न होकर उन्हें विवकेपूर्वक सुलझाना तथा जो न टल सकें, उन्हें प्रारब्ध भोग समझकर धैर्यपूर्वक सहना। (४) मन को भगवान में लगाए रखने के लिए भजन साधना करना। (५) अपने कुविचारों, दुर्गुणों तथा दुष्कर्मों को हटाने तथा घटाने के लिए निरंतर प्रयत्न करना। (६) दूसरों की भलाई के लिए कुछ न कुछ काम ईश्वर की सेवा समझकर नित्य ही करते रहना।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५४ पृष्ठ-३०९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले अपने को सुधारो

तुम्हारे अंदर जो दिव्यशक्ति है, वह बाहर की सभी शक्तियों से बड़ी है। इसलिए किसी भी बात से डरो मत। अपनी अंतरात्मा पर विश्वास रखो।

अपना सुधार करो। अपने चरित्र का निर्माण करो। हृदय को पवित्र बनाओ। सद्‌गुणों को अपने अंदर बढ़ाओ। बुराईयों को निकालो। अनुशासन के द्वारा अपने अंदर की पाशविक शक्तियों को दैवी शक्तियों का दास बना डालो। इसके लिए तुम्हें तप, संयम और ध्यान की भी आवश्यकता पड़ेगी। यहाँ से तुम्हारी स्वतंत्रता प्रारंभ होती है।

बिना त्याग के तुम कभी सुखी नहीं बन सकते। बिना त्याग के तुम कभी मोक्ष भी प्राप्त नहीं कर सकते। त्याग को अपने जीवन में सर्वोत्तम स्थान दो। त्याग के साथ भोग करो। पहले तुम भले आदमी बनो। अपनी इंद्रियों पर अधिकार रखो। सात्विक मन से आसुरी मन पर विजय प्राप्त करो, तब दिव्य प्रकाश अपने आप प्राप्त होगा।

तभी तुम्हारे अंदर दिव्यता धारण करने की पवित्रता आएगी। जब तक तुम इंद्रियों पर विजय प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक तुम्हें तप, संयम और प्रत्याहार का अभ्यास करना होगा।

ईश्वर और उसके शाश्वत संसार में या अन्यत्र कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो तुम्हारी उन्नति को रोक सके। तुम्हारे लिए असफलता जैसी कोई चीज नहीं रहेगी।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५४ पृष्ठ-३३०-३३१

विचारों की प्रचंड शक्ति

जो मनुष्य जैसा विचार करता है, वह ठीक वैसा ही बन जाता है। जिन-जिन वस्तुओं का विचार तथा चिंतन किया जाएगा, वे वस्तुएँ निश्चित रूप से हमारे समीप चली आएँगी। अतः जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं, सदा उसी का विचार करें। इन्हीं विचारों में निर्मलता लाने के लिए दो महान गुणों की प्रशंसा हमारे शास्त्रों में भरी पड़ी है। वे हैं—दया तथा क्षमा। दया के विचारों से निर्मलता आती है तथा क्षमा से निर्मलता को स्थिरता प्राप्त होती है। बिना दया तथा क्षमा का भाव रखे, किसी को कभी शांति प्राप्त नहीं हो सकती।

सद्विचार तथा सद्भाव ही हमारी संपत्ति हैं। जिस दिन तुम्हें विचारों की शक्ति का ठीक-ठीक ज्ञान हो जाएगा, उसी दिन अनेक शंकाएँ तथा समस्याएँ स्वतः हल हो जाएँगी। अच्छे कार्य करने से भी अच्छे विचारों की संस्कारवर्द्धक शक्ति अधिक तीव्र होती है। जैसी बातें मनुष्य विचारेगा, कुछ समय के पश्चात वह स्वयं देखेगा कि उसके विचारों के अनुकूल ही उसका वातावरण बनता जा रहा है। जिन-जिन परिस्थितियों व वस्तुओं का उसने चिंतन किया है, वे उसके अधिकाधिक समीप आ पहुँचती है। मनुष्य अपने विचारों से ही उच्च तथा निम्न बनता है।

विचार ही कार्य की प्रेरक-शक्ति है। विचार तथा कर्म का एकदूसरे से घनिष्ठ संबंध है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५५ पृष्ठ-१५-१६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरे ! इस आसुरी संस्कृति को रोको

खतरा बढ़ रहा है। संकट की घड़ी दूर नहीं है। मानव सभ्यता की दीवारें गिरना ही चाहती हैं। यदि यह क्रम चलता रहा तो नैतिकता के आदर्श नष्ट हो जाएँगे और मनुष्य एकदूसरे को फाड़ खाने वाले भेड़िये मात्र रह जाएँगे। जिन्हें देवत्व के प्रति, मानवीय सहायता के प्रति कुछ आस्था, श्रद्धा और ममता है, उनके लिए अब परीक्षा की निर्णायक घड़ी आ पहुँची है। वे निरपेक्ष दर्शक की तरह एक किनारे पर खड़े दैवी संस्कृति का अध:पतन और आसुरी संस्कृति का विजयघोष देख-सुन न सकेंगे। उन्हें कुछ करना होगा। ईश्वर ने उपयुक्त अवसरों पर उपयोग करने के लिए हमें जो बल, साहस, विवेक और पुरुषार्थ दिया है, उसका सर्वोत्तम उपयोग करने का यही समय है। राजा की दी हुई बंदूक को जो सिपाही ठीक अवसर पर नहीं चलाता, वह कर्त्तव्यघात का अपराधी होता है। नैतिक पुनरुत्थान की नींव को मजबूत करने के लिए, मानवता के आदर्शों की हिलती हुई दीवारों को पुन: जमा देने के लिए हममें से अनेकों को ईंट-चूना बनना पड़ेगा। सत्यानाशी आसुरी संस्कृति को रोकने के लिए चट्टान की तरह हम अड़ जाएँ, मुरझाती हुई दैवी संस्कृति को सींचने के लिए हम अपना पसीना ही नहीं, रक्त भी निचोड़ दें, यह समय की, सभ्यता की पुकार है। आइए, इस चुनौती को स्वीकार करें।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५५ पृष्ठ-१९-२२

www.awgp.org

कर्मयोग का रहस्य

समाज की स्वार्थहीन सेवा ही कर्मयोग है। यह हृदय को शुद्ध करके अंत:करण को आत्मज्ञानी रूपी दिव्य ज्योति प्राप्त करने योग्य बना देता है। विशेष बात तो यह है कि बिना किसी आसक्ति अथवा अहंभाव के मानव जाति की सेवा करनी होगी। कर्मयोगी सारे कर्मों और उनके फल को भगवान के प्रति अर्पण कर देता है। ईश्वर में एकता रखते हुए, आसक्ति को दूर करके सफलता या निष्फलता में समान रूप से रहकर कर्म करते रहना कर्मयोग है।

कर्मयोगी का विशाल हृदय होना चाहिए। उसमें कुटिलता, नीचता, कृपणता और स्वार्थ बिलकुल नहीं होना चाहिए। उसे लोभ, काम, क्रोध और अभिमानरहित होना चाहिए। यदि इन दोषों के चिह्न भी दिखाई दें, तो उन्हें एक-एक करके दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

जैसा आप चाहते हो कि दूसरे आपके साथ अच्छा बरताव करें, वैसा आप भी उनके साथ करो, इस नीति-वाक्य को याद रखो। नित्य के जीवन-व्यवहार में यह आपका आचार-नियम होना चाहिए। आप कोई अनुचित कर्म नहीं करोगे, तो आपको असीमित आनंद मिलेगा।

प्रतिदिन जितने अधिक सत्कार्य हो सकें करिए, सोते समय अपने दिनभर के कार्यों की समीक्षा कीजिए और नित्य अपनी आध्यात्मिक डायरी नोट कीजिए। सत्कार्य करना ही आध्यात्मिक जीवन का उदय है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५५ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घृणा नहीं प्रेम कीजिए

हम जिस किसी वस्तु अथवा गुण से घृणा करते हैं, उसकी मूल बुराइयाँ हमारे खुद के भी भीतर रहती हैं। हमारी घृणा की मनोवृत्ति इन बुराइयों का एक आरोपण मात्र होती है। इस प्रकार अपनी बुराइयों का दूसरों पर आरोपण करके हम स्वयं अपने आप में इनकी उपस्थिति की आत्मस्वीकृति से बचना चाहते हैं। हमारा अचेतन मन बड़ा स्वाभिमानी है। वह किसी भी कमजोरी को जल्दी स्वीकार नहीं करना चाहता। इसी आत्मस्वीकृति की प्रवंचना से मुक्ति पाने के लिए वह अपनी बुराइयों का घृणा की भावना के रूप में दूसरों में आरोपण कर देता है। अत्यधिक आलोचना की प्रवृत्ति स्वयं की हीनता की द्योतक होती है।

घृणा की मनोवृत्ति किसी विशेष विचार को हमारे मस्तिष्क में बिठा देती है। संवेगों के उत्तेजित होने पर कभी-कभी यही बाह्य विचार का रूप धारण कर लेते हैं और जितना ही अधिक हम उनको भूलना चाहते हैं, उतने ही वे हमारे मन को जकड़ते जाते हैं और अंत में मानसिक रोग का रूप धारण कर लेते हैं। हमारा मन अचेतनावस्था में जिस किसी विचार को मस्तिष्क में स्थान दे देता है, वही विचार कुछ समय के पश्चात हमारी विशेष प्रकार की मनोवृत्तियों में परिणत हो, कार्यरूप में प्रदर्शित होने लगता है। साधारणतः हम अपनी बुराईयों को स्वीकार नहीं करना चाहते, किंतु आध्यात्मिक नियम के अनुसार हमें एक न एक दिन अपनी बुराइयों को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५५ पृष्ठ-११-१२*

www.vicharkrantibooks.org

शांत विचारों की शक्ति

हम जो कुछ सोचते हैं, उसका स्थायी प्रभाव हमारे ऊपर तथा दूसरों के ऊपर पड़ता है। शांत विचार धीरे-धीरे हमारे मन को ही बदल देते हैं। हम अनायास ही उन कार्यों में लग जाते हैं, जो हमारी प्रकृति के अनुकूल हैं और उन कामों से डरते रहते हैं, जो हमारी प्रकृति के प्रतिकूल हैं। अपने स्वभाव को बदलना हमारे हाथ में है। यह अपने शांत विचारों के कारण बदला जा सकता है। स्वभाव के बदले जाने पर मनुष्य को किसी विशेष प्रकार का कार्य करना सरल हो जाता है।

जिस काम को मनुष्य अपने आंतरिक मन से नहीं करना चाहता, पर दिखावे के रूप में उसे करने के लिए बाध्य होता है, तो अनेक प्रकार की रुकावटें उसे दरसाती हैं कि तुम्हारा आंतरिक मन उक्त काम के प्रतिकूल है। शांत होकर यदि मनुष्य अपनी किसी प्रकार की भूल अथवा कार्य की विफलता पर विचार करे, तो वह इसका कारण अपने आप में ही पाएगा। जो काम अनुद्विग्न मन होकर किया जाता है, उससे आत्मविश्वास बढ़ता है और उसमें सफलता अवश्य मिलती है। शांत मन द्वारा विचार करने से स्मृति तीक्ष्ण हो जाती है और इंद्रियाँ स्वस्थ हो जाती हैं। इच्छाओं की वृद्धि, शांत विचारों का अंत कर देती है। जिस मनुष्य की इच्छाएँ जितनी ही अधिक होती हैं, उसे भय, चिंता संदेह और मोह भी उतने ही अधिक होते हैं। *—अखण्ड ज्योति-मई १९५५ पृष्ठ-५-६-७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारों की शक्तिशाली दुनियाँ

विचार स्वयं में एक महान शक्ति है। "जैसा सोचोगे, वैसा बनोगे।" सोचें कि आप शक्तिहीन हैं, आप शक्तिहीन हो जाएँगे। अपने को मूर्ख समझो, सचमुच आप मूर्ख हो जाएँगे। ध्यान करो कि आप स्वयं परमात्मा हो, यथार्थ में आप परमात्मा का रूप प्राप्त कर लेंगे। प्रतिपक्ष-भावना का अभ्यास करो। क्रोध की हालत में प्रेम की भावना करो। निराश में मन को आनंद और उत्साह से भरो।

अंततः दुनियाँ केवल एक भावना अथवा विचार ही है। मन के संकल्परहित होने पर दुनियाँ हवा हो जाती है और मन अवर्णनीय आनंद में डुबकियाँ लगाता है। मन ने ज्यों ही विचार किया कि दुनियाँ तत्काल उसकी आँखों में झूल जाती है और उससे पीड़ा का साम्राज्य शुरू हो जाता है।

कुविचार कैसे दूर किए जा सकते हैं? उन्हें भूलकर। कैसे भूलना चाहिए? उसमें पुनः न डूबकर। पुनरावृत्ति को कैसे रोका जा सकता है? अधिक आनंददायक दूसरी बात का ध्यान कर। दुःख की उपेक्षा करो, भूलो। अधिक आनंददायक विषय का चिंतन करो। यह महान साधना है।

उन्नत विचारों का ध्यान करो। आत्मा में उन्मुख बनकर आंतरिक ध्यान करो, विचार करो, तर्क करो। सांसारिक विचार, घृणा, द्वेष, प्रतिशोध, क्रोध, काम आदि भावनाएँ तत्काल नष्ट हो जाएँगी।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५५ पृष्ठ-४

www.awgp.org

प्रतिस्पर्द्धा की भावना से हानि

अपने आप को इसलिए मत धिक्कारिए कि आप अपने को हीन पाते हैं। समझदारी से यदि आप अपनी तुलना दूसरों से करें और सत्यता से परखें, तो आपको सौंदर्य, स्वास्थ्य, धन, प्रतिष्ठा, स्थिति आदि की नीचाई से ग्लानि उत्पन्न न होगी। वास्तव में आप गलती यह कर बैठते हैं कि अपने व्यक्तित्व की दुर्बलताओं को दूसरों के व्यक्तित्व की अच्छाइयों या विशिष्टताओं से मिलाने लगते हैं। आप में कुछ कमजोरियाँ हैं तो स्मरण रखिए, जिन्हें आप श्रेष्ठ समझते हैं, उन व्यक्तियों में भी दुर्बलताएँ हैं। उनकी अच्छाइयाँ देखते हैं, तो कृपया अपने व्यक्तित्व को सहानुभूति से परखकर अपनी विशिष्टताएँ भी तलाश कीजिए। आपको अवश्य कुछ-न-कुछ अच्छाइयाँ मिलेंगी, जो आपको आगे बढ़ने, सद्गुणों का विकास करने की प्रेरणा देंगी।

आत्मविश्वास, स्वयं एक स्वस्थ्य मानसिक आदत है, तो दूसरी ओर आत्महीनता अर्थात अपने विपक्ष में सोचना और अपने को दूसरों से नीचा समझना, एक ग्रंथि है, एक अस्वस्थ मानसिक आदत है। तुलनात्मक दृष्टि से दूसरी अस्वस्थ आदत के गुलाम बनना, दुखी जीवन बिताने की तैयारी करना है। गलत चीजों की तुलना से मनुष्य के जीवन में भारी असंतोष छा जाता है। केवल आप अपनी अच्छाइयों को दूसरों की अच्छाइयों से मिलाइए अथवा मिलान का प्रश्न ही न उठाइए।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५५ पृष्ठ-१४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का चरम लक्ष्य, ऐसे प्राप्त करो

विचार, शांति, ध्यान और क्षमा के द्वारा क्रोध पर विजय प्राप्त करो। जो मनुष्य तुम्हारी हानि करता हो, उसके ऊपर दया करो और उसे क्षमा कर दो। उलाहने को प्रसाद समझो, उसे आभूषण जानो तथा अमृततुल्य मानो, भर्त्सना को सह लो। सेवा, दया और ब्रह्मभावना के द्वारा विश्वप्रेम का विकास करो। जब क्रोध पर विजय प्राप्त हो जाएगी, तो धृष्टता, अहंकार और द्वेष स्वयं ही नष्ट हो जाएँगे। प्रार्थना और भजन से भी क्रोध दूर हो जाता है।

संतोष, अभेद, विराग तथा दान के द्वारा लोभ का शमन करो। अभिलाषाओं को मत बढ़ाओ। तुम्हें कभी निराश न होना पड़ेगा। संतोष मोक्ष के राज्य के चार संतरियों में से एक है। इन चार संतरियों की सहायता से तुम ब्रह्मज्ञान, जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो।

अनुराग के पीछे-पीछे शोक और दु:ख भी लगे रहते हैं। अनुराग शोक से मिश्रित होता है। सुख के पीछे दु:ख चलता है। जहाँ सुख है, वहाँ दु:ख भी है। अनुराग के नाम पर मनुष्य दु:ख का विषमय बीज बो देता है, जिससे शीघ्र ही स्नेह के अंकुर निकल आते हैं, जिसमें बिजली के समान भयानक दाहकता होती है और इन अंकुरों से अनेक शाखाओं से युक्त दु:ख का वृक्ष उत्पन्न होता है, जो ढँके हुए घास के ढेर के समान जलते हुए, धीरे-धीरे शरीर को दग्ध कर डालता है। अत: जीवन को लोभ-मोह में फँसने ही मत दो।

www.awgp.org *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५६ पृष्ठ-६*

www.vicharkrantibooks.org

मानसिक संतुलन आवश्यक

यदि तुम चाहते हो कि जीवन में तुम्हें असफलता, मजबूरी या कठिनाई न मिले, तो यह असंभव है, तुम्हारे वश की बात नहीं है। जीवन मृदुल भावनाओं की मृदुवाटिका है, तो कंटक और शूल, कठोर चट्टानों, पत्थरों की शुष्कता और कठोरताओं से भी भरा है। सभी कुछ आपको चखना है, मधुरता भी, कड़वाहट भी।

जिस दुनियाँ को आप बदल नहीं सकते, उससे झगड़ा करने से क्या लाभ ? जिस परिस्थिति से आप बच नहीं सकते, उसे परिवर्तित करने की इच्छा से क्या फायदा ? जिन व्यक्तियों का कड़ा, कलहपूर्ण या झगड़ालू स्वभाव है, उनसे अड़ने और क्रोध करने से क्या लाभ ? असफलता, हानि और भूत पर व्यर्थ सोचने से क्या लाभ ? ये सभी आपके मनोबल और मानसिक संतुलन को नष्ट करने वाले हैं।

तुम्हारे वश की बात क्या है ? तुम्हारा स्वभाव, तुम्हारी अच्छी आदतें, तुम्हारा मानसिक संतुलन, मन की शांति, ऐसी दिव्य बातें हैं, जो तुम्हारे वश की हैं। इनका संबंध स्वयं तुमसे और तुम्हारे निजी व्यक्तित्व से है। क्रमश: अभ्यास द्वारा तुम इनमें से प्रत्येक को प्राप्त कर सकते हो। इनके द्वारा तुम्हारा जीवन सुख और शांति से परिपूर्ण हो सकता है।

अतएव यदि संसार में सुख और शांति चाहते हो, तो जो तुम्हारे वश की बातें हैं, उन्हीं को विकसित करो और जो तुम्हारे वश की बातें नहीं हैं, उन पर व्यर्थ चिंतन या पश्चात्ताप छोड़ दो। स्वयं अपने मस्तिष्क के स्वामी बनो। संसार और व्यक्तियों को अपनी राह जाने दो। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५६ पृष्ठ-१६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य जीवन ऊँचे उद्देश्यों के लिए

उत्कृष्ट भावना से तुम जब एक भाव को छोड़कर, जिस नए भाव को धारण करने का दृढ़ संकल्प करोगे, वही बनोगे, उसे ही प्राप्त करोगे। भगवान कृष्ण ने कहा है—"अंतकाल में यदि मेरा स्मरण करोगे, तो मुझे प्राप्त करोगे। जिस भाव को अधिक सोचोगे, जिसे स्मरण करोगे, उसे ही प्राप्त करोगे।" यह बात इस शरीर में भी संभव है।

शास्त्रों में कहा है—एक जन्म माता-पिता से होता है, वह भौतिक जन्म है, दूसरा जन्म गुरु के द्वारा होता है, यह स्थायी है।

उपनिषदों में गुरु अनेक माने गए हैं। पशु-पक्षी, जड़-चेतन, बुरे-भले सभी गुरु हो सकते हैं। मनुष्य का सबसे बड़ा गुरु वह स्वयं है। तुम यह मानते हो कि मनुष्य अपनी हत्या कर सकता है, यह तुम्हारा अपूर्ण ज्ञान है, इसकी पूर्णता यह है कि मनुष्य अपने आप को मार भी सकता है और अपने आप को जन्म देकर जीवित भी रख सकता है।

तुम शरीर नहीं, शरीर से तुम हो, तुम शरीर के लिए नहीं, शरीर तुम्हारे लिए है, इसलिए शरीर का जीवन और तुम्हारा जीवन पृथक वस्तु है। अपकीर्ति, अपमान और पराजय मृत्यु से भी बढ़कर हैं। कीर्ति के लिए, ऊँचे उद्देश्य के लिए, मृत्यु का आलिंगन वीर पुरुष करते हैं। संसार की दृष्टि में यह जन्म है, जीवन है। तुम्हारे सामने प्रतिक्षण जीवन और मरण के लक्षण आते हैं, उनमें से तुम जीवन का वरण करो, सच्चा जीवन प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प करो। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५६ पृष्ठ-१७*

www.vicharkrantibooks.org

बातें नहीं काम कीजिए

कार्य न करने वाला व्यक्ति, एक प्रकार का शेखचिल्ली है। वह बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाता है, बढ़-चढ़कर बातें करता है, शब्दों के मायाजाल की उसके पास न्यूनता नहीं होती है। वह बात करने में आगे, पर काम में पीछे रहता है। कहेगा मन भर, कार्य न करेगा रत्ती भर। ऐसे व्यक्ति निष्क्रिय, बेकार, कोरे बातूनी जमाखरच करने वाले होते हैं। उनसे महान कार्य की आशा नहीं की जा सकती।

आवश्यकता इस बात की है कि आप जो सोचें, विचारें या योजनाएँ विनिर्मित करें, वे इस प्रकार की हों, जिन्हें आप कार्यरूप में परिणत कर सकें। योजनाएँ निर्माण करने से पहले सोचिए कि क्या आप उन्हें कर सकेंगे, क्या उनमें और आपकी शक्तियों में अनुपात बराबर हैं, कहीं आप अपनी सामर्थ्य से बाहर की बात तो नहीं सोच रहे हैं? जो योजना आपने बनाई है, उसके लिए आपके पास क्या-क्या साधन हैं, कितना धन है, कितने मित्र, बंधु-बांधव हैं, आर्थिक, शारीरिक, धार्मिक, सामाजिक स्थिति कैसी है? इन पर विचार करके ही किसी कार्य में हाथ डालें। कार्य की सफलता के लिए अपनी मानसिक, शारीरिक तथा क्रियात्मक शक्तियों को कार्य के उद्देश्य की ओर केंद्रित करिए। मानसिक दृष्टि से सचेष्ट और जाग्रत रहिए। संकल्प शक्ति का विकास एवं संचालन जरूरी है। इन बातों पर भलीभाँति विचार करने के पश्चात कार्य करने से सफलता अवश्य मिलती है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५६ पृष्ठ-१८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतोषामृत पिया करें

ईश्वर के संसार में सभी के लिए मर्यादा के भीतर रहकर खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने, शरीर की नाना प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति के सभी साधन प्रचुरता से हैं। किसी को किसी वस्तु की कमी नहीं है। जीवन की आधारभूत चीजें विपुलता से बिखरी पड़ी हैं। जितना जिस-जिस के हिस्से में है, जितना जिस-जिस के भाग्य में लिखा है, वह उसे देर-सबेर अवश्य प्राप्त होकर रहता है। कोई किसी के भाग्य के धन, संतान, संपत्ति, भूमि, ऐश्वर्य, मान, समृद्धि को उससे नहीं छीन सकता। शर्त यही है कि हम अपना कर्म करते रहें, परिश्रम में लापरवाही न करें, आलसी न बनें और मुफ्त का धन लूटने की चेष्टा न करें। कर्त्तव्य मानकर, समाज का जो काम हमें सौंपा गया है, कठिन परिश्रम और सहयोग से उसे पूरा करते रहें। अपना पेट भर लेने के पश्चात बचा हुआ धन या वस्तुएँ ईश्वर की हैं, हमारी व्यक्तिगत पूँजी नहीं हैं। उन्हें समाज के अन्य जरूरतमंद व्यक्तियों को दे देने (दान करने) में ही कल्याण है। आवश्यकता से अधिक धन इत्यादि रखकर दूसरों का शोषण करने वाले मोक्ष का सुख प्राप्त नहीं करते। वे तृष्णा के मायाजाल में अशांत पड़े रहते हैं।

संसार की विषय-वासना में लिप्त व्यक्ति के दुःखों का अंत नहीं होता। एक आवश्यकता पूर्ति के बाद दूसरी, फिर तीसरी, चौथी अनंत तृष्णाएँ, हजारों छोटी-बड़ी, अच्छी-बुरी इच्छाएँ, उसकी शांति, सुख और संतुलन को भंग करती रहती हैं। इंद्रियों को कभी संतोष नहीं मिलता। वासना कभी तृप्त नहीं होती। आसक्ति ही दुःख का मूल है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५६ पृष्ठ-४३*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

त्याग और शक्ति, भोग और अशक्तता

त्याग हमें बलवान बनाता है और भोग, कमजोर। जिनके शरीर के सभी तत्त्व परिपुष्ट हैं, उनके मन, प्राण भी वैसे ही हैं। भोग से जिस भाँति शरीर क्षीण होता जाता है, उसी भाँति उसके मस्तिष्क और हृदय भी बलहीन और क्षीण होते जाते हैं। ऐसे हृदयों और मस्तिष्कों में अंतरात्मा के निर्देश, जो सदा कल्याणकारी ही होते हैं, यदि कभी पहुँच भी जाते हैं, तो अधिक देर तक टिक नहीं पाते, क्योंकि उन तत्त्वों को धारण करने की शक्ति उसने गँवा दी होती है। परिणामतः भोगी जनों के मन और प्राण में वासना और भोग की कुत्सित भावनाओं का राज्य हो जाता है और वे जिधर चाहते हैं, उस व्यक्ति को घसीट ले जाते हैं।

भ्रमवश वे भले ही अपने को स्वतंत्र कह लें, पर वस्तुतः वे गुलाम ही होते हैं। उसके चंगुल से अपने को छुड़ा लेने की शक्ति उनमें नहीं होती। अतः भोग और शक्तिहीनता एक ही वस्तु के मात्र दो नाम हैं। उसी भाँति भोग-वासनाओं का त्याग ही शक्ति प्राप्त करने का साधन है। अतः वह स्वयं शक्ति ही है।

जिनका भीतर-बाहर निष्पाप है, जो भोगों के त्यागी हैं, वही वास्तव में सच्चे आनंद का अनुभव कर सकते हैं, वही ज्ञानी हो सकते हैं, वही शक्तिशाली हैं, सुखी हैं। सारी सफलताएँ उनकी होने के लिए विवश हैं, खिंची हुई हैं। हमें खोजना होगा कि हमारे विश्वास को अविचल रखने वाली, संकल्प को दृढ़ता देने वाली और उत्साह को निरंतर प्रज्वलित करने वाली शक्ति का निवास कहाँ है ?

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५६ पृष्ठ ३४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति का प्रसार

भारतीय संस्कृति का सूर्योदय अवश्य होगा। इस समय जमाना पलट रहा है। अब तक पैसा भी मुट्ठी भर आदमियों के पास था। अब वह गरीबों के पास आने वाला है। पहले हमारे देश का बड़ा सम्मान रहा है, हम धार्मिक दृष्टि से सबसे बड़े रहे हैं। हमारा देश स्वर्ग कहलाता था और यहाँ के निवासी देवता समझे जाते थे। इस देश के घर-घर में त्याग और बलिदन की भावना वाले मनुष्य मिलते थे। बीच में इन गुणों के घट जाने से देश की दशा बिगड़ गई। अब फिर वही पुराना समय आने वाला है। यहाँ ज्ञान, शक्ति और विद्या का सूर्योदय होने वाला है। आजकल चारों तरफ अधिकारों की माँग और उनके लिए संघर्ष हो रहा है, पर उससे भी पहले हमको अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान देना आवश्यक है। पश्चिम वाले कहते हैं कि अपने जीवन-मान को बढ़ाओ, इससे उन्नति होगी, पर हम अपने आध्यात्मिक मान को बढ़ाना ज्यादा आवश्यक समझते हैं। हम जिस भारतीय संस्कृति, भारतीय विचारधारा का प्रचार करना चाहते हैं, उसे आपके समस्त कष्टों का निवारण हो सकता है। राजनीतिक शक्ति द्वारा आपके अधिकारों की रक्षा हो सकती है, पर जिस स्थान से हमारे सुख-दु:ख की उत्पत्ति होती है, उसका नियंत्रण राजनीतिक शक्ति नहीं कर सकती। यह कार्य आध्यात्मिक उन्नति से ही संपन्न हो सकता है। मनुष्य को मनुष्य बनाने की वास्तविक शक्ति भारतीय संस्कृति में ही है। यह संस्कृति हमें सिखाती है कि मनुष्य, मनुष्य से प्रेम करने को पैदा हुआ है, लड़ने-मरने को नहीं।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५६ पृष्ठ १६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

महात्मा बुद्ध के व्यावहारिक उपदेश

जो अपने को दमन नहीं कर सकता, वह दूसरों को वश में नहीं रख सकता। मनुष्य को अन्य से सहायता नहीं मिल सकती, अपने ही किए से काम चलता है। मनुष्य को अपना कर्त्तव्य स्वयं पालना चाहिए। पवित्रता और मलिनता मन की है। कौन किसको शुद्ध कर सकता है ?

मनुष्य को बिना कुछ पाए हुए भी आनंद से रहना चाहिए। राग के समान कोई आग नहीं है। द्वेष के समान कोई हराने वाला पासा नहीं है। शरीर के समान कोई दु:ख नहीं। शांति के समान कोई सुख नहीं। आरोग्य परम लाभ है, संतोष परम धन है, विश्वासी पुरुष ही परम बंधु है, निर्वाण ही परम सुख है।

धर्मात्मा वही है, जो धर्म-अधर्म का निश्चय कर सके। वह पंडित नहीं, जो बहुत बोले। क्षमाशील, बैररहित और अभय पुरुष ही पंडित है। बाल पकने से कोई बड़ा नहीं होता। बड़ा वही है, जो सत्य, अहिंसा, संयम, दम आदि का अवलंबन करे। सिर मुड़ाने से कोई श्रमण (संन्यासी) नहीं होता, श्रमण वही है, जो पापरहित है।

आलसी, समय पर न उठने वाले तथा निर्बल संकल्प वाले को प्रज्ञा (ज्ञान) की प्राप्ति कभी नहीं होती। शुद्धि के लिए तीन मार्ग हैं—काया, वाणी और मन की रक्षा करना। ध्यान से ज्ञान होता है, बिना ध्यान के ज्ञान नहीं हो सकता। एक भी भ्रम शेष न रहे, तभी निर्वाण होगा।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९५६ पृष्ठ १९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्वृत्तियाँ सद्मार्ग की ओर चलती हैं

आप जिस बात को उचित समझते हैं, जो आपकी अंतरात्मा पुकार-पुकारकर कहती है, उसे ही सत्य समझिए। आपकी शुभ प्रवृत्तियाँ शांत समय में जिस ओर चलती हैं, उसी को सद्मार्ग समझिए और व्यर्थ चिंतन से बचकर उसी ओर चलिए। सद्मार्ग पर चलकर ही मन को शांत रखा जा सकता है। हो सकता है कि प्रारंभ में मन उधर एकाग्र न हो, पर आत्मा प्रबल तत्त्व है। अत: धीरे-धीरे वह स्वयं उसमें तन्मय होने लगेगा। दु:ख का बोझ हलका होगा और हृदय को शांति मिलेगी।

तुम्हारी आत्मा जिस चीज को उचित कहती है, उसी का संकल्प करो। उसी ओर बढ़ने में तुम्हें आत्मसामर्थ्य प्राप्त होगी। उसी ओर इंद्रियों को लगाने से शक्तियों की वृद्धि होगी।

तुम्हारी एक दुर्बलता संकल्प की कमजोरी है। तुम अपने निर्णय को मजबूती से नहीं पकड़ते। यह भलीभाँति जान लीजिए कि निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर लुढ़कने वाले पत्थर पर काई नहीं जमती। एक विषय से दूसरे विषय पर फुदकने वाला मन दुर्बलता की जड़ है। अपने विचारों को अपने उद्देश्यों पर एकाग्र करने का अभ्यास कीजिए।

सावधान! सत्य का मार्ग मत छोड़ना, चाहे मन कितना ही क्यों न छटपटाए। इंद्रियाँ तो व्यर्थ ही इधर-उधर भागने वाली हैं। मन के संयम से ही स्वर्ग मिलता है। अनियंत्रित इंद्रियों का विद्रोह ही नरक है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५६ पृष्ठ १३*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ईश्वर से नाता जोड़ो

मनुष्य के विनाश का कारण है, विषय-चिंतन और उन्नति का मार्ग है, भगवद्प्रेम। जब तक मनुष्य विषयों की ओर से अपने मन को हटाकर भगवान में नहीं लगा देता, तब तक भगवद्प्रेम का मिलना असंभव है और बिना भगवद्प्रेम के प्रभु नहीं मिल सकते। अतएव विषयों की ओर से मुख मोड़कर भगवान का स्मरण करने में ही परम कल्याण है, शांति है।

नास्तिक न बनो, आस्तिकता में विश्वास करो। भगवान पर विश्वास करने में ही कल्याण है। यह संसार नश्वर है, इसमें कोई भी सार नहीं है। एक दिन यह नष्ट हो जाता है। केवल प्रभु ही प्राप्त करने योग्य हैं और यही कार्य पूरा करने के लिए मनुष्य योनि मिलती है। इसी में जीवन की सार्थकता है, परम कल्याण है। अतएव चेतो, आत्मकल्याण की ओर अग्रसर हो और विषयों से नाता तोड़ो। ईश्वर से बढ़कर न तो कोई निकट आत्मीय है और न विपत्ति-काल में सहायक ही।

विपत्ति-काल में ईश्वर को दोष न दो, बल्कि यह समझो कि यह कर्मों का फल है। मनुष्य जैसा कर्म करता है, वही उसे भोगना पड़ता है, उसमें ईश्वर हस्तक्षेप नहीं करता। हाँ, उसके स्मरण से वह दु:ख भी सुख ही प्रतीत होता है। कष्ट देकर वह मनुष्य की परीक्षा लेता है कि इसमें कितना धैर्य है? साथ ही वह परम प्रभु मनुष्य को सचेत करता है कि शुभ कर्म करो, जिससे मेरे मोहक मुखड़े को देख सको। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५६ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान का अनंत भंडार

यदि आप में प्रतिभा है, तो उसे भय एवं संशयों से मुक्त कीजिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार उसका परिचय दीजिए। अपनी प्रतिभा को भगवान के चरण-कमलों में समर्पित कर दीजिए।

यह धरती में बीज बोने के समान ही होगा। यदि आपकी प्रतिभा सच्ची है, तो वह भगवान की एक देन है और जब वह भय, संशयों तथा बाधाओं से मुक्त होकर अपना मूल्य निर्धारित कराने के लिए विकास की ओर जाने दी जाएगी, तब वह बढ़ेगी और उसका सुंदर फल प्राप्त होगा।

दान से वस्तु घटती नहीं, वरन बढ़ती है। यदि आपके पास कोई उत्तम वस्तु है, तो आप उसे दूसरों को भी दीजिए, इसके फलस्वरूप आपको वह वस्तु अधिक परिमाण में मिलेगी। यदि आपके मन में कोई अच्छा भाव है, तो उसे भी लोगों में वितरित कीजिए। हाँ, बलपूर्वक किसी के गले के नीचे उतारने की आवश्यकता नहीं, किंतु जो प्रसन्नतापूर्वक उस भाव को ग्रहण करना चाहें, उन्हें बिना किसी मूल्य के अपने उत्तम भाव का भागीदार बनाइए।

बहुधा प्रफुल्लता उत्पन्न करने वाला एक शब्द, जो दूसरों के लिए कहा गया हो, उनके तथा आपके भी जीवन को चमका सकता है। एक जलती हुई मोमबत्ती से आप हजारों मोमबत्तियाँ जला सकते हैं और फिर भी पहली वाली ज्यों की त्यों जलती रहेगी। इसी प्रकार सत्य का एक शब्द, वह उस व्यक्ति के द्वारा चाहे बोला गया हो या आचरण में लाया गया हो, जो दूसरों को प्रसन्न करने में पर्याप्त विश्वास रखता हो, बहुतों में दैवी गुणों को लाएगा।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५६ पृष्ठ ११

आत्मनिरीक्षण आवश्यक है

अपनी वर्तमान वस्तुस्थिति का यथेष्ट स्पष्ट परिचय प्राप्त करना ही वास्तविक आत्मनिरीक्षण है। उसके बिना हम अपने को निर्दोष बना ही नहीं सकते। मानव में दोष-दर्शन की दृष्टि स्वत: विद्यमान है, पर प्रमादवश प्राणी उसका उपयोग अपने जीवन पर न करके अन्य पर करने लगता है, जिसका परिणाम बड़ा ही भयंकर एवं दु:खद सिद्ध होता है। पराये दोष देखने से सबसे बड़ी हानि यह होती है कि प्राणी अपने दोष देखने से वंचित हो जाता है और मिथ्याभिमान में आबद्ध होकर हृदय में घृणा उत्पन्न कर लेता है।

अपने तथा पराये दोष देखने में एक बड़ा अंतर यह है कि पराये दोष देखते समय हम दोषों से संबंध जोड़ लेते हैं, जिससे कालांतर में स्वयं दोषी बन जाते हैं, पर अपना दोष देखते ही हम अपने को दोषों से असंग कर लेते हैं, जिससे स्वत: निर्दोषता आ जाती है, जो सभी को प्रिय है। अत: यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि दोष-दर्शन की दृष्टि का उपयोग केवल अपनने ही जीवन पर करना है, किसी अन्य पर नहीं।

अपना निरीक्षण ही वास्तविक सत्संग, स्वाध्याय और अध्ययन है, कारण कि अपने निरीक्षण के बिना प्राणी किसी ऐसे सत्य तथा तत्त्वज्ञान की उपलब्धि ही नहीं कर सकता, जो उसमें स्वयं न हो। अत: अपने निरीक्षण द्वारा ही हम वास्तविक सत्य तथा तत्त्वज्ञान को उपलब्ध कर सकते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५६ पृष्ठ २२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने चित्त को प्रसन्न रखिए

जिसके हृदय में जीवों के लिए अनन्य भाव समाया हुआ है, उसे शांति मिलती है, वही शोक-समुद्र से तरता है, वही बंधन से छूटता है और समस्त दुःखों को भेदता है। जो शिकायत करता रहता है, दूसरों से उद्विग्न होता रहता है, झुँझलाता रहता है, वह समस्त सुखों से आवृत रहते हुए भी दुखी रहता है। जो दूसरों के उपद्रव, अपराध और बाधाओं को शांत चित्त से सह लेता है, दूसरों द्वारा हानि, अड़चनें और परेशानियाँ पहुँचाए जाते रहने पर भी मन को मलिन नहीं करता, वही अक्षय शांति प्राप्त करता है। यह अक्षय शांति दुष्प्राप्य अवश्य है, किंतु साधना से सुलभ है। यदि हमारा अभिमान गल जाए, हम अपने आप को मिटाने को तैयार हो जाएँ और हमारे हृदय में भाव टिक जाए कि हम शुद्ध चैतन्य-स्वरूप हैं। लौकिक दृष्टि से भी विचारें, तो चित्त की प्रसन्नता से लाभ ही लाभ है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति मित्र-संग्रह सरलतापूर्वक कर लेता है। अपना दुखड़ा ही रोते रहने वाले को प्रायः लोग झिड़कते ही रहते हैं। प्रत्येक मनुष्य मनःशांति ढूँढ़ता है। अतएव कोई भी मनुष्य व्यर्थ में ही रंजोगम के वातावरण में पड़कर दुखी नहीं होना चाहता। रोने वाले को बहुधा अकेले ही रोना पड़ता है और हँसने वाले का साथ अनेक लोग देते हैं। स्मरण रखिए कि रोने वाला बहुत कम मित्र बना पाता है। रोने वाले उतने मित्रों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाते, जितने कि आपदाओं को धैर्यपूर्वक सहने वाले।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५६ पृष्ठ १२

सच्चा धन कहाँ है ?

धनी होना एक कला है और मेरी समझ में इसका रहस्य अकिंचन बनने में है। अकिंचन होने पर ही हम सब कुछ प्राप्त करने के अधिकारी होते हैं।

हमारे जीवन में सबसे अधिक सुखमय और मूल्यवान वही क्षण है, जब हम भौतिक जगत् के मायाजाल से अपने आप को तटस्थ करके आत्मानुभूति में पूर्ण रूप से स्थित हो जाते हैं। इन क्षणों को प्राप्त करने का सौभाग्य तभी प्राप्त होता है, जब हम दिव्य सौंदर्य के सम्मुख होते हैं, अन्यथा नहीं। भौतिक जगत् की संपत्ति इनको नहीं खरीद सकती और न संसार की ऊँची से ऊँची अवस्था, अधिकार अथवा शक्ति ही इनको प्राप्त कराने में समर्थ है, क्योंकि यह वही क्षण हैं, जब आत्मा शिशु-सुलभ सरलता से अपने प्रियतम भगवान की अनुपम सुंदरता का पूजन करती है।

मनुष्य का सुंदरतम अर्थात सर्वोत्तम सुखमय क्षण ही उसका सबसे अधिक मूल्यवान समय होता है। मानव अनुभूति की पराकाष्ठा अपने भाइयों पर शासन करने की अथवा संसार की किसी भी इच्छित मूल्यवान निधि को खरीदने की शक्ति में नहीं है। वास्तविक संपत्ति तो आत्मा की अनुभूति से ही प्राप्त होती है। सुख की व्यावहारिक मुद्रा अर्थात चलतू सिक्का 'प्रेम' है। प्रेम की परिधि सीमित नहीं है और न उसका कोई प्रकार ही होता है।

प्रेम प्रेम है, वह लौकिक हो अथवा आध्यात्मिक, किंतु हो पूर्ण, असंदिग्ध तथा निस्स्वार्थ, तो निश्चय ही चमत्कारी, शक्तिशाली और भवबंधन से मुक्ति का साधन होगा। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५६ पृष्ठ १६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस्य न करना ही अमृत पद है

जो कार्य अभी हो सकता है, उसे घंटों बाद करने की मनोवृत्ति आलस्य की निशानी है। एक कार्य हाथ में लिया और करते चले गए, तो बहुत से कार्य पूर्ण हो सकेंगे। बहुत से काम एक साथ लेने से किसे पहले किया जाए, इसी दुविधा में समय बीत जाता है और एक भी कार्य पूरा और ठीक से नहीं हो पाता है। अतः जो कार्य आज और अभी हो सकता है, उसे कल के लिए न छोड़कर तत्काल कर डालिए। दूसरी बात ध्यान में रखने की यह है कि एक साथ अधिक कार्य हाथ में न लिए जाएँ, क्योंकि किसी भी कार्य में पूरा मनोयोग व उत्साह न रखने से सफलता नहीं मिल सकेगी। अतः एक-एक कार्य को हाथ में लिया जाए और क्रमशः सबको कर लिया जाए, अन्यथा सभी कार्य अधूरे रह जाएँगे और पूर्ण हुए बिना किसी भी काम का फल नहीं मिल सकता। कहा भी है—'**श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः लभतेन्द्रियः**' कार्य में तत्पर, संयमी एवं श्रद्धालु को ही ज्ञान प्राप्त होता है। आलस्य एक प्रकार का अंधकार है, जो मनुष्य की आत्मा एवं शक्तियों पर तुषारापात कर देता है।

स्मरण रखिए, निकम्मेपन और आलस्य में भी एक प्रकार का घृणित आकर्षण है। सैकड़ों व्यक्ति आलस्य के गंदे कूप में पड़े हैं और उसी को श्रेष्ठ समझ रहे हैं। उन्हें अपने जीवन से अधिक से अधिक कार्य लेने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिए।

'**आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः**' अर्थात मनुष्य शरीर का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य ही है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५६ पृष्ठ २०

www.vicharkrantibooks.org

त्याग या स्वार्थ

आदर्श जीवन यह नहीं कि हम एक लँगोटी लगा लें, जबकि हमारे अंदर बढ़िया-बढ़िया कपड़ों की चाह हो, अथवा हम एक झोपड़ी में रहें, जबकि हमारा मन महलों में रहने के लिए निरंतर भटकता हो। आदर्श जीवन तो वह है, जिसमें त्याग आदमी के भीतर से उपजे और बाहर के थोड़े से भी परिग्रह में आदमी की आसक्ति न रहे। आज की दुनियाँ में यह बहुत मुश्किल है। हमारे चारों ओर मोहजाल बिछा है और काजल की कोठरी में कैसा भी सयाना क्यों न जाए, थोड़ी बहुत कालिख उसे लगे बिना रह नहीं सकती। हमारी निगाह आज अपनी ओर नहीं है और हम जीवन में सचाई, ईमानदारी, निस्स्वार्थता आदि गुणों को भूल गए हैं। अपने लाभ की बात हम सोचते हैं, भले ही उसमें दूसरे का अहित क्यों न होता हो!

आज हमारे मानवी गुणों को नहीं, हमारी दुर्बलताओं को विकास का अवसर मिल रहा है। अपने ही देश में नहीं, सारी दुनियाँ में यही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। मनुष्य जैसे सीमित होकर स्वार्थ के एक छोटे से बिंदु पर केंद्रित हो गया है और यह जो सामने चीजों का विस्तार दीख पड़ता है, वह इसलिए है कि यदि कोई उससे बाहर होना चाहे तो स्वर्णनगरी का मोह और आकर्षण उसे फँसाए रखे, वह उसी में तड़पता रहे। निस्संदेह आज हम बड़े स्वार्थपरायण हो गए हैं। यह स्थिति कल्याणकारी नहीं है। यह हमें विनाश की ओर ही ले जा सकती है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५६ पृष्ठ ३५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्संग का महत्त्व

जो जैसा सुनता है, कालांतर में वैसा ही बन जाता है। आज आप जिन सदुपदेशों को ध्यानपूर्वक सुनते हो, कल निश्चय ही वैसे बन भी जाओगे। सुनने का तात्पर्य अपनी मानसिक प्रवृत्तियों के देवत्व की ओर मोड़ना है।

एक विद्वान ने कहा है, ''जल जैसी जमीन पर बहता है, उसका गुण वैसा ही बदल जाता है।'' मनुष्य का स्वभाव भी अच्छे-बुरे विचारों या लोगों की संगति के अनुसार बदल जाता है। इसलिए चतुर मनुष्य बुरे लोगों का साथ करने से डरते हैं, लेकिन मूर्ख व्यक्ति बुरे आदमियों के साथ घुल-मिल जाते हैं और उनके संपर्क से अपने आप को भी दुष्ट ही बना लेते हैं। मनुष्य की बुद्धि तो मस्तिष्क में रहती है, किंतु कीर्ति उस स्थान पर निर्भर रहती है, जहाँ वह उठता-बैठता है। आदमी का घर चाहे जहाँ हो, पर वास्तव में उसका निवास स्थान वह है,जहाँ वह उठता-बैठता है और जिन लोगों या विचारों का सान्निध्य उसे पसंद है।

आत्मा की पवित्रता मनुष्य के कार्यों पर निर्भर है और उसके कार्य संगति पर निर्भर हैं। बुरे लोगों के साथ रहने वाला अच्छे काम करे, यह बहुत ही कठिन है। धर्म से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, किंतु धर्माचरण करने वाली बुद्धि सत्संग या सदुपदेशों से ही प्राप्त होती है। स्मरण रखिए कि कुसंग से बढ़कर कोई हानिकर वस्तु नहीं है तथा सत्संगति से बढ़कर कोई लाभ नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९५६ पृष्ठ १७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दुर्बलता एक पाप है

जो व्यक्ति किसी विशेष दिशा में महत्त्व प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि अपने इच्छित मार्ग के लिए शक्ति-संपादन करें। सच्ची लगन और निरंतर प्रयत्न, यही दो महान साधनाएँ हैं, जिनसे भगवती शक्ति को प्रसन्न करके उनसे इच्छित वरदान प्राप्त किया जा सकता है। आपने अपना जो भी जीवनोद्देश्य बनाया है, उसे पूरा करने में जी-जान से जुट जाइए। सोते-जागते उसी के संबंध में सोच-विचार करते रहिए और आगे का मार्ग तलाश करते रहिए। परिश्रम! परिश्रम!! परिश्रम!!! आपकी आदत में शामिल होना चाहिए। स्मरण रखिए, अपना कोई भी मनोरथ क्यों न हो, वह शक्ति द्वारा ही पूर्ण हो सकता है। इधर-उधर बगलें झाँकने से कुछ नहीं हो सकता। पुरुषार्थी लोग ही पवित्र होते हैं और पवित्र कार्य करते हैं।

श्रेष्ठ बल के लिए उत्तम भाषण और उत्तम कर्म करो। सतत परिश्रम करने वाले को सैकड़ों प्रवाहों से यश प्राप्त होता है। इस संसार में आप जहाँ हों, जिस परिस्थिति में हों, जीवन के किसी भी क्षेत्र में अग्रसर हो रहे हों, शक्ति अर्जन कीजिए। इस संसार में दुर्बलता सबसे बड़ा पाप है। दुर्बल को हर कोई दबाता है। कमजोर सर्वत्र नारकीय यंत्रणाएँ भोगते देखे जाते हैं।

हे समर्थ परम दृढ़ परमेश्वर! मुझे दृढ़ बना दे, जिससे मैं तेरे संदर्शन में, तेरी ठीक दृष्टि में चिरकाल तक जीता रहूँ। तेरे सम्यक् दर्शन में दीर्घ आयु तक जीता रहूँ।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५७ पृष्ठ २५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असीम संग्रह और उपभोग की तृष्णा

संसार में उपभोग और आवश्यकता की वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में भरी पड़ी हैं, पर थोड़े से ही आदमी उस पर कब्जा करके बैठ जाते हैं। फलस्वरूप शेष सारी जनता अभावग्रस्त, दरिद्र रह जाती है। कोई व्यक्ति जीवनयापन की वस्तुओं से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहता। हर किसी को अधिक, बहुत अधिक, असीम वस्तुओं के संग्रह और उपभोग की तृष्णा व्याकुल किए हुए है। गरीब से लेकर अमीर तक, मजदूर से लेकर मालिक तक, शिष्य से लेकर गुरु तक, अभी अपने कर्त्तव्यपालन में अधिक के लिए बड़ी-बड़ी माँगें उपस्थित कर रहे हैं। कोई किसी को अपनी सच्ची आत्मीयता, सेवा, स्नेह भावना नहीं देना चाहता, अपनी वस्तुओं या अधिकारों का त्याग दूसरों के लिए नहीं करना चाहता, वरन दूसरों से अधिक से अधिक लाभ किस प्रकार उठाया जा सकता है, इसी की फिराक में रहता है। इस घुड़दौड़ में वह उचित-अनुचित में, पाप-पुण्य में, नीति-अनीति में, कोई अंतर नहीं करना चाहता। जैसे भी बने अपना काम बनाने की उसे चिंता है।

नीति का मार्ग छोड़कर जब लोग अनीति की सहायता से अपना स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं, तो निश्चित रूप से विरोध, द्वेष, संघर्ष और कलह उत्पन्न होता है। यह कलह अनेक रूप धारण करके सामने आता है और उससे शांति एवं सुरक्षा का वातावरण नष्ट हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५७ पृष्ठ १५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विलासी मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकता

जो मनुष्य दूसरों के लिए जितनी अधिक से अधिक प्रेमभावना रखता है और अपनी खुद की ओर से उदासीन रहता है, उसके लिए श्रेष्ठ बनना उतना ही सुगम होता है। इसके विपरीत जो मनुष्य अपने को जितना अधिक प्रेम करता है और दूसरों से अपनी जितनी ही अधिक सेवा कराता है, उतना ही वह दूसरे लोगों की भलाई कम कर सकता है। एक मनुष्य जो दूसरों को खिलाने के बजाए खुद ही बहुत अधिक खा लेता है, तो वह अन्य लोगों की दो प्रकार से हानि करता है। एक तो उसके अधिक खाने से दूसरों के भोजन में कमी पड़ जाती है और दूसरे अधिक खा लेने से वह अपनी शक्ति को भी खो बैठता है और दूसरों का हित करने के योग्य नहीं रहता।

बहुत-से लोग ऐसा प्रकट करते हैं कि वे दूसरों से प्रेम करते हैं, पर उनका प्रेम केवल शब्दों तक ही सीमित रहता है। हम दूसरों के साथ तभी वास्तविक प्रेम कर सकते हैं जबकि अपने साथ प्रेम करना या अपना अनुचित स्वार्थ छोड़ें। ऐसे बहुत-से उदाहरण मिलते हैं, जिनमें हम समझते हैं कि हम दूसरों से प्रेम करते हैं, पर वास्तव में हमारा प्रेम केवल दिखावा ही होता है। दूसरों को भोजन खिलाना या आश्रय देना, हम भूले जाते हैं, पर अपने लिए भोजन तथा आश्रय प्राप्त करना कभी नहीं भूलते। इसलिए दूसरों को सचमुच प्रेम करने के लिए हमको वास्तव में अपने आप को अधिक प्रेम करना छोड़ना होगा।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५७ पृष्ठ ११

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण और व्यवहार में सत्य का प्रयोग

मनुष्य का कर्त्तव्य है कि सत्य और असत्य का भेद पहचानने का प्रयत्न करता रहे। सत्य आध्यात्मिक जगत का सर्वोत्तम रत्न है और भगवान ने उसे पहचानने की निश्चित योग्यता भी मनुष्य को दी है, पर आधुनिक युग के कुतर्कशील लोगों ने उसका स्वरूप ऐसा गँदला कर दिया है कि उसकी पहचान करना भी बड़ा कठिन हो जाता है। इसके लिए सबसे पहला उपाय यह है कि हम स्वयं मन, वाणी और कर्म से सदा सत्य का पालन करें। जो व्यक्ति सत्य का पालन करता है, वह सत्य और असत्य की पहचान अपने सहज ज्ञान से शीघ्र ही कर सकता है।

सत्य और असत्य की पहचान पर ज्यादा जोर देने की आवश्यकता इसलिए भी है कि संसार में आजकल अनेक मूर्खतापूर्ण असत्य विचार और अंधविश्वास भरे पड़े हैं और जो व्यक्ति इनका दास बना रहता है, वह कभी उन्नति नहीं कर सकता।

इसलिए तुम्हें किसी बात को इसलिए ग्रहण नहीं करना चाहिए कि उसे बहुसंख्यक लोग मानते हैं या वह शताब्दियों से चली आई है अथवा उन धर्मग्रंथों में लिखी है, जिन्हें लोग पवित्र मानते हैं। तुम्हें उस पर स्वयं भी विचार करके उसके सत्य-असत्य और उचित-अनुचित होने का निर्णय करना चाहिए। याद रखो कि एक विषय पर चाहे एक हजार मनुष्यों की सम्मति क्यों न हो, किंतु यदि वे लोग उस विषय में कुछ भी नहीं जानते, तो उनके मत का कुछ भी मूल्य नहीं है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जून १९५७ पृष्ठ १५

पाप की कमाई से सच्चा सुख नहीं मिलता

पाप की कमाई घर में आती हुई तो मालूम होती है, पर जाने के लिए भी उसके हजारों पैर लग जाते हैं। उसको उपभोग करने वाले इतने ऐयाश और फजूलखरच बन जाते हैं कि उनकी जरूरतें कभी पूरी ही नहीं होतीं। आप कमाते-कमाते थक जाते हैं, पर संतान खरच करते-करते नहीं थकती।

पाप की कमाई करने वाले आराम से नहीं रहते। किसी-किसी को तो रोटी भी नसीब नहीं होती और सारी उमर तंगी में गुजरती है। उन लोगों की बाहरी टीमटाम इतनी बढ़ जाती है कि पास में कुछ भी नहीं बचता। जब कोई ब्याह-शादी का खरच आ पड़ा तो ऐसे लोगों को कर्ज लेकर ही काम चलाना पड़ता है। कर्ज भी थोड़ा नहीं, क्योंकि अपनी झूठी शान को बनाए रखने के लिए उनको बहुत रुपए चाहिए। इस तरह कर्जदार हो जाने से सारी उम्र परेशानी में ही गुजरती है। इसके विपरीत पाप की कमाई से बचने वाला बहुसंख्यक लोग अच्छी हालत में मिलेंगे। इस प्रकार विचार करने से यही नतीजा निकलता है कि न तो पाप से अधिक कमाई करने वाले सुख सुखी हैं और न नेक कमाई पर संतोष करने वाले सब दुखी ही हैं। सुखी और दुखी दीखने वाले दोनों में एक बराबर है, पर आत्मसुख जिसे शांति कहते हैं, पाप की कमाई करने वालों में किसी को नसीब नहीं है, यह बात डंके की चोट पर कही जा सकती है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५७ पृष्ठ-३१-३२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमाई में बहुतों का हिस्सा

आदमी जो कुछ भी कमाता है, वह बहुतों के भाग्य का होता है। उसका अपना भाग्य तो उसमें उतना ही है, जितना वह खा, पहन लेता है। शेष तो जिन-जिन का है, उनके पास पहुँच जाता है।

कमाने वाले की स्थिति एक कारिंदा से अधिक नहीं है। जैसे कारिंदा गाँव के किसानों से लगान वसूल करके लाता है और मालिकों को दे देता है और खुद अपनी गुजर लायक वेतन मालिकों से पाता है, वैसे ही कमाने वाला दूसरों के भाग्य का रुपया लाता है और समझता है कि मैं मालदार बन गया। कितनी बड़ी भूल है। दूसरों की अमानत पर इतना गर्व। जब सब अपना-अपना भाग ले लेते हैं, तो स्वयं खाली रह जाते हैं और फिर कमाई की धुन सवार होती है। इसी कमाने और बाँटने में उम्र समाप्त हो जाती है और पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता।

जीवन में जो धन बाँटने से बचा रहता है, उसे वैसे ही पछताते हुए छोड़कर जाना पड़ता है, जिससे मरते समय भी बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। जोड़े हुए धन को तो वे लोग, जिनका वह भाग्य है, आपस में बाँट ही लेंगे, परंतु जिसने कमाने में पाप इकट्ठे किए उसे क्या लाभ हुआ? इसका जवाब देने में उसे हिचकियाँ आने लगेंगी और थोड़ी ही देर में प्राण-पखेरू अपने कर्मों का बुरा परिणाम भोगने नरक की ओर चल देगा।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५७ पृष्ठ-३२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सच्ची आध्यात्मिकता का मार्ग

वास्तव में मानव जीवन एक ऐसे घने, अंधेरे और अपार जंगल में यात्रा कर रहा है, जिसके संबंध में उसे कुछ भी ज्ञात नहीं है। हम कौन हैं? कहाँ से आए हैं? कहाँ जा रहे हैं? क्यों जा रहे हैं? किधर जाना है? कौन-सा मार्ग उचित है? इन सब बातों का ठीक-ठीक पता विश्वयात्रियों में से किसी को नहीं है। सब अपने-अपने अनुभव के आधार पर या दूसरों के कहने-सुनने के आधार पर अपनी कल्पना से इन प्रश्नों का उत्तर गढ़ लेते हैं।

जीवन की यह दशा होते हुए हमें क्या करना चाहिए, यह कहना बहुत कठिन है। यात्रा को स्थगित करके बैठ जाना तो उचित नहीं जान पड़ता, इसलिए अपने छोटे-से ज्ञानरूपी प्रकाश से लाभ उठाते हुए, हृदय में जीवन के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखते हुए चलते रहना ही उचित है। हाँ, एक बात जो निश्चित है, वह यह कि मेरी ही तरह और भी अनेक यात्री इस घने वन में भटक रहे हैं, मेरा और उनका मार्ग भले ही पृथक हो, पर वे सब हैं तो मेरे ही समान भटकते व्यक्ति। उनके साथ सहानुभूति, प्रेम और सहयोग करना मेरे लिए इस कारण उचित है कि मैं स्वयं भी अपने प्रति उनकी सहानुभूति, प्रेम और सहयोग की आकांक्षा रखता हूँ। मुझे चाहिए कि जैसा व्यवहार मैं दूसरों से अपने प्रति नहीं चाहता, वैसा दूसरों के प्रति भी न करूँ।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५७ पृष्ठ-६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य स्वयं अपना भाग्य बनाता है

मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। भीषण झंझावतों और तूफानों का निर्भयतापूर्वक सामना करने वाले पुरुषार्थी एवं साहसी व्यक्तियों के समक्ष विपरीत परिस्थितियाँ और विपदाएँ हार मान जाती हैं और उनका प्रशस्त पथ निर्विघ्न हो जाता है। सफलता उनके चरण चूमती है, भाग्य उन पर मुस्कराता है, यश, मान एवं समृद्धि उनके अनुगामी होकर चलते हैं। संकट उन्हें निर्दिष्ट पथ से डिगा नहीं सकते, असफलताएँ उन्हें झुका नहीं सकतीं, लोभ और माया उनको पथभ्रष्ट नहीं कर सकतीं। वह एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आँधी, तूफानों और बवंडरों को पछाड़ते हुए आगे बढ़ते हैं और हर मंजिल एवं आने वाली सफलता उनकी आशा की द्विगुणित करती जाती है। निश्चय ही ऐसे व्यक्ति जीवन में आनंद, सफलता और विजय के भागी होते हैं।

दूसरे, असफलता को भाग्य की क्रूरता एवं दैव की विडंबना कहकर अपने को भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं। एक ओर पुरुषार्थवादी मनुष्य हैं, जो अपने भविष्य का निर्माण अपने बाहुबल और सतत परिश्रम के द्वारा करते हैं, किंतु जिस व्यक्ति को स्वयं पर भरोसा नहीं, जिसका मन उत्साहपूरित नहीं, जिसे अपने लक्ष्य की प्रतीति नहीं, ऊँचा उठने की चाह नहीं, निराशा ही जिनकी सहचरी है, ऐसे अकर्मण्य व्यक्ति जीवित ही निष्प्राण के समान, जीवन का बोझ ढोते रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५७ पृष्ठ-२५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आशावादी व्यक्तियों से मिलें

मनुष्य का व्यक्तित्व और बाह्य जगत एकदूसरे के सापेक्ष हैं। जैसा व्यक्तित्व होता है, उसी प्रकार का जगत् एवं वातावरण भी बन जाता है। हमारा व्यक्तित्व हमारे विचारों का ही प्रतिबिंब है। कर्मठ व्यक्ति अपने चारों ओर आशा, उत्साह एवं सौहार्द्र का वातावरण बना लेते हैं और परस्पर आशा एवं प्रगति का संदेश देते हैं। वे अपने साथ-साथ दूसरों को भी नवीन ज्योति देते हैं और सच्चे अर्थों में जीवन के पारखी होते हैं। मनुष्य के विचार उसके जीवन-निर्माण में बहुत महत्त्व रखते हैं, किंतु निराशावादी स्वयं तो नैराश्य में डूबे रहते हैं, दूसरों को भी वे निरुत्साह एवं गिरी हुई बातें कहकर भाग्य को दोष देते हैं।

आप आशावादी व्यक्ति से मिलिए, उसकी मुस्कराहट में जीवन होता है, उसकी प्रसन्नता की किरणें वातावरण को भी सजीव एवं मुखरित कर देती हैं, जीवन का हर क्षण उनके लिए नया स्पंदन एवं संदेश लाता है। अखंड प्रसन्नता प्रभु का प्रसाद है और इससे अंदर और बाहर दोनों प्रफुल्लित रहते हैं। जीवन का हर दिन उमंग एवं आशा का संदेश लिए आता है, प्रकृति उनको मदमाती जान पड़ती है, पवन का हर झोंका सौरभ की सृष्टि करता है। ऐसे व्यक्तियों से मिलकर आप भी नई स्फुरणा और उत्साह अनुभव करते हैं और जीवन आपको सुंदर, सरस और स्वप्निल लगता है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५७ पृष्ठ-२६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी क्षमता को पहचानें

कठिन प्ररिश्रम से मनुष्य प्रकृति के संपूर्ण रहस्य एवं सृष्टि के समस्त भंडार प्राप्त कर लेता है। प्रकृति-विजय की कहानी इसी पुरुषार्थ एवं प्रयत्न की कुंजी में निहित है। दृढ़ आत्मविश्वास की तीखी जलधारा के सम्मुख बाधाओं की चट्टानें टूट-टूटकर बिखर जाती हैं और विजयश्री स्वयं वरण करती है। आज फिर आवश्यकता है कि हम अपनी क्षमता को पहचानें, अपनी भुजाओं के बल को नापें। सारा स्वर्ग का सुख हमें पृथ्वी पर ही मिल जाएगा, संसार हमसे प्रेरणा लेगा और उस प्रकाश में समस्त मानवता त्राण पा सकेगी। गीता में तो स्वयं भगवान कर्त्तव्य करने की प्रेरित करते हैं। कर्म पर आरूढ़ रहो, उसका फल मत सोचो। महान बनने का मार्ग कठिन एवं कंटकाकीर्ण होता है। जो हँसता हुआ, कष्टों को झेलता हुआ उस पर बढ़ चलता है, उसका मार्ग स्वयं खुल जाता है।

अपने जीवन-दीप को क्षुद्र दीपक की भाँति मत जलाओ, जो किंचित वायु-आंदोलन से कंपित हो उठे, वरन अपने जीवन-दीप की लौ को इतनी दृढ़ कर लो, जो भीषण-से-भीषण प्रलय की आँधी में भी अखंड जलती रहे। वह दीपमयी ज्योति आप के अंत:करण से निकलनी चाहिए, बस आपका भाग्य आपकी मुट्ठी में है, उसको आप जिधर चाहे मोड़ दें।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५७ पृष्ठ-२६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समय का औषध रूप

समय एक प्रवाह है। समय एक औषध है। बड़े-बड़े घाव समय की गति से भर जाते हैं। समय निरंतर बदलता जाता है। सदा एकसा नहीं रहता। गति ही जीवन का लक्षण है।

हम न किसी विषम स्थिति से चिंतित हों, न तनिक-सा लाभ होने से फूलकर प्रमाद में लीन हो जाएँ। अच्छी या बुरी जैसी भी हमारी स्थिति हो, हम उसी को सँभालें। विषम-से-विषम स्थिति भी एक दिन आनंद से आनंदमय स्थिति में बदलेगी।

हम भविष्य को ही सामने रखकर जीवन को धारण करते हैं। आगे आने वाला प्रत्येक दिन हमारे लिए एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर हो। दिन और रात शोकरूपी पाप को दूर करते हैं।

बुद्धिमानो! मन को दुखी नहीं करना चाहिए। दु:ख एक तीव्र विष है। समय स्वयं आपके दु:खों को दूर कर देगा। आपके कष्ट का समय स्वयं बीत जाएगा। जीवन पर जो काले-काले बादल छाए हुए हैं, वे वस्तु: हट जाएँगे। चारों ओर आनंद ही आनंद छा जाएगा। भविष्य उज्ज्वल है।

हे मानव! दीनता को मत अपना। तेरे भीतर जो धैर्य नामक गुण है, उसे धारण कर। स्मरण रखो—दु:ख के बाद सुख आया ही करता है। सुख हो या दु:ख, प्रिय हो या अप्रिय, जब-जब आए, तब-तब अपराजित हृदय से ही उसको भोगो।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९५७ पृष्ठ-२१-२२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुझाव देने से पूर्व सोचो

मनुष्यों में एक प्रवृत्ति यह पाई जाती है कि वे दूसरे के कामों में बहुत जल्दी हस्तक्षेप करने लगते हैं। यदि विचारपूर्वक देखा जाए, तो कोई अन्य मनुष्य जो कुछ कहता, करता या विश्वास करता है, उससे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं। तुम्हें उसकी बात पूर्णतया उसी की इच्छा पर छोड़ देनी चाहिए। तुम स्वयं अपने कार्यों में जिस प्रकार की स्वतंत्रता की इच्छा करते हो, वही दूसरों को भी देनी चाहिए।

वास्तव में किसी सज्जन व्यक्ति को कभी दूसरों के कार्यों और विश्वासों में कोई हस्तक्षेप न करना चाहिए, जब तक कि उनके किन्हीं कार्यों से सर्वसाधारण की प्रत्यक्ष हानि न होती हो। यदि कोई मनुष्य ऐसा व्यवहार करता है, जिससे कि वह अपने पड़ोसियों के लिए दु:खदायी बन जाता है, तो उसे उचित सम्मति देना कभी-कभी हमारा कर्त्तव्य हो जाता है, पर ऐसा मौका आने पर भी बात को बहुत नम्रता और सरलतापूर्वक प्रकट करना चाहिए।

अगर कोई व्यक्ति तुम्हारे विचार से कोई बड़ी भूल कर रहा है, तो तुम उसे एकांत में अवसर ढूँढ़कर यह बतला सकते हो कि 'आप ऐसा क्यों करते हो ?' संभव है कि ऐसा करने से वह तुम्हारी बात पर विश्वास कर सके, किंतु अनेक स्थानों पर तो ऐसा करना भी अनुचित रूप से हस्तक्षेप ही करना होगा। किसी तीसरे व्यक्ति के सामने तो उस बात की चर्चा कदापि नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह उसकी निंदा करना होगा, जो किसी सभ्य व्यक्ति को शोभा नहीं देता।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५८ पृष्ठ-५१

सुख के लिए चित्त-शांति

प्रत्येक मनुष्य का जीवन सर्वथा उसके अधीन है। जो कुछ दु:ख या सुख हमें प्राप्त होते हैं, उनमें कार्य-कारण का एक विशेष नियम रहता है। दु:खों का कारण वे स्वयं होते हैं। अगर मनुष्य जान-बूझकर वहम, अज्ञान, भूल, अंधकार और दु:ख की कोठरी में समस्त जीवन बैठा रहे और दु:ख की शिकायत करता रहे, तो क्या उसका दु:ख दूर हो जाएगा ? वास्तव में विचार किया जाए, तो सुख के लिए अपने चित्त की शांति और एकाग्रता की ही आवश्यकता है, दूसरी वस्तुओं का सहारा ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं।

एक मनुष्य ऐसा होता है कि जहाँ जाता है, वहाँ उसे आनंद ही मिलता है। प्रत्येक परिस्थिति उसको अनुकूल मालूम होती है। दूसरा मनुष्य ऐसा होता है, जिसे प्रत्येक वस्तु में बुराई-ही-बुराई नजर आती है। प्रत्येक वस्तु या मनुष्य के संपर्क में आकर वह खिन्न हो जाता है। वह जगत् को न रहने योग्य स्थान मानता है।

संसार में रहकर तरह-तरह के अभाव, विघ्न-बाधा, आधि-व्याधि के आक्रमण से बचना संभव नहीं, पर उस परिस्थिति में भी शांति और धैर्ययुक्त रहना हमारे हाथ में है।

बाहरी वस्तुओं के आधार पर सुख की आशा रखने वाला अवश्य धोखा खाता है। इसलिए सुखी रहना चाहते हो, तो अपने आप पर, अपने मन पर अधिकार रखना सीखो।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५८ पृष्ठ-१४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक साधना का मार्ग

भौतिक क्षेत्र का ध्येय एक ऐसा पदार्थ है, जिसका काल की दृष्टि से आदि और अंत होता है और जिसका उद्देश्य किसी अन्य वस्तु को प्राप्त करना होता है। आध्यात्मिक साधना का ध्येय ऐसी वस्तु की प्राप्ति होता है,जो सदा है, सदा रहेगी और इस समय भी हमारे ही अंतर में मौजूद है।

जीवन के आध्यात्मिक ध्येय को जीवन के भीतर ही ढूँढ़ना चाहिए, जीवन के बाहर नहीं। इसलिए आध्यात्मिक क्षेत्र की साधना ऐसी होनी चाहिए कि वह हमारे जीवन को उस जीवन के अधिकाधिक निकट ले जाए, जिसे हम आध्यात्मिक समझते हैं।

आध्यात्मिक साधना का ध्येय किसी सीमित अभीष्ट की प्राप्ति करना नहीं होता, जो कुछ काल स्थिर रहकर फिर मिट जाए वरन उसका उद्देश्य जीवन का ऐसा आमूल परिवर्तन होता है, जिससे कि वह सदा के लिए चिरस्थायी महान सत्य को प्राप्त कर सके।

कोई साधना तभी सफल समझी जा सकती है, जब वह साधक के जीवन को ईश्वरीय उद्देश्य के अनुकूल बनाने में समर्थ होती है और वह उद्देश्य होता है, जीवमात्र को ब्रह्मभाव की आनंदमय अनुभूति कराना। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने साधन को इस ध्येय के स्वरूप के सर्वथा अनुकूल बनाएँ। इस प्रकार साधन और साध्य में जितना ही कम अंतर होता है, साधना उतनी ही पूर्ण होती है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९५८ पृष्ठ-१५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सत्य व्यवहार की अपार शक्ति

मनुष्य अच्छी तरह जानता है कि असत्य अच्छा नहीं, फिर भी वह उसी में आसक्त रहता है। वह अपने दुर्गुणों को नहीं छोड़ सकता। वह अपने दुर्गुणों को नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील नहीं होता। इसका कारण क्या है ? अविद्या रहस्यमयी है। बुरे संस्कारों के कार्य रहस्यमय हैं। सत्संग तथा गुरुसेवा के द्वारा इस मोह को नष्ट किया जा सकता है।

हे मित्र! तुम स्वार्थ तथा लोभ के उन्माद में झूठे न गए हो। तुम नहीं जानते कि तुम वास्तव में क्या कर रहे हो ? तुम्हारी बुद्धि लोभाच्छन्न है। एक-न-एक समय तुम्हारी चेतना तुम्हें कोसेगी। पश्चात्ताप के कारण तुम्हारा हृदय रक्तरंजित होगा, तभी तुम अपने को शुद्ध बनाओगे। जप करो, भगवान का कीर्तन करो, उपवास रखो, अच्छे कर्म करो, गरीबों तथा बीमारों की सेवा करो और इस प्रकार अपने को शुद्ध बनाओ। तुम में सचाई आएगी, सचाई से तुम मुक्ति, शांति तथा पूर्णता प्राप्त करोगे।

हृदय की विशालता, सरलता, नम्रता, निर्दोषता, क्षमा, शुद्धता, स्थिरता, आत्मसंयम, अभय, अक्रोध, मनःशांति, अलोभ, मधुरता, लज्जा, धैर्य, अद्वेष, निरभिमानता इत्यादि सद्गुण सचाई से पूर्णतः संबंधित हैं। पाखंड, उद्दंडता, अभिमान, क्रोध, कटुता, अज्ञान, धोखेबाजी, कुटनीति, मिथ्याचरण, धूर्तता, संकीर्णता, क्षुद्रता ये सब झूठेपन से संबंधित हैं। अतः सद्गुणों को विकसित करो।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५८ पृष्ठ-४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मवाद और मानवीय प्रगति

इस बात पर भी कुछ विचार करना चाहिए कि अपनी परिस्थितियों, अभिरुचियों तथा अवसरों की ओर हमारा भाव कैसा होना चाहिए? एक बात तो स्पष्ट है कि ये परिस्थितियाँ हमको पूर्वजन्म की कमाई के फलस्वरूप प्राप्त हुई हैं। हमारे अपने ही किए कर्म इन रूपों में हमारे सामने आ उपस्थित हुए हैं। इनके बदलने का हमें क्या, किसी को अधिकार नहीं है। कोई साधु, फकीर, महात्मा अथवा देवता, कर्म की लकीर को नहीं काट सकते। तुलसीदास जी ने कहा है, 'विधि कर लिखा को मेटनहारा।' इनसे निपटारा, तो इन्हें भोगने के बाद ही हो सकता है, पर जिस प्रकार इनको भोगा जाएगा, उसी के अनुसार आगे आने वाले जन्म की परिस्थितियाँ बनेंगी। इसलिए दुःखदायक परिस्थितियों के आने पर रोना-पीटना बेकार है। उन्हें सहर्ष स्वीकार कर आनंदपूर्वक भोग लेना चाहिए।

यदि पूर्ण न्याय के साथ हमारा पुराना कर्म अपना फल चुकाने आता है, तो हमें दुखी क्यों होना चाहिए? वास्तव में यह खुश होने का अवसर है, क्योंकि इसके द्वारा कम-से-कम कुछ हद तक तो अपनी करनी का बोझ हमारे सिर से उतर जाता है। इसलिए पूर्व कर्मफल के बदले में प्राप्त सुख-दुःखों से जरा भी विचलित न होकर उन्हें सहर्ष स्वीकार कर इस जन्म में हमको अच्छा कार्य करना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार हमारा भविष्य अवश्य उज्ज्वल हो सकेगा।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५८ पृष्ठ-१६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य देवता बन जाएगा

प्रकृति स्वयं विकास में प्रयत्नशील है। सृष्टि का स्वयं विकास हो रहा है। मानव का भी विकास हो रहा है। विकास ही इस सृष्टि का विषय है। केवल हमें अपने प्रयत्नों द्वारा ईश्वर के उस महान कार्य में सहायता पहुँचानी है, ताकि विकास शीघ्र हो जाए। अभी तक विकास परदे के भीतर हो रहा था, पर अब जानते हुए एवं प्रकट रूप से होगा। परिणाम यह होगा कि विकास का समय कम हो जाएगा। जो काम पहले लाखों वर्षों में हुआ था, वह सदियों में ही हो जाएगा। मानव शनैः-शनैः विकास करके दिव्य जीवन की प्राप्ति करेगा। दिव्य जीवन की प्राप्ति होने पर अज्ञान नष्ट हो जाता है, केवल प्रकाश और ज्ञान ही रहता है। दिव्य मानव प्रकाश में रहता है और प्रकाश से प्रकाश की ओर गति करता है। दिव्य मानव की प्रगति के पश्चात मनुष्य की प्रकृति भी बदल जाएगी, उसकी निम्न प्रवृत्ति भी परिवर्तित हो जाएगी। मनुष्य का मन, प्राण, शरीर, सब परिवर्तित हो जाएँगे। रोग व वृद्धावस्था के लिए स्थान न रहेगा, यहाँ तक कि मृत्यु पर भी नियंत्रण हो जाएगा।

प्रश्न यह है कि हम इस पूर्ण विकास के पथिक बनने के लिए क्या करें? इसके लिए सबसे मुख्य बात तो यह है कि हम पूर्ण अभीप्सा तथा श्रद्धा के साथ दिव्य जीवन की कामना करें। अपनी निम्न प्रवृत्तियों को उच्च प्रवृत्तियों में स्थानांतरित करने का प्रयास करते हुए भगवान के हाथों में अपने को सौंप दें। वह अवश्य हमें उच्च से उच्चतर स्थिति में ले जाता रहेगा।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५८ पृष्ठ १०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम सत्य को जानो

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों की बुराइयों से दीन दशा को प्राप्त मानव समुदाय के उद्धार का यदि कोई उपाय है, तो वह प्रकृति की शरण ही है। हमें प्राकृतिक चिंतन और प्राकृतिक जीवन में लगना होगा। हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त 'सादा जीवन, उच्च विचार' वाले नियम को अनुभव करना होगा। सादा वस्त्र पहनो। प्रतिदिन भ्रमण करो। सिनेमा और उपन्यास-अध्ययन का परित्याग करो। सादा भोजन करो। परिश्रमी जीवन का महत्त्व समझो और उसे अपनाओ। अपनी इंद्रियों को वश में लाओ। जीवन में सद्‌गुणों का विकास करो। कीर्तन करो। उस प्रभु को प्रत्येक स्थान पर विराजमान होता हुआ अनुभव करो। दिव्य जीवन व्यतीत करना सीखो और आत्मभाव से समाज की सेवा करो। तुम्हारी मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय यही है। तुम्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यह एक ऐसी कुंजी है, जिससे परमानंद का द्वार आसानी से खोला जा सकता है।

जीवन में वास्तविक और स्थायी सफलता की प्राप्ति के कौन से उपाय हैं? कथनी से करनी कठिन है। अपने व्याख्यान के बीसवें अंश के समान बनना भी कठिन है। सिद्धांतों के ढेर से लाभ क्या यदि उसको जीवन में क्रियात्मक रूप न दिया! सिद्धांतों के ढेर में अभ्यास का एक तोला भी महत्त्व का है। इस लोक और परलोक के लिए क्रियाशील या कर्मयोगी बनो। तभी भौतिक और आध्यात्मिक सफलताएँ तुम्हारी चेरी बनेंगी।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५८ पृष्ठ १४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सुख-दुःख का आधार—ज्ञान

संसार में जितना भी दुःख, क्लेश, कलह, रोग, शोक, भय, दैन्य, दारिद्रय फैला हुआ है, उसका मूल कारण अज्ञान है। मनुष्य के हाड़-मांस के शरीर में अन्य वस्तुएँ पशुओं से भी घटिया हैं। उसकी एक ही विशेषता है और उसी के आधार पर वह विश्व का मुकुटमणि बना हुआ है, वह है—ज्ञान। इसी ज्ञानशक्ति के शुद्ध-अशुद्ध होने पर जीवन के भले-बुरे, सुखी-दुखी होने की आधारशिला निर्भर करती है। स्वर्ग और नरक कोई स्थान विशेष नहीं हैं, वरन मन की दो वृत्तियाँ हैं। दुर्भाग्ययुक्त मस्तिष्क सदा ईर्ष्या, द्वेष, चिंता, भय, शोक, दीनता और परेशानी में डूबा रहता है, जबकि सद्‌भावना को अपने स्वभाव में समुचित स्थान देने वाला व्यक्ति अपने चारों ओर प्रसन्नता, आत्मीयता, स्नेह, शिष्टाचार, सहयोग, उदारता का वातावरण देखता है और सुखी तथा संतुष्ट रहता है। यही स्वर्ग-नरक है। कुविचारों का फल कुकर्म और कुकर्मों का परिणाम दुःख, यही नरक का मार्ग है। सद्‌विचारों के फलस्वरूप सत्कार्य और सत्कर्मों का परिणाम सुख, यही स्वर्ग का सोपान है। स्वर्ग और नरक दोनों ही अपनी मुट्‌ठी में हैं, उन्हें कोई दूसरा देता नहीं, वरन हम स्वयं ही अपने लिए जिसे चाहते हैं, चुन लेते हैं।

जिनमें आत्मिक विवेक की समुचित मात्रा नहीं है, ऐसे धनी लोग तो गरीब लोगों से भी अधिक चिंतित और परेशान रहते हैं। मनोभूमि को ऊँची रखने वाले त्यागी लोग वस्तुओं का अभाव होते हुए भी स्वर्गीय शक्ति का रसास्वादन करते हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५८ पृष्ठ ३४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मनियंत्रण की शक्ति

नैतिकता का हेतु मनुष्य को अपने व्यापक स्वभाव का ज्ञान कराना है। नैतिकता अपने आप को वैयक्तिक जीवन से ऊपर उठाने का साधन है। नैतिकता का आधार प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ बताई जाती हैं। प्रवृत्तिवादी, मानव-आचरण को दूसरे प्राणियों के आचरण से भिन्न नहीं मानते। जिस प्रकार दूसरे प्राणियों के आचरण का मूल स्रोत उन प्राणियों की सुख की चाह और दुःख से बचाव है, उसी प्रकार मनुष्य के आचरण का भी मूल प्रेरक सुख की चाह और दुःख से बचाव होता है। इस प्रकार मनुष्य के आचरण को समझना मनुष्य स्वभाव की विशेषता को दृष्टि से ओझल करना है। मनुष्य विवेकयुक्त प्राणी है। मनुष्य का विवेक उसके व्यक्तित्व का प्रसार करता है। विवेक के कारण मनुष्य दूसरे व्यक्तियों के सुख में अपना सुख देखने लगता है और वह अपने आप की पूर्णता का तब तक अनुभव नहीं करता, जब तक दूसरे लोगों का उससे लाभ न हो।

पशुओं में अपने आवेश को रोकने की शक्ति नहीं रहती, उसे जिस ओर प्रकृति ले जाती है अर्थात जिस ओर उसकी मूल-प्रवृत्तियाँ प्रेरित करती हैं, उसी ओर वह जाने लगता है। मनुष्य अपने आप को रोक सकता है, वह जन्मजात प्रकृति के प्रतिकूल आचरण कर सकता है। वह अपने वैयक्तिक स्वार्थ का त्याग करके परमार्थ के काम में अपने आप को लगा सकता है। नैतिकता का आधार मनुष्य की यही आत्मनियंत्रण की शक्ति है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५८ पृष्ठ १५

नैतिकता का उदय

यदि मनुष्य के स्वभाव में नैतिकता न होती, तो वह समाज में कैसे आ जाती ? मानव-समाज व्यक्तियों का ही बना है। अतएव मानव-समाज में उस तत्त्व की उपस्थिति की संभावना नहीं, जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति में न हो। यह संभव है कि हम समाज के किसी विशेष व्यक्ति को बड़ा मानते हों, पर बड़े मानने की प्रवृत्ति जब तक हमारे स्वभाव में पहले से ही न हो, तब तक हम किसी को बड़ा और छोटा न मानेंगे। वास्तव में अपने आप के भाव ही हम समाज पर आरोपित करते हैं और फिर समाज से हम अपनी ही उधार दी हुई वस्तु वापस लेते हैं।

मनुष्य का मन एक भारी भूल-भुलैया है। मनुष्य अपने आप को भूला हुआ रहता है और अपने ही गुण अथवा दोषों को दूसरों पर आरोपित करके उनसे परिचित होता है। सत्य, सौंदर्य और नैतिकता का उदय मनुष्य के मन से ही होता है, पर वह यह नहीं जानता। वह इन्हें किसी बाह्य पदार्थ के ऊपर आरोपित करके पहचानता है। जिस प्रकार मनुष्य अपने चरित्र के दोषों को दूसरों पर आरोपित करता है, उसी प्रकार वह अपनी पूर्णता को भी दूसरों पर आरोपित करता है और जिस प्रकार अपने दोषों के लिए वह दूसरे व्यक्तियों को कारण मानता है, उसी प्रकार अपने आप में पैदा हुई खूबियों का कारण भी वह किसी बाह्य सत्ता को जान लेता है।

सच्ची नैतिकता की नीति प्रेम और आत्मसंतोष है। नैतिकता का हेतु मनुष्य का अपने व्यापक स्वभाव का ज्ञान कराना है। नैतिकता अपने आप को वैयक्तिक जीवन से उठाने का साधन है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५८ पृष्ठ १६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दानशीलता की भावना

कुपात्रों को धन देना व्यर्थ है। जिसका पेट भरा हुआ हो, उसे और भोजन कराया जाए, तो वह बीमार पड़ेगा और अपने साथ दाता को भी अधोगति के लिए घसीटेगा। भारतीय संस्कृति के अनुसार दान बहुत ही उत्तम धर्म-कार्य है। जो अपनी रोटी दूसरों को बाँटकर खाता है, उसको किसी बात की कमी नहीं रहेगी। जो अपने पैसे को जोड़-जोड़कर जमीन में गाड़ते हैं, उन पाषाण हृदयों को क्या मालूम होगा कि दान देने में कितना आत्मसंतोष, कितनी मानसिक तृप्ति मिलती है, आत्मा प्रफुल्लित हो जाती है।

मृत्यु बड़ी बुरी लगती है, पर मौत से बुरी बात यह है कि कोई व्यक्ति दूसरे को दुखी देखे और उसकी किसी प्रकार भी सहायता करने में अपने आप को असमर्थ पाए। नीतिशास्त्र एक स्वर से कहते हैं कि मनुष्य-जीवन में परोपकार ही सार है। हमें जितना भी संभव हो, सदैव परोपकार में रत रहना चाहिए। यह दान, अभिमान, दंभ, कीर्ति के लिए नहीं, आत्मकल्याण के लिए ही होना चाहिए। मेरे कारण दूसरों का भला हुआ है, यह सोचना उचित नहीं है। दान देने से स्वयं हमारी ही भलाई होती है। हमें संयम का पाठ मिलता है। यदि आप दान न भी दें, तो भी संसार का काम तो चलता ही रहेगा। परमात्मा इतना विपुल भंडार लुटा रहे हैं कि हमारी छोटी-सी सहायता के बिना भी जनता का कार्य चल ही जाएगा, लेकिन आपके हाथ से दूसरों के उपकार को करने का एक अवसर जाता रहेगा।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५८ पृष्ठ १९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

माँ की शरण में दिव्य शक्ति

आत्मा की पुष्टि तथा सूक्ष्मशरीर की पुष्टि केवल आत्मचिंतन, विचारशुद्धि, भावनाओं की पवित्रता तथा भगवन्नाम के रस से ही होती है। इन साधनों की प्राप्ति के लिए न किसी धन की आवश्यकता है और न किसी विशेष कर्म की। यदि आवश्यकता है, तो केवल अपने ध्यान को अंतर्मुखी करने की, आत्मनिरीक्षण और अपने मन में भगवन्नाम की कामना उत्पन्न करने की।

यह उपर्युक्त साधन तभी प्राप्त होते हैं, जब उस परमपिता सच्चिदानंद भगवान से सद्प्रेरणा मिलती रहे और सद्प्रेरणा को प्राप्त करने का अत्युत्तम और सुगम साधन है—भगवान की प्रेरक शक्ति माँ गायत्री की शरण लेना। हर मानव यदि यह समझ ले कि इतने साधन मैंने इस भौतिक शरीर की पुष्टि के लिए एकत्रित किए हैं, यदि एक साधन अर्थात गायत्री माता की शरण, अपने आंतरिक शरीर के लिए भी कर लूँ, तो भगवती माँ, उस परमपिता परमात्मा की प्रेरणा शक्ति, मानव को स्वयमेव अंधकार से निकाल देती है, निस्स्वार्थ कर देती है, जिससे आंतरिक जीवन स्वयमेव पुष्टि पाने लगता है और यह भौतिक शरीर तथा बाह्य जीवन (सांसारिक, व्यावहारिक) भी पुष्टि पाते हैं।

गायत्री उपासना प्रत्यक्ष तपश्चर्या है। इससे तुरंत आत्मबल बढ़ता है। गायत्री साधना एक बहुमूल्य दिव्य संपत्ति है। इस संपत्ति को इकट्ठी करके साधक उसके बदले में सांसारिक सुख एवं आत्मिक आनंद भली प्रकार प्राप्त कर सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५८ पृष्ठ १३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान और कर्म का समन्वय ही मोक्ष-मार्ग

छोटे-छोटे बंधनों को पार करता हुआ ही मनुष्य बड़े बंधनों को पार कर सकता है। उन्नति के लिए मनुष्य ज्ञान और कर्म को इस प्रकार काम में लाए, जिससे लोक के छोटे-मोटे बंधन बराबर शिथिल होते रहें। ऐसा होने पर ही लोकोन्नति, परलोकोन्नति का साधन बना करती है और मनुष्य इन छोटे-छोटे बंधनों को दूर करते हुए इस योग्य हो जाता है कि बड़े-से-बड़े मौत के बंधन को भी दूर कर सके और ऐसा हो जाने पर वह अपने परलोक को भी उन्नत बना लिया करता है।

यहाँ एक बात और समझ लेनी चाहिए कि मोक्ष अथवा ईश्वरप्राप्ति मनुष्य को निम्न दो बातें प्राप्त कराया करती है—(१) मौत के बंधन से छुटकारा, और (२) आनंद। इनमें से पहली बात निर्गुण और दूसरी बात सगुण उपासना का फल हुआ करती है। जब मनुष्य ईश्वर के निर्गुणता-प्रदर्शक गुणों का चिंतन करता है कि ईश्वर अजर है, अमर है, अभय है इत्यादि तो इससे उसके भीतर भी निर्गुणता आती है। निमित्त से ही क्यों न हो, अजर, अमर, अभय हो जाया करता है। जब वह ईश्वर की सगुणता का चिंतन करता है कि ईश्वर सच्चिदानंद है, न्यायकारी है, दयालु है इत्यादि तो उसके भीतर नैमित्तिक रीति से ही क्यों न हो, सच्चिदानंद आदि गुणों का संयोग संबंधवत समावेश हो जाया करता है और इस प्रकार मनुष्य को मोक्ष के दोनों पहलू प्राप्त हो जाते हैं। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५८ पृष्ठ १९*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ और लोक-कल्याण

तीर्थ अथवा क्षेत्र का अर्थ होता है—पवित्र स्थान, जहाँ मनुष्य को सद्‌बोध द्वारा उद्धार मार्ग बताया जाता हो। क्षेत्रज्ञ अर्थात जीवात्मा के विकास का विचार जहाँ किया जाता है, वही है क्षेत्र। इस व्याख्या के अनुसार ध्यान, प्रार्थना आदि मानव-विकास तथा सेवा के कार्यक्रम जहाँ सदैव चलते हैं, वही क्षेत्र है। इस प्रकार हर गाँव तीर्थ बन सकता है, हर मकान क्षेत्र के रूप में परिवर्तित हो सकता है। जिस कुटुंब में आत्मविकास का प्रयत्न चल रहा हो, वह तीर्थ है और जहाँ कुटुंबी जनों में झगड़े चल रहे हों, वह राक्षसों का अड्डा है। यह राक्षसी वृत्ति आजकल बड़े-बड़े तीर्थों में भी घुस बैठी है। इसलिए हमको सदैव यह याद रखना चाहिए कि जो मनुष्य को पावन करे, वही तीर्थ है। तीर्थ-क्षेत्र के पावन दृश्य की याद दिलाते हुए उसका महत्त्व गाँव वालों को समझाना और उन्हें अपने गाँव में ही तीर्थ की आदर्श पवित्रता लाने को प्रवृत्त करना, यही तीर्थ-पूजा का महत्त्व मानना चाहिए।

ईश्वर सभी जगह एक समान है, इसलिए हमें अपना हृदय भी सबके लिए समान बनाना चाहिए। ऐसे सात्विक विचार, ऐसी सद्‌भावना, यही समस्त तीर्थों से बढ़कर पावन तीर्थ है। इस भावना के बिना बड़े-बड़े तीर्थों में जाकर भी कुछ हाथ नहीं लगेगा। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५८ पृष्ठ १०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानसिक विकास और आत्मज्ञान

महान पुरुष इसलिए भी काम करते हैं, जिससे कि उनको देखकर दूसरे लोग उसी प्रकार के काम में लग जाएँ और इस तरह के काम में लगकर वे आत्मविकास करें। जो लोग सबके हित में अपने हित को देखते हैं और जो लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर कार्य करते हैं, उनको किसी प्रकार का मोह अथवा शोक नहीं होता। वे मृत्यु से नहीं डरते । वे सदा आनंद की ही स्थिति में रहते हैं—

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवाभिजानत,
तत्र को मोह कः शोक एकत्वमनुपश्यति।

—ईशोपनिषद्

मानसिक विकास का अंतिम लक्ष्य अपने आप को उस महान तत्त्व से मिलाना है, जिससे सभी प्राणी उत्पन्न हुए हैं, जिसमें वे रहते हैं और जिसमें अंत में मिल जाते हैं। सभी नदियाँ सागर से अपना जल अर्थात जीवन प्राप्त करती हैं, सागर की हो ओर प्रगति करती हैं और सागर में ही समाप्त हो जाती हैं। जब मनुष्य अपने व्यक्तित्व को समाजरूपी सागर में विलीन करने का लक्ष्य बना लेता है, जब वह समाज के सुख में अपने सुख को देखने लगता है और जब उसके सभी विचार और क्रियाओं का लक्ष्य समाज का हित बढ़ाना होता है, तभी हम उसे सुविकसित व्यक्तित्व का मानव कह सकते हैं। संसार की अच्छी शिक्षा का अंतिम लक्ष्य ऐसे ही सुविकसित व्यक्तित्व का निर्माण करना है। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५८ पृष्ठ-१८*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने आप को पहचानो

जिसने अपने को पहचाना है, उसने निस्संदेह अपने प्रभु को भी पहचान लिया है तथा प्रभु भी कहते हैं कि मैंने अपने ही लक्षण जीवों के हृदय में प्रकट किए हैं, जिससे कि वे अपने को पहचानकर फिर मुझे भी पहचानें। सो, भाई! तेरे आस-पास ऐसा और कोई नहीं है, जिसे पहचानना तेरे लिए अपने आप को पहचानने से अधिक आवश्यक हो। पहले जब तू अपने को भी नहीं पहचानता, तो और किसी को कैसे पहचानेगा? यदि तू कहे कि मैं अपने को तो पहचानता हूँ, तो तेरा यह कथन ठीक नहीं, क्योंकि जिस रूप में तू अपने को पहचानता है, तेरी वह पहचान श्री भगवान को पहचानने की कुंजी नहीं है। तू जो अपने को हाथ, पाँव, त्वचा एवं मांस आदि से युक्त स्थूलशरीर समझता है तथा भूखा होने पर आहार ही इच्छा करने वाला, क्रोधित होने पर लड़ने-झगड़ने वाला और कामातुर होने पर भोग-वासना से व्याकुल और उसी संकल्प में डूब जाने वाला जानता है, सो इस प्रकार की पहचान में तो पशु भी तेरे समान हैं। अतः तुझे यह वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि 'मैं क्या वस्तु हूँ' कहाँ से आया हूँ, किस जगह जाऊँगा, किस निमित्त से मैं संसार में आया हूँ, किस कार्य के लिए भगवान ने मुझे उत्पन्न किया है, मेरी भलाई किसमें है और क्या मेरा दुर्भाग्य है? इसके अतिरिक्त यह भी देखना चाहिए कि तेरे भीतर जो दैवी और पाशविक वृत्तियों का संगठन हुआ है, उनमें किस प्रकार की वृत्तियों की प्रबलता है तथा साथ ही यह भी पहचान कि तेरा अपना स्वभाव क्या है और परस्वभाव क्या है?

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५८ पृष्ठ-२६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की सार्थकता

मनुष्य जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं और उस परम प्रकाशमय प्रभु की कृपा का साक्षात अनुभव होता है, जो जीव को पतन के गर्त्त में गिरने से रोककर सत्य की ओर ले जाता है। ईश्वरीय और प्राकृतिक नियम ही सत्य है और चराचर जगत् इन्हीं नियमों में स्थित है। इन्हीं नियमों के अनुसार चलने का नाम जीवन और इनसे विपरीत चलने का नाम मृत्यु है। देवताओं ने सत्य के मार्ग पर चलकर ही अमरत्व प्राप्त किया। जो इससे विपरीत मार्ग पर चलता है, वही बार-बार मरता है और मृत्यु के पाश में जकड़ा हुआ दुःख रूप नरक में गिरता है।

मनुष्य को निश्चित रूप से यह जान लेना चाहिए कि कुटिल असत्य से भरे जीवन का नाम मृत्यु और सरल, सत्य और विवेकयुक्त जीवन का नाम ही अमरत्व है।

मनुष्य का जीवन वास्तव में सुख का स्रोत है, पर हमारे अज्ञान से दुःख की उत्पत्ति होती है और उससे यह स्रोत रुक जाता है, जीवन में प्रवाह नहीं रहता। शिथिल, प्रगतिहीन और निस्तेज होकर जीना केवल सिसकते हुए साँस लेना है, उसमें जीवन-तत्त्व नष्ट हो जाता है।

जिस सत्य से सारा संसार ओत-प्रोत है, जिसके टूटते ही जीव का पतन हो जाता है, उस सत्य को जाने और व्यवहार में लाए बिना जीवन सार्थक नहीं हो सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५८ पृष्ठ-३०

प्रेमी और धनवान बनें

प्रेममय जीवन ही सुख है। सच्चा सुख चाहिए, तो प्रत्येक के प्रेमी बनो। प्रेमी बनने से आपका वहाँ आदर होगा। जब आपका आदर होगा, तो आप सुख का अनुभव करेंगे। इस प्रकार यदि आप प्रेम का प्रचार करते रहे, तो आप महासुख का अनुभव करेंगे। यदि आपने यह महासुख पा लिया, तो आनंद आपके पास स्वयं चला आएगा, क्योंकि सुख में ही आनंद और आनंद में ही शांति है। प्रेम से ही प्रेम बढ़ता है और द्वेष करने से द्वेष बढ़ता है। प्रेम करने से ही एकता बढ़ती है और द्वेष करने से फूट। इसी फूट के कारण ही हमारा देश परतंत्र हुआ था।

ईश्वर उसकी मदद करता है, जो अपनी मदद आप करता है। लक्ष्मी उद्योगी पुरुषों को प्राप्त होती है, भाग्य का रोना रोने वालों को नहीं। अतः आप अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील और उद्योगी बनिए। धनवान बनने का मूल तत्त्व है—परिश्रम करो, अपनी योग्यता बढ़ाओ, मितव्ययी बनो, ईमानदारी से दृढ़ नाता जोड़ो, छोटे से छोटा काम करने में न हिचकिचाओ, सुशिक्षित बनो, आलस्य की मस्ती छोड़ो और हृदय में कुछ उमंगें पैदा करो। यही तत्त्व आपको धनवान बनने में सहयोग दे सकते हैं। हमारी दीनता के क्या कारण हैं ? इस प्रश्न को भी सोचो और जो भी कारण हों, उन्हें नष्ट करने का सदा प्रयत्न करो।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५८ पृष्ठ-३१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य बनकर जिओ

संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। पहली श्रेणी के श्रेष्ठ पुरुष वे होते हैं, जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को तिलांजलि देकर निरंतर प्राणिमात्र के कल्याण में लगे रहते हैं अर्थात अपने स्वार्थ को दूसरों के स्वार्थ के साथ मिला देते हैं। दूसरी श्रेणी के पुरुष वे होते हैं, जो अपनी व्यक्तिगत, पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन जुटाने के साथ-साथ समाज-कल्याण के परोपकारी कार्यों में लगे रहते हैं। तीसरी श्रेणी के नीच पुरुष वे होते हैं, जो अपने स्वार्थों के लिए दूसरों का गला घोंटते हैं और झूठ, छल, कपट, बेईमानी, घूस आदि घृणित कार्यों को अपनाने में संकोच नहीं करते । वे दूसरों के हानि-लाभ पर कोई ध्यान नहीं देते। अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे नीच से नीच कार्य करने पर उतारू हो सकते हैं। विवेक बुद्धि को भट्ठी में झोंककर सांसारिक उन्नति करना उनका जीवन-लक्ष्य होता है। ऐसे मनुष्य पशु श्रेणी में गिने जाते हैं।

मनुष्य तो वह है, जो मनुष्य के लिए जीता है। जो केवल अपने लिए जीता है, अपने लिए सोचता है, केवल अपने लिए पकाता है, वह पशु है, चोर है, मनुष्य कहलाने योग्य नहीं।

पशुता से मनुष्यता व देवत्व की ओर बढ़ने की पहचान यही है कि उसने कहाँ तक अपने स्वार्थों को समाज के स्वार्थों के साथ मिला दिया है।

मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ दूसरों की उन्नति के लिए जीवन भर प्रयत्न करता रहे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९५८ पृष्ठ-१८

समाज का ऋण चुकाइए

हम क्यों पैदा हुए हैं, उसका उत्तर शायद हम न दे सकें, किंतु जब पैदा हो गए हैं, तो हमें जीवन में क्या करना चाहिए, इस प्रश्न पर अब आसानी से सोचा जा सकता है। जब हम इस समाज के सदस्य हैं, तो हमें अपनी सदस्यता का चंदा देना चाहिए, जो हमारा अनिवार्य कर्त्तव्य है। समाज को यह चंदा केवल धन के रूप में नहीं दिया जा सकता। इस चंदे के रूप में तो हमें अपनी प्रतिभा, परिश्रम और त्याग के बल पर समाज को ऐसी चीज देनी चाहिए जिससे समस्त समाज का जीवन भविष्य में सुखमय और उन्नतिशील बन सके।

अपने समस्त जीवन के कार्यकलापों का सिंहावलोकन करके यदि उसे यह अनुभव होता है कि उसके जीवन से समाज को कोई हानि नहीं हुई, लाभ ही हुआ है, तो उसका जीवन सार्थक है। यदि किसी की मृत्यु पर लोग संतोष की सांस लेने के बजाए, एक ठंढी आह भरकर कहें कि एक भला आदमी चला गया, तो समझना चाहिए कि वह अपना कर्त्तव्य पूरा करके गया है। कौन कितना करता, यह साधनों, सामर्थ्य और परिस्थितियों पर निर्भर है। अपने साधनों और सामर्थ्य के अनुसार किसी रूप में समाज की सेवा करके आप भी अपने समाज के ऋण से उऋण हो लीजिए, ताकि अंत समय में आप यह संतोष प्राप्त कर सकें कि आपने अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९५९ पृष्ठ-३५-३६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता का रहस्य

जीवन की उपयोगिता केवल नैतिक मूल्यांकन द्वारा ही निर्धारित की जा सकती है। एक बार निश्चय कर लीजिए कि जब आपकी अंतरात्मा किसी कार्य को उचित बतलाए, तो अनिश्चित और अकर्मण्य नहीं रह जाएँगे, बल्कि उस पर अग्रसर होंगे। समझ लीजिए कि एक मानव को दैवी-वरदान की जितनी आशा हो सकती है, उसकी कुंजी उसे प्राप्त हो गई है।

अपने कर्त्तव्य से बच निकलकर या उसकी अवहेलना करके आप अपने सुख की वृद्धि नहीं कर सकते। बुद्धिमान और सज्जन भीरुताजनित भयों से नहीं डरते और जिस ओर उनका कर्त्तव्य संकेत करता है, विश्वसापूर्वक बढ़ते चले जाते हैं। कर्त्तव्य के आह्वान पर परमात्मा में विश्वास रखते हुए वे हजारों खतरों का मुकाबला करते हैं और उन पर विजय पाते हैं।

सच्ची सफलता के लिए केवल एक वस्तु की आवश्यकता है। धन की नहीं, शक्ति की नहीं, कुशलता की नहीं, ख्याति की नहीं, स्वतंत्रता की नहीं, स्वास्थ्य की भी नहीं अपितु एकमात्र चरित्र की पूर्ण अनुशासित इच्छाशक्ति की। केवल वही हमारी सच्ची सहायता कर सकती है और यदि हम इस अर्थ में सफल नहीं हो सके हैं, तो हमारा जीवन निष्फल रहा। हमें ऐसा कार्य कदापि न करना चाहिए, जिससे हमें लज्जा आए। अपने जीवन-निर्माण के हेतु सदा ऊपर की ओर देखो, नीचे को नहीं। जो ऊपर उठना नहीं चाहता, वह नीचे की ओर खिसकता है। जो आत्मा उड़ने की हिम्मत नहीं करती, रसातल में गिरती है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९५९ पृष्ठ-३३

हम महानता की ओर क्यों न चलें ?

लोग बुराई और भलाई के बारे में अपने अलग-अलग दृष्टिकोण बनाते हैं और चाहते हैं कि सभी लोग उस ढंग पर चलें। एकदूसरे में दोष देखने का यही कारण है।

दूसरों के संबंध में बुरा कहने वाला मैं कौन हूँ ? दूसरों पर बुरा होने का दोष मैं कैसे मढ़ सकता हूँ, जब मैं स्वयं पाप से दूर नहीं हूँ। ऐ मेरे मन! दूसरों के दोष निकालने से पहले अपने को मिलनसार और निरभिमानी बना। दूसरों के दोष और बुराइयों को देखने से पूर्व अपनी बुराइयों और दोषों को देखो। कबीर ने बहुत सुंदर कहा है—

बुरा जो देखने मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ सा बुरा न कोय॥

पवित्र हृदय वाला व्यक्ति दूसरों में बुराई देखना छोड़ देता है। दूसरों से घृणा करना, अपने आप को धोखा देना है। प्रेम करना, स्वयं को प्रकाश में लाना है। कोई भी व्यक्ति अपने आप को व दूसरों को ठीक प्रकार से तब तक नहीं समझ सकता, जब तक घृणा को त्यागकर प्रेम न करने लगे। जो व्यक्ति अपने ही मन को ग्रहण करने योग्य समझता है, वह उन्हीं व्यक्तियों से प्रेम करता है जो उसके विचारों के अनुकूल होते हैं, किंतु जो उसके विचारों के प्रतिकूल चलते हैं, उनसे वह घृणा करता है।

वास्तव में आगे बढ़ने की कला को उसी ने समझा है, जिसने अपने हृदय को उपर्युक्त प्रकार से मोड़ लिया है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९५९ पृष्ठ-१२-१३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इच्छाओं का त्याग कीजिए

स्वार्थपरता का अनिवार्य परिणाम असंतोष और निराशा है, क्योंकि इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। इसलिए सुख की तपस्या का एकमात्र उपाय इच्छा-त्याग है। बाहरी दमन के द्वारा इच्छाओं पर पूर्ण विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, वे केवल ज्ञान के द्वारा ही जड़ से मिटाई जा सकती हैं। यदि तुम विचारों की गहराई में डूबो और थोड़ी देर के लिए गंभीरतापूर्वक विचार करो, तो तुम्हें इच्छाओं का खोखलापन मालूम हो जाएगा। सोचो कि इतने वर्षों में तुम्हें कितना सुख मिला तथा कितना दुःख मिला? जीवन में तुमने जो भोग किया, वह आज शून्य के बराबर है और जीवन में तुम्हें जो कष्ट मिला, वह भी कुछ नहीं के समान है। वास्तव में वे दोनों ही भ्रम थे। सुखी होने का तुम्हें अधिकार अवश्य है, लेकिन तो भी तुम स्वयं वस्तुओं की चाह करके अपने लिए दुःख पैदा करते हो। चाह या इच्छा सदैव अशांति का कारण होती है। जिस वस्तु की तुमने चाह की, यदि वह तुम्हें न मिली, तो तुम निराश होते हो। यदि वह तुम्हें मिली, तो तुम उसे और भी अधिक परिणाम में चाहते हो और इस कारण दुखी होते हो। इसलिए तुम यह कहो कि मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, इससे तुम सुखी हो जाओगे। इच्छाओं या चाहों की असारता की अनुभूति तुम्हें अंत में ज्ञान प्रदान करेगी। यह आत्मज्ञान इच्छाओं से तुम्हें मुक्त करेगा और इस प्रकार स्थायी सुख का पथ तुम्हें मिल जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५९ पृष्ठ-७-८-९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन में निर्भीकता आवश्यक है

भगवान कृष्ण ने भी गीता में दैवी-संपत्तियों का वर्णन करते हुए 'निर्भयता' को सबसे पहले रखा है। इससे उनका अभिप्राय यह है कि बिना अभय के दूसरी संपत्तियों का मिलना असंभव है, क्योंकि निर्भयता ही तो वह शक्ति है जो मनुष्य के आत्मबल को बढ़ाती है।

जो मनुष्य अपने को शरीर-भाव से ऊँचा उठा लेता है, आत्मबल व निर्भयता का अमृत पान करता है, वह अपने को अजर-अमर मानता है। यदि रोग आ जाए तो वह यह समझता है कि शरीर के क्षीण होने से उसकी क्षति होने वाली नहीं है। चोरी हो जाए तो वह रोता नहीं, मकान में आग लग जाए तो वह चिल्लाता नहीं, व्यापार में घाटा पड़ जाए तो वह चिंतित नहीं होता। विपत्तियों को हँसी-खुशी से झेलता है। आर्थिक लाभ के लिए वह झूठ, छल, कपट, बेईमानी को नहीं अपनाता। इसका कारण यह है कि कुछ चला जाए तो वह उसे अपनी हानि नहीं समझता और आ जाए तो उसे लाभ नहीं मानता। सार यह कि जो व्यक्ति आत्मा की अमरता का विचार करता रहता है, वह सांसारिक भयों से मुक्त हो जाता है। डाकू उसे डरा नहीं सकते, बलवान पुरुष उसे भयभीत नहीं कर सकते। उसके शरीर व मन स्वस्थ रहते हैं। इसलिए हमें भी इसी मार्ग का अनुकरण करके अपने जीवन को सुखी बनाना चाहिए। निर्भयता जीवन-विकास का एक आवश्यक अंग है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५९ पृष्ठ-२०-२२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुकरणीय जीवन जिएँ

वह जीवन ही क्या, जिसमें परमार्थ के लिए कोई स्थान न हो। वह मनुष्य ही क्या, जो अपने पीछे कुछ आदर्श और अनुकरणीय उदाहरण न छोड़ जाए। मानव-जीवन की जिम्मेदारी महान है। केवल आजीविका-उपार्जन करते रहना, यह तो निर्जीव जीवन है। जिनके भीतर कुछ चेतना, जाग्रति एवं ज्योति होती है, उनका जीवनक्रम केवल साँसें पूरी करने में समाप्त नहीं होता। उनकी अंतरात्मा स्वयं ऊँची उठती है और दूसरों को ऊपर उठाने में अपने लक्ष्य की पूर्ति अनुभव करती है।

अधिक धनी-मानी बनने के लिए कौन प्रयत्न नहीं करता? यह तो चींटी और दीमक भी करती हैं, पर धन्य उसी का जीवन है, जिसने अपनी अंतरात्मा के सद्गुणों को विकसित करने में सफलता पाई। जिसने अपने समाज को, राष्ट्र को, विश्वमानव को अधिक गौरवान्वित, अधिक सुख-शांतिमय परिस्थितियों में पहुँचाने का प्रयत्न किया। यही जीवन-दर्शन है। जिसने इस तथ्य को समझा और व्यावहारिक जीवन में क्रियान्वित किया, वस्तुतः वही सच्चा बुद्धिमान है। यों हर आदमी अपने को चुतर और बुद्धिमान कहता है, पर इस क्षणभंगुर शरीर के समाप्त होने पर जिन गतिविधियों के लिए आत्मा को पश्चात्ताप नहीं प्रसन्नता अनुभव हो, वस्तुतः सच्ची बुद्धिमत्ता वही है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९५९ पृष्ठ-३१-३२

www.awgp.org

मानव जीवन की महानता एवं उपयोगिता

उस सृष्टि-निर्माता की कलाकृति-जीवन की शोभा को देखने के लिए, लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, यह आवश्यक है कि एक पथिक की भाँति मार्ग के सुख-दुःखों को प्रधानता न देकर उन्हें सहन करते हुए अपने गंतव्य स्थान की ओर चलते रहना ही हमारा ध्येय हो। साथ ही मार्ग के सुख-दुःखों के कारण देह-बुद्धि को अपने विवेक एवं ज्ञान से समाप्त करना होगा। हमें यह समझना चाहिए कि हम शरीर नहीं हैं। हम मन एवं बुद्धि नहीं हैं, प्रत्युत इनसे परे जो है, वही हम हैं। जिस आत्मा को सर्वत्र पसारा है, वही तो हम हैं, क्योंकि ज्यों ही आत्मा इस शरीर को छोड़ती है, बुद्धि का व्यापार खत्म हो जाता है। शरीर भी अपनी क्रियाशीलता समाप्त कर देता, केवल बच रहता है, पंचतत्त्वों को मिश्रण। जिसकी तुष्टि एवं पुष्टि में ही जीवन बिताया, उस मृतशरीर की यह गति, कि उसका स्पर्श भी लोग घृणित समझें। इस नश्वरता का अनुभव प्रायः हम करते ही रहते हैं, फिर भी हमारा ध्यान वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने की ओर नहीं मुड़ता। आत्मा के वास्तविक स्वरूप की, सौंदर्य की, जीवन की महत्ता की जानकारी प्राप्त करने की हमारी इच्छा ही नहीं होती। यही कारण है कि हम वास्तविक ज्ञान से परे हैं, सच्चिदानंद की आनंद एवं सौंदर्य से पूर्ण सृष्टि को नारकीय रूप में अनुभव करते हैं। दुःख, अभाव, कठिनाइयों एवं विपदा से ही जीवन को दूषित बना रहे हैं, यह हमारी ही भूल है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५९ पृष्ठ-८-९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी इच्छाशक्ति को बढ़ाइए

'जहाँ चाह है वहाँ राह है' यह एक पुरानी कहावत है, परंतु इसमें बड़ा बल है। मनुष्य की जैसी अच्छी-बुरी इच्छा होती है, वह उसी के अनुसार अपनी समस्त शक्तियों को लगा देता है और उसमें सफल होता है। मनुष्य की जैसी इच्छा होती है, वह वैसा ही बनता जाता है। कवि, लेखक, वक्ता, वकील, डाक्टर, इंजीनियर आदि बनने की इच्छा रखने वाला, अपनी क्रियाओं को उसी दिशा में मोड़ देता है और अपनी सारी शक्तियों को एकाग्र करके उसमें लगा देता है, परिणामस्वरूप वह वही बन जाता है।

हमारा भविष्य हमारे अपने हाथों में है। उसको बनाने वाले हम स्वयं ही हैं। यही समय है, जब हमें अपने मार्ग का निश्चय कर लेना चाहिए, नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। हम स्वयं अपने भविष्य को अंधकारमय बनाते हैं। इच्छाशक्ति एक ऐसी वस्तु है, जो आसानी से हमारे स्वभाव में आ जाती है। इसलिए दृढ़ इच्छा करना सीखो और उस पर दृढ़ बने रहो। इस तरह से अपने अनिश्चित जीवन को निश्चित बनाकर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करो। मनुष्य को पिछड़ा हुआ और गिरी हुई परिस्थितियों में रखने वाली कोई वस्तु है, तो वह इच्छाशक्ति का अभाव है, जिसे हमें दूर करना है। यदि हमारी शक्तियों गुप्त पड़ी रहेंगी, तो हम दूसरों के लिए कुछ करने में कैसे समर्थ होंगे? पहले हमें अपनी इच्छाशक्ति बढ़ाना चाहिए, तभी हमें संतोष होगा कि यहाँ हम मुर्दों की तरह नहीं, बल्कि जिंदों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९५९ पृष्ठ-४१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वार्थ-भाव को मिटाने का व्यावहारिक उपाय

सहृदय और स्नेहशील व्यक्तियों के सीखने के लिए यह एक कठिन शिक्षा है—परस्पर प्रेम रखना, किंतु इसे सीखना ही पड़ेगा। सीख लेने के पश्चात यह सुख और शांति लाती है। हम जिनके संपर्क में आते हैं, उन सब पर हमें प्रेम रखना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि हम प्रत्येक व्यक्ति से एक बराबर प्रेम रखें। यह आशा एक साधारण मनुष्य से तो क्या बड़े से बड़े महापुरुष से भी नहीं रखी जा सकती। भगवान राम हनुमान जी पर जितना स्नेह रखते थे, उतना सुग्रीव, अंगद, जामवंत आदि पर नहीं। इसलिए किसी मनुष्यशरीरधारी से यह आशा करना तो निरर्थक है कि सबके साथ समान प्रेम रखेगा।

यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने माता-पिता, पत्नी या संतान के प्रति जैसी भावना रखते हैं, क्रियात्मक रूप से हमें सबके प्रति वैसी ही सदिच्छा और प्रेमभावना रखनी चाहिए। जिस क्षण कोई मनुष्य प्रेम के बदले की माँग पेश करता है, उसी समय मानो वह अपना अधिकार प्रतिपादन करने लगता है और इससे स्वार्थयुक्त इच्छाओं की सृष्टि होती है।

प्रेम के निस्स्वार्थ हुए बिना मनुष्य ईर्ष्या, स्पर्द्धा एवं दूसरी अनेक इच्छाओं में उलझ जाता है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९५९ पृष्ठ-८-९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गृहस्थी में रहकर ही मुक्ति प्राप्त कीजिए

अगर दानशीलता, तप और सद्भावना का पालन करते हुए हम मुक्ति के समीप नहीं पहुँचते, तो समझ लेना चाहिए कि हमने इन कार्यों का वास्तविक रूप में पालन नहीं किया।

भविष्य में मुक्ति प्राप्त होने के लिए बंधनों पर ध्यान मत दो। तुम इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य रखो, जिससे मुक्त होकर जीवनरूपी घोड़े पर सवार होने का आनंद प्राप्त कर सको। खच्चर पर लदे हुए मूर्ख की तरह समस्त जीवन व्यतीत कर देने से क्या लाभ है ? मुक्त-पुरुष और मुक्त-स्त्रियाँ ही हँसते-खेलते अपने राष्ट्र और समस्त मनुष्य जाति को मुक्त करेंगी।

यदि तुम मुक्ति के लिए योजनापूर्वक और उत्साहपूर्वक प्रयत्न करो और फिर भी इस जीवन में मुक्ति न मिले, तो कम-से-कम वह पहले की अपेक्षा अधिक समीप तो आ ही जाएगी। तब तुम्हारी आगामी पीढ़ी उसे और भी समीप पाएगी। इसके परिणामस्वरूप उससे आगामी पीढ़ी तो मुक्ति पर सवार हो ही जाएगी। उसमें आवश्यकता इसी बात की है कि तुम अपनी आगामी संतान में मुक्ति के लिए बेचैनी का भाव पैदा कर दो। अगर तुम ऐसा कर सको, तो समझ लो कि तुमने मुक्ति प्राप्त कर ही ली और कोई तुम्हें उससे वंचित नहीं कर सकता।

चूँकि मुक्ति और बंधन मन पर निर्भर करता है, इसलिए राग-द्वेष व आसक्तिरहित फल की आशा न रखकर, गृहस्थ कार्यों को निष्ठापूर्वक पालन करते हुए कर्म-बंधन से छूट सकते हो।

www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९५९ पृष्ठ-१०

संतान के लिए विरासत क्या छोड़ें

बालक अपने पिता, पितामह आदि पूर्वजों की शारीरिक ही नहीं मानसिक विरासतें भी अपने साथ लेकर आते हैं। जो त्रुटियाँ और दुर्बलताएँ पूर्वजों ने जीवन भर के कुकर्मों के फलस्वरूप पाई थीं, वे इन बालकों को जन्म से अनायास ही उपलब्ध रहती हैं। लोग अपने बच्चों के लिए बहुत धन, चलता हुआ व्यापार या मकान-जायदाद छोड़ जाना चाहते हैं, ताकि वे सुखपूर्वक अपना जीवनयापन कर सकें। वे यह भूल जाते हैं कि जो दुर्गुण हम उन्हें विरासत में दे रहे हैं, वे इतने भयावह हैं कि उनकी अग्नि में वह धन-संपत्ति कुछ ही दिनों में जल-भुनकर भस्म हो जाएगी। धन से कोई व्यक्ति तभी लाभ उठा सकता है, जब वह उसे बढ़ाने, सुरक्षित रखने एवं सदुपयोग करने की कला से भली प्रकार विज्ञ हो।

सचाई यह है कि संतान के लिए धन-जायदाद छोड़ने की अपेक्षा, उनके अंत:प्रदेश में शांत-चित्त और स्वस्थ भावनाओं की स्थापना अधिक महत्त्वपूर्ण है, पर यह सब तभी संभव है, जब माता-पिता आत्मनियंत्रण स्वीकार करें, सद्विचार एवं सदाचार का अनुकरण करें। बालकों के लिए इस मानसिक संपत्ति को यदि कोई माता-पिता छोड़ सकें, तो यह उनके चिरस्थायी स्वास्थ्य, नीरोगता, मानसिक-सद्गुण, पुरुषार्थी, दूरदर्शिता, उदारहृदय आदि अनेक दिव्य संपत्तियाँ देने का सत्परिणाम उत्पन्न कर सकता है। यह दौलत, साधारण मकान-जायदाद की अपेक्षा अधिक मूल्यवान है। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५९ पृष्ठ-८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानवदेह का सदुपयोग

यह शरीर ही इंद्रियों के स्वामी (आत्मा) का निवास स्थान है और उसमें निवास करता हुआ, वह ऐसे सुकर्म रूपी उत्तम अन्नों की खेती कर सकता है, जिससे यह जीवन सुख-शांति से भरपूर हो जाए। यदि मनुष्य इस वेदोपदेश का पालन करेगा, मानवदेह को झूठे भोगों में लिप्त न करके, उसके द्वारा उत्तम कार्य करने का ध्यान रखेगा, तो अवश्य ही उसका जीवन उच्च स्थिति को प्राप्त होता जाएगा और वह सांसारिक पाप-ताप से पृथक रहकर लोक और परलोक में सुख-सुयश का भागी बन सकेगा।

वह अपने उद्योग द्वारा इस लोक की सुख-सुविधाओं को ही प्राप्त नहीं करेगा, वरन परलोक का भी सुधार कर लेगा। भगवान ने अधिक नहीं तो इतनी शक्ति प्रत्येक प्राणी को दी है कि वह संसार में स्वावलंबनपूर्वक जीवन-निर्वाह कर सके। यदि कोई इसमें असफल रहता है तो हमको निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिए कि वह मानवदेह का उचित उपयोग नहीं कर रहा है और न अपने कर्त्तव्य का पालन करने की ओर उसका लक्ष्य है। वह संसार में शारीरिक और मानसिक काम से बचकर दूसरों की मेहनत के सहारे जीवन व्यतीत करना चाहता है। जब इसमें बाधा पड़ती है, तो वह संसार भर को कोसता है और अपना समस्त दोष दूसरों के सिर पर मढ़ने की चेष्टा करता है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९५९ पृष्ठ-२७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मनुष्यो! पूर्ण मनुष्य बनो

मनुष्यता की उच्च मंजिल पर पहुँचने के लिए आवश्यक साधन हैं, उलझनरहित कर्म करना, अपनी शक्ति एवं परिश्रम को व्यर्थ के कार्यों में खरच न करके व्यवस्थित ढंग से सत्कार्यों एवं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में लगाना। अकसर मनुष्य अपने समय और शक्ति का तथा कार्य का व्यवस्थित रूप नहीं बना पाते और व्यर्थ के उलझनभरे कार्यों में इन्हें नष्ट कर देते हैं। फलतः जीवन के अंत तक भी पूर्ण मनुष्य नहीं बन पाते हैं। इतना ही नहीं, उनका जीवन भाररूप बन जाता है। अतः उलझनभरे कार्यों से बचना चाहिए, क्योंकि इनमें व्यर्थ शक्ति और समय नष्ट होता है।

अपनी सामर्थ्य एवं स्थिति को ध्यान में रखते हुए, उसी के अनुसार सफलता की ओर अग्रसर होने के लिए, क्रम से कदम बढ़ाने चाहिए। इसमें यदि कोई उलझन भी पैदा हो, तो उससे विवेक एवं धैर्य के साथ काम लेकर बचना चाहिए। इससे व्यर्थ शक्ति और समय का दुरुपयोग नहीं होता। कई महापुरुष अकेले होते हुए भी चुपके-चुपके महान कार्यों, महान योजनाओं को कार्यान्वित करते हैं, जिन्हें अचानक देखकर जनता चमत्कार समझ लेती है। अतः सदैव उलझनभरे कर्मों से बचकर अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं स्वरूप का सदुपयोग अपने पवित्र पथ की ओर अग्रसर होने में करना, पूर्ण मनुष्य बनने के लिए आवश्यक साधन हैं। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५९ पृष्ठ-७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृढ़ इच्छाशक्ति के चमत्कार

किसी भी पक्ष को ग्रहण करने के पूर्व यह अवश्य सोचना चाहिए कि इस काम को करने में मेरी अधिक से अधिक कितनी हानि हो सकती। इससे मन में दृढ़ता उत्पन्न होती है और मनुष्य प्रलोभनों से बचा रहता है। प्राय: ऐसा भी होता है कि एक निश्चय पर पहुँचने के बाद कार्य आरंभ किया गया, परंतु कुछ समय बाद ही कोई अन्य प्रलोभन सामने आ जाता है। फिर वही पहले वाली अनिश्चय की स्थिति उत्पन्न हो गई। यदि मनुष्य इस नए प्रलोभन का शिकार हो गया, तो उसकी इच्छाशक्ति निर्बल पड़ जाती है। अत: अपने प्रथम निश्चय से कभी भी डिगना नहीं चाहिए।

प्रलोभनों के अतिरिक्त अपने निश्चय पर अटल रहने में दूसरे प्रकार की बाधाएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। वे हैं—अप्रत्याशित कठिनाइयाँ। मनुष्य कितना ही दूरदर्शी एवं कल्पनाशील हो, परंतु किसी कार्य में सामने आने वाली कठिनाइयों का शत-प्रतिशत अनुमान लगा लेना असंभव है। किसी निश्चय पर पहुँचने के बाद जब हम कार्य आरंभ करते हैं, तो अनेक ऐसी कठिनाइयाँ सामने आ जाती हैं, जिनकी हमने कल्पना भी न की थी। बस हमारा मन डाँवाडोल होने लगता है। हमें ऐसी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कार्यसिद्धि के मार्ग में न जाने कौन बाधा कहाँ से आ जाए? अस्तु, उसका सामना धैर्यपूर्वक करना चाहिए, तभी दृढ़ इच्छाशक्ति बनी रह सकती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५९ पृष्ठ-१२

प्रतिकूल परिस्थिति में विचलित न हों

हमें चाहिए कि हम अपने आप को परिस्थितियों के अनुरूप ढालें और जिस परिस्थिति में हों, उससे असंतोष या घृणा न प्रकट करें। दिन कभी एक से नहीं रहते। हमें चाहिए कि हम दु:ख के विषम पथ पर धैर्य न खो बैठें। प्रत्येक परिस्थिति की अपनी-अपनी हानि होती है और अपना-अपना लाभ। संसार की कोई भी ऐसी परिस्थिति नहीं, जिसका कुछ-न-कुछ लाभ न हो। हमें लाभ की ओर ही ध्यान देना चाहिए। जिन मजदूरों को मिट्टी में कार्य करना पड़ता है, स्वास्थ्य भी तो उन्हीं का बढ़ता है। ज्ञान तो केवल यही है कि हमें प्रतिकूल परिस्थिति में हिम्मत नहीं खो बैठना चाहिए और जब हम देखें कि परिस्थिति में तब्दीली आती ही नहीं, तो हमें उस परिस्थिति से संतोष करना चाहिए। नीच वह नहीं, जिसका कार्य आप नीच बतलाते हैं, बल्कि नीच वह है जो अपने कार्य में, चाहे वह कार्य कितना ही छोटा हो, दिलचस्पी नहीं लेता और केवल काम चलाऊ काम करता है। इस जिंदगी में कभी पक्की सड़कें आती हैं और कभी कच्ची। हमें दोनों प्रकार की सड़कों को अपनाना है, सहर्ष और एक जैसे उत्साह से। कभी फूलों के बिछौने पर सोना है, तो कभी कंटकों की सेज भी अपनानी है। शांति प्राप्त करने का यही प्रथम साधन है कि हम अपने को प्रतिकूल परिस्थिति में विचलित न होने दें।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९५९ पृष्ठ-१५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोबल द्वारा रोग का निवारण

मन में अपार शक्ति है। मनोबल द्वारा शरीर के तमाम रोग दूर हो जाते हैं, लेकिन उनमें विश्वास की मात्रा किसी हालत में भी कम न होनी चाहिए। भावना सच्ची और प्रखर हो। यद्यपि भावना के अनुसार रूपांतर शनैः-शनैः होता है, तथापि वह अपना असर बिना दिखाए नहीं रह सकती।

अतः आप प्रातःकाल उठते ही सच्चे मन से संकल्प कीजिए कि हमारा अमुक रोग नाश हो जाए तथा शरीर के प्रत्येक अंग पर हाथ फेरते जाइए और सच्ची भावना से कहते जाइए, "मैं नीरोग हूँ! मेरे शरीर के अंदर किसी प्रकार का भी रोग नहीं। मैं सुंदर हूँ। मैं हृष्ट-पुष्ट हूँ। मेरी पाचनक्रिया बिलकुल ठीक है। मैं जो कुछ भोजन करता हूँ, वह सर्वांश में पच जाता है और इससे शुद्ध खून, मांस, मज्जा एवं वीर्य बनता है, जिससे मैं नीरोग और स्वस्थ हो रहा हूँ। मैं वीर्यवान, भाग्यवान, आरोग्यवान हो रहा हूँ। मेरे शरीर के अंदर से आरोग्यता झलक रही है।" मित्रो! स्मरण रहे, विश्वास की कमी किसी भी हालत में न होनी चाहिए। तत्पश्चात आप शौचादिक क्रिया के लिए चले जाइए। ऐसा संकल्प प्रतिदिन करने से आपके शरीर पर एक विचित्र ही झलक आने लगेगी और आप देखते-देखते नीरोग और सुंदर बन जाएँगे तथा आपके संकल्प के अनुसार आपका मन आपके शरीर के तमाम अणुओं को ऐसा बना डालेगा कि आप सर्वदा के लिए रोग-मुक्त हो जाएँगे और आपके ऊपर रोगों का कुछ भी वश न चलेगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks

—अखण्ड ज्योति-सिंतबर १९५९ पृष्ठ-२२

आतंरिक शत्रुओं से सावधान

अहंकार, लोभ, मोह, मत्सर, काम, क्रोध आदि मनुष्य के भीतरी शत्रु हैं। संसार में अधिकांश मनुष्यों के कुछ बाहरी शत्रु भी हुआ करते हैं, पर उनको मनुष्य भली प्रकार पहचानता है और जब वे निकट आते हैं, तो उनसे अपनी रक्षा करने को सावधान हो जाता है। जो शत्रु हमारे मन के भीतर से ही उत्पन्न होते हैं और मित्र-सा लुभावना वेश रखकर आते हैं, उनसे बच सकना बड़ा कठिन होता है। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उनके वास्तविक रूप को समझकर और उनसे अंत में होने वाली हानियों को जानकर आरंभ से ही प्रतिकार करता रहे। जिस प्रकार अहंकार के कारण गरुड़ को परेशान होना पड़ा था, भोजन का अति लोभ होने से गिद्ध को उदर पीड़ा सहन करनी पड़ती है, काम-वृत्ति की अधिकता से चिड़ियाँ सदैव उद्विग्न रहती हैं, पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष के भाव के फलस्वरूप कुत्तों को मार खानी पड़ती है, अंधकर से मोह रखने के कारण उल्लू को निंदनीय समझा जाता है और सदैव क्रूरता एवं क्रोध का भाव मन में रखने से भेड़िये को निकृष्टतम प्राणी कहा जाता है, उसी प्रकार इस तरह की बुरी प्रवृत्तियाँ रखने वाले मनुष्य भी निंदा के पात्र समझे जाते हैं। मनुष्य का धर्म है कि वह अपने से कहीं नीचे दर्जे के प्राणियों के अवगुणों की नकल कदापि न करे और संसार में रहकर ऐसे आदर्श कार्य ही करे, जिनसे उनका मनुष्य कहलाना सार्थक हो।

—अखण्ड ज्योति-सिंतबर १९५९ पृष्ठ-२५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने आप को पहचानिए

केवल भौतिक उन्नति चाहने वाला व्यक्ति अपनी आत्मा का हनन करता है जो व्यक्ति भौतिक लाभ के लिए सत्य पथ से विचलित नहीं होता, वह दिन-दिन ऊँचा उठता जाता है और उसकी सूक्ष्म शक्तियाँ बढ़ती रहती हैं, क्योंकि आत्मा के गुणों के अनुकूल चलना ही अपने लिए शक्ति का स्रोत खोल लेना है।

अपने को शरीर मानकर उसके अनुरूप कार्य करने वाला व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह सकता, क्योंकि भौतिक वस्तुएँ परिवर्तनशील होती हैं, उनमें स्थायित्व नहीं होता। उनको एक दिन क्षीण होना ही, इसलिए उनके साथ ममत्व रखने वाला व्यक्ति दुखी रहेगा ही। अपने को शरीर समझने वाला ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे महान शत्रुओं को, जो उसकी जड़ों को काटते रहते हैं, अपना मित्र समझता और अपने कार्यों में इनको प्रवेश करने के सहर्ष आज्ञा देता है, जिससे उसका लौकिक व पारलौकिक दोनों प्रकार का पतन अवश्यंभावी है।

अपने आप को आत्मा मानने वाला निरंतर सुख-शांति की ओर बढ़ता है। वह किसी भी सांसारिक वस्तु के क्षीण होने से अपनी क्षति नहीं मानता। वह धन, ऐश्वर्य और वैभव के लिए झूठ, छल, कपट आदि निंदनीय उपायों को कभी नहीं अपनाता। काम, क्रोध आदि उसके पास फटक नहीं सकते। यदि हम चाहते हैं कि हम दु:ख के जाल से निकलकर आनंद की सीमा में प्रवेश करें, तो हमें अपने आप को पहचानने का प्रयत्न करना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५९ पृष्ठ-८-९*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

न मद, न दीनता

हीनता की भावना एक बड़ी मानसिक दुर्बलता है, उसे मन से निकाल देना चाहिए। आपके पास धन नहीं है, तो क्या हुआ! संसार के अनेक बड़े व्यक्तियों के पास कुछ भी नहीं था, फिर भी वे महान कहलाए, संसार ने उनकी पूजा की, समाज उनके इशारों पर चला। यदि धन की कमी ने आपको हीन बनाया है, तो उसे आज ही छोड़ दीजिए।

यदि आप सदा सुस्त और निराश दिखाई देते हैं, तो गलती कर रहे हैं, कारण इनसे आपकी उत्पादन-शक्तियाँ पंगु हो जाती हैं, लाभ कुछ नहीं होता। आपके मालिक या अफसर आप से परेशान रहते हैं। आपकी बुद्धि, आपकी कार्यकुशलता, आपकी महत्ता प्रकट नहीं हो पाती। यदि आप स्वयं अपना तिरस्कार और अपमान ही करेंगे। यदि आप स्वयं को ठोकर मारेंगे, तो दूसरे भी दो ठोकर लगाएँगे और जो कोई भी आएगा, ठोकर ही मारता आएगा।

आप यह दृढ़ भावना मन में रखिए कि अनिष्ट, निराशा, भय, आत्मग्लानि और आत्मतिरस्कार की दुर्भावनाएँ आपके जीवन पर आरूढ़ नहीं हो सकतीं। इन सबको भगा देने का आत्मबल प्रचुरता से आपमें विद्यमान है। प्रतिकूल विचार और परिस्थितियाँ आपको सतपथ से डिगा नहीं सकेंगी। न अपने विषय में अत्युक्तिपूर्ण दंभ की ही भावना को प्रोत्साहित कीजिए और न तुच्छता की भावना ही आने दीजिए। मध्य मार्ग ही श्रेष्ठ है। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९५९ पृष्ठ-२८-२९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वास्तविक प्रार्थना का सच्चा स्वरूप

मानवमात्र शांति चाहता है, चिरशांति, पर वह शांति है कहाँ? संसार में तो अशांति का ही साम्राज्य है। शांति के भंडार तो वही केवल शक्तिपुंज सर्वेश्वर भगवान ही हैं। वे ही परम गति हैं और उनके पास पहुँचने के लिए सत्य हृदय से की गई प्रार्थना ही पंखस्वरूप है। उनके अक्षय भंडार से ही सुख-शांति की प्राप्ति होती है।

प्रार्थना कीजिए। अपने हृदय को खोलकर कीजिए। चाहे जिस रूप में कीजिए, चाहे जहाँ एकांत में कीजिए, अपनी टूटी-फूटी लड़खड़ाती भाषा में कीजिए, भगवान सर्वज्ञ हैं। वे तुरंत ही आपकी तोतली बोली को समझ लेंगे। प्रात:काल प्रार्थना कीजिए, मध्याह्न में कीजिए, संध्या को कीजिए, सर्वत्र कीजिए और सभी अवस्थाओं में कीजिए। उचित तो यही है कि आपकी प्रार्थना निरंतर होती रहे। यही नहीं आपका संपूर्ण जीवन प्रार्थनामय बन जाए।

प्रभु से माँगिए कुछ नहीं। वे तो सबके माँ-बाप हैं। सबकी आवश्यकताओं को वे खूब जानते हैं। आप तो दृढ़ता से उनके मंगलविधान को सर्वथा स्वीकार कर लीजिए। उनकी इच्छा के साथ अपनी इच्छा को जोड़कर एकरूप कर दीजिए। भगवान की हाँ में हाँ मिलाते रहिए, तभी सच्ची शांति का अनुभव कर सकोगे।

जब कभी जो भी परिस्थिति अनुकूल अथवा प्रतिकूल आ जाए, भगवान को धन्यवाद दीजिए और हृदय से कहिए—

'प्रभो! मैं तो यही चाहता था।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९५९ पृष्ठ-२७

सच्चा संतोष ही सबसे बड़ा धन है

निराश होना, चिड़चिड़ाना, चिंता करना, बड़बड़ाना, दूसरे की निंदा करना और अपना रोना रोते रहना, ये सब सड़े हुए विचार हैं, मन के रोग हैं। वे हमारे मस्तिष्क की दुर्दशा को प्रकट करते हैं। जो इस रोग से पीड़ित हों, उनको अपने विचार और व्यवहार का सुधार करना आवश्यक है। यह बात ठीक है कि संसार में पाप तथा दु:ख की अधिकता है, इसीलिए उसे हमारे पूर्ण प्रेम और दयाभाव की आवश्यकता है। रोने की किसी को जरूरत नहीं। ऐसा रोना तो सब जगह पहले से ही मौजूद है। इसलिए अगर जरूरत है, तो हमारे आनंदी और संतोषी स्वभाव की है, क्योंकि उसकी सर्वत्र कमी है। हम संसार को अपने स्वभाव और व्यवहार की मिठास से बढ़कर और कोई चीज नहीं दे सकते। इसके अतिरिक्त सब व्यर्थ है। यही सबसे अच्छी चीज है, सत्य है, स्थायी है, अविनाशी है और इसी में समस्त सुख और परमानंद समाया हुआ है।

तुम पर यदि विपत्तियाँ आती हैं, तुमको हानि उठानी पड़ती है, तो उससे निराश मत बनो। दूसरों के पापयुक्त व्यवहार की निंदा करना और उन व्यक्तियों का विरोध करना बंद कर दो। दूसरों को हानि पहुँचाने वाले एवं दुष्टतापूर्ण विचारों को त्याग दो, क्योंकि इसी से तुमको मन की शांति, शुद्ध धर्म और सच्चे सुधार की प्राप्ति हो सकेगी।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९५९ पृष्ठ-१३-१४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख-शांति का सच्चा मार्ग

ऐसे बुद्धिमान लोग विरले ही होते हैं, जो अपनी वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप आकांक्षाएँ करते हैं और उनके पूर्ण होने पर सफलता एवं प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। अधिकांश लोग यह नहीं देखते कि अपनी परिस्थितियों में इन दिनों कितनी उन्नति संभव है ? संभावनाओं के अनुरूप इच्छाएँ तो आसानी से पूरी हो जाती हैं, पर जिन आकांक्षाओं का ऐसा तालमेल नहीं बैठता, वे असफल ही रह जाती हैं और आकांक्षी को अभाव और असफलताजन्य दु:ख की आग में जलाती रहती हैं।

दु:ख और क्लेशों की आग में जलने से बचने की जिन्हें इच्छा है, उन्हें पहला काम यह करना चाहिए कि अपनी आकांक्षाओं को सीमित रखें। अपनी वर्तमान परिस्थिति में प्रसन्न और संतुष्ट रहने की आदत डालें। गीता के अनासक्त कर्मयोग का तात्पर्य यही है कि महत्त्वाकांक्षाएँ वस्तुओं की न करके केवल कर्त्तव्यपालन की करें। यदि मनुष्य किसी वस्तु की आकांक्षा करता है उसे प्राप्त भी कर लेता है, तो उस प्राप्ति के समय उसे बड़ी प्रसन्नता होती है। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति सर्वांगीण आत्मोन्नति के प्रयत्न कर कर्त्तव्यपालन करने की आकांक्षा करे तो उसे सफलता मिलते समय, मिलने वाले आनंद की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती वरन जिस क्षण में कर्त्तव्यपालन आरंभ करता है, उसी समय से आकांक्षा की पूर्ति आरंभ हो जाती है और साथ ही सफलता का आनंद भी मिलता चलता है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६० पृष्ठ-६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्या स्वर्ग और नरक इसी संसार में मौजूद हैं ?

जितने भी सात्विक दैवी भाव हैं, उन सबके मूल में स्वर्ग की स्वर्णिम आभा है। उन्हें धारण करने में मनुष्य आंतरिक सुख और संतोष का अनुभव करता है। क्षमा, दया, प्रेम, मृदुता, सत्याचार, सहानुभूति, इन सभी दैवी गुणों को अपने जीवन में उतारने से स्वर्ग जैसा सुख मिलता है। इन सबके मूल में भगवान हैं। भगवान की विशेष कृपा से मनुष्य इनके अनंत सुख का अनुभव करता है। उसका विवेक जाग्रत होता है। उसके हृदय में विराजित परम प्रभु उसे स्वर्ग का सुख प्रदान करते हैं। स्वर्ग आपकी भी पहुँच के भीतर हैं, क्योंकि आप इन ईश्वरीय गुणों को धारण कर सकते हैं। चरित्र का पूर्ण विकास कर सकते हैं।

याद रखिए, मनुष्य शुभ कार्य करके देव बनते हैं। अत: शुभ कर्म कीजिए और इसी शरीर से भूसुर का पवित्र पद प्राप्त कीजिए। शुभ कार्य ही पुजते हैं। उन्हें करने में मनुष्य स्वर्ग का सुख और शांति प्राप्त करता है।

आप शुद्ध, तेजस्वी, आनंदमय एवं प्रकाशवान हैं। इसलिए आत्मबंधु! दैवी गुणों को धारण करके स्वर्ग का सुख लूटिए। नरक का प्रधान कारण तामसी भाव है। मनुष्य जब अज्ञान में होता है, तभी पाप करता है। मन में जमे हुए दुर्भाव मनुष्य से दुष्कर्म कराते हैं, अनेक नारकीय परेशानियाँ में धकेलते हैं। अनीति और अधर्म के विचार सर्वथा त्यागने योग्य हैं। जो दैवी गुणों की उपेक्षा कर असत्य और पाशविक भावों को अपनाते हैं, उन्हें अपयश ही मिलता है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६० पृष्ठ-१२-१४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का लक्ष्य एक हो

लक्ष्य दूर होता ही है और उससे होने वाला लाभ भी दूरस्थ होता है। बीच में ऐसे अनेक काम आ सकते हैं, जिनसे तात्कालिक लाभ होने की संभावना रहती है। ऐसे लाभ को देखकर मनुष्य का मन डगमगाने लगता है। वह विचलित होकर पथभ्रष्ट हो जाता है। ऐसे अवसरों पर मन को दृढ़ रखने की आवश्यकता है। अपने जीवन के लक्ष्य के प्रति मनुष्य को हर दशा में सजग रहना चाहिए।

यदि आपका लक्ष्य स्थिर है, तो आप सैकड़ों बाधाओं से दूर रहेंगे। आपका मन अनिश्चित और अंतर्द्वंद्व से मुक्त रहेगा। द्विविधापूर्ण परिस्थितियों में आप निर्णय ले सकेंगे और आपकी इच्छाशक्ति दृढ़ बनेगी। आप समय का सदुपयोग करना सीख सकेंगे, क्योंकि जब फालतू बातों की ओर आपका ध्यान ही न जाएगा, तो समय का अपव्यय अपने आप रुक जाएगा। प्रायः आप अपनी शक्ति की संपदा का भारी अपव्यय करते रहते हैं, परंतु लक्ष्य के निश्चय से आपकी शक्ति का एक-एक कण उसी की पूर्ति में लगेगा। आपको तभी अपनी शक्ति का अनुमान भी होगा। सूर्य की किरणों में यों साधारण गरमी होती है, परंतु जब बहुत-सी किरणें आतिशी शीशे द्वारा एक केंद्रिबिंदु पर इकट्ठा कर ली जाती हैं, तो उनमें भस्म कर देने की शक्ति आ जाती है। आप निर्बलता का अनुभव इसलिए करते हैं कि आपकी शक्तियाँ बिखरी रहती हैं। अतः आपके जीवन का लक्ष्य एक हो। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६० पृष्ठ-२५*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु प्राप्त करें

ऐसे व्यक्ति भाग्यशाली हैं, जो विचारतंत्र को ठीक तरह से संचालित कर जीवन को सद्प्रेरणा से भर लेते हैं और किसी प्रकार की दूषित भ्रांतियों या अंधविश्वासों में नहीं फँसते। विचारतंत्र को उल्टी दिशा में घुमा देने से मनुष्य नाना भ्रांतियों, रूढ़ियों, अंतर्मन की जटिल ग्रंथियों से भर जाता है। उसका राक्षसी स्वरूप उभर उठता है। आज समाज में जो व्यक्ति भ्रमित-चिंतित हैं, उद्विग्न रहते हैं, मानसिक परेशानियों से आक्रांत रहते हैं, उसका मुख्य कारण यह है कि वे विचारतंत्र का गलत प्रयोग कर रहे हैं। जिस मंत्र से वे देवत्व को जाग्रत कर सकते हैं, उसी को गलत दिशा में घुमाकर वे अपने निंद्य-घिनौने स्वरूप को जगाते और दुःख के नरक में पड़े रहते हैं। सही रूप में प्रयुक्त मस्तिष्क का फल सद्विचार है। गलत रूप में प्रयुक्त मस्तिष्क का कुफल, कुविचार और कुकल्पनाएँ हैं। कुविचार मनुष्य को जीते जी नरक की अग्नि में धकेल देते हैं। कुविचारी आत्महीनता की या अपनी कमजोरी की बात सोच-सोचकर मन में नाना यंत्रणाएँ सहा करता है, चिंतित परेशान हुआ करता है, दूसरों को अपना शत्रु समझता है। रोग, शोक, चिंता, व्याधि, कटुता, ग्लानि, निर्बलता, शक्तिहीनता इत्यादि के कुविचार मनुष्य के भारी शत्रु हैं। सही दिशा में चलने वाला मस्तिष्क मनुष्य का प्रेरक है, गलत दिशा में चलने वाला सबसे बड़ा शत्रु। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६० पृष्ठ-२६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने गुरु स्वयं बनिए

हमें अपने ही पैरों पर खड़ा होना चाहिए। आत्मानुभव पर ही हमें अधिक निर्भर रहना चाहिए। हमारे इस कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि गुरु का महत्त्व ही नहीं है, गुरु की आवश्यकता ही नहीं है। गुरु की आवश्यकता, उपयोगिता तथा पूजनीयता तो सर्वमान्य है ही। हमारे एक महर्षि ने तो कुत्ते, बिल्ली आदि तक से शिक्षण ग्रहण किया था और यह दृष्टांत ही इस बात का द्योतक है कि मनुष्य को विवेकवान और ग्रहणशील प्रकृति का होना चाहिए। उसे जो जहाँ से अच्छा मिले, निस्संकोच ग्रहण करना चाहिए। अर्थ यही होता है कि आपको अपना गुरु स्वयं बनना पड़ेगा और बनना चाहिए भी।

भगवान ने आखिर हमें बुद्धि काहे के लिए दी है ? इसी के लिए कि हम उसका प्रयोग करें। यह भगवान ही की इच्छा है। उसकी इच्छा को न समझना, वैसा न करना तो ईश्वरविमुखता है। अंत: अंतर्मुखी प्रवृत्ति, ग्रहणशील प्रकृति, अपने को तथा अपने चारों ओर के फैले वातावरण को समझने और उसे लाभ उठाने की क्षमता, आत्मनिर्भरता, अनुभवों को बटोरने और उन्हें अपने जीवन की प्रगति को हथियार के रूप में काम में लाने की समझदारी प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है, अनिवार्य है।

संसार की ठोकरें भी बुरी नहीं होतीं, बशर्ते वह आँखें खोल दें। आत्मानुभव, आत्मशिक्षण मनुष्य को कठिनाइयों और विरोधों के बीच शांत और संतुलित रहने की योग्यता देता है। अत: अपने गुरु स्वयं बनिए।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६० पृष्ठ-२९-३०

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मनिरीक्षण कर कमजोरियाँ दूर करें

बुद्धिमत्ता, चतुरता, तत्परता, मधुरता और परिश्रमशीलता के सहारे मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है। जिसमें ये गुण न हों, उसका सुख-साधन उपार्जित करने के लिए बहुत सफल हो सकना कठिन है। मूर्ख, मंदबुद्धि, फूहड़, आलसी, प्रमादी एवं कर्कश स्वभाव के लोगों की महत्त्वाकांक्षाएँ आमतौर से असफल ही रहती हैं। इन दुर्गुणों से बचकर उन्नतिशील स्वभाव बनाना मनुष्य के अपने हाथ में है। वह चाहे तो अभ्यास, विचारशक्ति और आत्मनिर्माण का सहारा लेकर अपने आप को सुधार सकता है और उन्नतिशील बनने का बहुत कुछ मार्ग साफ कर सकता है। अनेक प्रगतिशील लोगों ने इसी मार्ग का अवलंबन किया है। उन्होंने अपने स्वभाव की दुर्बलताओं को एक-एक करके परखा है और बीन-बीनकर निकाला है।

यद्यपि यह कार्य काफी कठिन है। आत्मनिरीक्षण कर सकना और अपनी कमजोरियों को आप समझ लेना एवं उनसे लड़ने को तत्पर हो जाना, हर किसी के वश का काम नहीं है। मनस्वी और साहसी लोग ही यह सब कर सकते हैं। शेष लोग तो अपनी दुर्बलताओं को समझ ही नहीं पाते, कोई समझाए तो उसे द्वेषी और शत्रु मानकर उसका बुरा मानते हैं और लड़ने को तैयार होते हैं। अपनी कमजोरियों के कारण मिली असफलता को वे दूसरों के सिर थोपकर स्वयं निर्दोष बनना चाहते हैं।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६० पृष्ठ-४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विरासत में बच्चों के लिए धन न छोड़ें

धन को उचित रीति से खरच करने की क्षमता उसी में है, जिसे यह मालूम हो कि कमाने में कितना कष्ट और परिश्रम होता है। जिसे कमाने का कष्ट नहीं उठाना पड़ा, वह हाथ में आई हुई दौलत को एक लूट का माल समझता है और उसे आतिशबाजी की तरह फूँकता है। धन का सदुपयोग करके जहाँ सुख की प्राप्ति होती है, उन्नति का द्वार खुलता है, वहाँ दुरुपयोग से तरह-तरह की मुसीबतें भी सामने आ खड़ी होती हैं। दौलत एक दुधारी तलवार है, जो दुरुपयोग करने पर चलाने वाले को ही घायल कर देती है। बच्चों के लिए कमाई जोड़ी, इकट्ठी की हुई दौलत छोड़ जाने से अधिक उनका अपकार और किसी प्रकार नहीं किया जा सकता है। वे उसका मूल्य नहीं समझ सकते, फलस्वरूप दुरुपयोग करते हैं और अंततः वे उस स्थिति से भी अधिक घाटे में रहते हैं, जो उन्हें कुछ भी प्राप्त न होने पर उपलब्ध होती।

छोटे बच्चों के पालन, शिक्षण और विकास के लिए कुछ जमा करना, प्रत्येक समझदार गृहस्थ का कर्त्तव्य है, पर इसलिए जोड़ना कि वे बैठे-बैठे ब्याज-भाड़े की कमाई खाते रहें, बहुत ही अनुचित, यहाँ तक कि उनके साथ अन्याय करने के बराबर है। इससे उनकी उन्नति करने के लिए अपनी शक्तियों को तेज करने की आकांक्षा नष्ट हो जाती है और आलसी तथा विलासी की जिंदगी बिताने लगते हैं।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६० पृष्ठ-७

भोजन और भजन का संबंध

शारीरिक विकास के लिए भोजन, पानी और हवा पर्याप्त मात्रा में मिलना आवश्यक है। इनके बिना शरीर का पूर्ण विकास संभव नहीं। इसी प्रकार मन का पूर्ण भोजन-उत्तम विचार हैं। इनके अभाव में मनुष्य का मन कुंठित हो जाता है। स्वाध्याय, सत्संग, मनन, चिंतन आदि के बिना मनुष्य का मस्तिष्क पशु श्रेणी में ही बना रहता है। जिस प्रकार शरीर के लिए संतुलित भोजन, मन के लिए उत्तम विचार आवश्यक हैं, उसी प्रकार जीवात्मा को स्वस्थ रखने, बलवान बनाने और विकसित करने के लिए नित्यप्रति भगवत्-साधना का संतुलित भोजन आवश्यक है। जैसे भोजन के अभाव में शरीर का विकास रुक जाता हैं और उत्तम विचारों के न मिलने पर मन कुंठित हो जाता है, उसी प्रकार भगवान की पूजा-उपासना न करने से भी जीवात्मा की शुभ कर्म करने की प्रेरक शक्ति कुंठित हो जाती है और अपने पूर्ण विकास की स्थिति, परमात्मा की प्राप्ति से वंचित रह जाती है।

जीवात्मा को निर्मल बनाने पर ही दिव्य तत्त्वों का आभास होता है। इसलिए जिस प्रकार घर की सफाई के लिए बुहारी लगाना, कपड़ों की सफाई के लिए साबुन लगाना, शरीर शुद्धि के लिए स्नान करना आवश्यक है, उसी प्रकार संसार की दुष्प्रवृत्तियों के प्रभाव से जीवात्मा पर जमा होते रहने वाले कुसंस्कारों एवं मल-विक्षेपों को हटाते रहने के लिए परमात्मा के पवित्र नामों का उच्चारण और उसके गुणों का चिंतन करना आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६० पृष्ठ-१९-२१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने दृष्टिकोण को परिमार्जित कीजिए

जीवन को सुख-शांतिमय बनाने के लिए सुविधा-सामग्रियों की आवश्यकता अनुभव की जाती है, लो ठीक है। इसके लिए भी प्रयत्न करना चाहिए। यह भी न भूल जाना चाहिए कि जो प्राप्त है, उसका सदुपयोग किया जाए। उपलब्ध साधनों का सदुपयोग यदि हम सीख जाएँ, हर वस्तु का मितव्ययतापूर्वक उपयोग करें, उसका पूरा-पूरा लाभ लें, तो जो कुछ प्राप्त है, वही हमारे आनंद को अनेक गुना बढ़ा सकता है। अपनी धर्मपत्नी जैसी भी कुछ वह है, यदि उसे अधिक शिक्षित, अधिक सुयोग्य बनाया जाए और उसके स्वभाव तथा गुणों का अपने कार्यक्रमों में ठीक प्रकार उपयोग किया जाए, तो यही पत्नी जो आज व्यर्थ का बोझ जैसी मालूम पड़ती है, अत्यंत उपयोगी एवं लाभदायक प्रतीत होने लगेगी। जितनी आजीविका आज अपने को प्राप्त है, यदि उसके खरच की ही विवेक और मितव्ययतापूर्वक ऐसी योजना बनाई जाए कि प्रत्येक पैसे से अधिकाधिक लाभ उठाया जा सके, तो यह आज की थोड़ी आजीविका भी आनंद और सुविधाओं में अनेक गुनी वृद्धि कर सकती है। इसके विपरीत यदि अपना दृष्टिकोण अस्त-व्यस्त है, तो बड़ी मात्रा में सुख-साधन उपलब्ध होते हुए भी वे कुछ लाभ न पहुँचा सकेंगे, वरन 'जी के जंजाल' बनकर परेशानियाँ और उलझनें ही उत्पन्न करेंगे। अतः हम अपने दृष्टकोण की त्रुटियों को समझें और उन्हें सुधारने का प्रयत्न करें।

www.awgp.org

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६० पृष्ठ-७

www.vicharkrantibooks.org

आत्मनिरीक्षण का स्वभाव बनाइए

जब आत्मनिरीक्षण द्वारा अपनी बुराइयाँ, दोष, विकार समझ में आ जाएँ, तो उन्हें विवेक, बुद्धि, आत्मबल से दूर करने के लिए ठीक उसी प्रकार प्रयत्न करना चाहिए, जिस प्रकार एक शल्य चिकित्सक तटस्थ भाव से रोगी के शरीर के दूषित तत्त्वों को बाहर निकाल फेंकता है। उनसे उसका निजी कोई संबंध नहीं होता। प्रायः कई व्यक्ति अपनी बुराइयों को जानकर भी दूर करने का प्रयत्न नहीं करते, क्योंकि उनसे वे अपना मोह द्वारा संबंध बनाए रखते हैं। इसलिए तटस्थ और निष्पक्ष भाव से अपनी बुराइयों एवं दोषों को दूर करना चाहिए। आखिर बुराइयाँ तो बुराइयाँ ही हैं, उनसे लगाव रखना सभी तरह अहितकर होता है। महापुरुषों की जीवन गाथाओं से पता चलता है कि उनमें जो भी कमजोरियाँ थीं, उन्हें स्वयं ही नहीं देखा, वरन जन साधारण के समक्ष भी अपनी वास्तविक स्थिति को रखा, फलतः एक दिन वे पूर्ण निर्विकार एवं शुद्ध हृदय बन गए। अपनी बुराइयों को छुड़ाने का सरल मार्ग यह भी है कि अपने वास्तविक स्वरूप को जन साधारण के समक्ष रखना चाहिए। ऊपर से कलई, चमक-दमक, विज्ञापनबाजी से अपने असली रूप को छिपाना नहीं चाहिए इससे अपनी बुराइयों को छिपाने की आदत पड़ जाती है और वे बुराइयाँ जीवन से चिपकी ही रहती हैं। यदि सच्चे हृदय से अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया जाए, तो एक दिन उनसे छुटकारा पाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६० पृष्ठ-१८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वासयुक्त प्रार्थना का प्रभाव

जब भगवान को कोई कृपा प्रकट करनी होती है, तो वे उस कृपा के आश्रय का मन स्वयं अपनी ओर खींच लेते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि केवल भगवान का स्मरण करने से स्थूल प्रकृति में कैसे परिवर्तन हो जाएगा, वे यह नहीं जानते कि परिवर्तन की क्रिया तो बहुत पहले से ही प्रारंभ हो चुकी रहती है। प्रार्थना तो केवल भक्त के हृदय में भगवद् इच्छा की प्रत्यावृत्ति मात्र होती है। जब कभी विपत्तिकाल में भगवान की अनुकंपा प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न हो, तब जान लेना चाहिए कि भगवान की ओर से विपत्ति-निवारण की योजना बन रही है। ज्यों-ज्यों उनकी योजना प्रौढ़ होती है, त्यों-त्यों हमारी श्रद्धा और विश्वास तीव्रतर होता चलता है। अत: विपत्ति-निवारण हमारी प्रार्थना का फल नहीं होता, बल्कि हमारी प्रार्थना ही सफलता का चिह्न होती है।

कष्टों को काटने के लिए प्रार्थना ही एक ऐसा ब्रह्मास्त्र है, जिसका वार कभी खाली नहीं जाता। हृदय से उठी सच्ची विश्वासयुक्त प्रार्थना में सब कुछ प्राप्त करा देने की विलक्षण शक्ति है। हमें अपनी आत्मा (जो परमात्मा का संक्षिप्त रूप है) पर विश्वास रखकर, विनम्र भाव से गद्‌गद हो, प्रतिदिन ईश्वर-प्रार्थना करनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६० पृष्ठ-२७

मानव जीवन की सफलता का मार्ग

यह एक विचारणीय प्रश्न है कि हम जीवन का क्या उपयोग करें, इसे शरीर-सुख के लिए साधन जुटाने, अहंकार, तृष्णा और वासना को पूरा करने में लगा दें या आत्मकल्याण एवं परमार्थ का साधन बनाने में प्रयुक्त करें। दोनों ही मार्ग स्पष्ट हैं। दोनों के परिणाम भी स्पष्ट हैं। भौतिकवादी जीवन में शरीर-सुख की संभावना तो रहती है, पर वह लक्ष्य एक प्रकार से तिरोहित ही हो जाता है, जिसके लिए ईश्वरीय वरदानस्वरूप यह दिव्य जन्म प्राप्त हुआ है। इंद्रिय सुखों में और वासनाओं की पूर्ति में कुछ ऐसा आकर्षण है कि दुर्बल स्वभाव का प्राणी अनायास उधर ही झुक जाता है। तकाजा यही है कि इतनी छोटी कीमत में, ८४ लाख योनियों के बाद लाखों-करोड़ों वर्षों की प्रतीक्षा के पश्चात प्राप्त हुए इस मानव जन्म को नष्ट न होने दें। इंद्रिय सुख तो कीट-पतंग एवं पशु-पक्षी भी अपनी-अपनी योनियों में प्राप्त कर लेते हैं। यदि उतनी-सी ही वस्तु इस शरीर में भी प्राप्त हुई तो फिर इसकी श्रेष्ठता क्या रह जाती है?

आत्मकल्याण, संसार की सेवा का परमार्थ एवं अनुकरणीय उदाहरण छोड़ जाने का उज्ज्वल यश, ये तीनों बहुमूल्य वस्तुएँ इंद्रिय भोगों आदि तृष्णा साधनों की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान हैं। मनुष्य को जो असाधारण बुद्धिबल मिला हुआ है, उसकी सफलता इसी में है कि दूरदर्शितापूर्ण निश्चय किया जाए।

—अखण्ड ज्योति-मई १९६० पृष्ठ-६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्व-प्रेम ही ईश्वर-प्रेम है

अहंकारी मनुष्य की शक्ति से विश्व-प्रेम दूर होता है। अहंकार किसका—धन, दौलत, वैभव, ऐश्वर्य का? नहीं, यह सब यहीं छोड़ना पड़ेगा। नाम, पद, प्रतिष्ठा का अहंकार है, तो यह रंगीन चोला यहीं उतारना पड़ेगा। बड़े-बड़े शक्तिवान, सामर्थ्यवान इस धूल में मिल गए हैं। फिर किसका अभिमान? अपने हृदय में विश्व-प्रेम की प्रतिष्ठापना कर अपना तथा अन्य लोगों का जीवन धन्य बनाइए। अपनी नई सृष्टि बसाने की कोशिश में जीवन न खोया जाए, क्योंकि वह अस्वाभाविक है, असंगत है, ईश्वरीय विधान के विपरीत है, परिणाम दु:खदायी और विनाश ही है।

संसार के प्रत्येक तत्त्व में भलाई-बुराई सन्निहित है। न कोई पूर्णत: बुरा है और न कोई भला। मनुष्य के हृदय में भी विकारों के बीच ही प्रेम की जड़ जमी हुई है। शुभ तत्त्व बीजरूप में सभी में स्थित है। ऐसी दशा में बुराइयाँ ही देखना अथवा दूषित दृष्टिकोण को अपनाकर घृणा-निंदा को गले लगाना, प्रेम साधना के पथ में भारी विघ्न है। अपना दृष्टिकोण बदल जाने पर जो दूषित और बुरे तत्त्व हैं, उनमें भी अच्छाई, उस ईश्वरीय तत्त्व की झाँकी, दृष्टिगत होती है। वहाँ भी उस प्रेमस्वरूप के दर्शन होते हैं, क्योंकि विश्व-प्रेम की प्राप्ति में कहीं दोष, बुराइयाँ, कमजोरियाँ रहती ही नहीं हैं। घृणा, परनिंदा से प्रेम मर जाता है। अत: यह दृष्टिकोण त्याज्य है। इसके विपरीत अच्छाई का दर्शन करना आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६० पृष्ठ-२०-२१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मन:शक्तियों का सदुपयोग

जीवन में निरंतर सक्रियता की आवश्यकता है। जो जीवन अकर्मण्य है, वह एक अभिशाप ही है। कहावत भी है 'खाली दिमाग शैतान का घर।' कार्यशीलता से रहित जीवन भारस्वरूप ही है। अकर्मण्य एवं आलसी व्यक्ति सदैव इस संसार में पिछड़े हैं। ऐसे व्यक्तियों को इस संघर्षमय कर्मक्षेत्र संसार में स्थान नहीं है। जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने कोई जादू या छल से महानता प्राप्त नहीं की है। उनकी महानता का एकमात्र कारण उनका निरंतर कर्त्तव्यपरायण एवं निष्ठापूर्ण जीवन ही था। उनके जीवन में 'आराम हराम' था।

जीवन की निरंतर सक्रियता से उद्दंडी मन की चंचलता, संकल्प-विकल्प, वासना आदि नष्ट हो जाते हैं। कार्य-व्यस्त और परिश्रमी व्यक्ति धीरे-धीरे इस चंचल मन पर बाजी मार लेते हैं। मन एक अजीब भूत है, जो अपनी कल्पना एवं विचारों के सहारे आकाश-पाताल और लोक-लोकातंरों में उड़ा-उड़ा फिरता है। ऐसे मन पर काबू पाना सहज नहीं होता। इस भूत को निरंतर काम में जोते रहना ही, इसे वश में करने का एकमात्र मंत्र है।

जीवन में सक्रियता की इसलिए भी आवश्यकता है कि ईश्वर ने हमें क्रियाशक्ति दी है, कुछ करते रहने के लिए। अत: यदि हम अकर्मण्य रहें और ईश्वरीय विधान के विपरीत चलें, तो यह शक्ति हमसे छीन ली जाती है। इंद्रियाँ अपनी क्रियाशक्ति को खो देती हैं। ऐसा व्यक्ति जीवन में पराधीनता के सिवा और कुछ नहीं देख सकता।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६० पृष्ठ-२२-२३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्मबुद्धि की अवहेलना से मानसिक क्लेश

मनुष्य के मन की अनेक वृत्तियाँ हैं—स्वार्थवृत्ति, भोगवृत्ति, दंभवृत्ति और धर्मवृत्ति। जब कोई समस्या सामने आती है, तो इन नाना वृत्तियों में संघर्ष चलने लगता है। जब जिस वृत्ति की प्रधानता या प्रभुत्व होता है, तब वैसा ही निर्णय हो जाता है। मन के शांत-संतुलित अवस्था में आते ही पाशविक वृत्तियों के निर्णय की असत्यता प्रकट हो जाती है, तब धर्मबुद्धि अपना दिव्य प्रकाश दिखलाती है। उसमें भोगवृत्तियों की निस्सारता प्रकट हो जाती है, पश्चात्ताप होता है और धर्मबुद्धि इस कुकृत्य की सजा देती है। मनुष्य को स्वयं अपने आप ही ग्लानि हो जाती है। आत्मभर्त्सना के फलस्वरूप अनेक व्यक्ति आत्महत्याएँ तक कर लेते हैं।

धर्मबुद्धि के पालन से चरित्र में सद्‌गुणों का विकास होता है। धर्मबुद्धि का सुख अमल में है, केवल ज्ञान में नहीं। धर्म को दैनिक जीवन का आधार बना लेने से ही जीवन सुखद और फलदायी हो सकता है। जब आप पूरी तरह शांत रहते हैं, मन संतुलित रहता है, किसी प्रकार का बाहरी दबाव आप पर नहीं होता, तो आपके मन-मंदिर में भगवान उदित होते हैं और आपको नेक सलाह देते हैं। इसी पर निरंतर अग्रसर होते रहिए। ईश्वरीय प्रेरणा पर भरोसा रखने वाला कठिन अवसरों पर भी नेक सलाह पाता है। भविष्य उसके लिए अंधकार की वस्तु न रहकर दिन जैसा स्पष्ट रहता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६० पृष्ठ-२१-२२

जीवन यात्रा का महान पथ

कर्मशीलता, निरंतर गतिशलता, आगे बढ़ने में भी अवरोधों—अभिघातों का आना स्वाभाविक है, संभव है। यही विश्व की संघर्षशीलता है, जीवन-संग्राम है। विश्व का कोई तत्त्व, कोई पदार्थ ऐसा नहीं है, जहाँ प्रतिरोध, संघर्ष, अभिघातों का सामना न करना पड़े। नदी को अपनी निरंतरता, गतिशीलता को कायम करने के लिए कितने पहाड़ों घाटियों, मैदानों में होकर गुजरना पड़ता है और कितने प्रतिरोधों का सामना करना पड़ता है। बीज को विशाल वृक्ष बनने की तैयारी में पृथ्वी के कठोर तल का सामना करके उसे तोड़ना पड़ता है। अपनी वृद्धि के क्रम में कितने प्रतिरोध सहने पड़ते हैं। ठीक इसी प्रकार जीवन की गतिशीलता, कर्मशीलता में प्रतिरोधों का सामना करना भी स्वाभाविक ही है, क्योंकि बिना इनके गतिशीलता में तीव्रता, शक्ति एवं स्फूर्ति पैदा नहीं होती।

मनुष्यत्व में पथिकों को, आत्मलक्ष्य के जिज्ञासुओं को, जीवन यात्रा के यात्रियों को, अपनी गतिशीलता एवं कर्मशीलता को जारी रखने के लिए आने वाले अभिघातों, कष्टों, प्रतिरोधों का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहना आवश्यक है। अपने पुरुषार्थ, अखंड परिश्रम, कर्म की गति को रोकना नहीं चाहिए, वरन अपनी जीवन-नौका को इन बल्लियों से सुख-दु:खों की उत्ताल तरंगों के ऊपर से बहा ले जाना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६० पृष्ठ-४-५*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम पहले अपने को ही क्यों न सुधारें!

एक प्रकार की स्थिति दो अलग-अलग व्यक्तियों पर उनकी मनोभूमि के अनुसार अलग-अलग प्रकार के प्रभाव डालती है। संसार में बुराई और भलाई सभी कुछ पर्याप्त मात्रा में मौजूद है, पर हम अपनी आंतरिक स्थिति के अनुसार उसे ही पकड़ते हैं, जो अपने को रुचता है। यदि यह रुचि परिमार्जित हो, तो संसार में जो कुछ श्रेष्ठ है, उसे ही पकड़ने के लिए अपने प्रयत्न होते हैं। जिस प्रकार शहद की मक्खी बगीची में से शहद और गुबरीले कीड़े गोबर इकट्ठा करते रहते हैं, उसी प्रकार अपनी मनोभूमि के अनुसार हम भी भले या बुरे तत्त्वों से अपना संबंध जोड़कर अपने पल्ले सुख या दु:ख इकट्ठा कर सकते हैं। संसार में बुरा-भला सभी कुछ है, पर हम प्राय: उन्हीं तत्त्वों को आकर्षित एवं एकत्रित करते हैं, जिस प्रकार की अपनी मनोदशा होती है।

'मानव जीवन सुख और दु:ख के, लाभ और हानि के, संपत्ति और विपत्ति के ताने-बाने से बुना हुआ है। ये दोनों ही रात-दिन के, सरदी-गरमी के जोड़े की तरह आती और जाती रहती हैं, इनके प्रभाव से कोई राजा-रंक अछूता नहीं रहता। यह सभी के लिए स्वाभाविक है।'

इन सब बातों से विचारशील व्यक्ति इस एक ही निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि हम जैसी परिस्थितियाँ प्राप्त करना चाहते हैं, उसी के अनुसार अपनी मनोभूमि को ढालें। आत्मनियंत्रण और आत्मनिर्माण के आधार पर हम अपने लिए अपनी भली या बुरी दुनियाँ का निर्माण आप कर सकते हैं।

www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६० पृष्ठ-४

पराश्रित होना पाप है

पराश्रित होने पर मनुष्य को अपना सम्मान खोना पड़ता है। वह दूसरों की दया पर निर्भर रहता है। अत: इससे उसकी मानसिक परतंत्रता प्रारंभ हो जाती है। यह सबसे बुरी गुलामी होती है। दूसरों की दया, कृपा, पक्ष पाने के लिए उसे अपनी आत्मा के विरुद्ध जाना पड़ता है, अपनी आत्मा को दबाना पड़ता है।

अत: दान लेना हमारे लिए शरम की बात होनी चाहिए। जो दूसरों की भिक्षा प्राप्त करके जीवन में सुख और सफलता चाहते हैं, उन्हें सिवा कष्ट, निराशा, पश्चात्ताप और निरादर के और कुछ नहीं मिलता।

अत: अपने पैरों पर स्वयं खड़े हों। दूसरों का मुँह न ताकें। तुम मनुष्य हो, कुत्ते नहीं कि किसी ने दया करके एक टुकड़ा फेंक दिया और तुम दुम हिलाने लगे। तुम ईश्वर के महान पुत्र हो, तुम सर्वसमर्थ हो, तुम क्षमतावान हो। तुम केवल अपने असीम बल को भूले हुए हो। अपने ऊपर भरोसा रखो, अपनी महानता को सोचो, अपने अज्ञान का परित्याग करो। शेर के पुत्र होकर तुम बकरियों की तरह क्यों मिमियाते हो? याद रखो, भगवान ने तुम्हें हाथ, पैर, बुद्धि सब दी है। यदि परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं और तुम्हें कभी दूसरे का आश्रय ग्रहण करने को बाध्य होना पड़े, तो उससे जल्दी से जल्दी भागने का प्रयत्न करो, आत्मनिर्भर बनो।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६० पृष्ठ-३८-३९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मसुधार से ही सच्ची शांति संभव है

संसार के हर दुर्जन को सज्जन बनाने की, हर बुराई के भलाई में बदल जाने की आशा करना, वैसी ही आशा है, जैसी सब रास्तों पर से काँटे-कंकड़ हट जाने की।

अपने स्वभाव और दृष्टिकोण में परिवर्तन कर सकना, कुछ श्रमसाध्य, समयसाध्य और निष्ठासाध्य अवश्य है, पर असंभव तो किसी भी प्रकार नहीं है। मनुष्य चाहे तो विवेक के आधार पर अपने मन को समझा सकता है, विचारों को बदल सकता है और दृष्टिकोण में परिवर्तन कर सकता है। इतिहास के पृष्ठ ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं, जिनसे प्रकट है कि आरंभ से बहुत हलके और ओछे दृष्टिकोण के आदमी अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करके संसार के श्रेष्ठ महापुरुष बने हैं। इसी प्रकार ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है, जिनके विचार जब तक ऊँचे रहे, तब तक प्रतिष्ठा के उच्च आसन पर अवस्थित रहे, पर जब उनका अंत:करण कलुषित हो गया, विचार घटिया हो गए, तो उनका जीवनक्रम भी पतनोन्मुख हो गया और वे अधोगति को प्राप्त हुए। सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और राजनीतिक विचारों में अनेक बार परिवर्तन करने पड़ते हैं। इसी प्रकार यदि मनुष्य चाहे तो विभिन्न समस्याओं पर विचार करने के अपने तरीके को, सोचने के ढंग को भी बदल सकता है। अपनी विचार शैली की त्रुटियों को समझ सकना और इनके सुधार में संलग्न होना, यद्यपि बहुत बुद्धिमत्ता और उच्च साहस का काम है, वह कठिन भी है, लेकिन असंभव नहीं माना जा सकता।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६० पृष्ठ-४-६

प्रगति के पथ पर बढ़ते ही जाइए

विघ्न-बाधाएँ आती हैं, आपको झटका मारती हैं, आप गिर जाते हैं, हिम्मतपस्त हो जाते हैं, किंतु इससे काम नहीं चलेगा। गिरकर भी उठिए, फिर चलने का प्रयास कीजिए। एक बार नहीं, अनेक बार आपको गिरना पड़े, किंतु गिरकर भी उठिए और आगे बढ़िए। उस छोटे बालक को देखिए जो बार-बार गिरता है, किंतु फिर उठने का प्रयत्न करता है और एक दिन चलना सीख जाता है। आपकी सफलता, विकास उत्थान भी उतना ही सुनिश्चित है। अत: रुकिए नहीं, उठिए। ठोकरें खाकर भी आगे बढ़िए। सफलता एक दिन आपका स्वागत करने को तैयार मिलेगी।

आने वाले विघ्नों, कठिनाइयों में भी अपनी धर्म न छोड़ें। स्मरण रखिए, प्रत्येक विघ्न-बाधाओं का सर्वप्रथम आघात आपके उत्साह, आशा और भविष्य के प्रति आकर्षण पर होता है। इनका सीधा वार आपके हृदय पर होता है, किंतु कहीं आपका हृदय टूट न जाए, इसके लिए यह सोच लीजिए कि जिस प्रकार घोर अंधकार के बाद सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है, उसी प्रकार आपका उज्ज्वल भविष्य प्रकाशित होने वाला है। अमावस की काली रात के पश्चात चंद्रमा की चाँदनी सहज ही फूट पड़ती है। आज का कठिन समय भी गुजर जाएगा, इसे हृदयंगम कर लीजिए। अपने आशावादी दृष्टिकोण, आकांक्षाओं, उत्साह की संपत्ति की यों ही न खोइए और प्रगति के पथ पर आशा और उत्साह के साथ आगे बढ़ते ही जाइए।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६० पृष्ठ-२३-२४-२५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोषों में भी गुण ढूँढ़ निकालिए

अपने से अधिक सुखी, अधिक साधनसंपन्न, अधिक ऊँची परिस्थिति के लोगों के साथ यदि अपनी तुलना की जाए, तो प्रतीत होगा कि सारा अभाव हमारे ही हिस्से में आया है, परंतु यदि उन असंख्य दीन-हीन, पीड़ित परेशान लोगों के साथ तुलना करें, तो अपने सौभाग्य की सराहना करने को जी चाहेगा।

तृष्णा का कोई अंत नहीं। एक से एक अच्छी और एक से एक सुंदर चीजें इस दुनियाँ में मौजूद हैं। उस क्रम का अंत नहीं। आज जो कुछ हम चाहते हैं, उसे मिलने पर कल और बढ़िया का मोह बढ़ेगा। बढ़ियापन का कहीं अंत नहीं। इस कुचक्र में उलझने से सदा घोर असंतोष ही बना रहेगा। इसलिए यदि चित्त का समाधान करना हो, तो कहीं न कहीं पहुँचकर संतोष करना पड़ेगा। यदि उस संतोष को आज ही, वर्तमान स्थिति में ही कर लिया जाए तो तृप्ति, पूर्णता और संतोष के रसास्वादन का आनंद आज ही उपलब्ध हो सकता है। इसके लिए एक क्षण की प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी। सुख और दुःख किन्हीं परिस्थितियों का नाम नहीं, वरन मन की दशाओं का नाम है। संतोष और असंतोष वस्तुओं में नहीं, वरन भावनाओं और मान्यताओं से होता है। इसलिए उचित यही है कि सुख-शांति की परिस्थितियाँ ढूँढ़ने-फिरने की अपेक्षा, अपने दृष्टिकोण को ही परिमार्जित करने का प्रयत्न करें। इस प्रयत्न में हम जितने सफल होंगे, शांति के उतने ही निकट पहुँच जाएँगे।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६० पृष्ठ-४

भाग्य बनाना अपने हाथ की बात है

www.vicharkrantibooks.org

भाग्यवादी ऐसे पंगु की तरह है, जो अपने पाँवों पर नहीं, दूसरों के कंधों पर चलता है। जब तक दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति उसे उठाए रहते हैं, तब तक वह किसी प्रकार चलता रहता है। दूसरों का आधार हटते ही गिरकर नष्ट हो जाता है। उन्नति करने के लिए, संघर्ष के लिए उसमें न पुरुषार्थ होता है, न समुचित उल्लास और न अध्यवसाय।

युवक के लिए भाग्यवादी होना एक दुर्भाग्य है। यह एक ऐसा अभिशाप है, जो मनुष्य को सदा गलत और अपने प्रति कमजोर विचारों की गुप्त अलक्षित जंजीरों में बाँधे रहता है। भाग्यवादी मनुष्य से किसी महत्त्वपूर्ण कार्य की आशा नहीं की जा सकती।

जिस व्यक्ति को शकुन-अपशकुन के मिथ्या विचार, हस्तरेखाओं द्वारा भाग्य पढ़े जाने की पोच भावना या दिखावटी ज्योतिषियों को कुंडली इत्यादि दिखाकर अनिष्ट ग्रहों को दूर करने का मानसिक रोग लग गया है, उसकी उन्नति होना कठिन है। उसने अपना आत्मविश्वास खो दिया है।

भाग्यवादिता विचारों की गुलामी है, सबसे बुरा परावलंबन है। जो दूसरों के सहारे चलता है, वह किसी न किसी दिन गिरेगा ही। यह मनुष्य के बौद्धिक दिवालियेपन का दुष्परिणाम है।

विश्वास कीजिए आपमें कई अद्‍भुत योग्यताएँ, सामर्थ्य और विशेषताएँ भरी पड़ी हैं। आप इसलिए गिर पड़े हैं कि इन योग्यताओं को आप विकसित नहीं करते। छिपी हुई योग्यता ऐसी है जैसे छिपा हुआ धन। जिस व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का ज्ञान नहीं है, वह अवसर आने पर भी कोई उन्नति नहीं कर सकता।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६१ पृष्ठ-२७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतोषी सर्वदा सुखी

असंतोष शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह नष्ट कर देता है। यह एक मानसिक रोग है, आंतरिक उत्पात है, इससे बचने में ही कल्याण है। जो लोग सोचते हैं कि असंतोष से प्रगति की आकांक्षा जाग्रत होती है, वे भूल करते हैं। प्रगति तो स्वस्थ आत्मा का स्वाभाविक चिह्न है। शांत और संतुलित मस्तिष्क सदा प्रगति की बात सोचेगा और उसके लिए वह गतिविधि भी अपनाएगा जो सफलता की मंजिल पार करने में समर्थ होती है।

हमें संतुष्ट रहना चाहिए। संतोष में ही शांति है। आज जो उपलब्ध है, उसके लिए ईश्वर को अनेक धन्यवाद देना और उसके लिए पूर्णरूप से प्रसन्न रहना ही हर विवेकशील के लिए उचित है। जिन्हें हमसे कम मिला है, उनकी तुलना में अधूरे साधन एवं घटिया वस्तुओं के होते हुए भी हम भाग्यशाली हैं। इस अपने सौभाग्य पर हमें क्यों प्रसन्न नहीं होना चाहिए ? क्यों संतोष नहीं करना चाहिए ? यदि सुखी रहने की इच्छा है, तो संतोष को अपने स्वभाव में सम्मिलित करना ही पड़ेगा।

और भी अधिक उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त करने के लिए हम प्रयत्न करें, यह उचित है, पर इसके लिए खिन्न या असंतुष्ट होने की आवश्यकता नहीं है, यह कार्य तो संतुष्ट और प्रसन्न मन से ही सुविधापूर्वक हो सकता है। हम अच्छे-से-अच्छे के लिए प्रयासरत रहें और बुरे-से-बुरे के लिए तैयार रहें तो असंतोष और निराशा से बचा जा सकता है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६१ पृष्ठ-२२*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ईर्ष्या की आग में मत जलिए

ईर्ष्या विषभरी घूँट है, जिसके पीने पर कोई भी मनुष्य, अपने जीवन के सौंदर्य और आनंद को अपने हाथों नष्ट कर देता है और उसमें अंदर ही अंदर एक भयंकर आग सुलगती है, जो उसे निरंतर जलाए रहती है और एक दिन भस्मीभूत कर देती है। ईर्ष्या एक वह तलवार है, जो स्वयं चलाने वाले का ही नाश कर देती है। ईर्ष्या वह मानसिक दुर्बलता एवं संकीर्णता का परिणाम है, जिसके कारण मनुष्य लोगों की दृष्टि में गिर जाता है।

आग जहाँ रखी जाती है, उसी जगह को पहले जलाती है। ईर्ष्या से दूसरों का कितना अहित किया जा सकता है, यह अनिश्चित है, पर यह पूर्ण निश्चित है कि कुढ़न के कारण अपना शरीर और मस्तिष्क विकृत होता रहेगा और इस आग में अपना स्वास्थ्य एवं मानसिक संतुलन धीरे-धीरे बिगड़ने लगेगा। यह हानि धीरे-धीरे एक दिन बरबादी के रूप में आ खड़ी होगी।

ईर्ष्या को मिटाकर उसके स्थान में अपनी त्रुटियों, कमजोरियों पर ध्यान देकर उन्हें दूर किया जाए। यह निश्चित है कि मनुष्य को दूसरों से ईर्ष्या होती है, तो इसका प्रमुख कारण अपनी कमजोरियाँ, त्रुटियाँ एवं सामर्थ्यहीनता ही है। इनकी वजह से लोग असफल होते हैं और दूसरों से ईर्ष्या करते हैं। अतः संदैव अपनी कमजोरियों, त्रुटियों को समझकर उनका निराकरण कीजिए। साथ ही अपने स्वाभाविक गुणों को बढ़ाइए।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६१ पृष्ठ-३२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम कितनी ही सेवा क्यों न करें

विश्वव्यापी समस्त दु:खों का कारण है—अज्ञान और पाप, स्वार्थ और मोह, तृष्णा और वासना। इन महाव्याधियों को हटाए बिना, दु:खों को दूर करने के समस्त प्रयत्न ऐसे ही हैं, जैसे रक्त-विकार की फुंसियों पर मरहम लगाना। इससे व्याधि का समाधान नहीं होता। तात्कालिक कष्टों से तथा सामयिक अभावों से पीड़ित मनुष्यों की सहायता करना कर्त्तव्य है, पर उतने मात्र से न तो मानव जाति के कष्ट दूर हो सकते हैं और न समस्याएँ सुलझ सकती हैं।

धन देकर की गई सेवा सबसे साधारण मानी जाती है। उससे मनुष्यों की कुछ समस्याएँ थोड़ी देर के लिए सरल होती हैं। किसी को शरीर-सुख पहुँचाकर की हुई सेवा भी कुछ समय तक ही दु:ख दूर करती है। तन और धन की सेवा नहीं करनी चाहिए, यह प्रयोजन नहीं है, वह तो उदार हृदय व्यक्ति समय-समय पर करता ही रहेगा, उन्हें तो करनी ही चाहिए, पर किसी का जीवनक्रम जब तक न सुधरेगा, तब तक इन तन और धन की सहायताओं से भी उसका काम न चलेगा। आज जो सर्वत्र अशांति, क्लेश और पीड़ा का साम्राज्य छाया हुआ है, उसका कारण धन या तन के सुखों की कमी नहीं है। ये तो समयानुसार दिन-दिन बढ़ते ही जाते हैं, फिर भी जो क्लेश बढ़ रहे हैं, उनका कारण व्यक्ति और समाज का आंतरिक स्तर, चरित्र एवं आदर्श का गिर जाना ही है। इसे उठाने की सेवा से विश्वव्यापी समस्याएँ सुलझेंगी।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६१ पृष्ठ-४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बाधाओं का स्वागत कीजिए

कार्य करते समय यदि यह विचार उत्पन्न हो कि उसका फल उतना उत्तम नहीं होगा, जितना कि पहले सोचा था और इसी भय से उसे मार्ग में छोड़ दिया जाए, तो वह भी कोई बुद्धिमानी की बात नहीं होगी। किसी भी कार्य का फल उत्तम, मध्यम या निम्न हो सकता है, परंतु उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। घोर परिश्रम के कारण कार्य का फल उत्तम भी हो सकता है और परिश्रम न करने की अवस्था में निम्नतर भी।

हमें कार्य करना चाहिए, उसके फल की कामना नहीं करनी चाहिए। ईश्वर ने हमें कर्म करने का अधिकार दिया है, फल तो स्वयं उसी के हाथ में है। यदि मनुष्य की इच्छानुसार ही फल मिलने लगता, तो दु:ख, संताप, पश्चात्ताप और असफलता जैसे शब्द ही संसार में सुनाई नहीं पड़ते। तब न किसी को धन की चिंता रहती और न मान-सम्मान की । सभी कुछ मानवी इच्छा के बल पर प्राप्त हो जाता।

मनुष्य वह है, जो बाधा रूपी चट्टानों को तोड़कर गिरा देता है। संकटों से डरकर हट जाने से कभी कोई काम नहीं बनता। जिस कार्य के पूर्ण होने से बाधाएँ नहीं आतीं, वह कार्य भी क्या कुछ उल्लेखनीय हो सकता है ? कार्य तो वह है, जिसमें बाधाएँ आएँ और कर्मवीर वह है, जो ऐसे ही कामों को करें, जिनमें बाधाएँ आ-आ कर उसे सफलता के द्वार की ओर दृढ़ता से धकेल दें। इसलिए बाधाओं का स्वागत करिए, वे आपको सफलता का रहस्य समझाएँगी।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६१ पृष्ठ-११

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को साधो, सुधारो

मन सचमुच कल्पवृक्ष है। इसकी सेवा करके हम असीम लाभ और अनंत पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही इससे सध सकते हैं। लौकिक सुख और पारलौकिक शांति की कुंजी हाथ आ सकती है। यदि उसे साधा न गया, तो वह शैतान की तरह हमारे सिर पर सवार होकर नाना प्रकार के कुकृत्य कराता है, विविधविध नाच नचाता है। यदि हम इसे वश में नहीं करते, तो इसके वश में होना पड़ता है। कहते हैं कि 'भूत' लोगों को डराता और सताता रहता है, पर यदि कोई तांत्रिक उसे वश में कर लेता है, तो फिर वह भूत उसकी इच्छानुसार नाचता है, जो कुछ कराना चाहता है, करता है और जो मँगाया जाता है, लाकर देता है। सचमुच का भूत किसी को देखना हो, तो वह अपने मन के रूप में देखा जा सकता है। असंयमी और उच्छृंखल मन किसी प्रबल शत्रु से बेताल ब्रह्मराक्षस से कम नहीं है, पर यदि उसे साध लिया जाए, तो परम मित्र बन जाता है, देवता की तरह सहायक सिद्ध होता है।

हजारों मनुष्यों की थोड़ी-थोड़ी सेवा कर देने से उतना लोकहित नहीं हो सकता, जितना अकेले अपने मन को साध लेने और सुधार लेने से हो सकता है। इसलिए सेवा का सबसे बड़ा पात्र एवं अधिकारी हमारा अपना मन ही है। इसकी सेवा करके हम समस्त प्राणियों की, सारे विश्व-ब्रह्मांड की सेवा कर सकते हैं। सेवा-धर्म का आरंभ करने के लिए प्रारंभिक सीढ़ी यही है। इसकी सेवा में भगवान की, विश्वमानव की सेवा सन्निहित है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६१ पृष्ठ-७

कठिन समस्याओं के सरल समाधान

जीवनसंग्राम का सबसे बड़ा शस्त्र आत्मविश्वास है। जिसे अपने ऊपर, अपने संकल्प-बल और पुरुषार्थ के ऊपर भरोसा है, वही सफलता के लिए अन्य साधनों को जुटा सकता है। आत्मसंयम भी उसी के लिए संभव है, जिसे अपने ऊपर भरोसा है। जिसने अपने गौरव को भुला दिया, जिसे अपने में कोई शक्ति दिखाई नहीं पड़ती, जिसे अपने में केवल दीनता, अयोग्यता एवं दुर्बलता ही दिखाई पड़ती है, वह किस बलबूते पर आगे बढ़ सकेगा और इस संघर्ष भरी दुनियाँ में अपना अस्तित्व कायम रख सकेगा? बहती धार में जिसके पैर उखड़ गए, उसे पानी बहा ले जाता है, पर जो अपना हर कदम मजूबती से रखता है, वह धीरे-धीरे तेज धार को भी पार कर लेता है।

हमें परमात्मा ने उतनी ही शक्ति दी है, जितनी कि किसी अन्य मनुष्य को। जिस समस्या को दूसरे पार कर चुके हैं, उसे हम क्यों पार नहीं कर सकते? फौज के प्रत्येक सैनिक को एकसी बंदूकें दी जाती हैं। निशाना लगाना हर सिपाही की अपनी सूझ-बूझ और योग्यता का काम है।

सभी व्यक्ति अनंत सामर्थ्य लेकर इस भूतल पर अवतीर्ण हुए हैं। प्रश्न केवल पहचानने, भरोसा करने और उसके सदुपयोग का है। जिन्हें अपने ऊपर भरोसा है, वे अपनी उपलब्ध सामर्थ्य का सदुपयोग करके कठिन से कठिन मंजिल को पार कर लेते हैं। *—अखण्ड ज्योति-मई १९६१ पृष्ठ-१८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर काम ईमानदारी और रुचि से करें

जो भी काम करो, उसे आदर्श, स्वच्छ, उत्कृष्ट, पूरा, खरा तथा शानदार करो। अपनी ईमानदारी और दिलचस्पी को पूरी तरह उसमें जोड़ दो, इस प्रकार किए हुए उत्कृष्ट कार्य ही तुम्हारे गौरव का सच्चा प्रतिष्ठापन कर सकने में समर्थ होंगे। अधूरे, अस्त-व्यस्त, फूहड़, निकम्मे, गंदे, नकली, मिलावटी, झूठे और कच्चे काम किसी भी मनुष्य का सबसे बड़ा तिरस्कार हो सकते हैं। यह बात वही जानेगा, जिसे जीवनविद्या के तथ्यों के पता होगा।

अपनी आदतों का सुधार, स्वभाव का निर्माण, दृष्टिकोण का परिष्कार करना, जीवनविद्या का आवश्यक अंग है। ओछी आदतें, कमीने स्वभाव और संकीर्ण दृष्टिकोण वाला कोई व्यक्ति सभ्य नहीं गिना जा सकता। उसे किसी का सच्चा प्रेम और गहरा विश्वास प्राप्त नहीं हो सकता। इस अभाव में वह सदा ओछा ही रहेगा, कोई बड़ी सफलता उसे कभी न मिल सकेगी।

कहते हैं कि बड़े आदमी सदा चौड़े दिल और ऊँचे दिमाग के होते हैं। यहाँ शरीर की लंबाई-चौड़ाई से मतलब नहीं, वरन दृष्टिकोण की ऊँचाई से ही अभिप्राय है। जिसे जीवन से प्रेम है, वह अपने आप को सुधारता है, अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत करता है। फलस्वरूप उसके सोचने और काम करने के तरीके ऐसे हो जाते हैं, जिनके आधार पर महानता दिन-दिन समीप आती-जाती है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६१ पृष्ठ-६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन एक समझौता है

जीवन एक समझौता है। सिर उठाकर चलने में सिर कटने का खतरा है। जो पेड़ अकड़े खड़े रहते हैं, वे ही आँधी से उखड़ते देखे गए हैं। बेंत की बेल जो सदा झुकी रहती है, हर आँधी-तूफान से बच जाती है। धरती पर उगी हुई घास को देखो, वह आँधी से टकराती नहीं, वरन हवा चलने पर उसी दिशा में मुड़ जाती है, जिधर को हवा का रुख होता है। परिस्थिति को परखने वाली घास का कोई आँधी-तूफान कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

झुककर चलो। मत कहो कि हम ही सही हैं और हमारी बात सबको माननी चाहिए। मत समझो कि तुम्हीं सबसे श्रेष्ठ, निर्दोष और बुद्धिमान हो। दूसरे लोग भी अपने दृष्टिकोण के अनुसार सही हो सकते हैं और हो सकता है कि जिन परिस्थितियों में वे रहे हैं, उनमें उनके लिए वैसा ही सोचना, बनना, करना भी स्वाभाविक हो। इसलिए दूसरों को समझने की कोशिश करो। उनके दृष्टिकोण की, उनकी परिस्थितियों की भिन्नता को स्वीकार करो।

इस दुनियाँ का सारा कारोबार एकदूसरे को समझने और सहन करने की नींव पर ठहरा हुआ है। समझौता ही जीवन का प्रधान आधार है। यदि तुम अड़ियल और जिद्दी बनकर अपने ही मन की श्रेष्ठता प्रतिपादन करते रहोगे, तो कुछ ही दिन में अपने को अकेला पड़ा हुआ और सफलता के गर्त में गिरता हुआ पाओगे।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६१ पृष्ठ-२२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भले ही थोड़ा पर उत्कृष्ट

जिनका दृष्टिकोण उत्कृष्ट है, उनके हाथ मे जाकर घटिया चीज भी बढ़िया बन जाती है। वे अपनी अभिरुचि के अनुरूप ही उसे भी ढालते हैं। संत इमर्सन का दावा था कि वे नरक में जाकर वहाँ स्वर्ग का वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं।

सुरुचि का जादू सामान्य और तुच्छ वस्तुओं एवं व्यक्तियों को भी सुंदर बना देता है, किंतु यदि दृष्टिकोण दूषित है, तो अच्छाई भी धीरे-धीरे बुराई के रूप में परिणत हो जाएगी। साँप के पेट में जाकर दूध भी विष हो जाता है। कुसंस्कारी व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों एवं पदार्थों को भी गंदा बना देते हैं। दृष्टिकोण की श्रेष्ठता ही वस्तुतः मानव जीवन की श्रेष्ठता है।

उत्कृष्टता का गौरव सदा में अक्षुण्ण रहा है। धूर्तता और धोखेबाजी कितनी ही बढ़ जाए, सज्जनों का मार्ग उनके कारण कितना ही कंटकाकीर्ण क्यों न हो जाए, फिर भी अंततः उत्कृष्टता को ही स्थिरता और सफलता का श्रेय मिलता है। परीक्षा में ऊँचे नंबरों से पास होने वाले छात्रों की हर क्षेत्र में माँग रहती है, जबकि घटिया श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर उनकी उन्नति सीमित हो जाती है।

जीवन एक परीक्षा है, उसे उत्कृष्टता की कसौटी पर ही सर्वत्र कसा जाता है। यदि खरा साबित न हुआ जा सके, तो समझना चाहिए कि प्रगति का द्वार अवरुद्ध ही है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६१ पृष्ठ-६

आत्मनिर्माण ही साधना है

आध्यात्मिक साधनाओं का मूल उद्देश्य आत्मनिर्माण है। जीवन की सारी समस्याओं का उलझना-सुलझना बहुत करके मनुष्य की आंतरिक स्थिति पर निर्भर रहता है। यों कभी-कभी कठिन प्रारब्धभोग थी मार्ग में विघ्न-बाधा बनकर अड़ जाते हैं और हटते-हटते बहुत परेशान कर लेते हैं, पर आमतौर से जीवन की गतिविधि व्यक्ति की अपनी निजी मनोभूमि पर आधारित रहती है।

धार्मिकता और आस्तिकता का अंतःकरण में प्रवेश होने से उन आदर्शों के प्रति निष्ठा बढ़ सकती है, जो व्यक्ति की पाशविक दुष्प्रवृत्तियों का समाधन और दैवी सत्प्रवृत्तियों का उत्थान कर सकें। यही साधना है। साधना, मानव जीवन की प्रत्येक गुत्थी को सुलझाने वाली, प्रत्येक कठिनाई का समाधान करने वाली मानी जाती है। यह मान्यता असत्य नहीं है। आत्मा पर छाए हुए मल-विक्षेपों को जो साधना हटा सकती है, उसी से सुख-शांति की प्रगति और उन्नति भी मिल सकती है। आत्मनिर्माण की वैज्ञानिक विधि-व्यवस्था ही साधना के नाम से पुकारी जाती है। आत्मनिर्माण का कार्य किसी विशाल कार्यालय या कारखाने के निर्माण से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस महान कार्य को संपन्न करने वाली पद्धति, साधना की महानता स्वल्प नहीं महान ही है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६१ पृष्ठ-२७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अशांत रहने से क्या लाभ ?

मानसिक शांति ऐसी बहुमूल्य खुराक है, जिसे प्राप्त करने पर गरीब आदमी भी बड़े आनंद और प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन करते हैं। श्रम अधिक करना पड़े, भोजन घटिया मिले या अन्य शारीरिक असुविधाएँ रहें, तो भी मानसिक शांति मिलने की दशा में मनुष्य सुखी ही रहेगा, पर सब सुख-साधन रहते हुए भी यदि आंतरिक चिंता और परेशानी से मन व्यथित रहता है, तो वह अपने को नरक में पड़ा हुआ ही अनुभव करेगा। इसलिए जीवन का आनंद-लाभ करने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रयत्न करना चाहिए कि वह अपनी मानसिक अशांति के कारणों की तलाश करे और उनसे छुटकारा पाने के लिए जितनी जल्दी संभव हो सके, कदम उठाए। अन्य अभावों और कठिनाइयों के रहने से कुछ विशेष हानि नहीं है, पर चित्त का उद्विग्न रहना, एक भारी विपत्ति है। इससे जीवन का सारा आनंद ही नष्ट हो जाता है।

यदि अशांति का कारण कोई परिस्थितियाँ हैं, तो बदलना चाहिए और यदि अपनी आदत ही ऐसी बन गई है कि जरा-सी बात पर जी घबराने लगे, भय का पहाड़ सामने में उपस्थित दिखाई दे, तो इस दुर्बलता को भी परास्त करना पड़ेगा। उपाय जो भी करना पड़े, परिणाम यही प्राप्त करना चाहिए कि मन की अशांति दूर हो, चित्त में बेचैनी न रहे। जीवनक्रम को और अधिक समृद्ध, उन्नतिशील बनाया जा सकता हो, तो ठीक है, वैसा करना चाहिए। कोई सफलता इतनी कीमती नहीं है कि उससे आंतरिक अशांति के द्वारा होने वाली क्षति की पूर्ति की जा सके। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६१ पृष्ठ-३३*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवनोद्द्देश्य का निर्धारण

आत्मिक प्रगति का पहला कदम यही हो सकता है कि हम अपना जीवनोद्द्देश्य निश्चित करें, लक्ष्य को स्थिर करें। यह लक्ष्य प्रेय नहीं श्रेय ही हो सकता है। प्रेय पथ पर सरपट तेजी से दौड़ती हुई जीवन की गतिविधि को मोड़कर श्रेय पर चलाना है, तो उसे मोड़ देते समय कुछ अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। भोग के स्थान पर संयम और विलास के स्थान पर तप की स्थापना करने से ही इस प्रकार का मोड़ दिया जा सकना संभव है।

शरीर को अन्नमयकोश कहते हैं। इसमें अत्यधिक आसक्ति का होना, इसी के सुख, भोग, लाभ और ऐश्वर्य में ही अपनी अभिरुचि केंद्रित कर लेना, अन्नमयकोश में आबद्ध होना है। पाँचों बंधन काटने का श्रीगणेश यहीं से आरंभ करना होगा। सबसे पहला प्रयत्न हमें यह करना है कि आत्मा के सुख को, लाभ को अपना वास्तविक लाभ मानते हुए उसे ही प्राथमिकता दें। इसके लिए यदि शरीर-सुख में कोई कमी आती है, तो उसे खुशी-खुशी स्वीकार करने को तत्पर हों। इस मान्यता को विचारों तक ही सीमित न रखकर व्यवहार में उतारने की प्रक्रिया का नाम 'तप' है। साधनापथ का पहला चरण तप ही है। अन्नमयकोश की, शरीर-भाव की आसक्ति घटाने का प्राथमिक उपाय तप ही है। संचित कुसंस्कार तप की अग्नि में तपाए बिना जल नहीं सकते। इसलिए किसी न किसी रूप में अध्यात्म मार्ग के पथिक को 'तप' को अपने कार्यक्रम में स्थान देना ही पड़ता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६१ पृष्ठ-९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सधा हुआ मन, वर देने वाला देवता

वासना और तृष्णा की सत्यानाशी सड़क पर दौड़ते हुए मन की लगाम को खींचना आवश्यक है। यदि उस पर अंकुश न लगाया जा सका और जिधर भी वह जा रहा है, उधर ही जाने दिया गया, तो फिर विनाश के अतिरिक्त और कोई परिणाम निकलने वाला नहीं है। अध्यात्म से विमुख होकर भौतिकवादी दृष्टिकोण में प्रवृत्त मनुष्य प्रेय मार्ग में इतना आसक्त हो जाता है कि आटे के साथ काँटा निगलने वाली मछली की तरह उसे दीन-दुनियाँ की कुछ खबर नहीं रहती कि आगे हमारा क्या होने वाला है?

इस प्रिय लगने वाली किंतु पतनोन्मुख प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना प्रत्येक आत्मवादी के लिए आवश्यक होता है। तपश्चर्या इस दृष्टि से अनिवार्य मानी गई है। जंगली हाथी को पालतू बनाने में जितना झंझट करना पड़ता है, शेर को, सरकस दिखाने के उपयुक्त बनाने में जितना श्रम, चातुर्य खरच करना पड़ता है, उतना ही मन को कुमार्ग से लौटाकर सन्मार्ग पर चलने का अभ्यासी बनाने में लगता है। इसी कठिन कार्य को साधना कहते हैं। यही तपश्चर्या भी है। यदि प्रयत्नपूर्वक मन को साध लिया गया, तो वह वश में हुआ मन, देवता के समान प्रत्यक्ष वर देने वाला बन जाता है। ऐसा सुसंयत मन जिसके पास है, उसे इस संसार में किसी वस्तु की कमी नहीं रहती, उसे विश्वविजयी ही माना जाता है। आत्मिक प्रगति का पहला कदम यही हो सकता है कि हम अपना जीवनोद्देश्य निश्चित करें, लक्ष्य को स्थिर करें। यह लक्ष्य प्रेय नहीं, श्रेय ही हो सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६१ पृष्ठ-१०

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्ति

स्वाध्याय से आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्ति जाग्रत होती है। सद्ग्रंथों में उपस्थित आदर्श से जब मनुष्य अपनी तुलना करता है, तभी वह समझ पाता है कि मानवता के मापदंड से अभी वह कितना पीछे है। उसके अंदर कितनी मात्रा में क्या-क्या दोष-दुर्गुण भरे पड़े हैं? उन्नतिशील बनने के लिए जिन आवश्यक गुणों की कमी जब अपने में दिखाई पड़ने लगती है, तभी वह उसकी पूर्ति की बात सोचता है। यही उन्नतिशील होने की प्रक्रिया है।

जब तक मनुष्य अपने त्रुटियाँ न देख पाएगा और उन्हें छोड़कर सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए तत्पर न होगा, तब तक उसकी वर्तमान हीन अवस्था में कोई परिवर्तन भी संभव न होगा। जिसके मस्तिष्क में प्रगतिशील और प्रकाशवान विचारों का नया जल नहीं पहुँचता, उसका अंत:प्रदेश गंदे नाले की तरह अवरुद्ध पड़ा हुआ दिन-दिन अधिक दुर्गंधित बनता जाता है। मन की शक्ति विचारों पर ही अवलंबित है। जिसके जितने उच्चकोटि के विचार होंगे, वह उतना ही महान, उतना ही आत्मिक दृष्टि से समुन्नत माना जाएगा।

प्रगति तभी होती है, जब मनुष्य कुछ भूलता और कुछ सीखता है, कुछ छोड़ता और कुछ ग्रहण करता है। साधारण मनुष्य अपने को निर्दोष मानते हैं और अपनी कठिनाइयों का दोष दूसरों पर मढ़ते रहते हैं, पर जब जीवन-तथ्यों का मनन और चिंतन करने पर अपने सुधार और प्रशिक्षण की बात समझ में आती है, तो आधी समस्या हल हो जाती है। आज तक संसार में जिन्होंने किसी भी दिशा में प्रगति की है, उन्हें यही मार्ग अपनाना पड़ा है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६१ पृष्ठ-२०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोबल की न्यूनता

इच्छाशक्ति और संकल्पबल की कमी का नाम ही कायरता है। कायर व्यक्ति हर घड़ी डरते रहते हैं। उन्हें अपने चारों ओर आशंका, अविश्वास और असफलता के चिह्न ही दीखते रहते हैं। थोड़ी-सी कठिनाई को देखकर वे बहुत घबराते हैं और जरा-सी विपत्ति आने में किंकर्तव्यविमूढ़ होकर पागलों जैसी चेष्टाएँ करने लगते हैं। आत्महत्या ऐसे ही उद्विग्न लोग कर बैठते हैं। हर समय चिंता, शोक, भय, आशंका में डूबे रहकर अपनी नींद हराम कर लेते हैं। कायर व्यक्ति निरंतर परेशान बने रहते हैं। कोई-न-कोई छोटा-मोटा कारण उन्हें डराने और चिंतित करने के लिए पैदा होता ही रहता है। इसके विपरीत जिनमें साहस है, मनोबल है, वे मौत के साथ जूझते हुए भी हँसते देखे गए हैं।

युद्ध के मोर्चे पर, जहाँ दोनों ओर से गोलियाँ सनसनाती रहती हैं, उस मौत के साए में भी वीर योद्धा हँसते, विनोद करते हैं। बड़ी-से-बड़ी आपत्ति में वे अपने धैर्य, साहस और विवेक को स्थिर रखते हैं तथा कठिन परिस्थिति आने पर दूने उत्साह से उसे पार करने का प्रयत्न करते हैं। डरते वे किसी से भी नहीं। अपने पर और अपने भगवान पर जिसे भरोसा है, वह क्यों किसी से डरेगा? क्यों निराश एवं हतोत्साह होगा? सांसारिक सभी कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए मनोबल की आवश्यकता होती है, इसलिए जीवन की महत्त्वपूर्ण संपदाओं में मनोबल का होना, एक बड़ी विभूति मानी जाती है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६१ पृष्ठ-२२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

संकल्प-शक्ति की दुर्बलता

आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनोबल की नितांत आवश्यकता है। इसके अभाव में कोई व्यक्ति न तो वासना पर नियंत्रण कर सकता है और न तृष्णा के बंधनों से छूट सकता है। बार-बार वह किन्हीं दुर्गणों को त्यागने की इच्छा करता है, उनके परित्याग का संकल्प भी करता है, पर आंतरिक दुर्बलता के कारण वह बात निभती नहीं।

मनोवेगों का उफान जब आता है, उसे उस परित्याग के दुर्बल निश्चय को बात ही बात में उखाड़ फेंकता है। जप, तप, ध्यान, भजन, पूजन आदि करने का कार्यक्रम बनता है। थोड़े दिनों में जोश ठंढा होते ही आलस आ घेरता है और बनाया हुआ कार्यक्रम छूट जाता है। कई बार इस प्रकार आत्मोन्नति के प्रयत्न असफल हो जाने पर फिर हिम्मत ही नहीं रहती। मनुष्य सोच लेता है कि यह सब हमारे वश का नहीं, हमसे यह सब नहीं निभेगा। भगवान की इच्छा हमारा कल्याण करने की नहीं दीखती।

लौकिक और पारलौकिक पुरुषार्थों की सफलता का प्रमुख आधार मनोबल है। साहस और धैर्य के बिना किसी को इस संसार में कोई कहने लायक सफलता नहीं मिली। इसलिए मानव जीवन का पूरा लाभ उठाने के इच्छुक सदा से अपने मनोबल को बढ़ाने का प्रयत्न करते रहे हैं। जिसे यह तत्त्व जितनी अधिक मात्रा में उपलब्ध हो गया, वह उतना ही मनोरथ में सफल होता देखा गया है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६१ पृष्ठ-२२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा पर से मल-आवरण भी तो हटें

हमारे अंदर अनेक दोष भरे पड़े हैं। वे सभी एक साथ नहीं छूट सकते। पैर में कई काँटे लग जाएँ, तो सब एक साथ नहीं निकल सकते। एक-एक करके ही उन्हें निकालना पड़ता है। जो काँटा अधिक कष्टकारक हो और जिसे निकालना अधिक आसान हो, पहले उसे ही निकालने का प्रयत्न करना बुद्धिमानी मानी जाएगी। आत्मसुधार के लिए भी यही नीति अपनानी पड़ेगी। जो अधिक कष्टकारक दुर्गुण हैं, पर जिन्हें अधिक आसानी से निकाला जा सकता है, पहले उन्हें ही हाथ में लेना उचित है। हम ऐसे ही व्यावहारिक कदम उठाते हुए आत्मसुधार की मंजिल पार करें, तो सफलता की संभावना सुनिश्चित हो जाएगी।

मस्तिष्क में बुद्धि रहती है और हृदय में भावना। भावनाओं को कोमल बनाना, हृदय को करुणा, दया, स्नेह, उदारता, सेवा, सद्भावना से ओत-प्रोत करना, विज्ञानमयकोश के विकास की साधना है। इस साधना से हमारी अनुदारता, संकीर्णता, निष्ठुरता, निर्दयता, स्वार्थपरता पर अंकुश लगता है। दूसरों के सुख-दुःख परिलक्षित होने लगते हैं। भावनाओं में ही भगवान का निवास होता है। जिसकी भावनाएँ जितनी ही निष्ठुर हैं, वह उतना ही पतित है और जिसका हृदय जितना कोमल, स्नेहपूर्ण एवं उदार है, उसे उतना ही उच्च भूमिका में अवस्थित एवं भगवान के निकट पहुँचा हुआ माना जाता है। सभी सफलताएँ एक बात पर निर्भर हैं कि कोई व्यक्ति अपना सुधार, निर्माण और विकास किस सीमा तक करने में समर्थ होता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६१ पृष्ठ-३२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सामयिक चेतावनी

हमारा जीवन आत्मा के लिए है या शरीर के लिए? इन दोनों बातों में से किसको प्रधानता देनी है, इसका निर्णय हमें अब कर ही लेना चाहिए। हम शरीर नहीं आत्मा हैं। शरीर कल नहीं तो परसों नष्ट होने वाला है। शरीर की सुरक्षा रखी जानी उचित है। उससे संबंधित आजीविका-उपार्जन, परिवार का पोषण एवं लौकिक कर्त्तव्यों का पालन भी उचित है। अपने घोड़े को कौन भूखा मार डालता है, कौन उसकी साज-सँभाल नहीं करता, पर इसी प्रक्रिया में अपनी सारी शक्ति नहीं लगानी चाहिए। घोड़ा जिस यात्रा के लिए खरीदा गया था, उस मंजिल का स्मरण ही भुला देना, कहाँ की बुद्धिमानी है?

आत्मा का जीवन चिरस्थायी है। शरीर उसका एक वस्त्र मात्र है। वस्त्र को रंगीन बनाने के लिए अपना रक्त निकालकर उसकी रँगाई कौन करेगा? एक हम हैं, जो इसी खिलवाड़ में लगे हुए हैं। कुछ दिन के मनोरंजन में व्यस्त रहकर आत्मा के भविष्य को लाखों-करोड़ों वर्ष के लिए अंधकारमय बना रहे हैं।

अपनी आज की मनोदशा पर हमें विचार करना है। अपनी अब तक की गतिविधियों पर हमें शांत चित्त से ध्यान देना है। क्या हमारे कदम सही दिशा में चल रहे हैं? यदि नहीं तो क्या यह उचित न होगा कि हम ठहरें, रुकें, सोचें और यदि रास्ता भूल गए हैं, तो पीछे लौटकर सही रास्ते पर चलें? इस विचार-मंथन की वेला में आज हमें यही करना चाहिए। हम समय रहते जागें और जो बाकी है, उसका सदुपयोग कर लें।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६१ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिकूल परिस्थिति में भी हम अधीर न हों

अपने प्रियजन के वियोग से हम अधीर हो जाते हैं, क्योंकि वह हमें छोड़कर चल दिया। इस विषय में अधीर होने से क्या काम चलेगा? क्या वह हमारी अधीरता को देखकर लौट आएगा? यदि नहीं, तो हमारा अधीर होना व्यर्थ है। फिर हमारे अधीर होने का कोई समुचित कारण भी तो नहीं, क्योंकि जिसने जीवन धारण किया है, उसे मरना तो एक दिन है ही। जो जन्मा है, वह मरेगा भी।

संपूर्ण सृष्टि के पितामह ब्रह्मा हैं। चराचर सृष्टि उन्हीं से उत्पन्न हुई है। अपनी आयु समाप्त होने पर वे नहीं रहते, क्योंकि वे भी भगवान विष्णु की नाभि-कमल से पैदा हुए हैं। अत: महाप्रलय में वे भी विष्णु के शरीर में विलीन हो जाते हैं। जब यह अटल सिद्धांत है कि जीवित वस्तु का नाश होगा ही, तो फिर हम उस अपने प्रिय का शोक क्यों करें? उसे मरना ही था, आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों। सदा कोई जीवित रहा भी है, जो वह रहता? जो जहाँ से आया था, चला गया। एक दिन हमें भी जाना है। इसलिए जो दिन शेष हैं, उन्हें धैर्य के साथ उस परमपिता परमात्मा के गुणों के चिंतन में लगाएँ।

शरीर के व्याधिग्रस्त होते ही हम विकल हो जाते हैं। विकल होने से आज तक कोई रोगमुक्त हुआ है? यह शरीर तो व्याधियों का घर है। जाति, आयु, भोग को साथ लेकर ही तो यह शरीर उत्पन्न हुआ है। पूर्वजन्म के जो भोग हैं, वे तो भोगने ही पड़ेंगे।

www.awgp.org *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६१ पृष्ठ-१३*

www.vicharkrantibooks.org

सफलता का गुप्त स्रोत, दृढ़ इच्छाशक्ति

दृढ़ इच्छाशक्ति, सदुद्देश्य और परमात्मा के भरोसे पर मनुष्य के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इसके बिना कोई भी अपने संकल्प में स्थायी सफलता प्राप्त नहीं करता। जो मनुष्य अपने जीवन में सफल होने की इच्छा करता है, वह अपनी इसी शक्ति को चैतन्य करने की चेष्टा करे और उसे सन्मार्ग में लगाए तो निस्संदेह अपने लक्ष्य में सिद्धि प्राप्त कर सकेगा।

जिन लोगों को अपने कार्यों में सफलता के चिह्न दिखाई पड़ते हैं, उनमें अन्य कारण चाहे कोई भी हों, परंतु एक कारण इच्छाशक्ति की निर्बलता भी है। यदि मनोयोगपूर्वक कार्य किया जाए, तो वह निर्बलता शीघ्र दूर हो सकती है।

यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो इच्छाशक्ति को दृढ़ कीजिए। इसके दृढ़ होने पर कोई कार्य अधूरा नहीं रहेगा। कार्य में विघ्न आना भी स्वाभाविक है, उनसे घबराना नहीं चाहिए। मनुष्य-जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ है और वे कठिनाइयाँ भी प्रयत्नपूर्वक ही दूर हो पाती हैं।

कुछ भाग्यवादी लोग भी अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पाते। उनका विचार है कि सफलता भाग्य पर निर्भर है, परंतु यह दलील भ्रमपूर्ण तो है ही, मनुष्य को सदा के लिए बेकार कर देने वाली है। आपको भूख लगी है, भोजन सामने रखा है, परंतु हाथ न लगाएँगे, तो मुख में किस प्रकार पहुँचेगा?

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६१ पृष्ठ-१६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंतरिक दुर्बलताओं से लड़ें

अज्ञान ही सबसे बड़ा बंधन है, इसी के पाश में जीव बँधा हुआ है। माया और अविद्या एक ही वस्तु के दो नाम हैं। जिस माया के वशीभूत होकर प्राणी कुकर्म करता और निविड़ बंधनों में जकड़ा हुआ भवसागर में डूबता-उतराता रहता है, वह और कुछ नहीं अज्ञान एवं भ्रममात्र ही है।

अपने स्वरूप के संबंध में, अपने अस्तित्व के संबंध में हम सबको भारी भ्रम है। कहने को शरीर और आत्मा को भिन्न माना जाता है, पर व्यवहार में शरीर ही आत्मा, शरीर ही सर्वस्व बना रहता है और जीव शरीर के लिए अपने आप को भयानक अंधकारमय भविष्य में डाल लेता है। यदि वस्तुस्थिति का ज्ञान हमें हो जाए और शरीर को आत्मा के एक तुच्छ उपकरण की तरह प्रयोग करें, तो जीवनद्देश्य की प्राप्ति का मार्ग सहज ही खुल सकता है।

कुविचारों, कुसंस्कारों, वासनाओं और तृष्णाओं में मनुष्य इसलिए ग्रसित रहता है कि वह उनकी तुच्छता और व्यर्थता को ठीक प्रकार न समझकर उन्हीं को प्रिय मान लेता है और उन्हें अपने स्वभाव का एक अंग बना लेता है। बाहर से वह उन्हें बुरा-भला भी कहता है, पर भीतर गहराई तक जो जड़ें जमी हुईं हैं, उन्हें काटने का प्रयत्न नहीं करता। फलस्वरूप अपनी आंतरिक दुर्बलताओं को जानते हुए भी मनुष्य उनके निवारण के लिए कुछ कर नहीं पाता।

ज्ञान के समान पवित्र इस संसार में और कुछ नहीं है। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६१ पृष्ठ-३४*

www.vicharkrantibooks.org

ज्ञान से ही बंधन टूटते हैं

ज्ञान ही एकमात्र वह प्रकाश है, जिसके आधार पर जीव को अपने वास्तविक स्वरूप की, हित-अनहित की, लाभ-हानि की, बुद्धिमत्ता एवं मूर्खता की वास्तविक जानकारी हो सकती है और वह उन तुच्छ बातों की उपेक्षा करके महान हितसाधन में संलग्न हो सकता है।

इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए सबसे प्रथम साधन है, स्वाध्याय। सद्ग्रंथों के माध्यम से सत्पुरुषों की, मनीषियों और ऋषियों की आत्मा हर घड़ी सत्संग करने को प्रस्तुत रहती है। जो महापुरुष स्वर्गवासी हो चुके हैं, दूरस्थ हैं या जिनके पास समय का अभाव रहता है, उनसे प्रत्यक्ष सत्संग नहीं हो सकता। ग्रंथों द्वारा उनका सत्संग, कितनी ही देर तक, किसी भी समय किया जा सकता है। सभी सद्ग्रंथ, जिनमें जीवन की समस्याओं को सतोगुणी दृष्टिकोण के साथ सुलझाया गया है, शास्त्र हैं। वे संस्कृत में ही हों, यह कोई आवश्यक नहीं। ऐसा भी नहीं कि जो कुछ हैं, संस्कृत शास्त्र ही हैं। शास्त्र का अर्थ है, सत्साहित्य।

वे पुस्तकें जो आत्मा को सत् की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा देती हैं, ऐसे ग्रंथों का अध्ययन शास्त्राध्ययन कहलाता है। उन्हीं को स्वाध्याय में निमित्त पढ़ने का मनीषियों ने आदेश किया है। महाभारत में लिखा है—

"ज्ञान के समान नेत्र नहीं, सत्य के समान तप नहीं, राग के समान दु:ख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं।" *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६१ पृष्ठ-३४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुविचारों का प्रतिरोध सद्विचारों से

विचारों का महत्त्व कभी कम नहीं माना जा सकता। आत्मनिर्माण के लिए, युग निर्माण के लिए, सद्विचारों का अधिकाधिक प्रसार होना अत्यंत आवश्यक है। कुविचारों के विस्तार ने आज मानव-प्राणी के कुकर्म करने के लिए, कुमार्ग पर चलने के लिए विवश कर दिया है और मानव सभ्यता को सर्वनाश के कगार पर ला खड़ा कर दिया है। इस स्थिति में परिवर्तन का एकमात्र उपाय है, सद्विचारों का विस्तार। अविद्या का अंधकार केवल सद्ज्ञान के प्रकाश से ही दूर होगा।

कुमार्ग पर भटकने वाला मानव आत्मज्ञान के प्रकाश में ही अपना सच्चा पथ प्राप्त कर सकेगा।

कुविचार फैलाने वाले साधन कितने अधिक हैं। सिनेमा, साहित्य, गीत, वाद्य सभी तो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अनीतिमूलक प्रेरणा के देने में व्यस्त हैं। कुकर्मी मनुष्य अपने आचरण से भी कुकर्मों का शिक्षण जनसाधारण को देते हैं। कहने की अपेक्षा कर दिखाने का और भी अधिक असर होता है। चोर, जुआरी, व्यसनी, बेईमान, व्यभिचारी अपनी वाणी से ही नहीं क्रियाओं से भी दूसरों को प्रभावित करके अपना अनुयायी बनाने में लगे हुए हैं। फलस्वरूप कुविचारों का कुकर्मों का दौर बढ़ता जाता है। उसका प्रतिरोध सज्जनों द्वार सद्विचारों एवं सत्कर्मों के प्रचार करने के अतिरिक्त भला और किस प्रकार हो सकता है? *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६१ पृष्ठ-३९*

पाप की अवहेलना मत करो

वह मत करो, जिसके लिए पीछे पछताना पड़े। निरर्थक वस्तुएँ बड़ी मात्रा में एकत्रित कर लेने से भी क्या लाभ, जो उत्तम है, उसका थोड़ा-सा संचय भी उत्तम है।

अव्यवस्थित और असंयत रहकर सौ वर्ष जीने की अपेक्षा, ज्ञानार्जन करते हुए और धर्मपूर्वक एक वर्ष जीवित रहना अच्छा है। धुआँ देकर देर तक सुलगती रहने वाली और कालिख उत्पन्न करती रहने वाली अग्नि की अपेक्षा थोड़ी देर उज्ज्वल प्रकाश देकर बुझ जाने वाली आग सराहनीय है।

जिसने धर्म का आधार छोड़ दिया, जो निरंकुश और स्वेच्छाचारी की तरह सोचता और करता है, उससे दुष्कर्म ही बन पड़ेंगे, वह कुमार्ग पर ही चल सकेगा। धर्म-बंधनों से अनेक स्थानों में बँधा हुआ मन ही उद्दंड घोड़े की तरह काबू में रह पाता है। ढालू जमीन पर फैलाया हुआ पानी जिस प्रकार ऊपर की ओर नहीं चढ़ता, वैसे ही स्वेच्छाचारी मन न तो भली बातें सोचता है और न भले कार्य करता है। मन को कुमार्ग से रोकना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। जिसने अपने ऊपर संयम कर लिया, वह इस त्रैलोक्य का स्वामी है।

पाप की अवहेलना न करो। वह थोड़ा होते हुए भी बड़ा अनिष्ट कर डालता है। आग की छोटी-सी चिनगारी भी मूल्यवान वस्तुओं के ढेर को जलाकर राख कर देती है। पला हुआ साँप कभी भी डस सकता है। मन में छिपा हुआ पाप कभी भी हमारे उज्ज्वल जीवन का नाश कर सकता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६२ मुख पृष्ठ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोविकार शारीरिक विकारों से ज्यादा पीड़ादायक

मलिन मन भला कहीं चैन पा सकता है ? वह अभागा यह भी नहीं जानता है कि मानसिक स्वच्छता की भी कोई स्थिति इस संसार में होती है और उसे प्राप्त करने वाला स्वर्गीय सुख-शांति का अनुभव कर सकता है।

मनोविकार अगणित प्रकार के हैं और वे सभी अपने-अपने ढंग के रोग हैं। शरीर के रोग को दूसरे भी जान सकते हैं, पर मन का रोग भीतर छिपा होने से वह केवल रोगी व्यक्ति को ही दीखता है। इतना अंतर तो अवश्य है, बाकी कष्टों में कोई अंतर नहीं। सच तो यह है कि शरीर के कष्ट से मन का कष्ट अधिक दुखदायी होता है।

बुखार में पड़े रोगी को जितनी पीड़ा है, पुत्र-शोक से संतप्त व्यक्ति को उससे कहीं अधिक होती है। सिर-दरद की तुलना में अपमान और असफलता का दुःख गहरा है। क्रुद्ध और कामासक्त मनुष्य जितना असंतुलित दिखता है, उतना जुकाम-खाँसी का मरीज नहीं। लोभी और स्वार्थी जितना पाप-प्रवृत्त रहता है, उतना भूखा और दरिद्र नहीं। रोगी मनुष्य स्वयं जितना व्यथित रहता है और दूसरों को जितना दुःख देता है, उसकी अपेक्षा मनोविकारग्रस्त का क्षेत्र अधिक विस्तृत है। वह स्वयं भी अधिक दुःख पाता है और दूसरे लोगों को भी अधिक मात्रा में सताता है। इसलिए शारीरिक आरोग्य की जितनी आवश्यकता अनुभव की जाती है, मानसिक आरोग्य पर उससे भी अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

www.awgp.org

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६२ पृष्ठ-८

www.vicharkrantibooks.org

अपनी गुत्थी आप सुलझाएँ

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। जिस प्रकार वह अनुपयुक्त विचारों एवं आदतों का गुलाम बनकर अपनी स्थिति दयनीय बनाता है, उसी प्रकार यदि वह चाहे तो विवेक को अपनाकर अपनी गतिविधियों को बदल अथवा सुधार भी सकता है और उसके फलस्वरूप नरक के दृश्य को देखते-देखते स्वर्ग में परिणत कर सकता है। यह मानसिक परिवर्तन ही युग निर्माण योजना का प्रधान आधार है। इसे मोटे रूप से 'विचारक्रांति' भी कह सकते हैं।

हमारे सामने अगणित कठिनाइयाँ, गुत्थियाँ, कमियाँ और परेशानियाँ आज उपस्थित हैं। उनका कारण एक ही है—'अविवेक'। उनके समाधान का उपाय भी एक ही है—'विवेक'। जिस प्रकार सूर्य का उदय होने पर अंधकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार जिस दिन हमारे अंतःकरण में विवेक का उदय होगा, उस दिन न तो व्यक्तिगत कठिनाइयाँ रहेंगी और न सामूहिक समस्याएँ उलझी दिखाई देंगी। मकड़ी अपना जाला आप बुनती है और उसी में फँसी बैठी रहती है, पर जब उसके मन में तरंग आती है, तो उस सारे जाले को निगलकर पूर्ण स्वतंत्रता भी अनुभव करती है। हमारी सभी समस्याएँ और सभी कठिनाइयाँ हमारी स्वयं की बनाई हुई हैं, बुनी हुई हैं। इन्हें सुलझा देना हमारे बाएँ हाथ का काम है। अंधकार में गाँठ खुल नहीं रही है, पर जब विवेक का दीपक जलेगा और रस्सी के मोड़-तोड़ साफ दीखने लगेंगे, तो गाँठ खुलने में कितनी देर लगेगी ?

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६२ पृष्ठ-६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तेजना और आवेश की विभीषिका

यदि मनुष्य अपनी पाशविक वृत्तियों पर नियंत्रण न करे, उन्हें यों ही उच्छृंखलतापूर्वक पनपने दे, तो उसकी स्थिति शरीरधारी नरपिशाच जैसी हो जाती है।

सर्प को चाहे भूल में ही, अनजाने में ही किसी ने छेड़ दिया है, पर वह अपने को थोड़ा-सा आघात लगने मात्र से इतना क्रुद्ध एवं उत्तेजित हो जाता है कि सामने वाले की जान लेकर ही पीछा छोड़ता है। कहते हैं कि सिंह, बाघ आदि हिंस्र पशु केवल इतनी-सी बात पर क्रुद्ध हो जाते हैं कि उनकी आँख से आँख कैसे मिलाई? नीची आँख करके कोई उनके सामने से भले ही निकल जाए, पर आँखों की तरफ देखने लगे, तो उसे वे अपना अपमान मानते हैं और इतनी-सी बात पर आक्रमण करके सामने वाले की बोटी-बोटी नोंच डालते हैं। लोग बताते हैं कि पिशाच भी ऐसे ही असहिष्णु होते हैं। उनके पीपल, मरघट के नीचे होकर गुजर जाए या कोई ऐसा काम कर बैठे, जिसे वे पसंद नहीं करते हों, तो अपनी नापसंदगी का बदला वे सामने वाले की जान लेकर ही चुकाते हैं।

सर्प, बाघ और पिशाच मनुष्य-योनि में नहीं माने जाते, पर मनुष्यों में भी अगणित ऐसे देखे जाते हैं, जिन्होंने अपनी दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना नहीं सीखा और फलस्वरूप असहिष्णुता की उत्तेजना में ऐसे काम करने लगते हैं, जो मनुष्यता को लज्जित करते हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६२ पृष्ठ-२२

भलाई की शक्ति मर नहीं सकती

यह नहीं सोच लेना चाहिए कि व्यक्ति में सचाई, नेकी, महानता, उदारता, दया, सेवा एवं सदाचार जैसी सत्प्रवृत्तियों तथा धैर्य, साहस, पुरुषार्थ एवं शौर्य जैसे सद्गुणों की सर्वथा कमी है। मनुष्य की आत्मा में जो श्रेष्ठता है, वह कभी मर नहीं सकती, जो प्रकाश है वह कभी बुझ नहीं सकता। इसलिए पूर्ण रूप से कोई व्यक्ति या समाज बुरा नहीं हो सकता।

मनुष्य जाति में फैली हुई दुष्प्रवृत्तियों के प्रति सावधान रहना चाहिए और उनका उन्मूलन करने के लिए सतत प्रयत्न करना चाहिए। साथ ही जहाँ सत्प्रवृत्तियों के अंकुर जम रहे हैं, उन्हें सींचने, खाद लगाने एवं रखवाली करने का प्रयत्न करना चाहिए। दैवी और आसुरी दोनों ही प्रवृत्तियाँ मनुष्य में रहती हैं। इनमें से यदि असुरता बढ़ जाती है, तो सर्वत्र अशांति एवं आपत्तियों की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और यदि देवत्व पनपने लगे, तो इसी भूमि पर सुख-शांति का ऐसा वातावरण उत्पन्न हो जाता है कि स्वर्ग जैसी आनंददायक स्थिति हमारी आँखों के आगे उपस्थित हो जाए।

आज बुराई बढ़ रही है और अच्छाई मुरझा गई है, इसीलिए चारों और नारकीय वातावरण उत्पन्न होता जाता है। इसे बदलने का प्रयत्न किया जाए, बढ़ी हुई असुरता को मिटाने और बीज रूप से सर्वत्र प्रस्तुत अच्छाई को सींचने का प्रयत्न किया जाए, तो युग ही बदल सकता है। हमें इसी पर विचार करना है और यह सब करने के लिए तत्पर होना है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६२ पृष्ठ-४४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमार्थ में ही स्वार्थ सन्निहित

आज सर्वत्र स्वार्थपरता का बोलबाला है। हर आदमी अपने निज के, आज के, तात्कालिक स्वार्थ और लाभ की बात सोचता है। इससे यदि भविष्य अंधकारमय बनता हो, औरों के लिए विपन्न परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हों, तो उसे चिंता नहीं। विचार करने की यह शैली बहुत ही क्षुद्र और अदूरदर्शितापूर्ण है। इससे दूसरों की तो हानि है ही, अपने स्वार्थ भी सुरक्षित नहीं रहते। तत्काल कुछ लाभ उठा लिया जाए, तो वह थोड़े ही समय में नष्ट हो जाता है। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि सबके हित में ही अपना हित है। मनुष्य समाज की कड़ी में हम अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। यदि सामाजिक स्थिति बिगड़ती है, तो उस हानि से सभी को कष्ट उठाना पड़ेगा। इसी प्रकार आज अभी हमें प्रत्यक्ष कोई हानि नहीं है, तो भी यह सोचना उचित है कि जो विभीषिकाएँ हमारे चारों ओर मँडरा रही हैं, उनके कुचक्र में हमें किसी भी क्षण पिसने को विवश होना पड़ सकता है। इसलिए हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को ही नहीं, सामूहिक स्वार्थ को भी अपना ही स्वार्थ समझें और आज ही की नहीं कल की संभावनाओं के बारे में भी सोचें और उनके संबंध में जागरूक रहें।

जो लोग अपने मतलब से मतलब रखने तथा सीमित स्वार्थ की बात सोचते हैं और यही अंदाज लगाते रहते हैं कि जब अपने ऊपर आ बनेगी, तब देखा जाएगा, वे भूल करते हैं। समय को देखकर सजग हो जाना और अपनी सुरक्षा का प्रयत्न करना, जागरूकता एवं बुद्धिमत्ता का चिह्न है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६२ पृष्ठ-५५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मानवता के आदर्शों पर आस्था

ऐश्वर्य बढ़ना चाहिए, पर साथ ही उत्तरदायित्व को समझने एवं उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करने की विवेकशीलता भी बढ़नी चाहिए।

मनुष्य का आंतरिक स्तर इसी आधार पर ढाला जाना चाहिए कि वह स्वयं चैन से रहे और दूसरों को चैन से रहने दे। स्वयं प्रगतिशील बने और दूसरों को प्रगति के पथ पर चलने में सहयोग प्रदान करे, अनीति को न तो सहन करे और न किसी को अन्यायपूर्वक सताए। अपना कर्त्तव्यपालन करे और दूसरों के सामने ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे, जिससे उन्हें श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले। धन-संग्रह की तृष्णा, पद, अधिकार, सत्ता एवं अहंकार की पूर्ति में आज जिस प्रकार लोग अपनी उन्नति समझते हैं और मौज-मजा कर लेने से जैसे जीवन की सफलता मानते हैं, वैसे ही यदि जीवन को आदर्श, महान, कर्त्तव्यरत एवं धर्मपरायण बनाने की हर व्यक्ति को लगन लग जाए, तो मनुष्य आदर्श मनुष्य बन सकता है और मानव सब प्राणियों में कितना महान है, इसका प्रतिक्षण अनुभव कर सकता है। सद्भावनाओं में जिन लोगों का मन डूबा रहेगा, उनका शरीर आदर्श उपस्थित करने वाले कार्य ही करेगा।

उन कार्यों से उन व्यक्तियों का निज का कल्याण तो होगा ही, साथ ही जो उनके संपर्क में आएँगे, वे भी संतोष एवं प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६२ पृष्ठ-५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्गुणों के विकास से ही समस्याओं का हल

आज हम उन्नति तो चाहते हैं, पर मानवीय सद्गुणों के विकास का प्रयत्न नहीं करते। समाज में शांति और संपन्नता रहे, यह सभी की इच्छा है, पर इसके मूल आधार पारस्परिक प्रेमभाव की वृद्धि का उपाय नहीं करते। भौतिक सुविधाओं में वह शक्ति नहीं है कि व्यक्ति को श्रेष्ठ बना दे। अच्छे व्यक्तित्व में यह गुण मौजूद है कि वह संपन्नता का उपार्जन कर ले। हम इस तथ्य को जब तक न समझेंगे, तब तक दौलत के पीछे भागते रहेंगे।

आदर्शवाद की उपेक्षा करके संपन्नता के लिए घुड़दौड़ लगाने का परिणाम लाभ के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध हो सकता है। यह दुनियाँ अधिक अच्छी, अधिक सुंदर, अधिक संपन्न, अधिक शांतिपूर्ण बने, यदि हम सब यही चाहते हैं, तो फिर इस प्रगति के मूल आधार, व्यक्तित्व की श्रेष्ठता की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया जाता। यही आश्चर्य है।

प्रगति तभी स्थायी रह सकेगी, सुख-शांति में तभी स्थिरता रहेगी, जब मनुष्य अपने को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का प्रयत्न करे। इस उपेक्षित तथ्य को अनिवार्य आवश्यकता के रूप में जब तक हम स्वीकार न करेंगे। और व्यक्तिगत एवं सामूहिक चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए कटिबद्ध न होंगे, तब तक अगणित समस्याओं की उलझनों से हमें छुटकारा न मिलेगा।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६२ पृष्ठ-५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्याय और सत्संग

यह ध्यान रखने की बात है कि मनुष्य सब कुछ स्वयं ही सोचने और करने नहीं लगता। मौलिकता की मात्रा तो बहुत थोड़ी होती है, अधिकतर तो लोग बाहर से ही प्रभाव ग्रहण करते हैं। जैसे वे देखते हैं, सुनते हैं, वैसा ही करने लगते हैं। चूँकि बुराइयों की चर्चाएँ और घटनाएँ बहुत होती रहती हैं, इसलिए लोगों का मन इसी ओर झुक पड़ता है। यदि विचारों का प्रवाह अच्छाई की दिशा में प्रवाहित हो रहा है, तो लोगों के मन उसकी ओर भी झुके बिना नहीं रह सकते। आज इसी प्रवाह-परिवर्तन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उत्तम विचारों में शक्ति न हो, सो बात नहीं है, पर वे इतनी कम मात्रा में हमसे संबंधित रहते हैं कि उनका थोड़ा-सा ही प्रभाव पड़ता है। यदि अधिक समय तक अधिक गहरे सद्विचारों का संपर्क किसी व्यक्ति को उपलब्ध हो, तो उसकी मनोदशा श्रेष्ठता की दिशा में मुड़े बिना नहीं रह सकती। स्वाध्याय और सत्संग की धर्मग्रंथों में भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। उन्हें जीवन का नितांत आवश्यक एवं अनिवार्य धर्म कर्त्तव्य माना गया है। स्वाध्याय की उपेक्षा करने वाले की भर्त्सना करते हुए शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है—"जो व्यक्ति जिस दिन स्वाध्याय नहीं करता, उस दिन वह अपने कर्त्तव्य और वर्ण-धर्म से पतित हो जाता है।" यही बात सत्संग के बारे में भी है। अच्छे व्यक्ति और अच्छे विचारों की तुलना पारस पत्थर से की गई है, जिसे छूकर लौह सरीखे कलुषित अंत:करण भी स्वर्ण जैसे बहुमूल्य बन जाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६२ पृष्ठ-२४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय के अनुरूप अपनी मनोभूमि ठीक रखें

हम निरंतर यह घोषणा करते रहे हैं कि अष्टग्रही का पुण्य पर्व युग निर्माण का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर आ रहा है। समय के साथ-साथ लोगों की विचार एवं कार्य प्रणाली में भला या बुरा अंतर उपस्थित हो जाता है। अध्यात्म शास्त्र एवं सूक्ष्म विज्ञान के तत्त्वदर्शी इस तथ्य को समझ पाते हैं। वे उस प्रवाह से बचने और अपनी स्थिति को सँभाले रहने के लिए सामयिक चेतावनी भी देते रहते हैं। जैसे सरदी आरंभ होते ही मोटे कपड़ों की व्यवस्था करने एवं वर्षाऋतु आते ही मकानों की टूटी छतें सँभालने में लगना पड़ता है, वैसे ही कुसमय का प्रवाह आने पर, कलियुग आदि कठिन समय आने पर, उनमें सुरक्षा के लिए और अधिक सावधानी से अपनी मनोभूमि को ठीक रखना पड़ता है।

छतें उनकी चुचाती हैं, जो वर्षा की उपेक्षा करके उनकी मरम्मत नहीं करते। ठंढ उन्हें सताती है, जो मोटे कपड़ों का प्रबंध नहीं करते। कलियुग का बुरा समय भी केवल उन्हें प्रभावित करता है, जो अपनी सुरक्षा में सतर्क नहीं रहते, अन्यथा सद्विचार, सत्कर्म, सद्भाव, सत्प्रयत्न सदा हर काल में संभव हैं और सज्जनता की ज्योति हर स्थिति में जलती रह सकती है। सत्य को प्राप्त करने में मनुष्य किन्हीं भी परिस्थितियों को चीरता हुआ सफलता प्राप्त कर सकता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६२ पृष्ठ-३३

गुत्थियों का हल अपने भीतर है

इस संसार में कोई बुराई नहीं है, कोई प्रतिकूलता नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा रहा है और न ही यह प्रेरणा दी जा रही है कि बाह्य जगत् में जो बुराइयाँ एवं त्रुटियाँ हैं, उन्हें सुधारा या बदला न जाए। यह तो करना ही चाहिए, पर साथ ही साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि सारे संसार को सुधार लेना या इच्छानुकूल बना लेना संभव नहीं है। सारी पृथ्वी पर फैले हुए काँटे नहीं बीने जा सकते, पर अपने पैरों में जूते पहने जा सकते हैं, जिससे काँटों का प्रभाव समाप्त हो जाए। अपना सुधार करना, अपने दृष्टिकोण को परिमार्जित करना, जूते पहनकर काँटों से निश्चिंत होने के समान ही है। बाह्य जगत् की बुराइयों को सुधारने के लिए भी अपनी उत्कृष्टता आवश्यक है। गरम लोहे को गरम लोहे से नहीं ठंढे लोहे से ही काटा जा सकता है। कीचड़ को कीचड़ से नहीं, शुद्ध जल से ही धोया जा सकता है। क्रोध को क्रोध से नहीं, शांति से परास्त किया जा सकता है। यदि हम स्वयं मलिन होंगे, बुराइयों से सने होंगे, तो दूसरों का सुधार कैसे कर सकेंगे? यदि अंतःकरण में उलझनों का जाला तना है, तो बाहर की गुत्थियों को सुलझाया जा सकना किस प्रकार संभव होगा?

इन पहेलियों को सुलझाते हुए हम यह न भूलें कि अधिकांश समस्याओं का समाधान हमारे अपने ही अंदर मौजूद है। अपने को सुधारना, अपने को बनाना, अपने को बढ़ाना ही वह उपाय है, जिससे दुनियाँ सुधर सकती है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६२ पृष्ठ-२६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय का सदुपयोग

खोई हुई दौलत फिर कमाई जा सकती है। भूली हुई विद्या फिर याद की जा सकती है। खोया हुआ स्वास्थ्य चिकित्सा द्वारा लौटाया जा सकता है, पर खोया हुआ समय किसी प्रकार नहीं लौट सकता है, उसके लिए केवल पश्चात्ताप ही शेष रह जाता है।

जिस प्रकार धन के बदले में अभीष्ट वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं, उसी प्रकार समय के बदले में भी विद्या, बुद्धि, लक्ष्मी, कीर्ति, आरोग्य, सुख, शांति, मुक्ति आदि जो भी वस्तु रुचिकर हो, खरीदी जा सकती है। ईश्वर ने समयरूपी प्रचुर धन देकर मनुष्य को पृथ्वी पर भेजा है और निर्देश दिया है कि वह इसके बदले में संसार की जो भी वस्तु रुचिकर समझे, खरीद ले, किंतु कितने व्यक्ति हैं, जो समय का मूल्य समझते और उसका सदुपयोग करते हैं ? अधिकांश लोग आलस्य और प्रमाद में पड़े हुए जीवन के बहुमूल्य क्षणों को यों ही बरबाद करते रहते हैं। एक-एक दिन करके सारी आयु व्यतीत हो जाती है और अंतिम समय वे देखते हैं कि उन्होंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया, जिंदगी के दिन यों ही बिता दिए।

इसके विपरीत जो जानते हैं कि समय का नाम ही जीवन है। वे एक-एक क्षण को कीमती मोती की तरह खरच करते हैं और उसके बदले में बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं। हर बुद्धिमान व्यक्ति ने बुद्धिमत्ता का सबसे बड़ा परिचय यही दिया है कि उसने जीवन के क्षणों को व्यर्थ बरबाद नहीं होने दिया।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६२ पृष्ठ-३२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मानवीय सदाशयता का लाभ आज भी मिलता है

मानव जाति में से उदारता और भलमनसाहत का अंत अभी भी नहीं हुआ है। माना कि सज्जनता घट रही है, स्वार्थ बढ़ रहा है और लोग एकदूसरे के सहायक न होकर ईर्ष्या और शत्रुता का परिचय देने में अग्रणी रहते हैं, इतना होने पर भी अभी इस संसार में मानवता बहुत कुछ बाकी है और उसका लाभ उन लोगों को सदा मिलता ही रहेगा, जो इसके अधिकारी हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपने स्वभाव को ऐसा ढालें, जिससे दूसरों की सहानुभूति अनायास ही उपलब्ध हो सके। चालाक आदमी लच्छेदार बातें बनाकर एक बार किसी को ठग सकते हैं, पर बार-बार ऐसा कर सकना उनके लिए कदापि संभव न होगा।

मनुष्य में भले-बुरे की परख करने को विवेक मौजूद है और वह बदमाशों तथा बदमाशियों को देर तक पनपने नहीं दे सकता। चालाकी और बेईमानी से कमाई हो सकती है, यह बात उतनी देर के लिए ही ठीक है, जब तक कि भंडाफोड़ नहीं हो जाता और यह एक सनातन सत्य है कि बुराई या भलाई देर तक छिपी नहीं रहती।

भलाई का विस्तार मंदगति से होता है, पर बुराई तो अत्यंत द्रुतगति से आकाश-पाताल तक जा पहुँचती है। इसलिए आमतौर से चालाकी और बेईमानी के आधार पर चलने वाले काम कुछ ही दिन में नष्ट हो जाते हैं। उपभोक्ता और सहकर्मी हो उनके सबसे बड़े शत्रु बन जाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६२ पृष्ठ-२५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन ही शत्रु, मन ही मित्र

मनोदशा में आवश्यक सुधार हुए बिना न तो शारीरिक स्थिति सुधरती है और न पारिवारिक व्यवस्था बनती है। आर्थिक प्रश्न भी बहुत कुछ इसी के ऊपर निर्भर हैं। मन एक प्रकार का प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है। उसके नीचे बैठकर हम जैसी भी कल्पनाएँ करते हैं, भावनाएँ रखते हैं, वैसी ही परिस्थितियाँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। बिगड़ा हुआ मन ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु और सुधरा हुआ मन ही अपना सबसे बड़ा मित्र है। इसलिए गीताकार ने कहा है कि '**उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्**' अर्थात अपना सुधार आप करें, अपने को गिरने न दें। अपना सुधार मनुष्य स्वयं ही कर सकता है। दूसरे की सिखावन की उपेक्षा भी की जा सकती है और नुक्ताचीनी भी। सुधरता कोई व्यक्ति तभी है,जब मन में अपने सुधार की तीव्र आकांक्षा जाग्रत होती है। यह आत्मसुधार का जागरण ही मनुष्य के सोए हुए भाग्य का जागरण है।

लोग ज्योतिषियों से पूछते रहते हैं कि हमारा भाग्योदय कब होगा ? वे बेचारे क्या उत्तर दे सकते हैं। मनुष्य का भाग्य उसकी अपनी मुट्ठी में है। अपनी आदतों के कारण ही उसकी दुर्गति बनाई गई होती है। जब मनुष्य अपनी त्रुटियों को सुधारने, दृष्टिकोण को बदलने और अच्छी आदतों को उत्पन्न करने के लिए कटिबद्ध हो जाता है, तो इस परिवर्तन के साथ-साथ उसका भाग्य भी बदलने लगता है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६२ पृष्ठ-२८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस संसार की श्रेष्ठतम विभूति—ज्ञान

सच्चा ज्ञान वह है, जो हमें हमारे गुण, कर्म और स्वभाव की त्रुटियाँ सुझाने, अच्छाइयाँ बढ़ाने एवं आत्मनिर्माण की प्रेरणा प्रस्तुत करता है। यह सच्चा ज्ञान ही हमारे स्वाध्याय और सत्संग का, चिंतन और मनन का विषय होना चाहिए।

कहते हैं कि संजीवनी बूटी का सेवन करने से मृतक व्यक्ति भी जीवित हो जाते हैं। हनुमान द्वारा पर्वतसमेत यह बूटी लक्ष्मण जी की मूर्च्छा जगाने के लिए काम में लाई गई थी। वह बूटी औषधि रूप में तो मिलती नहीं है, पर सूक्ष्म रूप में अभी भी मौजूद है। आत्मनिर्माण की विद्या संजीवनी विद्या कही जाती है, इससे मूर्च्छित पड़ा हुआ मृतकतुल्य अंतःकरण पुनः जाग्रत हो जाता है और प्रगति में बाधक अपनी आदतों को, विचार-शृंखलाओं को सुव्यवस्थित बनाने में लगकर अपने आप का कायाकल्प ही कर लेता है।

सुधरी विचारधारा का मनुष्य ही देवता कहलाता है। कहते हैं कि देवता स्वर्ग में रहते हैं। देव-वृत्तियों वाले मनुष्य जहाँ कहीं भी रहते हैं, वहाँ स्वर्ग जैसी परिस्थितियाँ अपने आप बन जाती हैं। अपने को सुधारने से चारों ओर बिखरी हुई परिस्थितियाँ उसी प्रकार सुधर जाती हैं, जैसे दीपक के जलते ही चारों ओर फैला हुआ अँधेरा उजाले में बदल जाता है। *—अखण्ड ज्योति-जून १९६२ पृष्ठ-३६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वच्छ मन से सभ्य समाज

कार्यों का मूल विचार है। मस्तिष्क में जिस प्रकार के विचार घूमते हैं, उसी प्रकार के कार्य होने लगते हैं। जिस वर्ग के लोग स्वार्थपरता, तृष्णा, वासना और अहंता के विचारों में डूबे रहते हैं, वहाँ नाना प्रकार के क्लेश, कलह, दुष्कर्म एवं अपराध निरंतर बढ़ते रहते हैं। जहाँ परमार्थ, संयम, संतोष, नम्रता और आदर्शवाद को प्रधानता दी जाती है, वहाँ सर्वत्र सत्कर्म ही सत्कर्म होते दिखाई पड़ते हैं और उसके फलस्वरूप सतयुगी सुख-शांति का वातावरण बन जाता है। जिस प्रकार स्वस्थ शरीर से स्वच्छ मन का संबंध है, उसी प्रकार स्वच्छ मन के ऊपर सभ्य-समाज की संभावना निर्भर है। यदि शरीर बीमार पड़ा रहेगा, तो मन में निम्न श्रेणी के विचार ही आएँगे। अस्वस्थ व्यक्ति देर तक उच्च भावनाएँ अपने मन में धारण किए नहीं रह सकता। उसी प्रकार अस्वच्छ मन वाले व्यक्तियों से भरा समाज कभी सभ्य कहलाने का अधिकारी नहीं बन सकता। मानव जाति एकता, प्रेम, प्रगति, शांति एवं समृद्धि की ओर अग्रसर हो, इसका एकमात्र उपाय यही है कि लोगों के मन आदर्शवाद, धर्म, कर्त्तव्यपरायणता, परोपकार एवं आस्तिकता की भावनाओं से ओत-प्रोत रहें। इस दिशा में यदि हमारे कदम उठते रहेंगे, तो उन्नति के लिए जिन योग्यताओं एवं क्षमताओं की आवश्यकता है, वे सब कुछ ही समय में अनायास प्राप्त हो जाएँगी। यदि दुर्गुणी लोग बहुत चतुर और साधन संपन्न बनें, तो भी उस चतुरता और क्षमता के दुरुपयोग होने पर विपत्ति ही बढ़ेगी ।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६२ पृष्ठ-४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट भावनाओं का महत्त्व

धनी लोगों का व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन क्लेश और द्वेष से भरा रहता है। पैसे के साथ-साथ दुर्गुण बढ़ते चलने पर वह दौलत, उलटी विपत्ति का कारण बनती चलती है। इसलिए आर्थिक उन्नति के साथ-साथ विवेकशीलता और सत्प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि भी अवश्य होती रहनी चाहिए।

आत्मकल्याण की लक्ष्य पूर्ति तो सर्वथा सत्प्रवृत्तियों पर ही निर्भर है। ईश्वर का साक्षात्कार, स्वर्ग एवं मुक्ति को प्राप्त कर सकना केवल उन्हीं के लिए संभव है, जिनके विचार और कार्य उच्च कोटि के आदर्शवादी एवं परमार्थ भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। कुकर्मी और पाप-वृत्तियों में डूबे हुए लोग चाहे कितना ही भजन-पूजन कर लें, उन्हें ईश्वर के दरबार में प्रवेश न मिल सकेगा।

भगवान घट-घटवासी हैं। वे भावनाओं को परखते हैं और हमारी प्रवत्तियों को भली प्रकार जानते हैं। उन्हें किसी बाह्य उपचार से बहकाया नहीं जा सकता है। वे किसी पर तभी कृपा करते हैं, जब भावना की उत्कृष्टता को परख लेते हैं। उन्हें भजन से अधिक भाव प्यारा है। भावनाशील व्यक्ति बिना भजन के भी ईश्वर को प्राप्त कर सकता है, पर भावनाहीन व्यक्ति के लिए केवल भजन के बल पर लक्ष्यप्राप्ति संभव नहीं हो सकती। लौकिक और पारलौकिक, भौतिक और आत्मिक कल्याण के लिए उत्कृष्ट भावनाओं की अभिवृद्धि नितांत आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६२ पृष्ठ-११

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रेय और प्रेय दोनों मार्ग खुले हैं

यहाँ हर श्रेष्ठ व्यक्ति को कठिनाइयों की, असुविधाओं की अग्निपरीक्षाओं में होकर गुजरना पड़ा है। जो विवेक को अपनाए रहता है, प्रलोभनों में स्खलित नहीं होता और सन्मार्ग से किसी भी कारण कदम पीछे नहीं हटाता, वस्तुतः वही इस भवसागर को पार करता है, वही माया के जादू से अछूता बचा रहता है और उसी का मानव-शरीर धारण करना सार्थक होता है।

श्रेय का मार्ग महान है। पुण्य परमार्थ के, श्रेष्ठता और महानता के, धार्मिकता और आस्तिकता के पुण्य-पथ पर चलना कुछ कठिन नहीं है और इस दिशा में चलते हुए निरंतर प्राप्त होती रहने वाली शांति को उपलब्ध करना भी कुछ कष्टसाध्य नहीं है। आवश्यकता केवल इतनी ही है कि मनुष्य तुरंत के लोभ का त्याग कर दूरवर्ती परिणामों पर विचार करे और उसी के आधार पर अपनी गतिविधियाँ विनिर्मित करने के लिए कृतसंकल्प एवं कटिबद्ध हो जाए। दोनों मार्ग सामने खुले पड़े हैं, इस अपनी इच्छा के ऊपर पूर्णतया निर्भर है कि दोनों में से किसी को भी चुन लें।

सभ्य समाज की रचना का होना या वर्तमान असभ्यता का और भी दिन-दिन अधिक बढ़ते जाना, हमारे इसी चुनाव पर निर्भर है। एक श्रेय, दूसरा प्रेय, ये दोनों ही उम्मीदवार खड़े हैं। यह हमारी अपनी पसंदगी की बात है कि इनमें से किसी एक को वोट देकर उसे विजयी बना दें।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६२ पृष्ठ-२०

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मनिर्माण का साधन—स्वाध्याय और सत्संग

कुविचारों के समाधान का एक ही उपाय है, उसके स्थान पर सद्विचारों को भर देना। किसी गिलास में भरी हुई हवा को हटाना हो, तो उसमें पानी भर देना चाहिए। पानी का प्रवेश होने से हवा अपने आप निकल जाएगी। बिल्ली पाल लेने से चूहे घर में कहाँ ठहरते हैं। कुविचारों को मार भगाने का एक ही तरीका है कि उनके स्थान पर सद्विचारों की स्थापना की जाए। मन में जब सद्विचार भरे रहेंगे, तो भीड़ से भरी धर्मशाला को देखकर अपने आप लौट जाने वाले मुसाफिरों की तरह कुविचार भी कोई दूसरा रास्ता टटोलेंगे।

स्वाध्याय और सत्संग में जितना अधिक समय लगाया जाता है, उतनी ही कुविचारों से सुरक्षा बन पड़ती है। जीवन को सब प्रकार दुःख-दारिद्रय से भर देने वाले कुकर्मों को अपनाने से ही मनुष्य का पतन होता है और यह कुकर्म, कुविचारों के प्रतिफल मात्र ही हैं। शांति और प्रगति के लिए हमें सद्विचारों की ही शरण में जाना पड़ता है। इसी प्रक्रिया का नाम स्वाध्याय और सत्संग है। रोटी और पानी जिस प्रकार शरीर की सुरक्षा और परिपुष्टि के लिए आवश्यक हैं, उसी प्रकार आत्मिक स्थिरता और प्रगति के लिए सद्विचारों की प्रचुर मात्रा हमें उपलब्ध होनी ही चाहिए। इस आवश्यकता की पूर्ति स्वाध्याय और सत्संग से, मनन और चिंतन से पूरी होती है। आत्म-निर्माण के लिए यह प्रधान साधन है। संकल्प की, मन की शुद्धि के लिए इसे ही रामबाण दवा माना गया है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६२ पृष्ठ-१२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्टता से श्रेष्ठता का जन्म

अपने को उत्कृष्ट बनाने का प्रयत्न किया जाए, तो हमारे संपर्क में आने वाले दूसरे लोग भी श्रेष्ठ बन सकते हैं। आदर्श सदा कुछ ऊँचा रहता है और उसकी प्रतिकृति कुछ नीची रह जाती है। आदर्श का प्रतिष्ठापन करने वालों को, सामान्य संसार को, हम जितना अच्छा बनाना और देखना चाहते हैं, हमें उसकी अपेक्षा कही ऊँचा बनने का आदर्श उपस्थित करना पड़ेगा।

उत्कृष्टता ही श्रेष्ठता उत्पन्न कर सकती है। परिपक्व शरीर की माता स्वस्थ बच्चे का प्रसव करती है। आदर्श पिता बनें, तो ही सुसंतति का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे। हम आदर्श गुरु हों, तो हमें श्रेष्ठ शिष्यों की श्रद्धा का लाभ मिलेगा। यदि हम आदर्श पति हों, तो ही पतिव्रता पत्नी की सेवा प्राप्त कर सकेंगे। शरीर की अपेक्षा छाया कुछ कुरूप ही रह जाती है। चेहरे की अपेक्षा फोटो में कुछ न्यूनता ही रहती है।

हम अपने आप को जिस स्तर तक विकसित कर सके होंगे, हमारे समीपवर्ती लोग उससे प्रभावित होकर कुछ ऊपर तो उठेंगे, तो भी अपनी अपेक्षा वे कुछ नीचे रह जाएँगे। इसलिए हम दूसरों से जितनी सज्जनता और श्रेष्ठता की आशा करते हों, उसकी तुलना में अपने को कुछ अधिक ही ऊँचा प्रमाणित करना होगा। हमें यह याद रखे रहना होगा कि उत्कृष्टता के बिना श्रेष्ठता उत्पन्न नहीं हो सकती।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६२ पृष्ठ-३५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दिव्य विभूति की दिव्य अनुभूति

आंतरिक दुर्बलताओं और त्रुटियाँ के कारण ही मनुष्य का सांसारिक जीवन अभावग्रस्त, अविकसित एवं अशांत रहता है। भीतर की कमजोरी ही बाहर दीनता और हीनता के रूप में दृष्टिगोचर होती है। आत्मघाती लोग ही इस संसार में तिरस्कृत, लांछित, घृणित, उपेक्षित और असफल रहते हैं। जिसके भीतर आत्मबल भरा होगा, जिसके अंतर में प्रकाश उठ रहा होगा, उसके बाह्य जीवन का प्रत्येक क्षेत्र, आशा, उत्साह, स्फूर्ति, तेजस्विता और पुरुषार्थ से परिपूर्ण दिखाई देगा। भीतरी बल की आभा को बाहर प्रकट होने से कोई आवरण रोक नहीं सकता। गरीबी, अस्वस्थता एवं विपन्न परिस्थितियों में पड़े हुए होने पर भी मनस्वी व्यक्ति अपनी महानता की प्रभा फैलाते रहते हैं। ऐसे लोगों की दुर्दशा क्षणिक ही हो सकती है, चिरस्थायी नहीं।

व्यक्ति का विकसित व्यक्तित्व ही वस्तुतः उसकी सच्ची संपत्ति सिद्ध होता है। यह संपत्ति जिसके पास मौजूद है, उसे न तो दरिद्र कहा जा सकता है और न असफल। बादलों के टुकड़े चंद्रमा को देर तक कहाँ छिपाए रह सकते हैं ? विपन्नता किसी मनस्वी व्यक्ति को दुर्दशाग्रस्त स्थिति में देर तक कहाँ पड़ा रखती है ? जहाँ आत्मबल होगा, वंहाँ कोई भी अभाव, चाहे वह व्यक्तिगत हो अथवा सांसारिक, अधिक समय तक टिक नहीं सकेगा।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६२ पृष्ठ-१०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का सच्चा सहचर—ईश्वर

ऐसा सबसे उपयुक्त साथी जो निरंतर मित्र, सखा, सेवक, गुरु, सहायक की तरह हर घड़ी प्रस्तुत रहे और बदले में कुछ भी प्रत्युपकार न माँगे, केवल एक ईश्वर ही हो सकता है। ईश्वर को जीवन का सहचर बना लेने से मंजिल इतनी मंगलमय हो जाती है कि यह धरती ही ईश्वर के लोक, स्वर्ग जैसी आनंदयुक्त प्रतीत होने लगती है। यों ईश्वर सबके साथ है और वह सबकी सहायता भी करता है, पर जो उसे समझते हैं, वास्तविक लाभ उन्हें ही मिल पाता है। किसी के घर में सोना गढ़ा है और उसे वह प्रतीत न हो, तो गरीबी ही अनुभव होती रहेगी, किंतु यदि मालूम हो कि घर में इतना सोना है, तो उसका भले ही उपयोग न किया जाए, मन में अमीरी का गर्व और विश्वास बना रहेगा। ईश्वर को भूले रहने पर हमें अकेलापन प्रतीत होता है, पर जब उसे अपने रोम-रोम में समाया हुआ, अजस्र प्रेम और सहयोग बरसाता हुआ अनुभव करते हैं, तो साहस हजारों गुना अधिक हो जाता है। आशा और विश्वास से हृदय हर घड़ी भरा रहता है। जिसने ईश्वर को भुला रखा है, अपने बलबूते पर ही सब कुछ करता है और सोचता है, उसे जिंदगी बहुत भारी प्रतीत होती है। इतना वजन उठाकर चलने में उसके पैर लड़खड़ाने लगते हैं। अपने साधनों में कमी दीखने पर भविष्य अंधकारमय प्रतीत होने लगता है। जिसे ईश्वर पर विश्वास है, वह सदा यही अनुभव करेगा कि कोई बड़ी शक्ति मेरे साथ है। जहाँ अपना बल थकेगा, उसका बल मिलेगा।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६२ पृष्ठ-७

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कर्म पर भावना का प्रभाव

यों कर्म के बाह्य रूप को देखकर भी उसके भले-बुरे होने का अनुमान लगाया जाता है, पर उसकी वास्तविक कसौटी कर्त्ता की भावना ही रहती है। हमें अपनी भावना का परिष्कार करना चाहिए। संकीर्णता और स्वार्थपरता जब तक कायम है, तब तक श्रेष्ठ काम करते हुए भी उनमें से कोई स्वार्थ-साधन करने की इच्छा बनी रहेगी और फिर चाहे यह इच्छा पूर्ण भी न हो पाए, पर उस दुर्भावना के आधार पर वह सत्कर्म भी पाप रूप में ही प्रस्तुत होंगे। जब अवसर मिलेगा, तब स्वार्थपरता प्रबल होकर दुष्कर्म करा भी लेगी। यदि अपना दृष्टिकोण उच्च है, प्रत्येक कार्य कर्त्तव्यपालन की धर्मबुद्धि से किया जा रहा है, तो साधारण श्रेणी का जीवनयापन करते हुए अपना गृहस्थ-पालन भी तप-साधना और योगाभ्यास की तरह सत्कर्म सिद्ध होगा और उसी में जीवनोद्देश्य के पथ पर भारी प्रगति होती चली जाएगी।

इस संसार में भावना ही प्रधान है। कर्म का भला-बुरा रूप उसी के आधार पर बंधनकारक और मुक्तिदायक बनता है। सद्भावना से प्रेरित कर्म सदा शुभ और श्रेष्ठ ही होते हैं, पर कदाचित वे अनुपयुक्त बन पड़े, तो भी लोकदृष्टि से हेय ठहरते हुए वे आत्मिक दृष्टि से उत्कृष्ट ही सिद्ध होंगे। आंतरिक उत्कृष्टता, सदाशयता, उच्च भावना और कर्त्तव्यबुद्धि रखकर हम साधारण जीवन व्यतीत करते हुए भी महान बनते हैं और इसी से हमारी लक्ष्यपूर्ति सरल बनती है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६२ पृष्ठ-२०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्भाव रखें, शांति प्राप्त करें

यदि दृष्टिकोण बदल लिया जाए, तो अपनी दुनियाँ बिलकुल दूसरी ही तरह की बन जाती है। स्वजनों और स्नेही जनों की अच्छाइयों, सेवाओं, उपकारों, सज्जनताओं और उपयोगिताओं को याद किया जो, तो ऐसा लगेगा, मानों वर्षा में पूर्व दिशा से उठते हुए बादलों की तरह उनकी श्रेष्ठताएँ मस्तिष्क में उमड़ती चली आ रही हैं। उपकार, करुणा, सेवा और सहायता से, प्रेम और सहयोग से भरी यह दुनियाँ तब इतनी सुंदर लगती है कि उसके कण-कण के प्रति श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है और अपने आप दूसरों के उपकार के भार से लदा हुआ सा प्रतीत होता है।

जीवन में हर घड़ी आनंद और संतोष की मंगलमय अनुभूतियाँ उपलब्ध करते रहना अथवा द्वेष, विक्षेप और असंतोष की नारकीय अग्नि में जलते रहना बिलकुल अपने निज के हाथ की बात है। इसमें न कोई दूसरा बाधक है और न सहायक। अपना दृष्टिकोण यदि दोषदर्शी हो, तो उसका प्रतिफल हमें घोर अशांति के रूप में मिलेगा ही और यदि हमारा सोचने का तरीका प्रियदर्शी, गुणग्राही है, तो संसार की विविधता और विचित्रता हमारे मार्ग में विशेष बाधक नहीं हो सकती। संतोष, आनंद की अनुभूतियों का रसास्वदान करने से तब हमें कोई नहीं रोक सकता।

दोनों मार्ग हमारे सामने खुले पड़े हैं, जिधर भी चाहें हम प्रसन्नतापूर्वक, स्वेच्छापूर्वक खुशी-खुशी चल सकते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६२ पृष्ठ-२५

अहंकार, एक सत्यानाशी दुर्गुण

अहंकार का नाश करने का परमात्मा सदा प्रयत्न करते रहते हैं, क्योंकि यही दुर्गुण भव-बंधनों में जीव को बाँधे रहने में सबसे कड़ी लौह शृंखला का काम करता है। अहंकार को ही असुरता का प्रतीक माना गया है। अहंकार की महत्त्वाकांक्षाएँ संसार के लिए एक विपत्ति ही सिद्ध होती हैं।

सिकंदर, तैमूरलंग, नादिरशाह, औरंगजेब, नेपोलियन आदि के अहंकार ने कितनी निरीह जनता को संत्रस्त किया, इसका रोमांचकारी चित्र इतिहास के हर विद्यार्थी को याद है। अहंकार का मार्ग हर मनुष्य को इसी दिशा में ले जाता है। जितनी उसकी क्षमता और परिस्थिति होती है, उसी अनुपात से वह विपत्ति का कारण बनता जाता है।

सफलताएँ प्राप्त करने का हम प्रयत्न करें, पर यह न भूलें कि उसके साथ फूल में काँटे की तरह जो अहंकार छिपा रहता है, उसका आक्रमण अपने ऊपर न हो जाए।

हर सफलता के लिए हमें अपने सहयोगियों और मार्गदर्शकों का कृतज्ञ होना चाहिए तथा ईश्वर को सच्चे हृदय से धन्यवाद देना चाहिए कि उसकी अनुकंपा से ही इतना श्रेय प्राप्त हो सकना संभव हुआ, किंतु तुच्छताओं को भी भूल न जाना चाहिए। एक ही झटके में जब बड़े-बड़े किले चूर-चूर हो जाते हैं, तो बेचारे तुच्छ मनुष्य की बिसात ही कितनी है। मनुष्य को अपनी महानता याद रखनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६२ पृष्ठ-३१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव-जीवन और ईश्वर-विश्वास

वस्तुतः जीत उन्हीं की होती है, जो भौतिक शक्तियों तक ही सीमित न रहकर परमात्मा को अपने जीवनरथ का सारथी बना लेते हैं। उसे ही जीवन का संबल बनाकर मनुष्य इस जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त कर लेता है। हम देखते हैं कि ईश्वर को भूलकर संसार का ताना-बाना हम बुनते रहते हैं। अपने मन में हवाई किले बनाते हैं, कल्पना की उड़ान से दुनियाँ का ओर-छोर नापने की योजना बनाते हैं, किंतु हमें पग-पग पर ठोकरें खानी पड़ती हैं। दुर्योधन, रावण, हिरण्यकशिपु, सिकंदर आदि बड़ी-बड़ी हस्तियाँ पछताती चली गईं। भगवान के संसार में रहकर भगवान को भूलने और केवल संसारी शक्तियों को प्रधानता देने से और क्या मिल सकता है ? संसार के रणांगण में उतरकर हम इतने अंधे हो जाते हैं कि इस सारी सृष्टि के मालिक का आशीर्वाद लेना तो दूर उसका स्मरण तक हम नहीं करते और भौतिक-स्थूल संसार को ही प्रधानता देकर जूझ पड़ते हैं। ऐसे अहंकारी व्यक्ति चाहे कितनी भी सफलता प्राप्त क्यों न कर लें, उनकी विजय संदिग्ध ही रहती है।

आज मानव-जीवन की जो करुण एवं दनयीय स्थिति है, जो संताप, दुःख, असफलताएँ मिल रही हैं, उन सबका मूल कारण, ईश्वर-विश्वास की कमी, ईश्वरीय सत्ता की उपेक्षा करना है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६३ पृष्ठ-४

www.awgp.org

आत्मसंतोष और आत्मसम्मान

आत्मसम्मान का आधार दूसरों को सम्मान देने में ही। गुंबज वाले मकानों में होने वाली प्रतिध्वनि की तरह हमें वही आवाज सुनने को मिलती है, जो हमने बोली थी। यदि गाली दें तो गाली और भजन गाएँ तो भजन; वह गुंबज वाला मकान प्रतिध्वनि के रूप में दुहरा देता है। दर्पण में हमें अपनी ही परछाई दिखाई देती है। अपना जैसा भी कुरूप या रूपवान चेहरा होता है, वही लौटकर दिखाई पड़ता है। इस संसार का व्यवहार भी गुंबज वाले मकान या दर्पण जैसा ही होता है। यदि हम दूसरों का सम्मान करते हैं, तो बदले में हमें सम्मान मिलते हैं। अपने मन में यदि दूसरों के प्रति प्रेम एवं आत्मीयता भरी रहे, तो बदले में दूसरी ओर से भी हमें यही सब मिलेगा।

दूसरें लोगों का व्यवहार हमें संतोष और सम्मान प्राप्त करने वाला हो, यह हर किसी की इच्छा रहती है, पर वह यह भूल जाता है कि इनको प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना होगा ? मूल्य चुकाए बिना हमें संसार में कोई वस्तु नहीं मिलती। फिर परमानंद और तृप्ति प्रदान करने वाली ये विभूतियाँ भी हमें अनायास ही क्योंकर मिल सकेंगी ? अपने कर्त्तव्यों द्वारा यदि उचित मूल्य चुकाने को, अपना आचरण सुधारने को तैयार रहा जाए, तो कोई कारण नहीं कि आत्मसंतोष और आत्मसम्मान की समुचित मात्रा हमें प्राप्त न हो और आत्मा को तृप्ति की एवं प्रफुल्लता की परिपूर्ण अनुभूति का आनंद न मिले।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६३ पृष्ठ-१९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमें मानसिक चिंताएँ क्यों घेरती हैं ?

जैसा हम चाहते हैं, वैसी ही परिस्थितियाँ बनें, यह आग्रह अनुचित है। परिस्थितियों के अनुभव से दूसरी तरह के हल सोच लेने की दूरदर्शिता जिनमें रहती है, वे खिन्नता और निराशा को नहीं अपनाते।

संसार की समस्त परिस्थितियाँ अपने अनुकूल बन जाएँ, जो हम चाहते हैं, वह प्राप्त हो जाए, यह मानकर चलने वालों को दुःख, निराशा और असफलता का ही पग-पग पर सामना करना पड़ता है। दूसरे लोग, यहाँ तक कि भाग्य और ईश्वर भी उन्हें दुश्मन दीखते हैं। ईश्वर की इच्छा से अपनी इच्छा मिलाकर, संसार को नाट्यशाला मानकर अपना अभिनय उत्साहपूर्वक करते रहने में जिन्हें प्रसन्नता होती है, उनके लिए यहाँ सब कुछ शांति और संतोषदायक ही प्रतीत होता है। दुनियाँ में बिखरे हुए काँटे नहीं बीने जा सकते, वे तो बिखरे ही रहेंगे। अपने पैरों में जूते पहनकर उन काँटों से बचाव हो सकता है। अपने को बदल लेने से यहाँ सब कुछ ही बदल जाता है। दुःख और संतोष के स्थान पर पलक झपकते ही सुख और संतोष की स्थिति बन जाती है।

मानसिक क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली अगणित चिंता और वेदनाओं का एक ही समाधान है—अपने दृष्टिकोण में आवश्यक सुधार करना। आत्मनिर्माण के लिए, पुनर्निर्माण के लिए इसी आवश्यकता को ही सर्वोपरि माना गया है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६३ पृष्ठ-४३*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विचारों की उत्कृष्टता का महत्त्व

विचार एक प्रचंड शक्ति है और वह भी असीम, अमर्यादित, अणु-शक्ति से भी प्रबल। विचार जब घनीभूत होकर संकल्प का रूप धारण कर लेता है, तो प्रकृति स्वयं अपने नियमों का व्यतिरेक करके भी उसको मार्ग दे देती है। इतना ही नहीं उसके अनुकूल बन जाती है।

मनुष्य जिस तरह के विचारों को प्रश्रय देता है, उसके वैसे ही आदर्श, हाव-भाव, रहन-सहन ही नहीं, शरीर में तेज, मुद्रा आदि भी वैसे ही बन जाते हैं। जहाँ सद्विचारों की प्रचुरता होगी, वहाँ वैसा ही वातावरण बन जाएगा। ऋषियों के अहिंसा, सत्य, प्रेम, न्याय के विचारों से प्रभावित क्षेत्र में हिंसक पशु भी अपनी हिंसा छोड़कर अहिंसक पशुओं के साथ विचरण करते थे।

जहाँ घृणा, द्वेष क्रोध आदि से संबंधित विचारों का निवास होगा, वहाँ नारकीय परिस्थितियों का निर्माण होना स्वाभाविक है। मनुष्य में यदि इस तरह के विचार घर कर जाएँ कि मैं अभागा हूँ, दुखी हूँ, दीन-हीन हूँ, तो वह सदैव दीन-हीन परिस्थितियों में ही पड़ा रहेगा। इसके विपरीत मनुष्य में सामर्थ्य, उत्साह, आत्मविश्वास, गौरवयुक्त विचार होंगे, तो प्रगति, उन्नति स्वयं ही अपना द्वार खोल देगी। मनुष्य के विचार शक्तिशाली चुंबक की तरह हैं, जो अपने समानधर्मी विचारों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। विचारों का तप ही सच्ची तपस्या है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९६३ पृष्ठ-१२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा दृष्टिकोण भी तो सुधरे

हम अपने भीतरी दृष्टिकोण को बदलें, तो बाहर जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, वह सब कुछ बदला-बदला दिखाई देगा। आँखों पर जिस रंग का चश्मा पहना होता है, बाहर की वस्तुएँ उसी रंग की दिखाई पड़ती हैं। अनेक लोगों को इस संसार में केवल पाप और दुर्भाव ही दिखाई पड़ता है। सर्वत्र उन्हें गंदगी ही दीख पड़ती है। इसका प्रधान कारण अपनी आंतरिक मलिनता ही है। इस संसार में अच्छाइयों की कमी नहीं, श्रेष्ठ और सज्जन व्यक्ति भी सर्वत्र भरे पड़े हैं, फिर हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ अच्छाई तो होती ही है। छिद्रान्वेषण छोड़कर यदि हम गुण अन्वेषण करने का अपना स्वभाव बना लें, तो घृणा और द्वेष के स्थान पर हमें प्रसन्नता प्राप्त करने लायक भी बहुत कुछ इस संसार में मिल जाएगा। बुराइयों को सुधारने के लिए भी हम घृणा का नहीं, सुधार और सेवा का दृष्टिकोण अपनाएँ, तो वह कटुता और दुर्भावना उत्पन्न न होगी, जो संघर्ष और विरोध के समय आमतौर से हुआ करती है।

दूसरों को सुधारने से पहले हमें अपने सुधार की बात सोचनी चाहिए। दूसरों से सज्जनता की आशा करने से पूर्व हमें अपने आप को सज्जन बनाना चाहिए। बुराइयों को दूर करना एक प्रशंसनीय प्रवृत्ति है। अच्छे काम का प्रयोग अपने से ही आरंभ करना चाहिए। हम सुधरें, हमारा दृष्टिकोण सुधरे, तो दूसरों का सुधार होना कुछ भी कठिन न रह जाएगा। *—अखण्ड ज्योति-मई १९६३ पृष्ठ-१८*

उत्कृष्ट जीवन की आवश्यकता

जीवन का कोई लक्ष्य न हो, कोई आदर्श-उद्देश्य न हो, तो मनुष्य की स्थिति ठीक इसी तरह होती है, जैसे बिना ड्राइवर के चलने वाली मोटर, जिसकी शक्तियों का दुरुपयोग होना और कहीं भी नष्ट-भ्रष्ट होकर अवनति के गर्त में पड़ जाना निश्चित है।

उच्चादर्श, महान लक्ष्य, उच्च व्यक्तित्व, उज्ज्वल कार्यक्रम, उच्च व्यवहार को लक्ष्य बनाकर ही मनुष्य उत्कृष्ट आंतरिक स्थिति प्राप्त करता है और उसकी यह स्थिति ही सांसारिक जीवन में विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। जिसने अपने भीतरी स्तर का निर्माण करने में सफलता प्राप्त कर ली, उसके लिए बाह्य जीवन की सफलता भी सुनिश्चित है। आंतरिक स्थिति का निर्माण ही लक्ष्य-निर्धारण का मूल स्वरूप है। उसके लिए दृढ़ आस्था, अटल विश्वास, अनन्य निष्ठा का किला तैयार कर लेना ही बाह्य जीवन की सफलता का साधन बनता है। जीवनसंग्राम में अंत तक वे ही व्यक्ति मोर्चे पर डटे रहते हैं, जिनका उद्देश्य आदर्श, लक्ष्य दृढ़, पक्का, अचल और एक होता है। धूर्तता या प्रतिभा के बल पर कोई व्यक्ति थोड़े दिन छोटे-से क्षेत्र में चमक सकता है, पर विश्व-इतिहास के अनंत आकाश में चंद्र-सूर्य की तरह केवल वे ही महापुरुष चमकते रह सकते हैं, जिन्होंने अपना अंत:करण ऊँचा बनाया है। जिनका लक्ष्य, जिनकी अंत:स्थिति, जितनी ऊँची है, वस्तुत: वह उतना ही ऊँचा माना जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६३ पृष्ठ-१४-१५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मसुधार का सरल पथ, सेवा

पाप का परिणाम पाप ही होता है। बुराई का फल बुरा और भलाई का भला, सभी ने इसे स्वीकार किया है। मनुष्य जैसा अभ्यास करेगा, वैसा ही वह बनेगा। इसीलिए शुभ की प्राप्ति के लिए, अच्छाइयों की वृद्धि के लिए, आचारशास्त्र में परमार्थ, सेवा, दान-पुण्य, विभिन्न उपासना, व्रत आदि को धर्म मानकर उन्हें जीवन में प्रमुख स्थान दिया है। यदि मनुष्य अपने जीवन में सुधार चाहे, शुभ की आकांक्षा रखे, तो दूसरों के लिए वही सब करे, जो वह स्वयं अपने लिए चाहता है। दूसरों के लिए वही सोचे, जो वह अपने लिए सोचता है। दूसरों के दु:ख दूर करने में, कठिनाइयों में मदद करने में, उनका सुधार करने में उनके हित के लिए वही प्रयत्न किया जाए, जो मनुष्य अपने लिए करता है। इससे मनुष्य के दु:ख, परेशानियाँ, उलझनें स्वत: दूर हो जाती हैं। मानसिक गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं।

अपनी बुराइयों से सीधे लड़ने पर वे और भी प्रबल होती जाती हैं, ऐसी हालत में उनसे लड़कर विजय पाना कठिन है। अपनी बुराइयों का सुधार करने के लिए उनसे सीधे न लड़कर दूसरों के हित, सेवा, कल्याण में अपनी शक्ति लगानी चाहिए। इससे जो लाभ दूसरों को मिलना चाहिए, वह स्वयं को भी सहज ही प्राप्त हो जाता है। परमार्थ, परहितसाधन की पुण्य-प्रक्रिया में मनुष्य के स्वयं के दोष, बुराइयाँ भी दूर हो जाते हैं और दुहरा लाभ होता है। —*अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६३ पृष्ठ-२४*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक विचारधारा से स्वर्गीय जीवन

अध्यात्म-तत्त्वज्ञान को पारस माना गया है, क्योंकि उसका स्पर्श होते ही लोहे के समान तुच्छ श्रेणी के व्यक्तित्व भी सोने के समान बहुमूल्य और आकर्षक बन जाते हैं।

अध्यात्म का आधार संयम है और संयमी मनुष्य के लिए शारीरिक अस्वास्थ्य का प्रश्न ही नहीं उठता। अध्यात्म का मूल मंत्र प्रेम है। जो दूसरों के साथ आत्मीयता, उदारता, सेवा, सहिष्णुता और मधुरता का व्यवहार करेगा, उसके लिए दूसरों का सहयोग, सद्भाव एवं सौजन्य मिलेगा ही। सर्वत्र उसे स्नेही और सज्जन व्यक्ति ही मिलेंगे। अध्यात्म पूरी तरह तत्त्वज्ञान तथा आत्मशोधन पर अवलंबित हैं। जो अपने दोष और त्रुटियों को समझ लेगा और उन्हें सुधारने के लिए सचेष्ट रहेगा, उस व्यक्ति के सामने न तो कोई समस्या रहेगी और न उलझन।

जब मनुष्य अपने ही दोष, दुर्गुण, कुविचार, कुसंस्कारों को रंगीन चश्मे की तरह आँख पर धारण किए रहता है, तो सर्वत्र उसे नरक दिखाई पड़ता है, पर जब वह अपने को सुधारने और बदलने के लिए प्रयत्नशील होता है, तो बाहरी समस्याएँ और परिस्थितियाँ अपने आप ही सरल हो जाती हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक विचारधारा मनुष्य को स्वर्गीय जीवन की आनंदमय अनुभूति कराती रहती है और अंतत: आत्मा-परमात्मा को प्राप्त करने का लक्ष्य भी उसी मार्ग पर चलते हुए प्राप्त हो जाता है। —*अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६३ पृष्ठ-७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाहर नहीं, भीतर भी देखें

मनुष्य के अंतराल में सत्य, ज्ञानस्वरूप, अनंत, ज्योतिर्मय, ब्रह्म परमतत्त्व का निवास है। जो **'ज्योतिषां यद्ज्योतिः'** अति शुभ्र ज्योतियों की भी ज्योति है। कदाचित् हम एक क्षण भी अपने अंतर में घुसकर इस परम-ज्योति के दर्शन कर लें, तो कृत-कृत्य हो जाएँ। परम शांति, स्तब्धता, नीरवता, गंभीरता, एकरसता की किरणों में सराबोर होकर जीवन के समस्त क्लेश, दुःख, संघर्ष, अशांति, दुःखों आदि से मुक्ति पा लें। ठीक उसी तरह जैसे सागर के अंतर में डुबकी लगाने पर बाह्य जगत् का कोलाहल वहाँ पर नहीं होता।

जीवन की एक अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण साधना है, अपने अंतर का ज्ञान होना। जन्म प्राप्त करने के पश्चात संसार के नाम, रूप, रंग, सज-धज, पदार्थों का संसर्ग, यहाँ के कार्य-कलापों हलचलों का संपर्क, हमारे जीवन के बाह्य पटल से रहे। संसार के सुख-दुःख, हानि-लाभ, जरा-मरण, यश-अपयश सब क्षणभंगुर हैं। इन्हें महत्त्व न देकर अपने अंतर में आत्मदेव की अजर-अमर, अविनाशी ज्योति का दर्शन सदैव करते रहें। इस तरह आत्मस्थ होने पर कोई समस्या, कोई उलझन, कोई रोग-शोक शेष नहीं रहेगा, क्योंकि नित्य के समक्ष अनित्य का कोई महत्त्व ही नहीं रहता। अभ्यास द्वारा इस सत्य को जीवन का एक अंग बना लेने पर मनुष्य संसार में रहते हुए भी जीवनमुक्त ही हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६३ पृष्ठ- १०-११

तप से ही कल्याण होगा

"जिस प्रकार अग्नि में स्वर्ण को तपाने से उसके तमाम मल नष्ट हो जाते हैं, कांति अधिक आती है और मूल्य बढ़ जाता है, उसी प्रकार जो सत्यरूपी अग्नि में प्रवेश करते हैं, उनका केवल शारीरिक बल ही नहीं बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक बल भी अहर्निश वृद्धि को प्राप्त होता है। सच्चा तप निर्बल को सबल, निर्धन को धनी, प्रजा को राजा, शूद्र को ब्राह्मण, दैत्य को देवता, दास को स्वामी और भिक्षुक को दाता बना देता है। सच्चे तप का भाव उस देशभक्त में है, जो अपने देश एवं अपनी जाति के गौरव और प्रतिष्ठा, कीर्ति और मान, संपत्ति और ऐश्वर्य की वृद्धि और उन्नति की दृढ़ इच्छा रखता है, अनेक प्रकार के दुःखों, कष्टों और संकटों को सहन करने, कठिन-से-कठिन मेहनत और श्रम को उठाने और विघ्नों से मुकाबला करने के लिए उद्यत रहता है।

जिन व्यक्तियों में तपश्चर्या नहीं, जो मुसीबतों, विघ्नों और आफतों का मुकाबला करने से घबराते हैं, जो इन्हीं को सहन नहीं कर सकते, जो भूख और प्यास, सरदी और गरमी, धूप और छाँह, कोमल और कठोर, मीठा और खट्टा आदि द्वंद्वों के दास हैं, वे संसाररूपी युद्धपोत में कदापि कृत-कृत्य नहीं हो सकते।"

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६४ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाइयों का भी स्वागत करें

हम व्यर्थ ही दुःखों में रोते हैं। अपने भाग्य या ईश्वर को कोसते हैं। दुःख तो प्रकृति माता की वह प्रक्रिया है, ईश्वर का वह वरदान है, जिससे हम सचेष्ट होते हैं, जीवन की शक्तियों को उपयोग में लाते हैं और इससे हमारे सुखद और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होता है।

सुख को हम प्यार करते हैं, किंतु दुःख में रोते हैं, चिंता, शोक में डूब जाते हैं। यह हमारे एकांगी दृष्टिकोण और अज्ञान का परिणाम है। सुख की तरह ही दुःख भी जीवन का अभिन्न पहलू है। यदि दुःख न रहे, तो हम सुख से ऊब जाएँगे। सुख के मादक नशे में एकदूसरे का नाश कर लेंगे। इतना ही नहीं हम सुख का मूल्य ही नहीं समझ सकेंगे। रात्रि के अस्तित्व में ही दिन का जीवन है। रात्रि न हो तो दिन महत्वहीन हो जाएगा। जिस तरह रात और दिन एक ही काल के दो पहलू हैं, उसी तरह सुख-दुःख भी हमारे जीवन के दो पहलू हैं। जिस तरह रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आती है, उसी तरह दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख का क्रम चलता ही रहता है। आवश्यकता इस बात की है कि सुख की तरह ही हम दुःख का भी स्वागत करें, उसमें शांतमना, स्थिर दृढ़ रहकर अपने कर्त्तव्य में लगे रहें। स्मरण रखिए जीवन के शाश्वत मूल्यों को समझ लेने पर, कर्त्तव्य में जुट जाने पर कठिनाई, दुःख नाम की कोई वस्तु शेष नहीं रहती।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६४ पृष्ठ १८

देने से ही मिलेगा

किसी को कुछ दीजिए या उसका किसी प्रकार का उपकार कीजिए, तो बदले में उस व्यक्ति से किसी प्रकार की आशा न कीजिए। आपको जो कुछ देना हो, दे दीजिए। वह हजार गुना अधिक होकर आपके पास लौट आएगा, परंतु आपको उसके लौटने या न लौटने की चिंता ही न करनी चाहिए। अपने में देने की शक्ति रखिए, देते रहिए। देकर ही फल प्राप्त कर सकेंगे। यह बात सीख लीजिए कि सारा विश्व दे रहा है। प्रकृति देने के लिए आपको बाध्य करेगी। इसलिए प्रसन्नतापूर्वक दीजिए। आज हो या कल, आपको किसी न किसी दिन त्याग करना ही पड़ेगा।

जीवन में आप संचय करने के लिए आते हैं, परंतु प्रकृति आपका गला दबाकर मुट्ठी खुलवा लेती है। जो कुछ आपने ग्रहण किया है, वह देना ही पड़ेगा, चाहे आपकी इच्छा हो या न हो। जैसे ही आपके मुँह से निकला कि 'नहीं, मैं न दूँगा' उसी क्षण जोर का धक्का आता है, आप घायल हो जाते हैं। संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो जीवन की लंबी दौड़ में प्रत्येक वस्तु देने, परित्याग करने के लिए बाध्य न हो। इस नियम के प्रतिकूल आचरण करने के लिए जो जितना ही प्रयत्न करता है, वह अपने आप को उतना ही दुखी अनुभव करता है।

हमारी शोचनीय अवस्था का कारण यह है कि परित्याग करने का साहस हम नहीं करते। इसी से हम दुखी हैं। आप ग्रहण करते हैं, देने के लिए। इसलिए बदले में कुछ माँगिए नहीं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६४ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रद्धाबल से ही महान कार्य संभव

सच पूछा जाए तो श्रद्धा ही हमारा श्रेष्ठ धर्म है। वर्तमान समय में जबकि पृथ्वी पर सच्चे ज्ञान का सर्वत्र अभाव दिखाई पड़ता है और संकीर्णतायुक्त स्वार्थ का, अविद्या का अँधेरा छाया हुआ है, ऐसी परिस्थिति में हम केवल अपने श्रद्धा-दीप की सहायता से ही जीवन के अंतिम ध्येय तक पहुँच सकते हैं। हमारी यह श्रद्धा ध्रुवतारा के जैसी अचल होनी चाहिए, बिजली के चमकने की तरह क्षणिक नहीं। अगर हमारे भीतर श्रद्धा, आत्मश्रद्धा हो, तो हमको संसार में कोई भी बात, भौतिक अथवा आधिभौतिक, असंभव नहीं रह सकती। इस श्रद्धाबल से हम जो कुछ विचार करें, जो कुछ चाहें, वही कर सकते हैं। श्रद्धा और विश्वास के द्वारा हम अपार शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य अपने को जैसा जानता है, वैसा ही बन जाता है। एक महान दार्शनिक ने कहा है, "मनुष्य किसी विशेष मान्यता के आधार पर ही जीवित रहता है। अगर उसको यह विश्वास न हो कि जीने के लायक कुछ है, तो वह जीवित रह ही नहीं सकता।" जैसे-जैसे वह नश्वर जगत की अवास्तविकता को देखता और समझता जाता है, वैसे-वैसे उसके भीतर अनंत के प्रति श्रद्धा का आविर्भाव होता है। उसे श्रद्धा रखनी पड़ती हैं, क्योंकि श्रद्धा के बिना जीवन ही नहीं रह सकता। आत्मज्ञान के लिए श्रद्धा और धैर्य अत्यंत आवश्यक सीढ़ियाँ हैं। सबसे पहले अपने में श्रद्धा रखो और उसके पश्चात परमेश्वर में।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६४ पृष्ठ २२

आत्मशोधन अध्यात्म का श्रीगणेश

आंतरिक परिष्कार की ओर समुचित ध्यान देना, यही बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का प्रथम चरण है। अध्यात्म का पहला शिक्षण यही है कि मनुष्य अपने स्वरूप को समझे। यह सोचे कि मैं कौन हूँ? क्या हूँ? और क्या बना हुआ हूँ? आत्मचिंतन ही साधना का प्रथम सोपान कहा जाता है। यह चिंतन ईश्वर, जीव, प्रकृति की उच्च भूमिका से आरंभ नहीं किया जा सकता। कदम तो क्रमशः ही उठाए जाते हैं। नीचे की सीढ़ियों को पार करते हुए ही ऊपर को चढ़ा जा सकता है। सोऽहम्, शिवोऽहम्, की ध्वनि करने से पूर्व, अपने को सच्चिदानंद ब्रह्म मानने से पूर्व हमें साधारण जीवन पर विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी और यह देखना पड़ेगा कि ईश्वर का पुत्र, जीव आज कितने दोष-दुर्गुणों से ग्रसित होकर पामरता का उद्विग्न जीवनयापन कर रहा है। माया के बंधनों ने उसे कितनी बुरी तरह जकड़ रखा है और षट्रिपु पग-पग पर कैसा त्रास दे रहे हैं? माया का अर्थ है—वह अज्ञान जिससे ग्रस्त होकर मनुष्य अपने को निर्दोष और सारी परिस्थितियों के लिए दूसरों को उत्तरदायी मानता है। भवबंधनों से मुक्ति का अर्थ है, कुविचारों, कुसंस्कारों और कुकर्मों से छुटकारा पाना। अपने दोषों की ओर से अनभिज्ञ रहने से बड़ा प्रमाद, इस संसार में और कोई नहीं हो सकता। इसका मूल्य जीवन की असफलता का पश्चात्ताप करते हुए ही चुकाना पड़ता है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६४ पृष्ठ ४४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिंदगी कैसे जिएँ

कहते हैं कि मुसीबत कभी अकेले नहीं आती, उसके बाल-बच्चे भी साथ होते हैं। अभी एक कठिनाई से छूटे नहीं कि दूसरी आ धमकी।

जीवन एक संग्राम है। इसे कायरों को भी लड़ना पड़ता है और शूरवीरों को भी। किसी के हाथ संगीन पकड़ते काँपते हैं, तो कोई जान की बाजी लगाकर दुश्मन के साथ चार हाथ दिखाता है। कठिनाइयाँ, दुःख, मुसीबतें ऐसे ही शत्रु हैं, जिनसे हमें लड़ना ही पड़ेगा। इनसे पीछा छुड़ाना असंभव है, फिर इन्हें साहस के साथ क्यों न ललकारें? क्यों न वीर योद्धाओं के समान इनसे जूझें? जीवन-संग्राम में वही विजय पाता है, जो कठिनाइयों से रक्त की अंतिम बूँद रहने तक, जीवन की अंतिम साँस तक लड़ता है। जीवन का श्रेय भी इसी में है कि मुसीबतों में घबराएँ नहीं, उनके साथ संघर्ष करें।

सृष्टि के आदि से मरे हुए व्यक्तियों की सूची बनाना, यदि संभव रहा होता, तो संसार का सारा कागज इस कार्य के लिए खप जाता, पर जिन्हें आज भी दुनियाँ जानती है, उनका नाम लिखें, तो एक पुस्तक भी पूरी न होगी। यहाँ नाम उन्हीं का अमर रहता है, जो महान संकल्प लेकर आते हैं, जो औरों के हित एवं कल्याण के लिए अपना जीवन होम देते हैं, वे ही युगों तक जीवित रहते हैं, वे ही आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा व प्रकाश देते हैं। दूसरों के लिए अपनी हड्डियाँ दान कर देने वाले परमार्थी पुरुष ही संसार में जीते हैं। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६४ पृष्ठ ९*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने स्वभाव पर विजय प्राप्त करें

यह बात ध्यान देने की है कि बाह्य वस्तुएँ हमको अखंड व चिरस्थायी शांति प्रदान नहीं कर सकतीं, न उनसे बुद्धि और ज्ञान में ही वृद्धि होती है। जो शरीर पाप से लदा है, उसे पौष्टिक पदार्थों और शक्तिप्रदायक औषधियों से हानि ही प्राप्त होगी। जैसे सर्प को दुग्ध का पान कराने से उसके विष में ही वृद्धि होती है, उसी प्रकार चरित्र-भ्रष्ट अथवा अशुद्ध विचार वाले मनुष्य को पौष्टिक पदार्थ उसकी पाप-वासना की वृद्धि के कारण ही होते हैं। बुद्धिमान पुरुष भलीभाँति समझते हैं कि जब तक हमने मन पर विजय नहीं पाई, तब तक संसार में हमारी सदैव हार है। अपने पड़ोसी के अधिकारों को छीन लेने में अथवा निर्बल पुरुष को धक्का देने में, हमारी कोई विजय नहीं है। हमारी विजय वास्तव में उनके स्वत्वों की रक्षा करने और निर्बलों तथा दुखियों की सहायता करने में है। जब मनुष्य अपने स्वभाव पर विजय प्राप्त कर लेता है, तो उसे बाह्य परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। वे परिस्थितियाँ अपने आप सँभल जाती हैं। ऐसे मनुष्य को सुख व शांति अपने आप प्राप्त होती है और अंतरात्मा की प्रसन्नता से दैविक शक्ति उपलब्ध होती है।

मनुष्य अपने मन पर शासन कर सकता है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने स्वभाव को परिस्थितियों के अनुकूल बनाएँ। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६४ पृष्ठ १८-१९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाइयाँ आपकी सहायक भी तो हैं

विपत्ति वह खराद है, जिससे परमात्मा अपने रत्नों की चमक बढ़ाता है। इसलिए आप देखिए कि आपके जीवन में भी कठिनाइयाँ हैं अथवा नहीं। आप अध्यात्मवादी हैं। आपके जीवन में निरी कठिनाइयाँ बाघ की भाँति मुँह बाए खड़ी हैं। आप इनसे विचलित तो नहीं रहो रहे। यदि आपके पाँव लड़खड़ाते हैं, तो सँभलकर खड़े होइए। धर्म और अध्यवसाय का अवलंबन लीजिए। जिसमें धीरज है, जो परिश्रम से पाँव पीछे हटाना नहीं जानता, सफलता की देवी उसी के गले में विजयमाला पहनाती है। धैर्य प्रारंभ में कड़ुआ भले ही लगे, किंतु उसका फल मधुर होता है।

आत्मनिर्भर बनने का और अपने में आत्मविश्वास जाग्रत करने का एक ही गुरुमंत्र है कि आप अपने जीवन में कठिनाइयों को आने दीजिए, दूसरों के दु:ख, तकलीफ और मुसीबतों में हाथ बँटाइए। दूसरों की सहायता कीजिए और परमात्मा आपकी सहायता करेगा। दूसरों के दु:खों को समझिए और अनुभव कीजिए कि आप असंख्यों से सुखी हैं। ऐसा दृष्टिकोण बना लेने से कठिनाई और दु:ख की परिस्थितियाँ टल जाएँगी और अपने पीछे सफलता की राह बना जाएँगी।

कठिनाइयाँ छोटे मनुष्यों को निस्तेज-निष्प्राण बना सकती हैं, किंतु महान वे हैं, जो दु:खों की छाया में पलते हैं, औरों के दु:खों, मुसीबतों में हाथ बँटाते हैं। पुरुषार्थ भी इसी का नाम है कि व्यक्ति परिस्थितियों से संघर्ष करे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६४ पृष्ठ १९-२०

प्रेम और परमेश्वर

प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का निवास है। प्राणियों की सेवा करने से बढ़कर दूसरी ईश्वरभक्ति हो नहीं हो सकती। कल्पना के आधार पर धारणा-ध्यान द्वारा प्रभु को प्राप्त करने की अपेक्षा सेवा-धर्म अपनाकर इस साकार ब्रह्म, अखिल विश्व को सुंदर बनाने के लिए संलग्न रहना, साधना का श्रेष्ठतम मार्ग है। अमुक भजन-ध्यान से ईश्वर को प्रसन्नता हुई या नहीं, इसमें संदेह हो सकता है, पर दूसरों को सुखी एवं समुन्नत बनाने के लिए जिसने कुछ किया है, उसे आत्मसंतोष, सहायता द्वारा सुखी हुए जीवों का आशीर्वाद और परमात्मा का अनुग्रह मिलना सुनिश्चित है।

प्रेम से बढ़कर इस विश्व में और कुछ भी आनंदमय नहीं है। जिस व्यक्ति या वस्तु को हम प्रेम करते हैं, वह हमें अतीव सुंदर प्रतीत होने लगती है। इस समस्त विश्व को परमात्मा का साकार रूप मानकर उसे अधिक सुंदर बनाने के लिए यदि उदार बुद्धि से लोकमंगल के कार्यों में निरत रहा जाए, तो यह ईश्वर के प्रति तथा उनकी पुण्य-वृत्तियों के प्रति प्रेम-प्रदर्शन करने का एक उत्तम मार्ग होगा। इस प्रकार की हुई ईश्वरोपासना कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। इसकी सार्थकता के प्रमाणस्वरूप तत्काल आत्मसंतोष मिलता है। श्रेय की भावनाओं से ओत-प्रोत उदार हृदय ही स्वर्ग है। जिसे स्वर्ग अभीष्ट हो, उसे अपना अंत:करण प्रेम और सेवा-धर्म से परिपूर्ण बना लेना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६४ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता आत्मविश्वासी को मिलती है

हर काम तभी सफल होता है, जबकि उसमें दृढ़ विश्वास का बल रहता है। दृढ़ आत्मविश्वास ही उस मार्ग को सरल बनाता है, जो हमें अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा देता है। आत्मविश्वास ही कार्य का बल है। उसके द्वारा हममें शक्ति का ऐसा स्रोत फूट पड़ता है, जो कठिन से कठिन कार्य को भी आसानी से पूरा करा देता है।

आत्मविश्वास में वह ताकत है, जो हजार विपत्तियों का सामना कर, उन पर पूरी-पूरी विजय प्राप्त करा सकता है। यही मनुष्य का सच्चा मित्र और उसकी सबसे अच्छी पूँजी है। हमने देखा है कि साधनहीन होने पर भी आत्मविश्वासी मनुष्यों ने दुनियाँ में गजब के काम किए हैं, जबकि बहुत से साधन संपन्न व्यक्ति विश्वासहीनता के कारण बुरी तरह से असफल हुए हैं। यदि हम में यह दृढ़ विश्वास है कि हम बड़े-से-बड़े कार्य कर सकते हैं, दुनियाँ में उलट-फेर कर सकते हैं। यदि हममें यह विश्वास है कि हम में एक महान दैवी तत्त्व मौजूद है, हम में पूर्णता भरी हुई है, अटूट शक्ति का भंडार हम में भरा हुआ है, तो हम निस्संदेह दुनियाँ में बड़े-बड़े काम कर सकते हैं।

मनुष्य ईश्वर का पुत्र है, वह उसकी दैवी संपत्ति का उत्तराधिकारी है, तो क्यों न उसे अपनी अटूट शक्ति पर दृढ़ विश्वास हो। बात यह है कि हमें अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है, जिससे हम उसका ठीक-ठीक विकास नहीं कर पाते।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६४ पृष्ठ-८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने लिए नहीं, ईश्वर के लिए जिएँ

सभी ईश्वर के पुत्र हैं और सबमें परमात्मा का निवास है, यह मानते हुए यदि हम परस्पर एकता, निश्छलता, प्रेम और उदारता का व्यवहार करने लगें, तो जीवन में अजस्र पवित्रता का अवतरण होने लगे, सर्वत्र सद्व्यवहार के दर्शन होने लगें और आज जो कटुता, संकीर्णता और कलह का वातावरण दीख पड़ता है, उसका अंत होने में देर न लगे।

हमें केवल अपने शरीर के लिए ही नहीं, आत्मा के लिए भी जीना चाहिए। यदि मनुष्य शरीर की सुविधा और सजावट का ताना-बाना बुनते रहने में ही इस बहुमूल्य जीवन को व्यतीत कर दे, तो उसे वह लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा, जिसके लिए जन्मा है। स्वार्थ में संलग्न व्यक्ति तो विघटन की ओर ही बढ़ेंगे। उनके व्यवहार एकदूसरे के लिए असंतोषजनक और असमाधानकारक ही बनेंगे। ऐसी दशा में द्वेष और परायेपन की भावना बढ़कर वातावरण को नारकीय क्लेश-कलह से भर देगी और यह संसार अशांति एवं विनाश की काली घटाओं से घिरने लगेगा।

यदि ईश्वर का पुत्र केवल शारीरिक सुखों के लिए जीवन धारण किए रहेगा, तो इस संसार में धर्म का राज्य कभी उदय न होगा। यदि अपने लिए ही जिया गया, तो मनुष्य पशुओं की अपेक्षा श्रेष्ठ कैसे बना रहेगा? ईश्वर का पुत्र अपने लिए नहीं ईश्वर के लिए ही जी सकता है, इसके अतिरिक्त उसके पास और दूसरा मार्ग ही क्या है?

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६४ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा जीवनलक्ष्य—आत्मदर्शन

आत्मा का स्वाभाविक स्वरूप अत्यंत शुद्ध, पवित्र, अलौकिक और दिव्य है। उसकी अंतिम अवस्था धर्माचरण और ईश्वर-साक्षात्कार है। यह शरीर के माध्यम से ज्ञानार्जन और प्रयत्न करने से मिलती है। शरीर को जब एक विशिष्ट उपकरण मानकर इंद्रियों की दासता से ऊपर उठते हैं, तो स्वयं ही आत्मानुभूति होने लगती है। जो आदमी इस सत्य को गहराई तक अपने हृदय में बिठा लेता है, वह नाशवान वस्तुओं के अनुचित मोह को त्यागकर आत्मिक पवित्रता की ओर अग्रसर होता है। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि अनात्म तत्त्वों से उसकी रुचि हटने लगती है, विचारों और व्यवहारों में पवित्रता उत्पन्न होती है। जितना वह आत्मसाक्षात्कार के समीप बढ़ता है, उसी अनुपात से दैवी गुणों का उसमें समावेश होता चलता है, फलस्वरूप सच्ची सुख-शांति और संतोष के परिणाम भी सामने आते रहते हैं।

आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए बड़े उपकरणों या अधिक से अधिक स्कूली शिक्षा की भी आवश्यकता नहीं। कोई भी व्यक्ति जो अपनी सामर्थ्यों या विशेषताओं की विवेचना कर सके, आत्मज्ञानी हो सकता है। इसके लिए आत्मनिरीक्षण की आदत बनानी पड़ती है। यह कार्य ऐसा नहीं, जो हर किसी से किया न जा सके। अपनी भूलों, त्रुटियों और आदतों में प्रवेश, बुराइयों को अपने में दृढ़तापूर्वक खोजना और उन्हें दूर हटाना, हर किसी के लिए संभव है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६४ पृष्ठ-३

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रेम और कृतज्ञता का सौंदर्य

बदला पाने की इच्छारहित जो भलाई की गई है, वह समुद्र की तरह महान है। कोई मनुष्य किसी आवश्यकता से व्याकुल हो रहा है, उस समय उसकी मदद करना कितना महत्त्वपूर्ण है, इसे उस व्याकुल मनुष्य का हृदय ही जानता है। जरूरतमंदों को एक राई के बराबर मदद देना, उससे बढ़कर है कि बिना जरूरत वाले के पल्ले में एक पहाड़ बाँध दिया जाए।

जिसने तुम्हारे साथ भलाई की है, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। सहायता का मूल्य वस्तु के मूल्य से मत नापो, वरन उसका महत्त्व अपनी आवश्यकता को देखते हुए नापो, कि उस समय यदि वह मदद तुम्हें न मिलती, तो तुम्हारा क्या हाल होता? उनका एहसान मत भूलो जिन्होंने मुसीबत के समय तुम्हारी मदद की थी। उपकार को भूल जाना नीचता है, पर उन्हें क्या कहें, जो भलाई के बदले बुराई करते हैं?

धरती माता से उस दिन मनुष्यों का भार न उठाया जाएगा, जिस दिन वे प्रेम और कृतज्ञता छोड़कर निष्ठुर और कृतघ्न बन जाएँगे। आदमी की चमड़ी में क्या खूबसूरती है, सुंदर तो उसका मन होता है। जिसके मन में दूसरों के प्रति प्रेमभावनाएँ उठती रहती हैं, जो दूसरों के थोड़े से भी उपकार का सदा स्मरण करता रहता है और उसका बदला चुकाने का प्रयत्न करता है, वस्तुतः वही मनुष्य सुंदर है और इसी सौंदर्य से मनुष्यता एवं इस वसुधा की शोभा बढ़ती है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६४ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मविश्वास की शक्ति

आत्मविश्वास मनुष्य की शक्तियों को संगठित करके उन्हें एक दिशा में लगाता है। शारीरिक, मानसिक शक्तियाँ आत्मविश्वासी के इशारे पर नाचती हैं और काम करती हैं। जो अपनी शक्तियों का स्वामी है, नियंत्रणकर्त्ता है, उसे संसार में कोई भी कमी नहीं रहती। सिद्धि, सफलताएँ स्वयं आकर उसके दरवाजे खटखटाती हैं। निर्बल, असहाय, दीन, दुखी, दरिद्री कौन? जिसका आत्मविश्वास मर चुका है। भाग्यहीन कौन? जिसका अपने विश्वास ने साथ छोड़ दिया है। वस्तुतः आत्मविश्वास जीवन-नैया का एक शक्तिशाली समर्थ मल्लाह है, जो डूबती नाव को पतवार के सहारे ही नहीं, वरन अपने हाथों से उठाकर प्रबल लहरों से पार कर देता है। आत्मविश्वासहीन व्यक्ति जीवित होता हुआ भी मृततुल्य है, क्योंकि उत्साह, तेज, शक्ति, साहस, स्फूर्ति, आशा, उमंग के साथ जीना ही जीवन है और ये सब वहीं रहते हैं, जहाँ आत्मविश्वास होता है। संसार में धकेले जाने वाले नहीं, वरन संसार को गति देने वाले बनकर रहना है, जीवन के उतार-चढ़ाव, हार-जीत के द्वंद्वों में, कठिनाई उलझनों की झंझाओं में स्थिर रहना है, संसार पर अपनी छाप छोड़कर जाना है, आशा और उमंग का जीवन बिताना है, तो अपने आत्मविश्वास को जगाइए, उसे विकसित कीजिए। स्मरण रखिए, आत्मविश्वासी के लिए ही संसार स्थान देता है। जो अपने आप को महत्त्वपूर्ण नहीं मानता, उसे संसार भी धकेलकर एक ओर कर देता है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६४ पृष्ठ-१५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सच्ची सफलता का एकमात्र साधन

ईमानदारी, सफलता का सबसे प्रधान साधन है। एक दिन ऐसा जरूर आता है, जब बेईमान आदमी दुःख और विपत्ति में फँसकर अपनी बेईमानी पर पश्चात्ताप करने लगता है। ऐसा कोई भी आदमी नहीं, जिसे अपनी ईमानदारी पर पश्चात्ताप करना पड़ा हो। हालांकि कभी-कभी ईमानदारी आदमी भी असफल हो जाते हैं, क्योंकि वे मितव्ययता, योजना तथा व्यवस्था जैसे तीन स्तंभों का निर्माण करने में असफल रहते हैं, परंतु उनकी असफलता इतनी अधिक दुःखदायी नहीं होती, जितनी कि बेईमान व्यक्ति की होती है। कम से कम उन्हें इतना संतोष तो होता है कि उन्होंने कभी किसी व्यक्ति को धोखा नहीं दिया। अपने जीवन के अंधकारयुक्त क्षणों में भी वे अपनी आंतरिक पवित्रता पर संतोष अनुभव कर सकते हैं।

अज्ञानी लोग यह सोचते हैं कि समृद्धि प्राप्त करने के लिए बेईमानी ही सबसे सीधा मार्ग है। बेईमान आदमी धन को अपनी जेब में रखकर भले ही यह सोच ले कि कितनी चालाकी और सफलता के साथ हमने दूसरे को ठग लिया, लेकिन उस समय हम इस यथार्थता को नहीं समझ पाते कि वास्तव में हमने अपने को ही छला है। बेईमानी से प्राप्त पैसे को मयसूद के जाना पड़ेगा और इस न्याय से हम किसी प्रकार न बच सकेंगे। जिस प्रकार आकाश में फेंका हुआ पत्थर आकर्षण शक्ति के सिद्धांतानुसार पृथ्वी पर ही लौटकर आता है, उसी प्रकार नैतिक गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत भी अटल रूप से काम करता रहता है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६४ पृष्ठ-२२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांति तो अंदर ही खोजनी पड़ती है

शांति की खोज में चलने वाले पथिक को यह जान लेना चाहिए कि अकेले रहने या जंगल-पर्वतों में निवास करने से शांति का कोई संबंध नहीं। यदि ऐसा होता तो अकेले रहने वाले जीव-जंतुओं को शांति मिल गई होती और जंगल-पर्वतों में रहने वाली अन्य जातियाँ कबकी शांति प्राप्त कर चुकी होतीं।

अशांति का कारण है, आंतरिक दुर्बलता। स्वार्थी मनुष्य बहुत चाहते हैं और उसमें कमी रहने पर खिन्न होते हैं। अहंकारी का क्षोभ ही उसे जलाता रहता है। कायर मनुष्य हिलते हुए पत्ते से भी डरता है और उसे अपना भविष्य अंधकार से घिरा दीखता है। असंयमी की तृष्णा कभी शांत नहीं होती। इस कुचक्र में फँसा हुआ मनुष्य सदा विक्षुब्ध ही रहेगा, भले ही उसने अपना निवास सुनसान एकांत में बना लिया हो।

नदी या पर्वत सुहावने अवश्य लगते हैं। विश्राम या जलवायु की दृष्टि से वे स्वास्थ्यकर हो सकते हैं, पर शांति का उनमें निवास नहीं। चेतन आत्मा को यह जड़ पदार्थ भला शांति कैसे दे पाएँगे ? शांति अंदर रहती है और जिसने उसे पाया है, उसे अंदर ही मिली है। अशांति उत्पन्न करने वाली विकृतियों को जब तक परास्त न किया जाए, तब तक शांति का दर्शन नहीं हो सकता, भले ही कितने ही सुरम्य स्थानों में कोई निवास क्यों न करता रहे। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६४ पृष्ठ-१*

www.awgp.org

अपने स्वामी आप बनिए

आपका कल्याण, आपका अभ्युत्थान, आपकी स्थायी सफलता, जीवन-यात्रा की पूर्णता, आपकी स्थायी सुख-शांति, आनंद की निधियाँ, इसी पर आधारित हैं कि आप अपने हृदय में स्थित उस केंद्रबिंदु की खोज करें, जिसमें अपार शक्ति है, अनंत सामर्थ्य है। इसी सत्य को जीवन का प्रेरक बनाकर अपनी विजय का आधार बनाएँ। किनारे-किनारे भटकने के बजाय अंतर के गर्भ में ही गोता लगाएँ, पत्ती-पत्ती ढूँढ़ने के बजाय जीवन-वृक्ष के मूल में ही विश्राम प्राप्त करें। अपने अंतर को केंद्र बनाकर जीवन की गतिविधियाँ चालू रखें, जैसे सूर्य को केंद्र मानकर ग्रह-नक्षत्र चलते हैं। अपने शासक आप बनें। दूसरे व्यक्तियों की सहायता की आशा में न बैठे रहें, अपने अंतर के देव का आवाहन करें। दूसरों से प्रेम करें, लेकिन उनके प्रेम के मुहताज न बनें। दूसरों से सहानुभूति रखें, उन्हें सहयोग करें, लेकिन दूसरों की सहानुभूति, सहायता की इच्छा न रखें। अपने बादशाह बनकर, स्वामी बनकर जीवन का संचालन करें। जन्म से लेकर मरण तक, अपना पथ स्वयं तैयार करें। अपने ही पैरों पर चलें। यह निश्चित है कि जब तक आप अपनी सहायता, पथ-प्रदर्शन के लिए देवताओं, स्वर्गीय दूतों, मनुष्यों की सहायता की याचना करते रहेंगे, तब तक आप पराधीनता, दुःख, अशांति, पराजय से छुटकारा नहीं पा सकते। इनसे छुटकारा पाने का एक ही आधार है कि अपने अंतर प्रकाश से स्वयं अपना हृदय प्रकाशित करें। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६४ पृष्ठ-१३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम पुरुष से पुरुषोत्तम बनें

यदि आत्मा और परमात्मा का संयोग संभव हो सके, तो साधारण-सा दीन-हीन दीख पड़ने वाला व्यक्ति नर से नारायण बन सकता है और उसकी महानता परमात्मा जितनी ही विशाल हो सकती है।

आत्मा और परमात्मा में अंतर उत्पन्न करने वाली माया और कुछ नहीं केवल अज्ञान का एक कलेवर मात्र है। भौतिक आकर्षणों, अस्थिर संपदाओं और उपहासास्पद तृष्णा, वासनाओं में उलझे रहने से मनुष्य के लिए यह सोच-समझ सकना कठिन हो जाता है कि वह जिस अलभ्य अवसर को, मनुष्य-शरीर को प्राप्त कर सकता है, वह एक विशेष सौभाग्य है और उसका सदुपयोग जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ही होना चाहिए। शरीर का ही नहीं, आत्मा का भी आनंद ध्यान में रखना चाहिए।

यदि हम अपने स्वरूप और कर्त्तव्य को समझ सकें और तदनुकूल कार्य करने के लिए तत्पर हो सकें, तो इस क्षुद्रता और अशांति से सहज ही छुटकारा पाया जा सकता है, जिसके कारण हमें निरंतर क्षुब्ध रहना पड़ता है। अज्ञान की माया से छुटकारा पाना ही मनुष्य का परम पुरुषार्थ है। ऐसे पुरुषार्थी को ईश्वरीय महानता उपलब्ध हो सकती है और वह पुरुष से पुरुषोत्तम बन सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६४ पृष्ठ-१

हमारा आत्मविश्वास जाग्रत हो

आत्मविश्वास का पूरक भाव है, दृढ़ इच्छाशक्ति। यही तो वह रहस्य है जो बिगड़ी बनाता है, ऊँचे उठाता और समस्याओं से पार लगाता है। दृढ़ इच्छाशक्ति से संपन्न किए हुए कार्य सदैव ही सफल हुए हैं, आगे भी होते रहेंगे, किंतु द्विविधापूर्ण निर्णय एक ही क्षण में सफलता का प्रवाह दूसरी ओर बदल देते हैं, जो व्यक्ति भूल करने के भय से अथवा बीच में ही कार्य के छूट जाने की आशंका से कोई निश्चित निर्णय नहीं कर पाते, उनसे सचमुच ही गलतियाँ होने लगती हैं। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह एक सुदृढ़ आधार का निर्माण करे, जिसके सहारे जीवन को ऊँचा उठाता हुआ, ध्येयपथ पर अनवरत आगे बढ़ता रहे। इसके लिए दृढ़ता, सुनिश्चितता एवं संकल्पशक्ति का आवाहन करना पड़ता है। आत्मविश्वास इन तीनों गुणों का मिश्रित रूप माना जा सकता है।

मनुष्य सुंदर स्वास्थ्य, जीवन में स्वच्छंदता व सफलता प्राप्त कर सकता है, किंतु अकर्मण्यता के द्वारा नहीं। इनके लिए अपनी आत्मिक शक्तियों को जगाना पड़ता है। लगन और तत्परतापूर्वक क्रियाशीलता का आश्रय लेना पड़ता है। आत्मविश्वासी लोगों का जीवन ही इस संसार में सच्चा जीवन है। हमें भी आत्मविकास के लिए, जीवन की सर्वांगपूर्ण समुन्नति के लिए आत्मविश्वासी ही होना पड़ेगा। इसी से मानव-जीवन की सच्ची सफलता के दर्शन हो सकेंगे।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६४ पृष्ठ-१८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरप्राप्ति कठिन नहीं, सरल है

ईश्वर की प्राप्ति सरल है, क्योंकि वह हमारे निकटतम है। जो वस्तु समीप ही विद्यमान है, उसे उपलब्ध करने में कोई कठिनाई क्यों होनी चाहिए? ईश्वर इतना निष्ठुर भी नहीं है, जिसे बहुत अनुनय-विनय के पश्चात ही मनाया या प्रसन्न किया जा सके। जिस करुणामय प्रभु ने अपनी महती कृपा का अनुदान पग-पग पर दे रखा है, वह अपने किसी पुत्र को अपना साक्षात्कार एवं सान्निध्य प्राप्त करने से वंचित रखना चाहे, उसकी आकांक्षा में विघ्न उत्पन्न करे, यह हो ही नहीं सकता।

हमारे और ईश्वर के बीच में संकीर्णता एवं तुच्छता का एक छोटा-सा परदा है। जिसे माया या अज्ञान कहते हैं। प्रभुप्राप्ति में एकमात्र अड़चन यही है। इस अड़चन को दूर कर लेना ही विविध अध्यात्म साधनाओं का उद्देश्य है। तृष्णा और वासनाओं के तूफान में मनुष्य की आध्यात्मिक आकांक्षाएँ धूमिल हो जाती हैं। अस्तु, वह जीवन-निर्माण एवं आत्मविकास के लिए न तो ध्यान दे पाता है और न प्रयत्न कर पाता है। आज के तुच्छ स्वार्थों में निमग्न लोभी मनुष्य भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए तत्पर नहीं होता। अहंकार और अदूरदर्शिता को यदि छोड़ा जा सके, अपनेपन का दायरा बड़ा बनाकर यदि लोकहित को अपना हित मानने का साहस किया जा सके, तो इतने से ही ईश्वरप्राप्ति हो सकती है। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६४ पृष्ठ-१*

www.awgp.org

आत्मनिरीक्षण और उसकी महत्ता

दूसरों के गुण-दोष विवेचन में मनुष्य जितना समय खरच करता है, उसका एक प्रतिशत भी यदि आत्मनिरीक्षण में लगाए तो आदर्श मनुष्य बन जाए। दूसरे के दोष आँख से दीख जाते हैं, पर अपने दोषों का चिंतन, मन के शांत होने पर स्वयं करना पड़ता है। शरीर का दर्पण तो कारीगरों ने बना दिया है, पर चरित्र का दर्पण अभी तक कोई नहीं बना और न बनेगा। जो व्यक्ति छिद्रान्वेषण करते हैं, वे प्राय: छिपकर करते हैं। पीठ-पीछे सब एकदूसरे को भला-बुरा कह लेते हैं, निंदा कर लेते हैं। हमारी बात-चीत का विषय ही प्राय: परनिंदा होता है। मन में दुर्भावना रहते हुए अकसर लोग चापलूसी भरी प्रशंसा करते रहते हैं। ऐसी प्रशंसा आपको सही आत्मनिरीक्षण से रोकती रहती हैं। मनुष्य-चरित्र की यह सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह अपनी प्रशंसा का सदा भूखा रहता है। अंतिम सांस तक भी मनुष्य की यह भूख नहीं जाती।

सचाई तो वही है, जो हमारे अंत:करण में छिपी है। अपना गुप्तचर आप बनकर ही हम उसका अनुसंधान कर सकते हैं। यह आत्मपरीक्षा ही हमें, हमारे चरित्र के असली स्वरूप को हमारे सामने प्रकट करेगी और तभी हम चरित्र में सुधार कर सकेंगे।

हमारा व्यवहार ही हमारे चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। हमें अपने को अपने ज्ञान से नहीं, वरन अपने व्यवहार से परखना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६४ पृष्ठ-१४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिकता की मुस्कान

आत्मा का स्वरूप आनंदमय है। जिसे आत्मज्ञान हो जाता है, उसे निनंतर आनंदित ही देखा जा सकता है। आध्यात्मिकता का दूसरा नाम है, प्रसन्नता। जो प्रसन्न नहीं रह सकता, उसने न आत्मा को जाना और न ईश्वर को। शोक-संतप्त, उद्विग्न और विक्षुब्ध व्यक्ति तो अनात्म तत्त्वों के वाहन मात्र हैं। जो क्रोध से झल्लाया करता है, जिसे खीझ और आवेश का बार-बार शिकार होना पड़ता है, उसकी आस्तिकता संदिग्ध ही मानी जाएगी।

इस संसार में सब कुछ हँसने के लिए उपजाया गया है। जो बुरा और अशुभ है, वह हमारी प्रखरता के लिए चुनौती के रूप में है। परीक्षा के प्रश्नपत्रों को देखकर जो छात्र रोने लगे, उसे अध्ययनशील नहीं माना जा सकता। जिसने थोड़ी-सी आपत्ति, असफलता एवं प्रतिकूलता को देखकर रोना-धोना शुरू कर दिया, उसकी आध्यात्मिकता पर कौन विश्वास कर सकता है ? प्रतिकूलता हमारे साहस को बढ़ाने, धैर्य को मजबूत करने और सामर्थ्य को विकसित करने आती है। सरल जिंदगी यदि संयत हो सके, तो वह सबसे भद्दे ढंग की ही होगी, क्योंकि वह जो सरलतापूर्वक दिन गुजारता रहता है, उसमें न तो किसी प्रकार की विशेषता रह जाती है और न प्रतिभा। संघर्ष के बिना भी भला कहीं, इस दुनियाँ में किसी का जीना संभव हुआ है ?

नई उपलब्धियों में हमें हँसना चाहिए, अब तक जो मिल चुका उससे संतोष व्यक्त करना चाहिए और भविष्य की शुभ संभावनाओं की कल्पना करके सदा प्रमुदित होते रहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६५ पृष्ठ-१

www.vicharkrantibooks.org

महत्त्वाकांक्षाएँ अनियंत्रित न होने पाएँ

महत्त्वाकांक्षा तो उत्कृष्ट, महान आदर्श को साकार करने का साहस तथा कर्मठतायुक्त अभियान है, जिसके गर्भ में स्वस्थ और संतुलित मनोभूमि, जागरूक चेतना, विवेकयुक्त बुद्धि रहती है। विकृत महत्त्वाकांक्षा निम्नगामिनी होती है। इस आईने में जब मनुष्य अपनी तसवीर देखकर उस ओर उन्मत्त होकर दौड़ता है, तो परिणाम में उसकी स्थिति उस बाज की सी हो जाती है, जो आकाश से मकान या धरती पर पड़े शीशे के टुकड़े में अपना प्रतिबिंब देखकर उस ओर झपटता है। शीशे से टकराकर घायल हो जाता है। विकृत महत्त्वाकांक्षाएँ मनुष्य को मृग-मरीचिका की तरह भटकाती हैं। ये हवा के उस बबूले की तरह हैं, जो एक सूखे पत्ते को आसमान तक उठा देता है, लेकिन ज्यों ही बबूला नष्ट होता है, पत्ता धरती पर आ पड़ता है।

अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के बारे में हमें विवेकपूर्ण बुद्धि से सोचना चाहिए कि वे कितनी यथार्थ और कितनी उपयोगी हैं, कहीं उन्होंने हमें भुलावे में तो नहीं डाल रखा है ? वे हमें जीवन के सही रास्ते पर ले जा रही हैं या हमें पथभ्रष्ट कर रही हैं। किन्हीं प्रलोभनों के पीछे तो हम नहीं दौड़ रहे हैं। हमारी आकांक्षाओं के पीछे कोई स्वार्थबुद्धि तो काम नहीं कर रही है ? यह सब विचारणीय है। महत्त्वाकांक्षाएँ यदि निकृष्ट स्तर की हों, तो उन्हें त्याग देना चाहिए। श्रेयष्कर तो केवल श्रेष्ठता की ओर ले जाने वाली महत्त्वाकांक्षाएँ ही हो सकती हैं।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६५ पृष्ठ-२४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन-संग्राम में पुरुषार्थ की आवश्यकता

जो यह चाहते हैं कि कोई हमारी सहायता करे, हमें जीवन-पथ पर चलने की दिशा दिखाए, जो सोचते हैं, कैसे करें, वे अंधकार में ही निवास करते हैं। ऐसी स्थिति से समाज में दासवृत्ति को जीवन और पोषण मिलता है, क्योंकि तब हम दूसरों का मुँह ताकते हैं, दूसरों से आशा रखते हैं। ऐसे परावलंबी व्यक्ति कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते और न अपनी स्वतंत्रता की रक्षा ही कर सकते हैं। हमें अपने ही पैरों पर आगे बढ़ना होगा। अपने आप ही अपनी मंजिल का रास्ता खोजना होगा। अपने पुरुषार्थ से ही अपने अधिकारों की रक्षा करनी होगी।

आज के युग में जीवन-संघर्ष और भी अधिक बढ़ गया है। आज मनुष्य के लिए दो ही मार्ग रह गए हैं, एक ठेलने वाला और दूसरा ठेले जाने वाला। क्या हम दूसरों की ठोकरों में लुढ़कने के लिए अपने आप को छोड़ दें? हम दृढ़प्रतिज्ञ होकर कुछ करें, कर दिखाएँ या फिर उदासीन होकर भाग्य और दूसरों की आशा लगाए जिंदगी के दिन पूरे करते रहें। पराधीनता के रूप में जीवित मृत्यु की यंत्रणा भुगतते रहें। पुरुषार्थ ही हमारी स्वतंत्रता और सभ्यता की रक्षा करने के लिए दृढ़ दुर्ग है, जिसे कोई भी बेच नहीं सकता। हमें अपनी शक्ति पर भरोसा रखकर, पुरुषार्थ के बल पर जीवन संघर्ष में आगे बढ़ना होगा। यदि हमें कुछ करना है, स्वतंत्र रहना है, जीवित रहना है, तो एक ही रास्ता है, पुरुषार्थ की उपासना का। पुरुषार्थ ही हमारे जीवन का मूल-मंत्र होना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६५८ पृष्ठ ३५*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मन को अस्वस्थ न रहने दिया जाए

शुभ के चिंतन-मनन अभ्यास से मन की अशुभ वृत्तियाँ, बुरे संस्कार भी क्षीण हो जाते हैं और एक दिन मन शुद्ध, निर्मल बन जाता है। मन में शुद्ध भावनाओं को प्रोत्साहन दीजिए। शुभ विचारों के चिंतन में मन को लगाए रहिए, इस पर भी यदि वह उच्छृंखलता बरते, तो उस पर ध्यान न दीजिए। आपने जो निश्चय किया है, जो लक्ष्य और कार्यक्रम बनाया है, उसी की धुन निरंतर अपने मन को सुनाते रहें। आप देखेंगे एक दिन आपका मन अपनी समस्त उच्छृंखलता, उद्दंडता और चंचलता छोड़कर आपका दास बन जाएगा।

मन की साधना के लिए उपयुक्त वातावरण, अनुकूल परिस्थितियों का होना भी आवश्यक है। जिस तरह चीनी के भंडार में रखकर सामान्य मनुष्य से चीनी खाने की आदत छुड़ाई नहीं जा सकती। उसी प्रकार मन की चंचलता को बढ़ाने वाले वातावरण में रहकर उसको साधना प्रायः कठिन ही होता है। इसलिए जहाँ तक बने साधना के अनुकूल शांत, निर्विघ्न परिस्थितियों में रहकर मन को एकाग्र करने की साधना की जाए, तो अपेक्षाकृत जल्दी सफलता मिलेगी।

अपने दैनिक जीवनक्रम में भी जहाँ तक बने स्थिरता, धैर्य और शांति के साथ काम करना चाहिए। चंचलता, भागदौड़, अस्तव्यस्तता, आवेश और उद्वेग को तो जीवन में किसी भी शर्त पर स्थान नहीं होना चाहिए। इससे मन की शक्ति नष्ट होती है। हम जो भी कुछ करें, वह व्यवस्थित शांत होकर करें।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६५ पृष्ठ १०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उतना बोलिए जितना आवश्यक हो

अपने द्वारा बोले गए प्रत्येक बुरे शब्द के लिए मनुष्य को फैसले के दिन सफाई देनी होगी। बुरे शब्दों से हम मौन के द्वारा ही बच सकते हैं।

स्मरण रहे कि सहज मौन ही हमारे ज्ञान की कसौटी है। जानने वाला बोलता नहीं और बोलने वाला जानता नहीं। इस कहावत के अनुसार जब हम सूक्ष्म रहस्यों को जान लेते हैं, तो हमारी वाणी बंद हो जाती है। ज्ञान की सर्वोच्च भूमिका में सहज मौन स्वयमेव पैदा हो जाता है।

स्थिर जल बड़ा गहरा होता है। उसी तरह मौन मनुष्य के ज्ञान की गंभीरता का चिह्न है। वाचालता पांडित्य की कसौटी नहीं है, वरन गहन गंभीर मौन ही मनुष्य के पंडित और ज्ञानी होने का प्रमाण है। मौन ही मनुष्य की विपत्ति का सच्चा साथी है, जो अनेक कठिनाइयों से उसे बचा लेता है।

आत्मा की वाणी सुनने के लिए, जीवन और जगत के रहस्यों को जानने के लिए, लड़ाई-झगड़े, वाद-विवादों को नष्ट करने के लिए, वाचिक-पाप से बचने के लिए, ज्ञान की साधना के लिए, विपत्तियों के दिनों को गुजारने के लिए, वाणी के तप के लिए तथा अन्यान्य हितकर परिणामों के लिए हमें मौन का अवलंबन लेना चाहिए। दैनिक जीवन में मितभाषण और हितभाषण की आदत डालकर हम लौकिक और आध्यात्मिक प्रगति का द्वार ही प्रशस्त कर सकते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६५ पृष्ठ २२

मनुष्य जीवन का उद्देश्य भी समझें

जिसे धारण करने से भयरहित शांति मिले, वही धर्म है, वही लक्ष्य है। दूसरों के अधिकार की लोलुपता से मुक्त रहें। अपना कल्याण तृष्णारहित, वासनारहित एवं निष्काम होने में है। बंधन में तो कामनाएँ ही बाँधती हैं। इसी से भूल होती है। इसी से अवनति होती है। इसी से मनुष्य सब प्रकार से दीन-हीन होकर कष्ट और क्लेश का झंझटों भरा जीवन बिताता रहता है। सुख और शांति भोग-विलास में नहीं, मनुष्य की सच्चरित्रता, ईमानदारी और पवित्रता में है। सद्गुणों में ही मनुष्य का वैभव छिपा हुआ है, जिसे प्राप्त कर जीवन के सभी अभाव दूर हो जाते हैं।

जीवन-लक्ष्य के प्रति मनुष्य की दृढ़ता प्रबल होनी चाहिए। उसे विचार और विवेक के द्वारा सुदृढ़ बनाकर अपने जीवन में गहराई तक ढाल देना पड़ेगा, तभी जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति करा सकने वाली सफलता प्राप्त की जा सकेगी। जब मनुष्य वस्तुस्थिति को समझ लेता है, तो उसे मानने और अपनाने में भी कोई दिक्कत नहीं होती। जीवन-लक्ष्य की दृढ़ता और आत्मविश्लेषण का विवेक इतना परिमार्जित होना चाहिए कि सांसारिक बाधाओं का, भोगों के प्रलोभनों का उस पर प्रभाव न पड़ सके, तभी स्थिरतापूर्वक उस महानता की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है, जिसके लिए मनुष्य-योनि में जीवात्मा का अवतार होता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६५ पृष्ठ १०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना भाग्य अपने हाथों बनाइए

दुर्भाग्य के प्रमुख कारण मनुष्य के मनोविकार हैं। इन्हीं से जीवन बरबाद होता है। काम, क्रोध, लोभ तथा मोह आदि के द्वारा ही मनुष्य का जीवन अपवित्र बनता है। संक्षेप में इसी को ही दुर्भाग्य की संज्ञा दी जा सकती है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह इंद्रिय, मन और बुद्धि की अस्वच्छता को शुद्ध बनाने का सदैव अभ्यास करता रहे, इससे वह भविष्य को सुंदर बना सकता है। अनावश्यक वस्तुओं के अधिक से अधिक संचय को ही भाग्य नहीं कहते। वह मनुष्य-जीवन में अच्छाइयों का विकास है, इसी से उसे शाश्वत सुख और शांति की उपलब्धि होती है। सत्कर्मों का आश्रय ही एक प्रकार से सौभाग्य का निर्माण करता है।

कर्म चाहे वह आज के हों अथवा पूर्व जीवन के, उनका फल असंदिग्ध है। परिणाम से मनुष्य बच नहीं सकता। दुष्कर्मों का भोग जिस तरह भोगना ही पड़ता है, शुभ कर्मों से उसी तरह सौभाग्य और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। यह सुअवसर जिसे उपलब्ध हो, वही सच्चा भाग्यशाली है और इसके लिए किसी दैव के भरोसे नहीं बैठना पड़ता। कर्मों का संपादन मनुष्य स्वयं करता है। अतः अपने अच्छे-बुरे भाग्य का निर्णायक भी वही है। अपने भाग्य को वह कर्मों द्वारा बनाया-बिगाड़ा करता है। हमारा श्रेय इसमें है कि सत्कर्मों के द्वारा अपना भविष्य सुधार लें। जो इस बात को समझ लेंगे और इस पर आचरण करेंगे, उनको कभी दुर्भाग्य का रोना नहीं रोना पड़ेगा।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६५ पृष्ठ १६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अंतःकरण की आवाज सुनो और उसका अनुकरण करो

जब मनुष्य अकेला होता है, उसके आस-पास भी जब कोई नहीं होता है, तब कोई पाप करने में उसे जो भय लगता है, एक शंका रहती है, वह किसके कारण होती है ? उसे बार-बार ऐसा क्यों लगता है कि कोई उसके पाप को देख रहा है ? क्यों उसका शरीर पूरे उत्साह से उस पाप कर्म में उत्साहित नहीं रहता ? और क्यों बाद में भी वह एक अपराधी की तरह मलिन रहता है ? क्या कभी कोई इस पर विचार करता है कि जब उसके पाप को देखने वाला कोई मौजूद नहीं, तब उसे भय किसका है, वह किससे डर रहा है ? कौन उसे ऐसा करने को निःशब्द रोकता और टोकता रहता है ? कौन उसके मन, प्राण और शरीर में कंपन उत्पन्न कर देता है ?

निस्संदेह यह उसका अपना अंतःकरण है, जो उसे उस पाप से हटाने के प्रयत्न में विविध प्रकार की शंकाओं, संदेहों व कंपनादि भयद्योतक अनुभवों से उसे वैसा न करने के लिए संकेत करता रहता है। जो मनुष्य अपने इस अंतःकरण के संकेतों की उपेक्षा नहीं करता है, वह पाप-कर्म से बच जाता है और जो मनुष्य उसकी अवहेलना करके वैसा करता है, उसका अंतःकरण एक न एक दिन उसकी गवाही देकर उसे दंड का भागी बनाता है। यह हो सकता है कि किसी का पाप-कर्म दुनियाँ से छिपा रहे, किंतु उसके अपने अंतःकरण से कदापि नहीं छिप सकता। वह उसकी एक-एक क्रिया और विचार का सबसे प्रबल और सच्चा साक्षी होता है। हमारे लिए उचित यही है कि अंतःकरण में विद्यमान परमात्मा की आवाज को सुनें और उसका अनुसरण करें।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६५ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन एक वरदान है, इसे वरदान की तरह जिएँ

असुरों से सभी घृणा करते हैं, क्योंकि उनकी भावनाओं में स्वार्थपरता और भोग-लालसा इतनी प्रबल होती है कि वे इसके लिए दूसरों के अधिकार, सुख और सुविधाएँ छीन लेने में कुछ भी संकोच नहीं करते। उनके पास रहने वाले भी दुखी रहते हैं और व्यक्तिगत बुराइयों के कारण उनका निज का जीवन तो अशांत होता ही है। दु:ख की यह अवस्था किसी के लिए भी अभीष्ट नहीं है।

हम सुख-भोगने के लिए इस संसार में आए हैं। दु:खों से हमें घृणा है, पर सुख के सही स्वरूप को भी तो समझना चाहिए। इंद्रियों के बहकावे में आकर जीवन-पथ से भटक जाना, मनुष्य जैसे बुद्धिमान प्राणी के लिए श्रेयस्कर नहीं लगता। इससे हमारी शक्तियाँ पतित होती हैं। अशक्त होकर भी क्या कभी सुख की कल्पना की जा सकती है ? भौतिक शक्तियों से संपन्न व्यक्ति का इतना सम्मान होता है कि सभी लोग उसके लिए छटपटाते हैं, फिर आध्यात्मिक शक्तियों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। देवताओं को सभी नतमस्तक होते हैं, क्योंकि उनके पास शक्ति का अक्षय कोश माना जाता है। हम अपने देवत्व को जाग्रत करें, तो वैसी ही शक्ति की प्राप्ति हमें भी हो सकती है। तब हम सच्चे सुख की अनुभूति भी कर सकेंगे और हमारा मानव-जीवन सार्थक होगा। हमें असुरों की तरह नहीं, देवताओं की तरह जीना चाहिए। देवत्व ही इस जीवन का सर्वोत्तम वरदान है, हमें इस जीवन को वरदान की तरह ही जीना चाहिए।

www.awgp.org *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६५ पृष्ठ १४*

www.vicharkrantibooks.org

प्रतिशोध की भावना छोड़िए

विरोधी बातों को कभी मस्तिष्क में टिकने न दिया कीजिए, यह न जाने कब विद्रोह पैदा कर दें। परदोष-दर्शन, घृणा तथा द्वेष करके भी मन में प्रतिशोध के भाव न रहने दीजिए। प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाई ढूँढ़ा कीजिए। गुणग्राहकता से आपके सद्गुण बढ़ेंगे। घृणा के बदले प्रेम किया कीजिए। किसी का अहित न सोचिए, बन पड़े तो उपकार कीजिए, हित करिए। कोई अपराध भी करता है, तो उसे भी क्षमा कर दीजिए। यह मत सोचिए कि इससे आपको हानि होगी। सद्गुणों और सद्विचारों की कीमत कई गुना अधिक होकर लौटती है और मनुष्य के अंत:करण को शीतल बना देती है।

यह सारा संसार परमात्मा से ही ओत-प्रोत है। जिस तरह एक ही सूरज पानी के कई घड़ों में एक ही तरह से दिखाई देता है, उसी तरह शरीर की विविधता होते हुए भी प्राणिमात्र उस अव्यक्त परमात्मा के ही प्रतिबिंब हैं। इनसे दुराव करने का तात्पर्य यह है कि आप परमात्मा को दोष लगाते हैं। किसी के प्रति बैर-भाव का अर्थ परमात्मा से विद्रोह पैदा करना है। आप इन भावनाओं को मन से निकालकर सदैव मंगल ही सोचा करें।

सद्भाव सारे वातावरण में फैलकर आपके हृदय में पवित्रता, शांति तथा मैत्री का विस्तार करेंगे। इस तरह के मंगल-कर्म करने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। वह चिरकाल तक धरती के सुखों का उपभोग करता रहता है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९६५ पृष्ठ २६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव-जीवन को सार्थक बनाएँ

मानव-जीवन भगवान का दिया हुआ अनुपम वरदान है। अगणित योनियों में भ्रमण करने के पश्चात मिलता है। दुरुपयोग करने पर यह छिन जाता है और फिर निम्न योनियों में भ्रमण करने के लिए चिरकाल तक अधोगति में रहना पड़ता है। जो सुविधाएँ इस शरीर में प्राप्त हैं, वे अन्य किसी शरीर में नहीं। जो अवसर अन्य किसी जीवधारी को प्राप्त न हों, उसे मनुष्य को प्रदान करते हुए भगवान ने कुछ विशेष उत्तरदायित्व भी इसे सौंपे हैं। उचित यही है कि वह उनकी अवहेलना न करे।

पेट-पालने और सुख-चैन के साधन जुटाने की सुविधा एवं प्रतिभा तो पशु-पक्षियों को भी प्राप्त है। मनुष्य की विशेषता यह है कि विवेकवान, संयमी, सद्‌गुणी और उदार बने। अपना आत्मिक स्तर ऊँचा उठाते हुए अपूर्णता से पूर्णता की ओर चले। इस दिशा में जितनी प्रगति होगी, उतना ही उसका जीवन सार्थक माना जाएगा।

आत्मिक विभूतियों की अभिवृद्धि इस बात पर निर्भर है कि वह दूसरों के साथ कितना उदार व्यवहार करता है। आत्मिक सद्‌गुणों में आत्मसंयम और परोपकार, ये दो ही प्रधान हैं। जो इन दोनों की उपलब्धि में जितना अधिक निरत है, समझना चाहिए, वह उतना ही अधिक मानव-जीवन के महत्त्व को समझकर और उसे प्राप्त करने में आगे बढ़ा है। यह भावना मनुष्य को सन्मार्गगामी बनाती है और उसकी आंतरिक शक्तियों को विकसित कर पारमार्थिक लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६५ पृष्ठ १*

www.vicharkrantibooks.org

आत्मविकास की विचार-साधना

दूषित विचारों से वातावरण की सारी सुंदरता नष्ट हो गई है। अब मनुष्य-जीवन का कुछ मूल्य नहीं रहा है, क्योंकि कुविचारों के फेर में इतनी अधिक अशांति उत्पन्न कर ली गई है कि उसमें थोड़े-से सद्विचारवान व्यक्तियों को भी चैन से रहने का अवसर नहीं मिलता। इस संसार की सुखद रचना और इसके सौंदर्य को जाग्रत करना चाहते हो, तो वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन में सद्विचारों की प्रतिष्ठा करनी ही पड़ेगी और इसके लिए केवल कुछ व्यक्तियों को नहीं, वरन बुराइयों की तुलना में कुछ अधिक प्रभावशाली सामूहिक प्रयास करने पड़ेंगे, तभी सबके हित संरक्षित रह सकेंगे।

यह कल्पना तभी साकार हो सकेगी, जब अपने विचारों के परिवर्तन से सभ्य-सुसंस्कृत समाज की रचना का प्रयत्न करोगे। तुम उसी पदार्थ को अपनी ओर आकृष्ट करते हो, जिसके लिए अंतर में विचार होते हैं, अब तक बुरे विचार उठ रहे थे। अत: वातावरण भी कुरूप-सा, अशांत-सा लग रहा है। भ्रम और द्वेषपूर्ण विचारों से दुर्भावनाओं को मार्ग मिलता रहा। अब इसे छोड़ने का क्रम अपनाना चाहिए और शुभ विचारों की परंपरा डालनी चाहिए।

प्रेममय विचारों से हम अपने प्रेमास्पद को आकृष्ट करते हैं। यह विचार भी अप्रकट न रह सकेंगे। शीघ्र ही स्वभाव रूप में प्रकट होंगे और शीघ्र ही स्वभाव, क्रिया तथा कर्म रूप में परिणत होकर वैसे परिणाम उपस्थित कर देंगे। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६५ पृष्ठ ९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमर हो तुम, अमरत्व को पहचानो

परमात्मा की सृष्टि में सुख ही सुख है। दु:ख का नाम भी नहीं है, पर सारे झगड़े की जड़ यह है कि लोग अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना नहीं चाहते। बेटा अपने धनी बाप से बिछुड़ गया है और अपने आप को निर्धन की सी स्थिति में पड़ा हुआ अनुभव करता है। उसका शरीर, प्राण और मन सब अस्त-व्यस्त है, क्योंकि वह जानता भी नहीं कि उसका बाप कितना व्यवस्थित, कितना विकसित और कितना विशाल है? अपने अमरस्वरूप को मनुष्य पहचान जाए, तो ये विशेषताएँ उसमें भी तत्काल परिलक्षित होने लगें।

दुधारू गाय की बछिया भी दुधारू होती है। मीठे आम की नस्ल से उत्पन्न किया हुआ आम भी उसी गुण वाला होता है। संतरे के पेड़ में नींबू के फल नहीं लगते। अपने अमरस्वरूप में मनुष्य भी ईश्वरीय गुणों से ओत-प्रोत है, किंतु उसकी यह महानता अज्ञानता के अंधकार में छिपी हुई है। मनुष्य अपने पिता परमात्मा के गुण, ऐश्वर्य और वैभव के अनुरूप अपना जीवनक्रम बनाता, तो उसकी शक्तियाँ भी छिपी हुई न रहतीं और वह भी अपने आप को अपने पिता के सदृश ही सत्, चित् और आनंद रूप में पाता।

आप अपने आप को रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, मेदे आदि से बना हुआ क्षुद्र शरीर मत मानिए। आप आत्मा हैं। इस तथ्य को भलीभाँति समझ लें। आत्मा अपने अमरत्व को पहचानने के लिए ही मनुष्य शरीर में अवतरित हुई है।

www.awgp.org
—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६५ पृष्ठ ६

www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति का गौरव फिर से उज्ज्वल करें

वह ज्ञान, वह गौरव, विज्ञान, कला, समृद्धि और संस्कृति सबके सब इस देश के गर्भ में अभी भी विद्यमान हैं। वे खोजें आज भी दृढ़ हैं, निरर्थक नहीं हुईं। उन विद्याओं का अस्तित्व अब भी विद्यमान है और यह प्रतीक्षा किया करता है कि कोई आए और हमारे अनंत भंडार में से जितना मन चाहे, बटोर ले जाए, किंतु कहाँ है वह साहस? उस तन्मयता को क्या हो गया? कहाँ हैं वे कर्मवीर जो राष्ट्र के गौरव को फिर से ऊँचा उठा सकें।

हमने एक परिभाषा सीख ली है—"पतन की परिभाषा।" नशे में झूमते हुए व्यक्ति को जैसे खुद का भी होश-हवास नहीं रहता, ठीक उसी तरह हो गए हैं हम। हमारी रगों में विदेशीपन का, बनावट का नशा छा गया है। अपने सांस्कृतिक गौरव को भूल चुके हैं। तभी दिनोंदिन हमारी दुर्गति बढ़ती जा रही है। बेकारी, भ्रष्टाचार टिक नहीं सकता, व्यभिचार पनप नहीं सकता, अत्याचार अधिक दिन तक सर उठाए खड़ा नहीं रह सकता, पर हमारा आत्माभिमान तो जागे। हम जिस दिन अपने गौरव को समझ पाएँगे, उस दिन हमारी अवस्था ही भिन्न होगी। सर्वत्र उल्लास होगा। ज्ञान की गंगा यहाँ बह रही होगी। समृद्धि का कुबेर अपना खजाना लुटा रहा होगा। सब कुछ होगा, पर हमारी आध्यात्मिक वृत्तियाँ भी तो जागें। यदि इतना साहस हममें पैदा हो जाए, तो युग को बदलते देर न लगेगी। वह स्वर्णिम विहान विहँसता हुआ चला आएगा। आइए! अब उसी धर्म और संस्कृति के अवगाहन के लिए तैयार हों। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६५ पृष्ठ १०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धैर्य की उपयोगिता

कोई भी काम करने में धैर्य की नितांत आवश्यकता है। जो धैर्यवान है, वह कर्म करने से पहले उसके शुभाशुभ परिणाम पर विचार कर सकता है। उसको सफल बनाने के लिए मार्ग निर्धारित कर सकता है। अपने कर्म के सत्-असत् एवं उपयोगिता-अनुपयोगिता पर सोच सकता है। इसके विपरीत जो अधैर्यवान है, आवेश अथवा उद्वेगपूर्ण है, वह न तो कर्म की इन आवश्यक भूमिकाओं पर विचार कर सकता है और न दक्षता प्राप्त कर सकता है। वह तो अस्त-व्यस्त क्रिया-कलाप की तरह एक निरर्थक श्रम ही होता है।

अधैर्य मनुष्य का बहुत बड़ा दुर्गुण है। अधीर व्यक्ति में अपेक्षित गंभीरता का अभाव ही रहता है, जिससे वह चपलता के कारण समाज में उपहास, उपेक्षा और निंदा का पात्र बनता है। अधीर व्यक्ति के मन-बुद्धि स्थिर नहीं रहते। वह न किसी विषय में ठीक से सोच सकता है और न कर्तृत्व का निर्णय कर सकता है। अधैर्यवान व्यक्ति अदक्षता, अस्तव्यस्तता, अनिर्णयात्मकता एवं अक्षमता के कारण जीवन के हर क्षेत्र में असफल होकर दुःख भोगता है। इसके विपरीत जो धृतिमान है, वह जिस कार्य को पकड़ता है, उसे पूर्ण मनोयोग, विवेक, बुद्धि और समग्र शक्ति लगाकर पूरा किए बिना नहीं रहता। धैर्यवान व्यक्ति कर्म करके उसके फल की प्रतीक्षा में व्यग्र नहीं होता, बल्कि फलासक्ति से रहित होकर कार्य किया करता है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६५ पृष्ठ २४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विचारों की शक्ति अपरिमित है

विचार एक शक्ति है, विशुद्ध विद्युत-शक्ति। जो इस पर समुचित नियंत्रण कर ठीक दिशा में संचालन कर सकता है, वह बिजली की भाँति इससे बड़े-बड़े काम ले सकता है, किंतु जो इसको ठीक से अनुशासित नहीं कर सकता, वह उलटा इसका शिकार बन अपनी ही शक्ति से स्वयं नष्ट हो जाता है। इसीलिए मनीषियों ने नियंत्रित विचारों को मनुष्य का मित्र और अनियंत्रित विचारों को उसका शत्रु बतलाया है।

समस्त शुभ और अशुभ, सुख और दुःख की परिस्थितियों के हेतु तथा उत्थान-पतन के मुख्य कारण, विचारों को वश में रखना मनुष्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। विचारों को उन्नत कीजिए, उनको मंगलमूलक बनाइए, उनका परिष्कार एवं परिमार्जन कीजिए और वे आपको स्वर्ग की सुखद परिस्थितियों में पहुँचा देंगे। इसके विपरीत यदि आपने विचारों को स्वतंत्र छोड़ दिया, उन्हें कलुषित एवं कलंकित होने दिया, तो आपको हर समय नरक की ज्वाला में जलने के लिए तैयार रहना चाहिए। विचारों की चपेट से आपको संसार की कोई शक्ति नहीं बचा सकती।

विचारों का तेज ही आपको ओजस्वी बनाता है और जीवन संग्राम में एक कुशल योद्धा की भाँति विजय भी दिलाता है। इसके विपरीत आपके मुर्दा विचार आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पराजित करके जीवित मृत्यु के अभिशाप के हवाले कर देंगे। जिसके विचार प्रबुद्ध हैं, इसकी आत्मा प्रबुद्ध है और जिसकी आत्मा प्रबुद्ध है, उससे परमात्मा दूर नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६५ पृष्ठ १८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खिन्न नहीं, प्रफुल्लित रहा कीजिए

जीवन को सुखी और सफल बनाने का एक ही उपाय है कि आप एक क्षण को भी खिन्नता के वशीभूत न हों। अप्रिय परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी प्रसन्नचित्त रहिए। संसार के प्रति अपना दृष्टिकोण इस प्रकार का बनाइए कि आपको प्रतिकूलताओं में भी सफलता और समुन्नति के पदचिह्न दिखाई दें। अपना मानसिक स्तर इतना ऊँचा उठाइए कि संसार की छोटी-बड़ी कोई भी प्रतिकूलता आपका मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त न कर सके। प्रतिकूलताओं में भी हँसिए, कठिनाइयों में मुस्कराइए और असफलता में सफलता की संभावना देखिए।

विरोध को विरोध के रूप में न लेकर उसे प्रेरणा के रूप में स्वीकार कीजिए। कटुता का उत्तर मधुरता से दीजिए। हानि-लाभ, सुख-दुःख, उत्कर्ष और अपकर्ष में तटस्थ रहिए। इनसे उस सीमा तक प्रभावित न होइए कि आपके लिए विषाद, निराशा, निरुत्साह अथवा व्यग्रता का कारण बन जाए। सामने आई हुई द्विविधाओं को संसार का सहज घटनाचक्र समझकर निर्विकार भाव से सहन कीजिए और तब देखिए कि बड़े से बड़ा कारण आ जाने पर भी आप खिन्न नहीं होंगे।

खिन्नता हर तरह के शोक-संतापों की जड़ है। इसको आश्रय देते ही संपूर्ण जीवन दुःखों का भंडार बन जाएगा। खिन्नता कायर मन की अभिव्यक्ति है। वीर वह है, जो संसार के सारे दुःख-द्वंद्वों को तटस्थ भाव से करता हुआ सदा प्रसन्न रहता है। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६५ पृष्ठ २८*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

निराश मत होइए अन्यथा सब कुछ खो बैठेंगे

मनुष्य को किसी भी अवस्था अथवा परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए। सौ असफलताएँ मिलने पर भी जो एक सौ एकवें बार प्रयत्न करता है, वह अवश्य सफल होता है। सफलता-असफलता से निरपेक्ष रहकर निरंतर कार्यरत रहना ही निराशा से बचने का अमोघ उपाय है। जो व्यक्ति अपने पूरे तन-मन से काम में संलग्न रहता है, उसे निराश होने के लिए समय नहीं रहता।

निराशा एक भयानक रोग है, जिससे न केवल मानसिक शक्तियों का ही ह्रास होता है, अपितु शारीरिक स्वास्थ्य भी चौपट हो जाता है। निराश व्यक्ति हर समय चिंता और क्षोभ से जलता रहता है, जिससे उसे न तो भूख लगती है और न नींद आती है। इससे उसके शरीरसंस्थान पर भयानक प्रतिक्रिया होती है। पाचनक्रिया और रक्त संचार की प्रणाली बिगड़ जाती है, जिससे शरीर व्याधियों का घर बनकर **"शरीरम् व्याधि मन्दिरम्"** वाली उक्ति चरितार्थ कर देता है। वास्तव में यह उक्ति अवश्य ही किसी निराश हृदय से अपने सजातीय निराश बंधुओं पर ही चरितार्थ होने के लिए प्रकट हुई है।

जहाँ तक हो निराशा की भयंकर बीमारी को अपने पास न आने देना ही ठीक है और यदि वह किसी कारण से आक्रमण कर भी दे, तो उसे अधिक देर तक टिकने नहीं देना चाहिए। इसका अनुभव होते ही हास-परिहास, व्यंग्य-विनोद और मनोरंजन द्वारा इसे तुरंत भगा देना चाहिए। निराशा को एक क्षण भी प्रश्रय देने का अर्थ है—'जीवन में विषाद के गहरे बीज बो लेना।' *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६५ पृष्ठ २०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य परमात्मा का प्रखर प्रतिनिधि

अपनी रचना से सभी को प्रेम होना स्वाभाविक ही है और जो रचना जितनी ही अधिक उत्कृष्ट होती है, उससे उतना ही अधिक प्रेम भी होता है। यदि कोई उसकी प्रिय रचना को विकृत करने का प्रयत्न करता है, तो वह रचयिता का कोपभाजन भी बनता है। रचयिता को इस बात पर न केवल संतोष ही होता है बल्कि प्रसन्नता भी होती है कि उसकी रचना उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति भी करती है।

परमात्मा सर्वन्यायकारी है। वह ऐसे भक्त को जो अपना सुख, अपना स्वार्थ ही सिद्ध करना चाहता हो, कभी प्यार नहीं कर सकता। संसार के और भी जितने प्राणी हैं, वे सब भी उसी परमात्मा के प्यारे बच्चे हैं। जो व्यक्ति उसके सभी बच्चों को प्यार कर सकता हो, परमात्मा का वास्तविक प्यार उसे ही मिल सकता है।

मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट रचना है। मनुष्य को उससे प्रेम भी है, जिसके प्रमाणस्वरूप उस महा रचयिता की दी हुई महान चेतना और अनंत विवेक उसके पास है। प्राकृतिक उत्पादन, विविध वनस्पतियाँ और अपरिमित विभूतियाँ भी परमात्मा के अनंत प्रेम की ही परिचायिका हैं।

इसकी कृतज्ञतास्वरूप मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह परमात्मा की कृपा और उसके व्यक्तित्व का उसी के अनुरूप प्रतिनिधित्व भी करे। अब जो ऐसा नहीं करता, वह उसकी कला को अपमानित करता है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६६ पृष्ठ-१*

लक्ष्यसिद्धि के लिए धैर्य आवश्यक है

कोई भी कार्य प्रारंभ करने के पूर्व एक बात मन में बिठा लेनी चाहिए। 'हम इसे अंत तक, सफलता मिल जाने तक पालन करेंगे।' मनुष्य जीवन में दृढ़ता और अडिगता की अनिवार्यतः आवश्यकता होती है। अपने जीवन को किसी और पर आधारित रखकर स्वयं उसे साधना-सँभालना तथा बहुत देर तक प्रतीक्षा करने में अधिक आनंद देखना है। साधना एक प्रकार का आनंद है, जिसे थोड़ी देर भोगने से तृप्ति नहीं होती, वरन चिरकाल तक उस रस को लूटा जाता है। भार की तरह ढोने के लिए साधना नहीं, वह तो पुरुषार्थ का आनंद देने वाली होती है।

अधिक बड़े संघर्ष न पैदा हों, इसके लिए यह भी आवश्यक है कि आपका साधन छोटा हो। साइकिल, साइकिल से टकराएगी तो क्षति कम होगी। रेल, रेल से टकराएगी तो बड़ी हानि होगी। धीमी गति में स्थिरता और स्थायित्व होता है।

साधनासिद्धि और लक्ष्यसिद्धि के ये शाश्वत नियम हैं। इन्हें कोई साधारण भले ही समझे, पर इनकी वास्तविकता में राई-रत्ती गुंजाइश नहीं। लक्ष्य चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा, स्वर्ग और मुक्ति की कामना हो, यश, धन अथवा कीर्ति की, मनुष्य को संतुलन रखकर मंदगति से, लगन के साथ धैर्यपूर्वक साधना करनी पड़ती है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६६ पृष्ठ-३-४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को सुधारिए—वह सुधर जाएगा

पवित्र विचारों से मन पर वांछित संस्कार पड़ते हैं, उसका परिमार्जन होता है और उसमें ऊर्ध्वगामी होने की रुचि पुन: उत्पन्न होती है। मन, मनुष्य के मनोरथों को पूरा करने वाला सेवक होता है। मनुष्य जिस प्रकार की इच्छा करता है, मन तुरंत उसके अनुकूल संचालित हो उठता है और उसी प्रकार की परिस्थितियाँ सृजन करने लगता है। मन आपका सबसे विश्वस्त मित्र और हितकारी बंधु होता है।

यह सही है कि बुरे विचारों का त्याग श्रमसाध्य अवश्य है, किंतु असाध्य कदापि नहीं। विकृतियों के अनुपात में ही सत्प्रयासों की आवश्यकता है। बीसों साल की पाली हुई विकृतियों को कोई एक-दो महीनों में ही दूर कर लेना चाहता है, तो वह गलती करता है। विकृतियाँ जितनी पुरानी होंगी, उतने ही शीघ्र एवं दृढ़ अभ्यास की आवश्यकता होगी। अभ्यास में लगे रहिए, एक-दो साल ही नहीं जीवन के अंतिम क्षण तक लगे रहिए। मानसिक विकृतियों से हार मानकर बैठे रहने वाला व्यक्ति जीवन में किसी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

मन को परिमार्जित करने, उसे अपने अनुकूल बनाने में केवल विचारशक्ति ही नहीं अपनी कर्मशक्ति भी लगाइए। जिस कल्याणकारी विचार को बनाएँ, उसे क्रियारूप में भी परिणत करिए।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६६ पृष्ठ-९-१०

ज्ञान-दान की परंपरा चलती रहे

इस युग में ज्ञान-दान की बड़ी आवश्यकता है। स्थूल दान का महत्त्व अब इसलिए कम हो गया है कि उसमें पात्र-कुपात्र का अंदाज नहीं होता, पर ज्ञान की आवश्यकता अच्छे-बुरे हर व्यक्ति के लिए है। उससे किसी का अहित नहीं हो सकता और न ही उस दान का दुरुपयोग किया जा सकता है।

ज्ञान मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास का साधन है। समाज में ज्ञानवान व्यक्ति अधिक सुखी और संतुष्ट समझे जाते हैं। समाज का एक वर्ग पढ़ा-लिखा हो और दूसरा मूढ़ताग्रस्त हो, तो वह समाज दुखी समाज होगा। ज्ञान का उद्देश्य मानवमात्र को एक स्तर पर लाना है। कार्य निस्संदेह कुछ कठिन है, पर इसका महत्त्व अत्यधिक है। आज की स्थिति में सर्वोच्च दान 'ज्ञान' को मानें, तो वह सर्वथा उपयुक्त ही होगा।

मनुष्यों पर ऋषियों का भी एक ऋण है। ऋषि का अर्थ है वेद। वेद अर्थात ज्ञान। आज तक हमारा जो विकास हुआ है, उसका श्रेय ज्ञान को है, ऋषियों को है। जिस तरह हम यह ज्ञान दूसरों से ग्रहण कर विकसित हुए हैं, उसी तरह अपने ज्ञान का लाभ औरों को भी देना चाहिए। यह हर विचारशील व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वे समाज के विकास में अपने ज्ञान का जितना अंश दान कर सकते हों, वह अवश्य करें।

ज्ञान-दान मनुष्य को सन्मार्ग की ओर ले जाने के लिए किया जाता है, इसलिए यह अन्य दानों की अपेक्षा अधिक सार्थक होता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६६ पृष्ठ-१९-२०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मविश्वास की अटूट शक्ति

अकर्मण्य, असहाय तथा अविश्वासपूर्ण जीवन बिताने वाले मनुष्य के नाम पर एक कलंक के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। मनुष्य जीवन रिरियाने, रेंगने और रोने के लिए नहीं है। वह है, आगे बढ़कर भविष्य पर पैर रोपने और समय पर अधिकार करने के लिए। जीवन पराजय के लिए नहीं, विजय के लिए है। जीवनसंग्राम में विजय मिलती उसी को है, जो उत्साह से भरपूर और आत्मविश्वास से ओत-प्रोत है। जिसके चरणों में अंगद की दृढ़ता है, वही समय की छाती पर अपना पदारोपण कर सकता है। आत्मविश्वास सारी शक्तियों का उद्गम और समस्त श्रेयों की कुंजी हैं।

आत्मविश्वास के जागते ही मनुष्य में वह दिव्यशक्ति प्रवाहित हो जाती है, जिसके बल पर ऊँचे से ऊँचे पर्वतों को लाँघा और गहरे-से-गहरे समुद्र को बाँधा जा सकता है। आत्मविश्वासी समस्त संसार के विश्वास का अधिकारी होता है। जो अपने ऊपर भरोसा करता है, उसी का दूसरे लोग भी भरोसा करते हैं। जो अपनी सहायता आप करता है, उसी की ईश्वर भी सहायता करता है। आत्मविश्वास शक्ति का स्रोत है। उसी के सहारे किसी के लिए आगे बढ़ना संभव हो सकता है। भाग्य का निर्माण ईश्वर नहीं, आत्मविश्वास करता है। जो निष्ठापूर्वक पुरुषार्थ में संलग्न है और हार-जीत की चिंता न करते हुए आगे ही बढ़ता जाता है, उस आत्मविश्वासी के लिए पर्वतों को भी रास्ता देना पड़ता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६६ पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दुष्कर्मों का प्रतिफल भोगना पड़ता है

संसार में मनुष्य अपने क्षणिक सुख के लिए अनेक प्रकार के दुष्कर्म कर डालता है। उसे यह खबर नहीं होती कि इन दुष्कर्मों का फल हमें अंत में किस प्रकार भुगतना पड़ेगा ? मनुष्य को जो तरह-तरह के कष्ट उठाने पड़ते हैं, उनके लिए किसी अंश तक समाज और देश-काल की परिस्थितियाँ भी उत्तरदायी हो सकती हैं, पर प्रायः वह अपने ही दुष्कर्मों के प्रतिफल भोगता है। मनुष्य-शरीर दुःख भोगने के लिए नहीं मिला। यह आत्मकल्याण के लिए मुख्यतः कर्म-साधन है, इसलिए अपनी प्रवृत्ति भी आत्मकल्याण या सुखप्राप्ति के उद्देश्य की पूर्ति होना चाहिए। इसके लिए बुरे स्वभाव, बुरे कर्मों से बचना भी आवश्यक हो जाता है।

साधनों को प्राप्त कर यदि आत्मा विवेक का सदुपयोग करता है और उसे अच्छे कर्मों में लगाता है, तो आत्मा अपनी शक्तियों को बढ़ाता हुआ, अनुकूल साधनों को भी बनाता रहता है और अंत में प्रारब्ध से स्वाधीन होकर अपनी पूर्ण उन्नति कर लेता है।

सत्य का मुख ढका हुआ है। ऐ सत्यशोधक ! यदि तू उसे प्राप्त करना चाहता है, तो उस ढक्कन को खोलना पड़ेगा, जिससे सत्य ढक गया है। आत्मज्ञान को बुरे कर्मों ने भी इसी तरह ढक लिया है। उसे प्राप्त करने के लिए इस अशुद्ध अवस्था का परित्याग करना ही पड़ता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६६ पृष्ठ ६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्मल और निर्विकार जीवन

प्रसन्नता का वास्तविक अर्थ है—निर्मलता एवं निर्विकारता। जो हृदय निर्मल है, निर्विकार है; वही प्रसन्न है और जो प्रसन्न है; वही सदा सुखी है। अस्तु, जीवन में सुख-शांति के स्थायित्व के लिए मनुष्य को अपने हृदय को सदा निर्मल एवं निर्विकार ही रखना चाहिए।

ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, काम-क्रोध आदि विकार ही मन के मल हैं। इनको दूर कर देने से मनुष्य का हृदय निर्मल हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों को दूर करने के लिए विचार-बल का ही अवलंबन लेना होगा। अपने विचारों को ऊँचा उठाइए, उनकी सहायता के लिए स्वाध्याय, सत्संग तथा सत्कर्मों का सहयोग लीजिए। कुविचार उत्पन्न करने वाले वातावरण से दूर हटिए। लोभ आने पर त्याग कीजिए, दान दीजिए, क्रोध होने पर करुणाजनक प्रसंग पढ़िए, कामावेश के समय निर्वेद का सहारा लीजिए और मोह से बचने के लिए ईश्वर का चिंतन करिए। निरंतर इस प्रकार का कार्यक्रम चलाते रहने से कुछ ही समय में आपका हृदय निर्मल होने लगेगा। निर्मलता की प्रसन्नता का थोड़ा-सा आभास पाते ही, मन पुनः अपना परिमार्जन करने में तत्पर हो जाएगा। परिस्थितियों को सुलझाने और प्रतिकूलताओं से लड़ने के लिए मनोबल की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। मनोबल का विकास केवल प्रसन्नता से ही हो सकता है। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६६ पृष्ठ-९-१०*

स्वर्गप्राप्ति के लिए ऊँचा सोचें, अच्छा करें

धन-वैभव से शारीरिक सुख-साधन मिल सकते हैं, विलास-सामग्री कुछ क्षण इंद्रियों में गुदगुदी पैदा कर सकती हैं, पर उनसे आंतरिक एवं आत्मिक उल्लास मिलने में कोई सहायता नहीं मिलती। धूप-छाँव की तरह क्षण-क्षण में आते-जाते रहने वाले सुख-दुःख शरीर और जीवन के धर्म हैं, इनसे छुटकारा नहीं मिल सकता। जिन्होंने अपनी प्रसन्नता इन बाह्य आधारों पर निर्भर कर रखी है, उन्हें असंतोष एवं असफलता का ही अनुभव होता रहेगा। वे अपने को दुखी ही अनुभव करेंगे।

सच्चा एवं चिरस्थायी सुख आत्मिक संपदा बढ़ाने के साथ बढ़ता है। गुण, कर्म और स्वभाव में जितनी उत्कृष्टता आती है, उतना ही अंतःकरण निर्मल बनता है। इस निर्मलता के द्वारा परिष्कृत दृष्टिकोण, हर व्यक्ति, हर घटना एवं हर पदार्थ के बारे में रचनात्मक ढंग से सोचता और उज्ज्वल पहलू देखता है। इस दृष्टिकोण की प्रेरणा से जो भी क्रियापद्धति बनती है; उसमें सत्य, धर्म एवं सेवा का ही समावेश होता है।

परिष्कृत दृष्टिकोण का नाम ही स्वर्ग है। स्वर्ग किसी स्थान विशेष का नाम नहीं, वह तो मनुष्य के सोचने, देखने और करने की उत्कृष्टता मिश्रित प्रक्रिया मात्र है। जो केवल ऊँचा ही सोचता और अच्छा ही करता है, उसे हर घड़ी स्वर्ग का आनंद मिलेगा। उसके सुख का कभी अंत नहीं।

—अखण्ड ज्योति-मई १९६६ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा का दर्शन कैसे मिले ?

ईश्वर का अस्तित्व, धर्म का विषय है और उसे अनुभव किया जा सकता है। परमात्मा की व्यापकता और उसकी अभिव्यक्ति का अवगाहन हम उतना ही स्पष्ट कर सकते हैं, जितना हमारा अनुभव गहन और व्यापक होगा। प्रो० नाइट का मत है—"ईश्वर की भावना हमारे हृदय में इस प्रकार घर कर गई है कि उसे अंत:करण से बाहर लाना कठिन जान पड़ता है।"

आंतरिक ज्ञान के द्वारा ही हम परमात्मा का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, उसका साक्षात्कार कर सकते हैं अथवा यों कहना चाहिए कि हम ईश्वर बनकर ही ईश्वर के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। इसमें भी आंतरिक शक्तियों के विकास की ओर ही संकेत है। कल्पना, चिंतन, विचार, भावना, स्वप्न आदि के माध्यम से तो उसकी एक झलक ही देख सकते हैं। विश्वास की पुष्टि के लिए यद्यपि बुद्धितत्त्व भी आवश्यक है तथापि उसके पूर्ण ज्ञान के लिए अपने अंदर प्रविष्ट होना होगा, आत्मा की सूक्ष्म सत्ता में प्रवेश करना आवश्यक हो जाता है। वहाँ बुद्धि की पहुँच नहीं हो सकती। आत्मा का भेदन आत्मा ही करता है और आत्मा बनकर ही आत्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है। इसी बात को ईश्वरीय ज्ञान के बारे में भी घटित किया जाता है। यह ऐसा ही है, जैसे कोई यह कहे कि एक बूँद, समुद्र में मिलकर अपने आप को समुद्र अनुभव कर सकती है, पर अपने बूँद-रूप में समुद्र की गहराई का मापन नहीं कर सकती।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६६ पृष्ठ-३-४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

श्रद्धा से बुद्धि का नियमन कीजिए

बुद्धि का अनियंत्रित विकास केवल दूसरों के लिए ही दु:खदायी नहीं होता, स्वयं अपने लिए भी हानिकर होता है। अति बुद्धिवादी मानव को अंततः असंतोष की ज्वाला में ही जलना होता है। वह बहुत कुछ पाकर भी कुछ नहीं पाता। एक बुद्धिवादी कितना भी शास्त्रज्ञ, विशेषज्ञ, दार्शनिक, तत्त्ववेत्ता आदि क्यों न हो, बुद्धि का अहंकार उसके हृदय में शांति को न ठहरने देगा। वह दूसरों को ज्ञान देता हुआ भी आत्मिक शांति के लिए तड़पता ही रहेगा। बुद्धि की तीव्रता पैनी छुरी की तरह किसी दूसरे अथवा स्वयं उसको दिन-रात काटती ही रहती है। मानव की अनियंत्रित बुद्धि-शक्ति मनुष्य जाति की बहुत बड़ी शत्रु है। अतएव बुद्धि के विकास के साथ-साथ उसका नियंत्रण भी आवश्यक है।

किसी शक्तिशाली का नियंत्रण तो उससे अधिक शक्ति से ही हो सकता है। तब भला समग्र सृष्टि को अपनी मुट्ठी में कर लेने वाली शक्ति, बुद्धि का नियंत्रण करने के लिए कौन-सी दूसरी शक्ति मनुष्य के पास हो सकती है ? मनुष्य की वह दूसरी शक्ति है—श्रद्धा, जिससे बुद्धि जैसी उच्छृंखल शक्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है, उसका नियंत्रण किया जा सकता है, ध्वंस की ओर जाने से रोककर सृजन के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। श्रद्धा के आधार के बिना बुद्धि एक बाबले बवंडर से अधिक कुछ भी नहीं है। श्रद्धारहित बुद्धि जिधर भी चलेगी उधर दु:खद परिस्थितियाँ ही उत्पन्न करेगी।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६६ पृष्ठ-८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन कलात्मक ढंग से जिएँ

'जिंदगी जीना एक कला है'—ऐसा सुनकर अनेक लोगों को अजीब-सा लग सकता है, किंतु है यह वास्तविकता कि जीवन एक कला है। जो लोग जीवन जीने की कला नहीं जानते अथवा उसे कलात्मक कर्त्तव्य नहीं मानते, वे जीते हुए भी ठीक से नहीं जी पाते।

बहुत-से लोग जिंदगी को विविध उपकरणों से सजाए-सँवारे रहने को ही कला समझते हैं, किंतु बाह्य प्रसाधनों द्वारा जीवन का साज—शृंगार किए रहना कला नहीं। यह मनुष्य की लिप्सा है, जिसे पूरा करने में उसे एक झूठे संतोष का आभास होता है। फलत: यह मान बैठता है कि वह जिंदगी को ठीक से जी रहा है। कला तो वास्तव में वह मानसिक वृत्ति है, जिसके आधार पर साधनों की कमी में भी जिंदगी को खूबसूरती के साथ जिया जा सकता है। जिंदगी को हर समय हँसी-खुशी के साथ अग्रसर करते रहना ही कला है और उसे रो-झींककर काटना ही कलाहीनता है।

साधन अथवा असाधन, संपन्नता अथवा विपन्नता किन्हीं भी स्थितियों में अनुरूप अथवा आवश्यक पुरुषार्थ के साथ सहजता, सरलता, संतोष, आशा, उत्साह तथा अव्यग्रतापूर्ण हर्ष-विषाद का यथायोग्य निर्वाह करते हुए जीना ही कलापूर्ण जीवन है जिसे प्राप्त करना न केवल श्रेयस्कर ही है, बल्कि सार्थक एवं सुखकर भी है। *—अखण्ड ज्योति-जून १९६६ पृष्ठ ९-१०*

www.awgp.org

विचार ही नहीं कार्य भी कीजिए

विचारों और क्रियाओं का संतुलन जब बिगड़ जाता है, तब मनुष्य का मानसिक संतुलन भी सुरक्षित नहीं रह पाता। इससे होता यह है कि जब वह भूमि पर अपनी वैचारिक परिस्थितियों को नहीं पाता, तो उसका दोष समाज के मत्थे मढ़कर मन ही मन एक द्वेष उत्पन्न कर लेता है। समाज का कोई दोष तो होता नहीं। अस्तु, उसको खुलकर कुछ न कह पाने के कारण मन ही मन जलता, भुनता और कुढ़ता रहता। इस प्रकार की कुंठापूर्ण जिंदगी उसके लिए एक दु:खद समस्या बन जाती है। अपनी प्यारी कल्पनाओं को पा नहीं पाता, यथार्थता से लड़ने की ताकत नहीं रहती और समाज का कुछ बिगाड़ नहीं पाता, ऐसी दशा में एक अभिशापपूर्ण जीवन का बोझा ढोने के अतिरिक्त उसके पास और कोई चारा ही नहीं रहता।

इसके विपरीत जिन बुद्धिमानों की विचारधारा संतुलित है, उसके साथ कर्म का समन्वय है, वे जीवन को सार्थक बनाकर सराहनीय श्रेय प्राप्त करते हैं। जीवन में कर्म को प्रधानता देने वाले व्यक्ति योजनाएँ कम बनाते हैं और काम अधिक किया करते हैं। इन्हें व्यर्थ विचारधारा को विस्तृत करने का अवकाश ही नहीं होता। एक विचार के परिपुष्ट होते ही, वे उसे एक लक्ष्य की तरह स्थापित करने क्रियाशील हो उठते हैं और जब तक उसकी प्राप्ति नहीं कर लेते, किसी दूसरे विचार को स्थान नहीं देते। *—अखण्ड ज्योति-जून १९६६ पृष्ठ १४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चरित्र अनमोल रत्न है

चरित्र मनुष्य का अनमोल धन है। हर उपाय से इसकी रक्षा करनी चाहिए। किसी की धन-दौलत, जमीन-जायदाद, व्यवसाय, व्यापार चला जाए, तो वह उद्योग करने से पुनः प्राप्त हो सकता है, किंतु जिसने प्रमाद अथवा असावधानीवश एक बार भी अपना चरित्र खो दिया, तो फिर वह जीवन भर के उद्योग से भी अपने उस धन को वापस नहीं पा सकता। आगे चलकर वह अपनी भूल सँभाल सकता है, अपना सुधार कर सकता है, अपनी सच्चरित्रता के लाख प्रमाण दे सकता है, किंतु फिर भी वह एक बार का लगा हुआ कलंक अपने जीवन पर से धो नहीं सकता। उसके लाख सँभल जाने, सुधर जाने पर भी समाज उसके उस पूर्व पतन को भूल नहीं सकता और इच्छा होते हुए भी उस पर असंदिग्ध विश्वास नहीं कर सकता। एक बार का चारित्रिक पतन मनुष्य को जीवन भर के लिए कलंकित कर देता है। इसीलिए तो विद्वानों का कहना है कि मनुष्य का यदि धन चला गया तो कुछ नहीं गया स्वास्थ्य चला गया तो कुछ गया और यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। इस लोकोक्ति का अर्थ यही है कि धन-दौलत तथा स्वास्थ्य आदि को फिर पाया जा सकता है, किंतु गया हुआ चरित्र किसी भी मूल्य पर दुबारा नहीं पाया जा सकता। इसलिए मनुष्य का प्रमुख कर्त्तव्य है कि वह संसार में मनुष्यतापूर्ण जीवन जीने के लिए हर मूल्य पर, हर प्रकार से, हर समय, अपनी चरित्र-रक्षा के लिए सावधान रहे। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६६ पृष्ठ-१२-२३*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दुःख से डरिए मत

एकमात्र सुख की आकांक्षा रखने वाले और दुःख-क्लेशों से भयभीत होने वाले न केवल स्वार्थी ही होते हैं, अपितु कायर भी होते हैं। कायरता मनुष्य जीवन का कलंक है। जो संघर्षों, मुसीबतों तथा आपत्तियों से डरता है, उनके आने पर निराश अथवा निरुत्साहित हो जाता है, वह और कोई बड़ा काम कर सकना तो दूर, साधारण मनुष्यों की तरह साधारण जीवनयापन भी नहीं कर सकता है। संसार में न तो आज तक ऐसा कोई मनुष्य हुआ है और न आगे ही होगा, जिसके जीवन में सदा प्रसन्नता की परिस्थितियाँ ही बनी रहें। उसे कभी दुःख-क्लेश के तप्त झोंके न सहन करने पड़े हों। राजा से लेकर रंक तक और बलवान से लेकर निर्बल तक प्रत्येक प्राणी को अपनी-अपनी स्थिति में अपनी तरह के दुःख-क्लेश उठाने ही पड़ते हैं। कभी शारीरिक कष्ट, कभी मानसिक क्लेश, कभी सामाजिक कठिनाई, कभी आर्थिक अभाव, तो कभी आध्यात्मिक अंधकार मनुष्य को सताते ही रहते हैं। सदा-सर्वदा कोई भी व्यक्ति कष्ट एवं कठिनाइयों से सर्वथा मुक्त नहीं रह सकता। तब ऐसी अनिवार्य अवस्था में किसी प्रकार की कठिनाई आ जाने पर निराश, चिंतित अथवा क्षुब्ध हो उठना इस बात का प्रमाण है कि हम संसार के शाश्वत नियमों से सामंजस्य स्थापित नहीं करना चाहते, हम असामान्यता के प्रति हठी अथवा दुराग्रही बने रहना चाहते हैं।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६६ पृष्ठ-२२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिष्ट एवं सभ्य व्यवहार जरूरी है

विनम्रता, मधुरता, शिष्टता एवं सभ्यतापूर्ण व्यवहार मनुष्य को सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचा देने में सक्षम होते हैं। निर्धन होने पर भी शिष्ट विद्यार्थी की शिक्षा रुकने नहीं पाती। किसी नौकरी में शिष्टता एक बार योग्यता की कमी को भी पूरा कर देती है। जो स्वयं सही माइनों में शिष्ट एवं सभ्य है उसे किसी काम के लिए किसी की सिफारिश की आवश्यकता नहीं पड़ती। विनम्रता एवं मधुरता क्रूर से क्रूर शत्रु को जीत लेती है। सहयोग, सहायता एवं सहानुभूति शिष्ट एवं शीलवान व्यक्ति की विरासत ही माननी चाहिए। घर-बाहर, देश-परदेश, कहीं भी क्यों न रहे विनम्रता एवं शिष्टता मनुष्य को मित्र की तरह हर जगह सहायता करती रहती है। विनम्र व्यक्ति विरोधियों के बीच भी अपना मार्ग बना लिया करता है।

जो शिष्ट एवं सभ्य होता है, वह सहिष्णु भी होता है। शिष्ट दूसरे से तो दु:खदायी व्यवहार नहीं करता है। यदि उसके साथ भी दु:खद व्यवहार किया जाता है, तब भी वह अधिक दुखी नहीं होता। न तो उस पर कोई अप्रिय प्रतिक्रिया होती है और न उसे क्रोध ही आता है। विपरीत व्यवहार में भी उसकी मन:शांति अक्षुण्ण बनी रहती है। बदले में बुरा व्यवहार न करके वह अपने धृष्ट विरोधी को भी लज्जित कर देता है। शिष्ट एवं सभ्य के सम्मुख संघर्ष की परिस्थितियाँ बहुत कम आती हैं।

— अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६६ पृष्ठ-२६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन को उलझन से बचाइए

आपका लक्ष्य क्या है ? वास्तव में आप चाहते क्या हैं, इसका स्पष्ट ज्ञान रहना भी बहुत जरूरी है। लक्ष्यहीन जीवन भी बहुत बड़ी उलझन है। जिनका लक्ष्य स्पष्ट नहीं है, किंतु हृदय में चाहना उठती रहती है, वह वास्तव में चाहता कुछ भी नहीं है, उसे मात्र मनोरथ करते रहने का व्यसन हुआ करता है। इस प्रकार का मनोरथी व्यक्ति आज यदि इस ओर बढ़ना चाहता है, तो कल दूसरी ओर। यदि आज वह व्यवसायी बनना चाहता है, तो कल एक बड़ा अधिकारी। आज यदि साहित्यकार बनने की इच्छा है, तो कल राजनीति में स्थान पाने की कामना करने लगता है। आज यदि यशवान बनने का मनोरथ करता है, तो कल धनवान बनने का। ऐसे इच्छाशील व्यक्ति का कोई एक लक्ष्य नहीं होता।

जीवन एक सुलझा हुआ सरल मार्ग है। इसे अखंड प्रसन्नता के साथ पूरा किया जा सकता है, किंतु यह तभी संभव होगा, जब मनुष्य अपनी स्थिति में पूर्ण संतुष्ट रहे, अपनी शक्ति-सीमा के अनुरूप इच्छाएँ करे, उन्हें पाने के लिए संपूर्ण शक्ति का उपयोग करे और आकस्मिक असफलताओं को अंगीकार करने के लिए साहसपूर्वक तैयार रहे। अनियंत्रित मनोरथ, अस्थिर इच्छाएँ और केवल सफलताओं की उत्सुक कामना, मनुष्य के सुलझे जीवन को निश्चय ही एक उलझी हुई पहेली बनी देंगी, जिसको सुलझाते-सुलझाते उसकी सारी आयु निकल जाएगी और अंत में वह एक भयंकर असंतोष लिए संसार से विदा हो जाएगा। *— अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६६ पृष्ठ-२७-२८-२९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परदोष दर्शन की कुत्सा त्यागिए

दोषदर्शी व्यक्ति दूसरों की निंदा करने के सिवा और कुछ नहीं कर सकता। निंदा की वृत्ति समाज में घृणा तथा वैमनस्य को जन्म देती है। निंदा करने वाले व्यक्ति को बदले में स्वयं भी निंदा का लक्ष्य बनना पड़ता है। निंदक एवं निंदित दोनों ही घृणा के पात्र होते हैं। उनसे न तो कोई सहयोग करता है और न किसी प्रकार की सहानुभूति रखता है। वे समाज में अकेले पड़कर जीवन में प्राणांतक असफलता के भागीदार बनते हैं।

परदोषदर्शी निंदक अपने मित्रों की संख्या कम कर लेता है और शत्रुओं की संख्या बढ़ा लेता है। जो दिन-रात दूसरों के दोष देखता; उनकी आलोचना, टीका-टिप्पणी और निंदा करता रहेगा, वह किस प्रकार आशा कर सकता है, दूसरे उससे स्नेह अथवा मित्रभाव रख सकेंगे? परदोष दर्शन एवं निंदा जीवन के विकास, उन्नति तथा सफलता के प्रामाणिक शत्रु हैं। संसार में कदाचित ही कोई ऐसा प्रमाण अथवा उदाहरण मिले कि किसी व्यक्ति ने दूषित दृष्टिकोण तथा परनिंदा की वृत्ति रखकर भी जीवन में कोई विशेषता अथवा सफलता प्राप्त की हो। संसार का इतिहास इस बात के उदाहरणों से अवश्य भरा पड़ा है कि घोरतम निंदा, आलोचना एवं विरोध होने पर भी जिन सत्पुरुषों ने किसी की निंदा नहीं की, दोष नहीं दिया। उनकी संसार में पूजा हुई है। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६६ पृष्ठ ३९*

www.awgp.org

सत्य को खोजें और उसे ही प्राप्त करें

आत्मा आपसे केवल इतनी अपेक्षा करती है, कि आप उसके प्रति श्रद्धालु एवं आस्थावान बने रहें, अन्य अनित्य वस्तुओं की तुलना में उसका अपमान अथवा अवहेलना न करें। मनुष्य मन, प्राण अथवा शरीर की तुलना में जब आत्मा को हेय समझने लगता है, तब वह दुखी हो जाती है और उसकी मुक्ति का प्रयास मंद पड़ जाता है। अपने प्रति श्रद्धालु एवं आस्थावान व्यक्तियों को आत्मा शीघ्र ही दर्शन दिया करती है।

संसार में बर्तते हुए भी अंदर से उससे विरक्त एवं निर्मोही रहकर जो व्यक्ति मुख्य रूप से आत्मा तक ही केंद्रित हो जाते हैं, वे उससे सकता प्राप्त कर शांत, गंभीर एवं उपद्रवरहित हो जाते हैं। मनुष्य की निर्द्वंद्व एवं उपद्रवरहित स्थिति ही वह शाश्वत सत्य है, जिसकी खोज में मनुष्य भटक रहा है और जो उसके लक्ष्य, सुख-शांति का अविचल आधार है।

आत्मा तक केंद्रित होने का यही अर्थ है कि मनुष्य, मन, प्राण एवं शरीर से परे अपने उस स्वरूप पर ध्यान केंद्रित करे, जो व्यापक, विस्तृत एवं निरुपद्रव है। अपने मन, प्राण तथा शरीर के पोषण में लगा रहना ही आत्मा के प्रति केंद्रीयता मानना भारी भूल होगी।

मनुष्य सत्य की खोज कर रहा है और वह सत्य परमात्मा के अंश आत्मा में निहित है और जो मनुष्य का सच्चा एवं शाश्वत स्वरूप है। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६६ पृष्ठ १०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्ची लोकप्रियता इस तरह मिलती है

जीवन की वास्तविक सफलता, लोकप्रियता पाने के लिए धन-दौलत अथवा शक्ति-संबल की आवश्यकता नहीं, उसके लिए आवश्यकता है गुण, कर्म, स्वभाव की श्रेष्ठता की। जब तक गुण, कर्म, स्वभाव में श्रेष्ठता का समावेश नहीं होगा, बहुत कुछ धन-दौलत एवं शक्ति-संपन्नता होने पर भी मनुष्य वास्तविक लोकप्रियता नहीं पा सकता।

जो गुणी है, उसका आदर क्या धनवान और क्या निर्धन दोनों ही करते हैं। उसकी पूजा-प्रतिष्ठा किसी बाह्य आधार पर नहीं होती, आंतरिक गुणों के कारण ही होती है। सहानुभूति, संवेदना, सहयोग, सेवा के गुण मनुष्य को सहज ही लोकप्रिय बना देते हैं। गुणी मनुष्य की एक सद्‌भावना ही उसे इतनी लोकप्रियता प्राप्त करा सकती है जो एक धनवान लाखों-हजारों खरच करके भी नहीं पा सकता। सहानुभूति का एक शब्द, संवेदना का एक आँसू और सेवा का एक कार्य सौ भार स्वर्ण से भी अधिक मूल्यवान है।

जो सदाचारी है, सुकर्मवान है, उसका आचरण ही उसको लोकप्रिय बना देगा। लोग उस पर विश्वास करेंगे, उसे आदर की दृष्टि से देखेंगे और उसकी चर्चा करेंगे। कर्मों की श्रेष्ठता एवं निष्कलंकता में आस्था रखने वाला मनुष्य बड़े से बड़ा कष्ट उठाकर किसी को धोखा नहीं देगा, मिथ्याचरण अथवा आडंबर का अवलंबन न लेगा। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६६ पृष्ठ-१७-१८*

समय के सदुपयोग की महत्ता समझिए

समय की बरबादी का अर्थ है, अपने जीवन को बरबाद करना। जीवन के जो क्षण मनुष्य यों ही आलस्य अथवा उन्माद में खो देता है, वे फिर कभी लौटकर वापस नहीं आते। जीवन के प्याले से क्षणों के जितने बूँद गिर जाते हैं, प्याला उतना ही खाली हो जाता है। प्याले की वह रिक्तता फिर किसी भी प्रकार भरी नहीं जा सकती। मनुष्य, जीवन के जितने क्षणों को बरबाद कर देता है, उतने क्षणों में वह जितना काम कर सकता था, उसकी कमी फिर वह किसी प्रकार भी पूरी नहीं कर सकता।

जीवन का हर क्षण एक उज्ज्वल भविष्य की संभावना लेकर आता है। हर घड़ी एक महान मोड़ का समय हो सकती है। मनुष्य यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि जिस समय, जिस क्षण और जिस पल को वह यों ही व्यर्थ में खो रहा है, वह ही क्षण, वह ही समय उसके भाग्योदय का समय नहीं है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझकर बरबाद कर रहे हैं, वह ही हमारे लिए अपनी झोली में सुंदर सौभाग्य की सफलता लाया हो।

समय की चूक पश्चात्ताप की हूक बन जाती है। जीवन में कुछ करने की इच्छा रखने वालों को चाहिए कि वे अपने किसी भी ऐसे कर्त्तव्य को भूलकर भी कल पर न डालें जो आज किया जाना चाहिए। आज के काम के लिए आज का ही दिन निश्चित है और कल के काम के लिए कल का दिन निर्धारित है। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६६ पृष्ठ-१९-२१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना

शतसूत्रीय कार्यक्रम

१. स्वस्थ शरीर

व्यक्तिगत

१. दो बार भोजन, शेष पेय
२. भोजन को ठीक तरह चबाना
३. भोजन अधिक न खाना
४. स्वाद की आदत का परित्याग
५. शाक-फलों का अधिक प्रयोग
६. पकवान, मिठाई आदि हानिकारक पदार्थों से दूर
७. भाप का पकाया हुआ भोजन ही खाएँ
८. स्वास्थ्य रक्षा के लिए सफाई आवश्यक (घर, वस्त्र, शरीर)
९. खुली व शुद्ध वायु में रहना
१०. ब्रह्मचर्य का पालन कड़ाई से करना

सामूहिक प्रयास

११. वनस्पति उत्पादन
१२. पकाने की पद्धतियों में सुधार
१३. सात्विक आहार के चुनाव में सुधार
१४. आस-पास की गंदगी दूर करना
१५. नशेबाजी का त्याग
१६. व्यायाम-सूर्य नमस्कार उसका प्रशिक्षण
१७. साप्ताहिक उपवास
१८. बड़ी दावतें व जूठन पर प्रतिबंध
१९. संतान की सीमा, मर्यादा रखना
२०. प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी

२. स्वच्छ मन

अशिक्षा दूर हो

२१. छात्रवृद्धि-अभियान, अशिक्षा दूर हो
२२. शिक्षितों की पत्नियाँ भी शिक्षित हों
२३. प्रौढ़ पाठशालाओं का आयोजन
२४. प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा-व्यवस्था
२५. शिक्षा के साथ दीक्षा भी
२६. जनसहयोग से नए विद्यालय
२७. रात्रि पाठशालाएँ
२८. शिक्षित ज्ञानऋण चुकाएँ
२९. पुस्तकालय-वाचनालय
३०. अध्ययन की रुचि जगाई जाए

आस्तिकता बढ़े

३१. आस्तिकता में आस्था
३२. स्वास्थ्य की साधना
३३. संस्कारित जीवन
३४. पर्व और त्योहारों का संदेश
३५. जन्मदिवस समारोह
३६. व्रतशीलता की धर्मधारणा
३७. मंदिर जनजागरण के केंद्र बनें
३८. युग निर्माण के ज्ञान मंदिरों की स्थापना
३९. साधु-ब्राह्मण भी कर्त्तव्यपालन करें
४०. वानप्रस्थ का पुनर्जीवन

३. सभ्य समाज

सभ्य समाज की स्वस्थ रचना

४१. सम्मिलित कुटुंब-प्रथा
४२. पारिवारिक विचारगोष्ठी
४३. सत्प्रवृत्ति का अभ्यास
४४. संतान और उसकी जिम्मेदारी
४५. सत्कार्यों का अभिनंदन
४६. सज्जनता का सहयोग
४७. नैतिक कर्त्तव्यों का पालन
४८. सहयोग और सामूहिकता
४९. कंजूसी और विलासिता छूटे
५०. श्रम का सम्मान

कुरीतियाँ उन्मूलन

५१. वर्ण-व्यवस्था का शुद्ध स्वरूप
५२. उपजातियों का भेदभाव मिटे
५३. नर-नारी का भेदभाव मिटे
५४. अश्लीलता का प्रतिकार
५५. विवाहों में अपव्यय समाप्त हो
५६. बाल विवाह एवं अनमेल विवाह पर प्रतिबंध
५७. भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना
५८. मृत्युभोज की व्यर्थता
५९. जेवरों में धन की बरबादी
६०. भूत, पलीत, बलिप्रथा का अंत

विभूतिवान व्यक्ति यह करें

६१. लेखकों और पत्रकारों से अनुरोध
६२. युग साहित्य के नवनिर्माता
६३. प्रत्येक भाषा में प्रकाशन
६४. अनुवाद कार्य का विस्तार
६५. पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि
६६. प्रकाशन की सुगठित श्रृंखला
६७. युग निर्माण प्रेस
६८. कविताओं की रचना व प्रसार

कला का सदुपयोग

६९. संगीत शिक्षा का प्रबंध
७०. गायकों का संगठन
७१. चित्रकला का आयोजन एवं उपयोग
७२. प्रदर्शनियों का आयोजन
७३. अभिनय और लीलाएँ
७४. नाटक, एकांकी, नृत्य आदि
७५. वक्तृत्व कला का विकास
७६. कला के वैज्ञानिक माध्यम टेप रिकार्ड, रिकार्ड प्लेयर, प्रोजैक्टर आदि

सद्‌भावनाएँ बढ़ाने का प्रयास

७७. सेवा कार्यों में अभिरुचि, नि:शुल्क चिकित्सा शिविर
७८. स्काउट शिक्षा, एन. सी. सी.
७९. सार्वजनिक उपयोग के उपकरणों का सदुपयोग
८०. सम्मेलन-संगोष्ठियाँ
८१. नवरात्र के शिक्षण शिविर
८२. पदयात्रा द्वारा धर्मप्रचार
८३. आदर्श वाक्य-लेखन
८४. छोटे स्थानीय शिक्षण सत्र
८५. संजीवनी विद्या का विधिवत प्रशिक्षण

राजनीति और सच्चरित्रता

८६. गीता के माध्यम से जनजागरण
८७. मतदान और मतदाता
८८. सीधा, सस्ता, सरल कार्य
८९. अपराधों के प्रति कड़ाई
९०. शिक्षापद्धति का स्तर
९१. सस्ता, शीघ्र और सरल न्याय
९२. अधिकारियों की प्रामाणिकता
९३. आर्थिक विषमता घटे

युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

९४. गायत्री उपासना
९५. यज्ञ की आवश्यकता
९६. समय दान
९७. आत्मचिंतन और सत्संकल्प
९८. अविच्छिन्न दान परंपरा
९९. सत्याग्रही स्वयंसेवक सेना
१००. बौद्धिक क्रांति की तैयारी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मीय पाठक बंधुओं से हमारा स्नेह भरा अनुरोध

आशा है कि इस पुस्तक के स्वाध्याय ने आपके चिंतन और भावनाओं को अवश्य झकझोरा होगा। आपको एक नई दिशा, नया मार्गदर्शन और नई चेतना मिली होगी। मनुष्य समाज की इकाई है। सामाजिक परिवेश उसको हठात अपने सामूहिक चिंतन की ओर धकेलता है। परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देकर समाज की रीति-नीति की विपरीत दिशा में चलना जनसामान्य के लिए संभव नहीं है। इसीलिए परिवर्तन एकाकी भी लाभदायक तो है, लेकिन युग परिवर्तन के लिए परिवर्तन का प्रवाह सारे समाज में फैलना चाहिए। इस ग्रंथ के स्वाध्याय से युगऋषि पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रति आपकी श्रद्धा अवश्य परिपक्व हुई होगी। यदि आपके हृदय में इन विचारों को समाज में फैलाने की एक हूक उठी हो, तो आप निश्चित समझ लें कि आपका स्वाध्याय सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है। जैसे हम बने हैं, वैसा ही यह संसार बन जाए, ऐसी भावनाएँ यदि अंतःकरण में उठ रही हों, तो आइए युगऋषि के चिंतन को जन-जन तक फैलाने के लिए कुछ योजनाएँ प्रारंभ की गई हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दे रहे हैं ? योजनाओं की विस्तृत जानकारी के लिए एवं प्रत्येक योजना में क्या करें, कैसे करें ? जानने के लिए विचारक्रांति अभियान, युगनिर्माण योजना, मथुरा-२८१००३ के पते पर पत्र-व्यवहार करें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है—युग निर्माण विद्या विस्तार से होगा। युग निर्माण जितना जल्द करना चाहते हैं, विद्या विस्तार की गति उसी अनुपात में बढ़ानी पड़ेगी। आज विद्या विस्तार की गति अत्यंत धीमी है। वर्तमान में युग निर्माण मिशन का एकमात्र लक्ष्य विद्या विस्तार होना चाहिए, जो ज्ञानयज्ञ के माध्यम से ही संभव है। पूज्य गुरुदेव ने लिखा—"हमारे साहित्य को घर-घर में पढ़ाओ, तो मेरा दावा है कि युग अवश्य बदलेगा। इससे कम में काम न बनेगा।" पूज्यवर के साहित्य को घर-घर में पढ़ाना ही आज का समय धर्म है। पूज्यवर ने लिखा—"यदि समग्र रूपांतरण चाहते हैं, तो हमारे साहित्य को पढ़ो, समझो और सीखो। युग साहित्य के स्वाध्याय में ही मानव में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण और युग निर्माण सत्संकल्प पूरा करने की शक्ति है। उत्तम ग्रंथों का अध्ययन करके मनुष्य महापुरुष, महात्मा, ऋषि व देवता बन सकता है। विद्या विस्तार ही सबसे बड़ा धर्म, पूजा और यज्ञ है। जितना पुण्य धन-धान्य सहित इस समस्त पृथ्वी को दान देने से मिलता है, उससे तीन गुना अधिक पुण्य स्वाध्याय करने वाले को मिलता है।" स्वाध्याय करने का इतना पुण्य है, तो स्वाध्याय कराने वालों को कितना पुण्य मिलेगा, यह विचारणीय है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीराम झोला पुस्तकालय

पूज्यवर ने लिखा है कि विश्वशांति के लिए किए गए समस्त उपायों में ज्ञानयज्ञ सर्वोपरि है। इस महान अभियान के लिए क्या हम तनिक भी सहयोग नहीं दे सकते? इस युग के सबसे प्रबल और महान अभियान में क्या हमारा कुछ भी योगदान नहीं हो सकता? यह प्रश्न अपने आप से पूछना चाहिए और यदि अंतरात्मा कहे कि कुछ तो हो ही सकता है, तो सबसे पहले झोला पुस्तकालय चलाना चाहिए।

पूज्यवर ने लिखा है कि संसार के समस्त दु:खों का, व्यक्ति के समस्त कष्टों का, समाज के समस्त संकटों का एकमात्र कारण विचारों का विकृत हो जाना ही है। आज यदि दु:खों के स्थान पर सुखों की स्थापना अभीष्ट हो, तो इसका एक ही उपाय है कि लोगों को सही ढंग से सोचने की कला सिखाएँ, जो काम झोला पुस्तकालय द्वारा आसानी से हो सकता है। झोला पुस्तकालय के माध्यम से वही कार्य हो सकता है, जो प्राचीनकाल के साधु-ब्राह्मण अपने बहुमूल्य जीवन को उत्सर्ग करके संपादित करते थे। झोला पुस्तकालय चलाने वाले इस युग के सच्चे लोकसेवक, सच्चे धर्मार्थी, सच्चे ज्ञानी, सच्चे विवेकवान और सच्चे ईश्वर भक्त माने जाएँगे। आज की स्थिति में एक ही उपाय है, जिससे युगांतरकारी प्रबल प्रेरणा को घर-घर, जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। झोला पुस्तकालय चलाना सबसे बड़ा यज्ञ है, सबसे बड़ा तप है, सबसे बड़ा दान है, सबसे बड़ा पुण्य है, सबसे बड़ा परमार्थ है और सबसे बड़ी साधना है। यानि झोला पुस्तकालय चलाने वाले को उपासना, साधना और आराधना तीनों का फल मिलता है।

युगऋषि के उक्त आश्वासन पर श्रद्धा रखते हुए हमें झोला पुस्तकालय चलाने का संकल्प आज ही ले लेना चाहिए।

माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय

(१) प्रत्येक पॉकेट बुक पर माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय की योजना लिखी है। इसके अनुसार प्रत्येक पाठक पुस्तक पढ़कर एक सप्ताह बाद दूसरे पात्र व्यक्ति को देता रहेगा।

(२) इन पुस्तकों को आप अपने मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों, व्यापारी अपने ग्राहकों, सहयोगियों को भेंट स्वरूप दे सकते हैं। परिवार में कोई मांगलिक कार्यक्रम, पर्व, त्योहार, नववर्ष, क्रिसमस, ईद, वैशाखी, जन्मदिन, विवाह दिन आदि अवसरों पर वितरित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सभा-सम्मेलन, गोष्ठी आदि अवसरों पर भी वितरित कर सकते हैं।

(३) सभी पॉकेट बुक्स में सौजन्य से........के नीचे खाली स्थान छोड़ा गया है, जहाँ परिजन अपनी फर्म अथवा नाम व पते की मुहर लगा सकते हैं अथवा हाथ से सुंदर लिपि में लिखकर भी काम चला सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(४) सभी परिजन ज्ञानघट एवं मासिक अंशदान का उपयोग इस योजना में कर सकते हैं। कम से कम पचास पैसा प्रतिदिन अंशदान ज्ञानघट में डालने वाले परिजन १५ रुपया प्रतिमाह की १० पॉकेट बुक्स स्नेहसलिला वंदनीया माता जी के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय योजना में वितरित कर ज्ञानयज्ञ में सहयोग दे सकते हैं।

गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना

अब तक हम लोगों ने अरबों रुपए खरच करके गायत्री यज्ञ संपन्न किए हैं। आइए, अब बिना खरच किए अरबों का लाभ पहुँचाने वाला गायत्री ज्ञानयज्ञ करें। पूज्य गुरुदेव लिखते हैं—साहित्य सजीव होता है। साहित्य में लेखक की आत्मा निवास करती है। हम लोगों ने अनजाने में भावनावश पूज्य गुरुदेव की आत्मा, जो उनके साहित्य एवं पत्रिकाओं में निवास करती है, को आलमारी अथवा बोरों में बंद कर दिया है। यह सर्वथा अनुचित है। पूज्यवर की आत्मा घर-घर जाने के लिए छटपटा रही है। धन की तीन गतियाँ—उपभोग, दान व नाश होती हैं। उसी प्रकार साहित्य को पढ़ना उसका सदुपयोग, दूसरों को देना ज्ञानयज्ञ अन्यथा कीड़ों द्वारा नाश अवश्यंभावी है। पूज्यवर के साहित्य का कोई पन्ना रद्दी में न जाए, नष्ट न हो, इसका दायित्व हम सब पर है। पूज्यवर का साहित्य शाश्वत सनातन है। कभी पुराना नहीं होता है। पुरानी पत्रिकाओं अथवा पुस्तकों पर गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर, अपना नाम व पता लिखकर पात्र व्यक्तियों को दान कर देनी चाहिए। पात्रता यह है कि व्यक्ति उसे पढ़ ले और किसी अन्य व्यक्ति को दे दे। गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप आप किसी व्यक्ति द्वारा यहाँ से मँगा सकते हैं, डाक से भेजना संभव नहीं है। ऐसी स्लिप आप स्थानीय स्तर पर भी छपवा सकते हैं। मिशन की समस्त पत्रिकाएँ लगभग १५,००,००० परिवारों में जाती हैं। यदि वे गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना द्वारा एक परिवार से दूसरे परिवार में जाएँ और औसतन ५ परिवारों में जाकर पत्रिका रुक भी जाए तो ७५ लाख परिवारों में पत्रिका पहुँच जाएगी, जबकि खरच, स्याही, कागज आदि उतना ही लगेगा। इस योजना में सभी को सहयोग करना चाहिए। युग निर्माण योजना पत्रिका के मुख पृष्ठ पर यह मैटर नियमित छापा जा रहा है।

युग निर्माण विद्या परिषद् (पत्राचार पाठ्यक्रम)

अध्यात्म का व्यावहारिक ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को होना चाहिए। पेट-प्रजनन मात्र के लिए जीने वाले मनुष्य आहार, निद्रा, भय और मैथुन जैसे पशुता के गुणों से संपन्न होने के कारण अपने अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही बरबाद करके संसार से विदा हो जाते हैं। दुर्लभ मानव जीवन को कौड़ी के मोल गँवा देते हैं। श्रेष्ठ मानव जीवन व्यतीत करके अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफल बनाने का प्रयास सभी को करना चाहिए। संजीवनी विद्या अर्थात जीवन जीने की कला सीखने के लिए प्राचीनकाल में गुरुकुल और आरण्यक जाकर मार्गदर्शन प्राप्त करने की व्यवस्था थी। वर्तमान में यह व्यवस्था लगभग समाप्त हो गई है। पत्राचार द्वारा संजीवनी विद्या एवं आध्यात्म का व्यावहारिक ज्ञान घर बैठे प्राप्त करने की योजना प्रारंभ की जा रही है। इस पाठ्यक्रम में १५ वर्ष की आयु से अधिक के भाई-बहन जो भलीभाँति पढ़कर समझ सकते हों, शामिल हो सकते हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि युग निर्माण विद्या परिषद् द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम के अंतर्गत जीवन जीने की कला एवं स्वस्थ रहने की कला का प्रशिक्षण देश भर के २००० केंद्रों पर चल रहा है। पाठ्यक्रम से लाभ उठाने वाले और अपने जीवन में परिवर्तन अनुभव करने वाले हजारों प्रशंसापत्र इस बात के प्रमाण हैं कि पाठ्यक्रम जन सामान्य में बहुत लोकप्रियता प्राप्त करता चला जा रहा है। हमारे प्राणवान कार्यकर्त्ता भाई-बहन अपने क्षेत्र में इस पाठ्यक्रम के केंद्र बड़ी सफलता के साथ चला रहे हैं। एक वर्ष में चार सत्र चलते हैं। जनवरी से मार्च, अप्रैल से जून, जुलाई से सितंबर, अक्टूबर से दिसंबर तक तीन माह में २४ पाठ याद करने होते हैं। मार्च जून, सितंबर एवं दिसंबर के अंतिम रविवार को परीक्षा होती है। तैंतीस प्रतिशत अंक लाने वाले प्रशिक्षणार्थियों को जीवनसाधक का प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। पूज्य गुरुदेव के विचारों के आधार पर जन सामान्य को जीवन जीने की कला एवं स्वस्थ रहने की कला सिखाने हेतु आपका सहयोग मिलेगा, ऐसी आशा है। प्रशिक्षण केंद्र चलाने के लिए विस्तृत जानकारी के लिए विवरण पुस्तिका पत्र डालकर मँगा लेनी चाहिए।

अपना मूल्यांकन भी करते रहें

यह निर्विवाद सत्य है कि धर्म और सदाचार के आदर्शवादी सिद्धांतों का प्रशिक्षण भाषणों और लेखों से पूरा नहीं हो सकता। ये दोनों माध्यम महत्त्वपूर्ण तो हैं, पर इनका उपयोग इतना ही है कि वातावरण तैयार कर सकें। वास्तविक प्रभाव तो तभी पड़ता है, जब अपना अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करके किसी को प्रभावित किया जाए। चूँकि हमें नए समाज की, नए आदर्शों की, जनमानस में प्रतिष्ठापना करनी है, इसलिए यह अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि युग निर्माण परिवार के सदस्य दूसरों के सामने अपना अनुकरणीय आदर्श रखें। प्रचार का यही श्रेष्ठ तरीका है। इस पद्धति को अपनाए बिना जनमानस को उत्कृष्टता की दिशा में प्रभावित एवं प्रेरित किया जाना संभव नहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसलिए सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य इस बात की चेष्टा करे कि उनके जीवन में आलस्य, प्रमाद, अव्यवस्था एवं अनैतिकता की जो दुर्बलताएँ समाई हुई हों, उनका गंभीरतापूर्वक निरीक्षण करे और इस आत्मचिंतन में जो-जो दोष दृष्टिगोचर हों, उन्हें सुधारने के लिए एक क्रमबद्ध योजना बनाकर आगे बढ़ चले।

आत्मचिंतन के लिए हम में से हर एक को अपने से निम्न प्रश्न पूछने चाहिए और उनके उत्तरों को नोट करना चाहिए।

(१) समय जैसी जीवन की बहुमूल्य निधि का हम ठीक प्रकार सदुपयोग करते हैं या नहीं? आलस्य और प्रमाद में उसकी बरबादी तो नहीं होती?

(२) जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति का हमें ध्यान है या नहीं? शरीर-सज्जा में ही इस अमूल्य अवसर को नष्ट तो नहीं कर रहे? देश, धर्म, समाज और संस्कृति की सेवा के पुनीत कर्त्तव्य की उपेक्षा तो नहीं करते?

(३) अपनी विचारधारा एवं गतिविधियों को हमने अंधानुकरण के आधार पर बनाया है या विवेक, दूरदर्शिता एवं आदर्शवादिता के अनुसार उनका निर्धारण किया है?

(४) मनोविकारों और कुसंस्कारों के शमन करने के लिए हम संघर्षशील रहते हैं या नहीं? छोटे-छोटे कारणों को लेकर हम अपनी मानसिक शांति से हाथ धो बैठने और प्रगति के सारे मार्ग अवरुद्ध करने की भूल तो नहीं करते।

(५) कटु भाषण, छिद्रान्वेषण एवं अशुभ कल्पनाएँ करते रहने की आदतें छोड़कर सदा संतुष्ट, प्रयत्नशील एवं हँसमुख रहने की आदत हम डाल रहे हैं या नहीं?

(६) शरीर, वस्त्र घर तथा वस्तुओं को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित रखने का अभ्यास आरंभ किया या नहीं? श्रम से घृणा तो नहीं करते?

(७) परिवार को सुसंस्कारी बनाने के लिए आवश्यक ध्यान एवं समय लगाते हैं या नहीं?

(८) आहार सात्विकता प्रधान होता है, न? चटोरपन की आदत छोड़ी जा रही है न? सप्ताह में एक समय उपवास, जल्दी सोना, जल्दी उठना, आवश्यक ब्रह्मचर्य का नियम पालते हैं या नहीं?

(९) ईश्वर उपासना, आत्मचिंतन, स्वाध्याय को अपने नित्य-नियम में स्थान दे रखा है न?

(१०) आमदनी से अधिक खरच तो नहीं करते? कोई दुर्व्यसन तो नहीं? बचत करते हैं न?

उपरोक्त दस प्रश्न नित्य अपने आप से पूछते रहने वाले को जो उत्तर आत्मा दे, उन पर विचार करना चाहिए और जो त्रुटियाँ दृष्टिगोचर हों, उन्हें सुधारने का नित्य ही प्रयत्न करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना के सात आंदोलन

पिछले हजार वर्षों से जिस अज्ञानांधकार युग में हमें रहना पड़ा है, उसके फलस्वरूप हमारे चिंतन की दिशा में विकृतियों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि प्रगति के लिए किए गए सभी प्रयत्न उल्टे पड़ते हैं। सुधार एवं प्रगति की सभी योजनाएँ चारित्रिक दुर्बलता से टकराकर निष्फल हो जाती हैं। कारण की तह तक हमें जाना होगा और भावनात्मक नवनिर्माण के लिए एक ऐसा प्रचंड अभियान चलाना होगा, जो जनमासन को चरित्रनिष्ठा, आदर्शवादिता, मानवीय सद्भावना, प्रचंड कर्मठता और औचित्य को अपनाने की साहसिकता से ओत-प्रोत कर दे। इस आंदोलन को जितनी सफलता मिलती जाएगी, उसी क्रम से प्रगति का पथ प्रशस्त होता चला जाएगा। युग निर्माण आंदोलन अगले दिनों जिस प्रचंड रूप से मूर्तिमान होगा, उसकी रहस्यमय भूमिका कम ही लोगों को विदित है, पर यह निश्चित है कि यह आंदोलन बहुत ही प्रखर और प्रचंड रूप से उठेगा और पूर्ण सफल होगा। सफलता का श्रेय किन व्यक्तियों एवं किन संस्थाओं को मिलेगा, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, पर होना यह निश्चित रूप से है। इस उज्ज्वल भविष्य की कृषि को बोने, उगाने एवं सींचने के लिए जिन कर्मठ भुजाओं की आवश्यकता है, उनकी आज जरूरत पड़ रही है।

आंदोलन का अंतिम चरण संघर्षात्मक होगा, क्योंकि असुरता केवल अनुरोध एवं विनय से मिटने वाली नहीं है। उसके लिए पग-पग पर लड़े जाने वाले संघर्ष की आवश्यकता पड़ेगी। व्यक्तिगत तृष्णा, वासना, संकीर्णता, स्वार्थपरता, विलासिता, कामचोरी और अशिष्टता जैसी बुराइयों से आत्मसुधार एवं आत्मनिर्माण के आत्मसाधना स्तर पर लड़ा जाएगा। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व स्तर की विकृतियों से उसी स्तर के हथियारों से लड़ा जाएगा। समग्र परिवर्तन का उद्देश्य लेकर प्रारंभ किया गया युग निर्माण आंदोलन अब संघर्षात्मक कार्यक्रमों तक आ पहुँचा है। यह इस आंदोलन का अंतिम चरण है, जिसमें समग्र परिवर्तन की सुनिश्चित संभावनाएँ विद्यमान हैं।

(१) आस्तिकता संवर्द्धन आंदोलन—आस्तिक व्यक्ति ही सच्चा क्रांतिकारी हो सकता है। जबरन थोपा हुआ परिवर्तन स्थायी भी नहीं रहता और परिवर्तनों के प्रति जनश्रद्धा नहीं होती तो जनता में उल्लास, उमंग एवं प्रसन्नता का स्रोत सूखा ही रहता है। भारत की भूमि पर क्रांतिकारी, संत-महात्मा ही हुए हैं। कोई भी जन आंदोलन धार्मिकता और आस्तिकता का संबल लिए बिना सफल हो सकेगा, इसमें संदेह ही रहता। इस आंदोलन के योद्धा आस्तिक हों, हर प्राणी में ईश्वर का आभास उन्हें होगा तो हर प्राणी की सेवा ईश्वर-सेवा मानकर करेंगे। ऐसे आस्तिक योद्धा जन-जन को आस्तिक बनाएँ तो आस्तिकता का अमृत, प्रेम, भाईचारा, सहृदयता, दया, करुणा, सहयोग के रूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में समाज में फैले तो अन्य आंदोलनों को चलाने की आवश्यकता ही न पड़े। आस्तिकता की भावनाएँ जहाँ-जहाँ पहुँचती जाएँगी, वहाँ-वहाँ समाज का कायाकल्प होता हुआ नजर आएगा।

(२) **स्वास्थ्य-संवर्द्धन आंदोलन**—प्रसन्नता से भरे समाज का निर्माण व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। समग्र स्वास्थ्य-संवर्द्धन का आंदोलन जन-जन तक पहुँचाया जाए। शारीरिक स्वास्थ्य हेतु आहार-विहार, मानसिक स्वास्थ्य हेतु आचार-विचार और आत्मिक स्वास्थ्य हेतु उपासना द्वारा कषाय-कल्मष विहीन पवित्रता आवश्यक है। समग्र रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही संघर्ष में सहयोगी होते हैं। जन-जन को स्वास्थ्य के नियमों की जानकारी देना, स्वस्थ रहने के तरीकों से अवगत कराना, इस आंदोलन के मुख्य कार्यक्रम हैं।

(३) **नारी-जागरण आंदोलन**—समाज की आधी जनसंख्या को पददलित और अपंग बनाकर पुरुष वर्ग ने कुछ खोया ही है, पाया कुछ नहीं है। इस मिशन का यह आंदोलन पश्चिम के 'नारी मुक्ति आंदोलन' से भिन्न है। जहाँ नारी मुक्ति आंदोलन नारी को मनमाने, उच्छृंखल और अशिष्ट व्यवहार हेतु मुक्त कराता है, वहाँ नारी जागरण आंदोलन समाज को नारी की गौरव-गरिमा एवं उसकी आत्मिक संपदा से अवगत कराकर उसे सम्मानित कराता है तथा उस पर लगे अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाने की माँग करता है। साथ ही नारी को उसके कर्त्तव्य के प्रति भी सचेत करता है। बच्चों तथा परिवार में अच्छे संस्कार एवं परंपराएँ डालना, प्रगतिशील नारी द्वारा ही संभव है। इस देश की नारी पर से अनावश्यक प्रतिबंध हटा लिए जाएँ और उसे आगे बढ़ने का पूरा अवसर प्रदान किया जाए तो समाज का कायाकल्प हो सकता है। २१वीं सदी मातृ सदी के रूप में आ रही है। इसमें नारी केवल अपनी गौरव-गरिमा को ही प्राप्त नहीं करेगी वरन बहुत ही आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ प्राप्त करेगी।

(४) **सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन**—समाज में यदि सत्प्रवृत्तियों की हवा फैले तो दुष्प्रवृत्तियों की जड़ उखड़ जाएगी। यह आंदोलन हमें अपने आप से संघर्ष कराएगा। हमें अपनी एवं अपने स्वजनों की दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करना पड़ेगा। परिवार एवं समाज में फैली मूढ़ मान्यताओं एवं दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ेगा।

(५) **कुरीति उन्मूलन आंदोलन**—समाज में सभी व्यक्ति विवेक से काम लेकर अपने कार्यों का निर्धारण नहीं करते। अधिकांश व्यक्ति परंपरावादी होते हैं और प्रचलित रीति-रिवाजों को बिना तर्क की कसौटी पर कसे अपनाते रहते हैं। बहुत-सी कुरीतियाँ समाज के लिए बहुत हानिकारक भी हैं। इन कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्राणवान, जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्तियों की आवश्यकता होगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(६) व्यसन मुक्ति आंदोलन—तंबाकू, शराब आदि व्यसन समाज को खोखला किए दे रहे हैं। मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ बनाने में इन व्यसनों की बहुत बड़ी भूमिका है। पारिवारिक कलह एवं विनाश में तथा समाज में व्याप्त अपराधों के लिए व्यसन मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। समाज को यदि व्यसन मुक्त बनाया जा सका, तो नवनिर्माण का उद्‌देश्य पूरा होता हुआ दिखाई देगा।

(७) विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन—विश्व के हर धर्म तथा हर देश में विवाह एक बिना खरच वाला सामान्य-सा कृत्य है, लेकिन दुर्भाग्यवश हिंदू समाज में इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण धार्मिक संस्कार को इतनी विकृतियों से भर दिया गया है कि इस संस्कार की मूल भावनाएँ बिलकुल समाप्त हो गईं हैं। दहेज जैसे पिशाच ने इस यज्ञ में हड्डियाँ डालकर जो विघ्न डाला है, उससे इस यज्ञ की रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण जैसे वीर और क्रांतिकारियों की आवश्यकता होगी। खरचीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। यह चिंतन युवावर्ग में विशेष रूप से फैलाना है।

उपरोक्त सात आंदोलन की विस्तृत जानकारी 'क्रांति की रूपरेखा' पुस्तक में दी गई है। प्रत्येक गाँव, मुहल्ले में लगभग २४ युग सैनिकों का एक 'युग सेना संगठन' बनाया जाना चाहिए, जो इन आंदोलनों को अपने क्षेत्र में सफलतापूर्वक चला सके। युग सेना संगठन बनाने की योजना और शपथपत्र युग सेना प्रकोष्ठ, युग निर्माण योजना, मथुरा-२८१००३ को पत्र डालकर मँगा सकते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

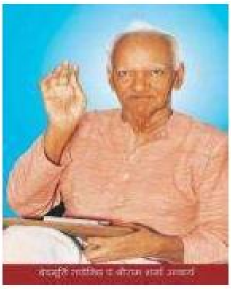

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org